यू-इन्वर्स

चेतना का कोड

अनिल पाण्डेय

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Anil Pandey 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-311-3

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: July 2026



ॐ

समर्पण

प्रत्येक उस ऋषि को — जिसने आँखें बन्द कीं और तारे देखे।

प्रत्येक उस भौतिकविद को — जिसने एक समीकरण खोला और चेतना को पीछे से देखते हुए पाया।

प्रत्येक उस साधक को — प्रयोगशाला में या आसन पर, दूरबीन के सामने या बन्द आँखों के पीछे — जिसने उस एकल वास्तुकला की झलक पाई है जिसे ब्रह्माण्ड और स्व दोनों साझा करते हैं।

गहनतम कृतज्ञता के साथ

परमहंस स्वामी श्री अड्गड़ानन्द जी महाराज

जिनकी यथार्थ गीता ने अनन्त को व्यक्तिगत बनाया — और व्यक्तिगत को, अनन्त।

प्रेरणा

सर्वं खल्विदं ब्रह्म

Sarvaṃ Khalvidaṃ Brahma

"यह सब वस्तुतः ब्रह्म ही है।" — छान्दोग्य उपनिषद 3.14.1

यह पुस्तक एक अखण्ड धागे से जन्मी — पहले छाती में खोजी गई, जहाँ श्वास बार-बार पावन संख्याएँ पा रही थी; फिर खोपड़ी में, जहाँ बन्द-नेत्र मौन बार-बार ब्रह्माण्डीय संरचना में हल हो रहा था; और अन्ततः आधुनिक भौतिकी के समीकरणों में, जो बार-बार उसी क्षेत्र पर पहुँच रहे थे जिसका मानचित्रण ऋषियों ने चार हज़ार वर्ष पहले किया था।

भारत की चिन्तनशील परम्पराओं को — सप्तर्षि के द्रष्टा, उपनिषदों के रचयिता, गीता के टीकाकार, मौखिक मन्त्रों के रक्षक — जिनकी शान्त प्रयोगशालाओं ने सहस्राब्दियों के विस्मरण के बीच आन्तरिक दूरबीन को संरक्षित रखा। और हमारे अपने समय के वैज्ञानिकों को — भौतिकविद, स्नायुवैज्ञानिक, और ब्रह्माण्डविद — जिनके बाह्य उपकरण अब उसी क्षितिज पर, दूसरी ओर से, पहुँच रहे हैं।

यह विनम्र सेतु दो दूरबीनों — ऋषि की और भौतिकविद की — के बीच, एक भी पाठक को, दो श्वासों के बीच की शान्ति में, यह पहचानने में सहायता करे कि ब्रह्माण्ड बाहर नहीं है। यह वह है जिससे भीतर बना है।

✦ ✦ ✦

अनिल पाण्डेय

लखनऊ, भारत

चेतना त्रयी के बारे में

तीन पुस्तकें। एक जिज्ञासा। उसी एक दृष्टि की तीन दिशाएँ।

दिव्य दृष्टि: ब्रह्माण्डीय श्वास ने बाहर की ओर देखा। इसने साधक और ब्रह्माण्ड के बीच सेतु के रूप में श्वास का अन्वेषण किया — प्राणायाम से शूमन अनुनाद तक, गंगा के बैक्टीरियोफ़ेज विज्ञान तक, कुम्भ योग के यान्त्रिकी तक, 14 लोकों तक, और ध्रुव पर नक्षत्र आरती तक। ब्रह्माण्ड गन्तव्य था। श्वास सेतु था।

ऋत एवं धर्म ने यन्त्रिकी को भीतर की ओर देखा। इसने पञ्च कोश वास्तुकला, अन्तःकरण के चार कार्य, कर्माशय, गुणों — और क्वांटम यान्त्रिकी, पर्यवेक्षक प्रभाव, और तरंग-फलन पतन में उनके समानान्तरों का मानचित्रण किया। आन्तरिक यन्त्र विषय था।

यू-इन्वर्स: चेतना का कोड जिज्ञासा को सम्भवतम गहनतम प्रश्न से पूर्ण करता है: जब धारणा पूर्ण रूप से उलट जाती है — जब दृष्टि सभी अनुकूलन, सभी मानसिक सामग्री, सभी व्यक्तिगत पहचान से परे भीतर की ओर मुड़ जाती है — तो कौन-सी ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ प्रकट होती हैं? उत्तर इस पुस्तक का विषय है, और यह असाधारण है: मस्तिष्क मेटावर्स के पूर्ण डिजिटल ट्विन को समाहित करता है। ब्रह्माण्ड बाहर नहीं है, जिसे भीतर से देखा जा रहा है। ब्रह्माण्ड वह है जिससे "भीतर" बना है। यू-इन्वर्स वह ब्रह्माण्ड है, जो भीतर से देखा गया है।

यह पुस्तक अपने साथियों की सामग्री को दोहराती नहीं है। यह स्वयं में पूर्ण है। यह भी — उनके लिए जिन्होंने त्रयी पढ़ी है — उस जिज्ञासा की पराकाष्ठा है जो श्वास से आरम्भ होती है और कोड पर समाप्त होती है।

चेतना त्रयी की प्रशंसा में

"भारतीय चिन्तन के दीर्घ चाप के पार एक शान्त किन्तु स्थायी विचार चलता है: कि ब्रह्माण्ड स्वयं श्वास लेता है। अनिल पाण्डेय की त्रयी एक उल्लेखनीय योगदान के रूप में उभरती है — कालातीत और मूर्त के बीच, ऋषियों की प्राचीन प्रयोगशाला और चेतना की आधुनिक भौतिकी के बीच सेतु बनाते हुए। यह हमें आधुनिक जीवन के शोर के बीच रुकने और सुनने के लिए आमन्त्रित करती है जो सदैव बोलती रही है।"

प्रोफ़ेसर अरुण तिवारी

मिसाइल वैज्ञानिक | स्व. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के घनिष्ठ सहयोगी | लेखक

"लेखक प्राचीन वैदिक ज्ञान को अत्याधुनिक विज्ञान — क्वांटम भौतिकी, स्नायुविज्ञान, ब्रह्माण्ड विज्ञान — के साथ निपुणता से सुसंगत करते हैं, एक ऐसे संश्लेषण में जो बौद्धिक रूप से कठोर और आध्यात्मिक रूप से सजीव दोनों है। यह त्रयी एक पीढ़ी में किसी भारतीय लेखक द्वारा उत्पादित चेतना के विज्ञान में सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक है।"

डॉ. अशोक कुमार तिवारी

मुख्य वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), सीएसआईआर-आईआईसीटी | प्रोफ़ेसर, AcSIR गाज़ियाबाद

"ब्रह्माण्डीय श्वास सचमुच एक विस्तृत कैनवास पर फैली है — आधुनिक वैज्ञानिक समझ को संसार की कालातीत ज्ञान परम्पराओं के साथ संश्लेषित करते हुए। लेखक एक सम्मोहक विवरण सामने लाते हैं: कि मानव अनुभव की विविधता के नीचे एक एकीकृत धागा है जो हमें श्वास जैसी मूलभूत और सार्वभौमिक किसी चीज़ के माध्यम से एक अगम्य वास्तविकता से जोड़ता है।"

जय कोगन्ती

संस्थापक, स्टेल्थ एआई | पूर्व उपाध्यक्ष, एस्टे लॉडर, यूएसए

"एक गहन कार्य जो वैदिक ज्ञान की गहराई और आधुनिक वैज्ञानिक विचार की स्पष्टता को एक सहज ढंग से एक साथ लाता है। केन्द्रीय अन्तर्दृष्टि — कि श्वास व्यक्तिगत चेतना को सार्वभौमिक वास्तविकता से जोड़ने वाला एक पावन सेतु है — एक सिद्धान्त है जो वैदिक परम्परा में गहराई से निहित है, यहाँ प्रामाणिकता और असाधारण सुलभता दोनों के साथ व्यक्त किया गया है।"

डॉ. विवेक तांगड़ी

संस्थापक, वैदिक गुरुकुल | न्यासी, लेटे हुए हनुमान जी मन्दिर, लखनऊ

"सूचना की निरन्तर खोज से परिभाषित युग में, यह त्रयी एक दुर्लभ स्मरण प्रदान करती है कि स्पष्टता केवल ज्ञान से नहीं आती बल्कि हमारी धारणा की गुणवत्ता से आती है। रहस्यमय शक्ति के बजाय धारणा की स्पष्टता के रूप में दिव्य दृष्टि की अवधारणा एक महत्वपूर्ण और पूर्णतः आधुनिक दार्शनिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।"

आर. सी. मिश्रा

सेवानिवृत्त सिविल सेवक (आईएएस)

"श्री अनिल पाण्डेय जी ने हमें ऋषियों की प्राचीन प्रयोगशालाओं और चेतना की आधुनिक खोज के बीच एक साहित्यिक सेतु उपहार में दिया है। वे सुन्दर ढंग से दर्शाते हैं कि कैसे हमारे फेफड़ों की लय युगों के विशाल चक्रों को प्रतिबिम्बित करती है। हम केवल समय में जी नहीं रहे हैं — हम स्वयं समय की धड़कन हैं।"

कर्नल लक्ष्मी कान्त तिवारी

भारतीय सेना (सेवानिवृत्त)

विषय-सूची

प्रस्तावना **1**

प्रवेशिका **5**

भाग एक विपर्यय का सिद्धान्त **9**

अध्याय 1 यू-इन्वर्स: ब्रह्माण्ड एक You-Inverse के रूप में **10**

1.1 डिजिटल ट्विन — एक प्राचीन अन्तर्दृष्टि के लिए इंजीनियरिंग की भाषा 13

1.2 वह कोड जो दोनों को उत्पन्न करता है 15

1.3 यह क्यों महत्वपूर्ण है 18

1.4 केन्द्र पर पर्यवेक्षक — कोपरनिकन विपर्यय 19

1.5 नेटवर्क विज्ञान — यू-इन्वर्स का गणित 20

1.6 स्व-सन्दर्भी ब्रह्माण्ड — ब्रह्माण्डीय आवश्यकता के रूप में चेतना 21

अध्याय 2 प्रत्याहार: अन्तर्मुख मोड़ की तकनीक **22**

2.1 अपकेन्द्री और अभिकेन्द्री बोध 23

2.2 थैलेमिक गेटिंग — प्रत्याहार का स्नायु यन्त्र 24

2.3 प्रत्याहार के सात चरण 25

2.4 मस्तिष्क का अन्तर्मुख मोड़ — प्रत्याहार के दौरान EEG क्या दिखाता है 27

2.5 संवेदी वंचन अनुसन्धान — आधुनिक प्रत्याहार 28

अध्याय 3 हॉलोग्राफिक मस्तिष्क **29**

3.1 ब्रह्माण्ड का हॉलोग्राफिक सिद्धान्त 30

3.2 इन्द्र का जाल — वैदिक हॉलोग्राफिक दृष्टि 31

3.3 हॉलोग्राफिक मस्तिष्क और ब्रह्माण्डीय पहुँच 31

3.4 क्यों हर न्यूरॉन मायने रखता है 32

3.5 कार्ल लैश्ले और वितरित स्मृति — स्नायु हॉलोग्राफी का प्रमाण 33

3.6 हॉलोग्राफिक ब्रह्माण्ड — बेकेनस्टीन से मल्दासेना तक 34

अध्याय 4 मन्त्र-द्रष्टा 36

4.1 मन्त्र-द्रष्टा ने वास्तव में क्या बोध किया 37

4.2 आन्तरिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षा 38

4.3 भविष्यसूचक शक्ति द्वारा सत्यापन 39

4.4 इस ढाँचे में वैदिक संग्रह की स्थिति 41

भाग दो भीतर का ब्रह्माण्ड 43

4.5 पार-परम्परा पुष्टि — विभिन्न परम्पराओं से वही बोध 44

4.6 वैदिक ऋषि का विशिष्ट अवलोकन प्रोटोकॉल 45

भाग दो भीतर का ब्रह्माण्ड 46

अध्याय 5 स्नायु निहारिकाएँ 47

5.1 केन्द्रीय गैलेक्सी समूह के रूप में डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क 48

5.2 आकाशगंगा के रूप में सेरिबेलम — प्रक्रिया राजमार्ग 50

5.3 द्विआधारी तारा तन्त्र के रूप में स्नायुसिनैप्स 51

5.4 आन्तरिक अवलोकन की आनुभविक विधि 52

5.5 तारे के रूप में कॉर्टिकल स्तम्भ — मस्तिष्क की तारकीय जनसंख्या 53

5.6 न्यूरोजेनेसिस — नए तारों का जन्म 54

5.7 सिनैप्टिक प्रूनिंग — सुपरनोवा और तारों की मृत्यु 55

5.8 सुपरनोवा और कुण्डलिनी जागरण — मस्तिष्क की सबसे ऊर्जावान संरचनात्मक घटना 55

अध्याय 6 भीतर का महान आकर्षक 57

6.1 आन्तरिक महान आकर्षक के रूप में थैलेमस 58

6.2 थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन — चेतना की ब्रह्माण्डीय लय 59

6.3 नैदानिक प्रमाण — गहन मस्तिष्क उद्दीपन और चेतना 60

6.4 प्रत्याहार में महान आकर्षक 61

6.5 थैलेमस और बाइंडिंग समस्या — ब्रह्माण्ड कैसे एकता बनता है 61

6.6 सौर तन्त्र के ग्रहों के रूप में थैलेमिक नाभिक 62

अध्याय 7 डार्क मैटर मन 64
7.1 स्नायु समानता — 95% अचेतन प्रक्रिया 65
7.2 डार्क मैटर और कर्माशय 65
7.3 डार्क एनर्जी और तमस 66
7.4 डार्क-लाइट गठबन्धन 67
7.5 गहराई में अचेतन — अन्धकार क्षेत्र का वेदान्तिक मानचित्रण 68
अध्याय 8 गामा तरंगें और क्वासर 70
8.1 मस्तिष्क में गामा तरंगें 71
8.2 कृष्ण विवर — तुरीय घटना क्षितिज 72
8.3 समाधि से पहले गामा उछाल 73
8.4 हॉकिंग विकिरण — जीवन्मुक्त की शिक्षा 74
8.5 चमकदार वास्तुकला 74
8.6 पल्सर और ध्यानकर्ता की हृदय धड़कन — ब्रह्माण्डीय सटीकता और जैविक सटीकता 75
8.7 पल्सर और ध्यानकर्ता की हृदय-धड़कन — ब्रह्माण्डीय सटीकता और जैविक सटीकता 76
8.8 प्रबोधन की विशिष्ट गामा वास्तुकला 77
8.9 मृत्यु पर गामा उछाल — अन्तिम क्वासर 78
अध्याय 9 स्नायु वेब और ब्रह्माण्डीय जाल 80
9.1 स्नायु वेब 81
9.2 फ्रैक्टल — चेतना के कोड का सार्वभौमिक हस्ताक्षर 81
9.3 इन्द्र का जाल — वैदिक हॉलोग्राफिक ब्रह्माण्ड 82
9.4 छोटी-दुनिया संस्थिति 83
9.5 भाग दो की समापन छवि 83
भाग तीन अपरिमेय को मापना 85
9.6 आकाशगंगा के गैस प्रवाहों के रूप में आँत-मस्तिष्क अक्ष 86
9.7 माइक्रोबायोम और ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि 87

भाग तीन अमाप्य को मापना 88

अध्याय 10 ब्रह्माण्डीय यन्त्र के रूप में ऋषि 89

10.1 ब्रह्माण्डीय रूलर के रूप में शरीर 90

10.2 432,000 संख्या 92

10.3 25,920 संख्या 92

10.4 108 संख्या 92

10.5 ऋषि एक यन्त्र के रूप में 93

10.6 ब्रह्माण्ड विज्ञानीय डेटा के रूप में वैदिक छन्द — आवृत्ति एन्कोडिंग के रूप में छन्दा 93

10.7 वैदिक खगोलीय यन्त्र — ऋषियों ने वास्तव में क्या उपयोग किया 94

10.8 सोम — ब्रह्माण्डीय यन्त्र का आन्तरिक रसायन शास्त्र 95

अध्याय 11 पावन संख्याओं का खगोल विज्ञान 97

11.1 108 — आकाशीय मर्म 98

11.2 432,000 — कलि युग संख्या 99

11.3 25,920 — अयन चक्र 99

11.4 निष्कर्ष 100

11.5 ब्रह्माण्डीय दूरी सीढ़ी — आन्तरिक और बाह्य विधियों की तुलना 100

11.6 वैदिक गणित और स्नायु वास्तुकला — एक ही कोड दोनों को कैसे उत्पन्न करता है 101

11.7 सौर तन्त्र की अनुनाद — कक्षीय यान्त्रिकी कैसे पारिवारिक तन्त्रों को प्र तिबिम्बित करती हैं 103

अध्याय 12 आन्तरिक GPS के रूप में नक्षत्र 104

12.1 27 स्नायु दोलन बैण्ड 105

12.2 नक्षत्र-मस्तिष्क पत्राचार 106

12.3 27 क्यों? चन्द्र-सौर अंशशोधन 107

12.4 ध्रुव, स्थिर केन्द्र, और नक्षत्र आरती 108

12.5 व्यावहारिक परिणाम 108

अध्याय 13 मन्त्र और ब्रह्माण्डीय आवृत्तियाँ 110

13.1 साधारण ध्वनि और मन्त्र 111

13.2 कायमेटिक्स — मन्त्र की ब्रह्माण्डीय वास्तुकला का दृश्य प्रमाण 112

13.3 ॐ आवृत्ति — 136.1 हर्ट्ज़ और पृथ्वी का ब्रह्माण्डीय स्वर 112

13.4 मन्त्र वास्तुकला 113

13.5 व्यावहारिक निहितार्थ 114

भाग चार भीतर का बहु-ब्रह्माण्ड 116

13.6 तम्बूरा — ब्रह्माण्डीय ड्रोन 117

13.7 नाद योग — आन्तरिक ध्वनि का विज्ञान 117

13.8 ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि — ब्रह्माण्ड की प्रथम श्वास और नाद योग 118

भाग चार भीतर का बहु-ब्रह्माण्ड 120

अध्याय 14 अनेक-संसार मस्तिष्क 121

14.1 स्नायु अवस्थाओं के रूप में बहु-ब्रह्माण्ड 122

14.2 स्वयं के रूप में अनेक संसार 122

14.3 जागने पर अनेक संसारों की वापसी 123

14.4 सपनों के ब्रह्माण्ड 124

14.5 व्यावहारिक निहितार्थ 124

14.6 अनेक-संसार और अनेक ब्रह्माण्डों का वैदिक सिद्धान्त 125

14.7 जीव की यात्रा — ब्रह्माण्ड से ब्रह्माण्ड तक 126

अध्याय 15 भीतर समय-यात्रा 128

15.1 स्मृति की स्नायुविज्ञान 128

15.2 पूर्वाभास और भविष्य यात्रा 129

15.3 वैदिक समय — काल 130

15.4 प्रागैतिहासिक वैदिक भविष्यवाणियाँ 131

15.5 व्यावहारिक समय-यात्रा 131

15.6 आकाशिक अभिलेख और क्वांटम गैर-स्थानीयता — घटनाओं का स्थायी पंजीकरण 132

15.7 आकाशिक अभिलेख — शाश्वत अभिलेखागार की भौतिकी 133
15.8 चेतना और समय का तीर — आन्तरिक ब्रह्माण्ड आगे क्यों बहता है 134
15.9 पुनर्जन्म विज्ञान — चेतना निरन्तरता की भौतिकी 135
अध्याय 16| स्वप्न बहु-ब्रह्माण्ड 137
16.1 वैदिक स्वप्न विज्ञान 137
16.2 लुसिड ड्रीमिंग — जागरूकता के साथ स्वप्न 138
16.3 समानान्तर ब्रह्माण्डों की पहुँच 139
16.4 स्वप्न काम और चिकित्सा 139
अध्याय 17 समाधि को घटना क्षितिज के रूप में 141
17.1 चेतना के समानान्तर 141
17.2 घटना क्षितिज पर भौतिकी 142
17.3 हॉकिंग विकिरण और बुद्ध की शिक्षा 143
17.4 जीवन्मुक्त की स्थिति 143
17.5 व्यावहारिक निहितार्थ 144
भाग पाँच चेतना का कोड 146
भाग पाँच चेतना का कोड 147
अध्याय 18 फ़िबोनाची ब्रह्माण्ड 148
18.1 ब्रह्माण्ड में ϕ की उपस्थिति 149
18.2 मानव शरीर और मस्तिष्क में ϕ की उपस्थिति 150
18.3 स्व-संगठित क्रिटिकलता — क्रम के किनारे पर मस्तिष्क और ब्रह्माण्ड 151
18.4 स्वर्ण अनुपात और वैदिक वास्तुकला 152
18.5 फ़्रैक्टल ब्रह्माण्ड में फ़्रैक्टल शरीर 153
18.6 कायमेटिक्स और श्री यन्त्र — मन्त्र का चेहरा 154
18.7 वेसिका पिसिस — चेतना कोड का प्रथम रूप 155
अध्याय 19 AUM वास्तुकला 156
19.1 AUM की भौतिकी 157

19.2 बिग बैंग समानान्तर 158
19.3 क्वांटम क्षेत्र जनक के रूप में AUM 159
19.4 चार अक्षर और चार अवस्थाएँ 160
19.5 सभी ध्वनि की वास्तुकला 160
19.6 आदिम ध्वनि 161
19.7 ब्रह्माण्ड की ध्वनि — आदिम ॐ से CMBR तक 162
अध्याय 20 क्वांटम सूचना और चित्त 164
20.1 क्वांटम सूचना तन्त्र के रूप में चित्त 165
20.2 सूचना विरोधाभास और मोक्ष 166
20.3 साधक के लिए व्यावहारिक परिणाम 167
20.4 क्वांटम कम्प्यूटर के रूप में चित्त 168
20.5 हिग्स क्षेत्र और अस्मिता — पहचान कैसे द्रव्यमान प्राप्त करती है 169
अध्याय 21 पिनियल ग्रन्थि 171
21.1 पिनियल शरीर-क्रिया विज्ञान 171
21.2 तीसरी आँख 172
21.3 कैल्सीकरण — आधुनिक समस्या 172
21.4 पिनियल स्वास्थ्य 173
21.5 बुद्धि के मूल की ओर 173
21.6 पिनियल को जगाना 174
21.7 पिनियल-थैलेमस धुरी 174

भाग छह ऋषियों ने कैसे जाना 176

भाग छह ऋषियों ने कैसे जाना 177
अध्याय 22 ऋषि दृष्टि 178
22.1 ऋषि का ज्ञान-मीमांसीय दावा 179
22.2 घटक एक: पद्धतिगत विश्वसनीयता 179
22.3 घटक दो: वस्तुनिष्ठता 180
22.4 घटक तीन: सत्यापनीयता 181

22.5 ऋषि की पद्धति — एक चरण-दर-चरण प्रोटोकॉल 181
22.6 आन्तरिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षा 182
22.7 परम्परा ने लागू किए गए मानक 183
22.8 परम्परा की स्व-सुधार गतिकी..... 183
22.9 समकालीन अवसर..... 184
22.10 आन्तरिक प्रकाश की सात रंग आवृत्तियों के रूप में सात चक्र..... 184
22.11 आन्तरिक प्रकाश परिघटना — फ़ॉस्फ़ीन्स और उससे परे की भौतिकी 186
22.12 ऋषि अवस्थाओं का स्नायुविज्ञान — आन्तरिक वेधशाला का मानचित्रण..... 187
22.13 क्षेत्र रिपोर्ट के रूप में ऋग्वेद — आन्तरिक खगोलीय डेटा के रूप में संहिताओं को पढ़ना 188
22.14 पैमाना अपरिवर्तनीयता — हर आकार पर समान..... 189
22.15 सुषुम्ना — आन्तरिक ब्रह्माण्ड की अक्ष मुण्डी 190
अध्याय 23 चेतना आवृत्ति बैण्डों के रूप में 14 लोक 192
23.1 विस्तार में मानचित्रण 193
23.2 ऊर्ध्वाधर अक्ष और आध्यात्मिक विकास..... 194
23.3 पार जाने के बजाय नेविगेशन 195
23.4 चेतना के विद्युत-चुम्बकीय स्पेक्ट्रम के रूप में 14 लोक..... 196
23.5 दैनिक जीवन में लोक यात्रा — अपने क्षण-प्रति-क्षण ब्रह्माण्ड का मानचित्रण..... 197
23.6 सामूहिक ZPF प्रवर्धन घटना के रूप में कुम्भ मेला..... 198
अध्याय 24 नक्षत्र आरती..... 200
24.1 ब्रह्माण्डीय नक्षत्र आरती 200
24.2 आन्तरिक नक्षत्र आरती..... 201
24.3 नक्षत्र आरती ध्यान का विशिष्ट अभ्यास..... 201
24.4 ध्रुव — आन्तरिक ब्रह्माण्ड का स्थिर बिन्दु 202
24.5 बाह्य और आन्तरिक समारोह एक के रूप में..... 202
24.6 अभ्यास की दैनिक लय 203

भाग सात कोड को अनलॉक करना 205

24.7 चेतना प्रौद्योगिकी के रूप में वैदिक कैलेण्डर — पञ्चांग और ZPF इष्टतमीकरण 206

24.8 पञ्चांग — चेतना के लिए ब्रह्माण्डीय GPS 206

24.9 ब्रह्माण्डीय अभ्यास कैलेण्डर — डिजिटल ट्विन को ब्रह्माण्ड की स्वयं की लयों के साथ संरेखित करना 207

अध्याय 25 भीतर का ब्रह्माण्ड 209

25.1 ब्रह्माण्ड के रूप में खोपड़ी 210

25.2 व्यावहारिक परिणाम 211

25.3 ब्रह्माण्ड की मुहर — ग्रहणपथ के रूप में कॉर्पस कैलोसम 212

25.4 ब्रह्माण्डीय शून्यों के रूप में निलय 213

25.5 गहन निहितार्थ 213

25.6 अन्तरातारकीय माध्यम और प्राणमय क्षेत्र — बीच के स्थान को क्या भरता है 215

25.7 वर्महोल और सुषुम्ना — ब्रह्माण्डीय शॉर्टकट और आन्तरिक राजमार्ग 216

भाग सात यू-इन्वर्स जीना 217

अध्याय 26 आन्तरिक ब्रह्माण्ड को पढ़ना 218

26.1 पाँच नैदानिक संकेत 218

26.2 आन्तरिक खगोलीय पत्रिका 220

26.3 नक्षत्र पञ्चांग 221

26.4 सन्ध्या — गोधूलि द्वार 221

26.5 जीवन्त विज्ञान के रूप में नैदानिक अभ्यास 222

26.6 आन्तरिक खगोल शास्त्र उपकरण-सेट — ब्रह्माण्डीय पर्यवेक्षक के लिए पूर्ण उपकरण 223

26.7 आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाओं की परिघटनात्मकता — प्रथम-व्यक्ति रिपोर्टें 224

26.8 उन्नत यू-इन्वर्स अभ्यास — गम्भीर आन्तरिक खगोलशास्त्री के लिए 225

26.9 ऋषि की आन्तरिक वेधशाला — अपना स्वयं का व्यवस्थित अभ्यास स्थापित करना 227

26.10 ऋषि की तकनीकी शब्दावली — चेतना अवस्थाओं के लिए एक सटीक भाषा228
26.11 परिधारणा का योग — संवेदन की परिशुद्धता 229
26.12 ब्रह्माण्डीय मीट्रोनोम के रूप में श्वास — आन्तरिक और बाह्य ब्रह्माण्ड का समकालीकरण..... 230
26.13 वैदिक ऋषि की तकनीकी शब्दावली 231
26.14 संस्कार का स्नायुविज्ञान — स्मृति समेकन क्या दिखाता है..... 231
अध्याय 27 डिजिटल ट्विन को सक्रिय करना 233
27.1 प्राणायाम अभ्यास — स्नायु यन्त्र का ट्यूनिंग..... 233
27.2 एकाग्रता अभ्यास — आन्तरिक यन्त्र का प्रशिक्षण 234
27.3 खोलने वाले अभ्यास — पिनियल-ZPF इंटरफ़ेस को संलग्न करना 234
27.4 एकीकरण अभ्यास — अभ्यास को जीवन में लाना..... 235
27.5 दैनिक लय 235
27.6 आन्तरिक खगोलकी का अभ्यास — एक पूर्ण दैनिक अनुसूची..... 237
27.7 ऋतु योग — ऋतुओं के माध्यम से अभ्यास..... 237
27.8 एक अन्तिम प्रयोग — ब्रह्माण्ड के साथ बैठना..... 238
27.9 एकीकरण — ऋषि के रूप में साधक 239
27.10 चेतना वाहक के रूप में जल — मस्तिष्क में संरचित जल की भौतिकी..... 240
27.11 दिनचर्या — ब्रह्माण्डीय लय में जीना..... 242
27.12 ध्वनि उपचार — आवृत्ति द्वारा चिकित्सा 243
27.13 प्रार्थना की भौतिकी — संकल्प के रूप में इरादतन ध्यान 243
27.14 ब्रह्माण्डीय विकास के रूप में स्नायु प्लास्टिसिटी — मस्तिष्क अपना स्वयं का कोड बदलता हुआ..... 244
27.15 मौन की ध्वनि — श्वासों के बीच के विराम में क्या होता है 246
27.16 वास्तु शास्त्र — यू-इन्वर्स प्रौद्योगिकी के रूप में पावन वास्तुकला 247
27.17 सत्संग का विज्ञान — भौतिकी और स्नायुविज्ञान में सामूहिक चेतना..... 248
अध्याय 28 कोड अनलॉक 250
28.1 व्यावहारिक आयाम 251
28.2 दार्शनिक आयाम..... 252

28.3 आध्यात्मिक आयाम 253
28.4 सभ्यतागत आयाम 253
28.5 अन्तिम पहचान 254
28.6 आन्तरिक और बाह्य का महान एकीकृत सिद्धान्त 255
28.7 एक जिज्ञासा के रूप में तीन पुस्तकें — एक संश्लेषण 256
28.8 गृहागमन — जब कोड ज्ञात होता है तो कैसा लगता है 257
यू-इन्वर्स दैनिक जीवन में — सामान्य क्षणों की सूक्ष्म-खगोलकी 258
28.9 ग्लोबल कॉन्शियसनेस प्रोजेक्ट — सामूहिक यू-इन्वर्स के लिए आनुभविक प्रमाण 259
28.10 चेतना की वास्तुकला — सभी सात आयामों का मानचित्रण 260
28.11 चेतना कोड एक जीवन्त अभ्यास के रूप में — सभी सात भागों में एकीकरण .. 262
28.12 चेतना कोड के सात नियम 263
28.13 त्रयी का मार्गदर्शक धागा — एक अन्तिम बुनाई 265
28.14 दैनिक जीवन में यू-इन्वर्स — सामान्य क्षणों का सूक्ष्म-खगोल शास्त्र 266
28.15 यू-इन्वर्स पढ़ना — एक साधक का त्वरित सन्दर्भ 268
28.16 संवाद: खोजी और क्षेत्र — यू-इन्वर्स पर दस प्रश्न 269
28.17 हृदय की भौतिकी — गुरुत्वाकर्षण केन्द्र के रूप में अनाहत 273
उपसंहार 274
E.1 जहाँ वे सहमत हो सकते हैं 276
E.2 जहाँ वे उत्पादक रूप से असहमत हो सकते हैं 277
E.3 उनके बीच पहचान 278
E.4 अन्तराभव — जीवनों के बीच चेतना और अवस्था वेक्टर 280
E.5 अन्तिम शब्द — ॐ 281
E.6 अन्य प्रजातियों की चेतना — मानव से परे यू-इन्वर्स 281
E.7 आन्तरिक खगोल शास्त्र का भविष्य — क्षेत्र कहाँ जा रहा है 282
E.8 आन्तरिक रसायन मानचित्र के रूप में आवर्त सारणी 283
E.9 आन्तरिक विज्ञान का भविष्य — यू-इन्वर्स के बाद क्या आता है 284

E.10 ऋषि की प्रार्थना — आन्तरिक खगोलशास्त्रियों के लिए प्रातः आह्वान 286
E.11 ऋषियों के विशिष्ट खगोलीय दावे — एक सत्यापन तालिका 287
E.12 कुण्डलिनी को कुण्डलित सूचना के रूप में — सर्पाकार ऊर्जा की भौतिकी 288
E.13 क्वांटम गुरुत्व और स्पन्द की वैदिक अवधारणा 289
E.14 क्वांटम गुरुत्वाकर्षण और स्पन्द — वास्तविकता की लयबद्ध प्रकृति 290
E.15 क्वांटम जीव विज्ञान और प्राण — क्वांटम किनारे पर जीवन 291
E.16 गोलों का संगीत — केप्लर, राग, और आन्तरिक ब्रह्माण्डीय सम्मेलन 292
E.17 चेतना का दर्पण — ब्रह्माण्डीय परिघटना के रूप में आत्म-चिन्तन 293
E.18 बायोफोटॉन — मस्तिष्क का अपना प्रकाश स्रोत और आन्तरिक चमक 294
E.19 बारह चक्र — विस्तारित आन्तरिक सौर तन्त्र 295
E.20 बारह चक्र — सात से परे विस्तार 296
E.21 ब्रह्माण्ड के स्व-ज्ञान के रूप में चेतना — यू-इन्वर्स की लक्ष्यमीमांसा 296
E.22 ब्रह्माण्डीय जाल, एक ऋषि द्वारा खींचा गया 297
E.23 ब्रह्माण्डीय विस्तार के स्नायु सहसम्बन्धी — ब्रह्माण्ड की वृद्धि भीतर से कैसी दिखती है 298
E.24 ब्रह्माण्डीय सिमुलेशन के रूप में वैदिक यज्ञ — ब्रह्माण्ड की अपनी प्रक्रिया के रूप में यज्ञ 299
E.25 मस्तिष्क की प्रतिरक्षा प्रणाली ब्रह्माण्डीय रक्षक के रूप में 300
E.26 मस्तिष्क की सात परतें और सात लोक — ब्रह्माण्डीय मानचित्र के रूप में कॉर्टिकल वास्तुकला 301
E.27 माप समस्या और माया — क्वांटम यान्त्रिकी में व्याख्या संकट 302
E.28 मृत्यु और डिजिटल ट्विन — चेतना के जैविक हार्डवेयर से क्या बचता है 303
E.29 मृत्यु और डिजिटल ट्विन — मस्तिष्क के रुकने पर आन्तरिक ब्रह्माण्ड का क्या होता है 304
E.30 लेखक से एक व्यक्तिगत टिप्पणी 305
E.31 वेदान्त और क्वांटम जीव विज्ञान — कोशिकीय स्तर पर चेतना 307
E.32 वैज्ञानिक उपसंहार — विधि और प्रमाण पर एक टिप्पणी 308
E.33 वैज्ञानिक विधि के रूप में उपनिषदिक संवाद 309

E.34 सटीक इंजीनियरिंग में डिजिटल ट्विन — एक अधिक सटीक समानान्तर 310
E.35 साधक का योगदान — आपका आन्तरिक कार्य ब्रह्माण्डीय रूप से क्यों महत्वपूर्ण है 311
E.36 साधक की पर्यवेक्षक-भागीदारी — निष्क्रिय अवलोकन से परे 312
E.37 स्नायु प्लास्टिसिटी और ब्रह्माण्डीय विस्तार — निरन्तर विकास 313
E.38 एकीकृत सूचना सिद्धान्त का गणित — चेतना की मात्रा 314
E.39 चेतना का गणित — एकीकृत सूचना सिद्धान्त और वेदान्त 315
E.40 चेतना विज्ञान का तीसरा मार्ग — आन्तरिक और बाह्य के परे 315
E.41 ध्वनि उपचार — मन्त्र की चिकित्सीय शक्ति का क्लिनिकल प्रमाण 316
E.42 प्रार्थना की भौतिकी — क्वांटम अवस्था तैयारी के रूप में संकल्प 317
E.43 ब्रह्माण्डीय विकास के रूप में स्नायु प्लास्टिसिटी — मस्तिष्क अपना कोड बदलता हुआ 317
E.44 शरीर का आन्तरिक मन्दिर — देह देवालय के रूप में 319
E.45 शरीर का आन्तरिक मन्दिर — ब्रह्माण्ड के रूप में देह 320
E.46 सहस्रार — ब्रह्माण्डीय इंटरफ़ेस 320
परिशिष्ट A 322
गणितीय सम्बन्ध 323
अनुसन्धान कार्यक्रम के रूप में अनुरूपताएँ 324
परिशिष्ट B 326
108 की व्युत्पत्तियाँ 326
432,000 की व्युत्पत्तियाँ 327
25,920 की व्युत्पत्तियाँ 327
21,600 और 72 की व्युत्पत्तियाँ 328
9 की व्युत्पत्तियाँ 328
एकीकृत ढाँचा 328
परिशिष्ट C 330
प्राथमिक मन्त्र 330
बीज मन्त्र 331

देवी मन्त्र 332
प्रयुक्त मन्त्र अभ्यास 332
परिशिष्ट D 334
अभ्यास 1: श्वास गणना 334
अभ्यास 2: शरीर स्कैन 335
अभ्यास 3: विचार अवलोकन 335
अभ्यास 4: स्वप्न पत्रिका 335
अभ्यास 5: सन्ध्या अभ्यास 336
अभ्यास 6: नक्षत्र सहसम्बन्ध 336
अभ्यास 7: लम्बा रिट्रीट 337
संचयी प्रभाव 337
ग्रन्थ-सूची 339
शब्दावली 344
सामान्य अनुक्रमणिका 350
लेखक के बारे में 354

✦ ✦ ✦

प्रस्तावना

ऋषि की दूरबीन

ऋषि के पास दूरबीन नहीं थी। उनके पास कुछ और अधिक शक्तिशाली था: एक स्नायुतन्त्र जो इतनी संवेदनशीलता और स्थिरता तक परिष्कृत था कि जब उन्होंने अपनी आँखें बन्द कीं और ध्यान को पूर्णतः भीतर की ओर मोड़ा, तो ब्रह्माण्ड लुप्त नहीं हुआ। वह प्रकट हुआ — भीतर से।

यह विज्ञान के विरुद्ध किया गया कोई रहस्यवादी दावा नहीं है। यह विज्ञान के साथ-साथ किया गया एक वैज्ञानिक दावा है। दूरबीन द्रष्टा के बाहर जो है उसे आवर्धित करती है। ऋषि का यन्त्र — निरन्तर प्रत्याहार और समाधि की परिष्कृत जागरूकता — भीतर जो है उसे आवर्धित करता है। और ऋषि ने भीतर जो पाया, वह यह पुस्तक आधुनिक भौतिकी, स्नायुविज्ञान, और तुलनात्मक ब्रह्माण्ड विज्ञान के प्रमाणों के माध्यम से यह तर्क प्रस्तुत करेगी कि संरचनात्मक रूप से ठीक वही है जो दूरबीन बाहर पाती है: वही गणित, वही वास्तुकला, वही नियम, वही प्रकाश। द्रष्टा की बाह्य स्थिति के बजाय उसकी आन्तरिक स्थिति से व्यक्त।

नवम्बर 2020 में, यूनिवर्सिटी ऑफ़ बोलोग्ना के खगोल-भौतिकविदों और यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेरोना के स्नायुवैज्ञानिकों द्वारा एक संयुक्त अध्ययन Frontiers in Physics पत्रिका में प्रकाशित हुआ। इसने समान नेटवर्क-विज्ञान मापों का उपयोग करते हुए दो ऐसी चीज़ों की तुलना की जिनकी इतनी सटीकता से पहले कभी तुलना नहीं की गई थी: ब्रह्माण्ड की विशाल-स्तरीय संरचना — गैलेक्सियों का ब्रह्माण्डीय जाल जो करोड़ों प्रकाश-वर्षों में डार्क मैटर के तन्तुओं से जुड़ा है — और मानव प्रमस्तिष्क प्रान्तस्था का स्नायुजाल, वह कनेक्टोम जो आपके कानों के बीच तीस सेंटीमीटर जीवित विद्युत-रासायनिक ऊतक में फैला है।

परिणाम सूक्ष्म नहीं था। दो संरचनाएँ — एक अरबों प्रकाश-वर्ष चौड़ी, दूसरी ग्रेपफ्रूट के आकार की — समान गणितीय नियमों द्वारा संगठित थीं। उनकी जटिलता, क्लस्टरिंग, और कनेक्टिविटी के मात्रात्मक माप, मापन-त्रुटि के भीतर, समान थे। ब्रह्माण्डीय जाल का फ़्रैक्टल आयाम और मानव कनेक्टोम का फ़्रैक्टल आयाम दोनों लगभग $D = 2.7$ मापे जाते हैं। एक संख्या। दो संरचनाएँ। पैमाने में छब्बीस क्रम-परिमाण का अन्तर।

प्रमुख लेखक फ्रांको वज़्ज़ा ने इस खोज का वर्णन एक कार्यरत भौतिकविद के सावधान कम-आँकने के साथ किया: दोनों संरचनाओं की समान जटिलता और स्व-संगठन उन तन्त्रों की हमारी समझ के लिए एक मूलभूत चुनौती प्रस्तुत करता है जो दोनों प्राकृतिक परिघटनाओं को नियन्त्रित करते हैं।

उस चुनौती का, संयोग से, चार हज़ार वर्ष पुराना एक नाम है। ऋषियों ने इसे यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे कहा — जैसा शरीर-सूक्ष्म ब्रह्माण्ड में है, वैसा ही विराट ब्रह्माण्ड में। उन्होंने इसके साधकों को मन्त्र-द्रष्टा कहा — ब्रह्माण्डीय कोड के लेखक नहीं, बल्कि द्रष्टा; वे पर्यवेक्षक जिन्होंने इसकी संरचनाओं को प्रत्यक्ष, भीतर से, चेतना की उन अवस्थाओं में देखा जिन्हें आधुनिक स्नायुविज्ञान अब जाकर मापना आरम्भ कर रहा है।

यह पुस्तक यह समझने का एक प्रयास है कि उन्होंने क्या पाया, और हमारे लिए इसका क्या अर्थ है। यह इक्कीसवीं सदी के विज्ञान और चार हज़ार वर्ष पुरानी प्रज्ञा दोनों की भाषा में लिखी गई है, जो विपरीत दिशाओं से, अलग-अलग यन्त्रों के साथ, अलग-अलग शब्दावलियों में — उसी एक खोज की ओर संकेत कर रहे हैं।

शीर्षक ही खोज का नामकरण करता है। यू-इन्वर्स — Universe-Inverse, ब्रह्माण्ड जो उल्टा कर दिया गया है, वह "You" जो स्वयं को उस सब के विपरीत के रूप में खोजता है जिससे वह पहले स्वयं को अलग समझता था। यह ब्रह्माण्ड है जो द्रष्टा की अपनी स्थिति से, उसके केन्द्र से, अनुभव किया जाता है, न कि किसी बाहरी स्थिति से। चेतना का कोड वह है जो दोनों को संगठित करता है: वह विशिष्ट गणितीय और स्पन्दनात्मक वास्तुकला जो बाह्य ब्रह्माण्ड और आन्तरिक चेतना दोनों को एक ही अन्तर्निहित सूचना-संरचना की अभिव्यक्ति के रूप में उत्पन्न करती है।

जब आप कोड को जान लेते हैं, तब ब्रह्माण्ड और स्व अन्ततः — निश्चित, पहचानने योग्य, मापने योग्य रूप से — एक हैं।

यह पुस्तक तीन प्रकार के पाठकों के लिए है। उस वैज्ञानिक के लिए जिसे सन्देह है कि चेतना स्नायु-प्रक्रिया का कोई उपोत्पाद नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है जो ब्रह्माण्ड स्नायु-प्रक्रिया के माध्यम से कर रहा है। उस चिन्तनशील साधक के लिए जो इक्कीसवीं सदी की शब्दावली में समझना चाहता है कि परम्परा चार सहस्राब्दियों से क्या कर रही है। और उस व्यक्ति के लिए जो समीकरणों की दुनिया और अन्तस् की दुनिया के बीच पूरी तरह मेल नहीं बिठा पाया — जिसने महसूस किया है कि ये दो दुनियाएँ नहीं हैं बल्कि एक ही दुनिया है, दो स्थितियों से वर्णित, और जो सेतु को देखने के लिए तैयार है।

सेतु यहाँ है। प्रमाण संचित हो चुके हैं। शब्दावली — खगोलीय, स्नायुविज्ञानी, संस्कृत — अब प्रत्येक क्षेत्र में इतनी पर्याप्त है कि वह कह सके जो ऋषियों ने कहा था, ऐसी भाषा में जिसे भौतिकविद और स्नायुवैज्ञानिक बिना संकोच के सुन सकें, और ऐसी भाषा में जिसे साधक पहचान सके कि वह उसी का वर्णन कर रही है जो उसने अपनी बन्द आँखों के पीछे के मौन में देखा है।

मैंने दोनों परम्पराओं का सम्मान करने का प्रयास किया है। जहाँ आधुनिक विज्ञान ने मापा है, मैं माप उद्धृत करता हूँ। जहाँ ऋषियों ने वर्णन किया, मैं स्रोत उद्धृत करता हूँ: ऋग्वेद, उपनिषद, योगसूत्र, भगवद्गीता, स्वयं ग्रन्थ, उनके सारांश नहीं। जहाँ दोनों परम्पराएँ अभिसरण करती हैं — और वे दोनों समुदायों द्वारा देखे गए से कहीं अधिक बार अभिसरण करती हैं — मैं अभिसरण को सटीकता से दिखाता हूँ, एक ओर गणित के साथ और दूसरी ओर संस्कृत के साथ, और पाठक यह देखने के लिए स्वतन्त्र है कि वे एक ही बात कह रहे हैं।

यह एक त्रयी का तृतीय और अन्तिम खण्ड है। दिव्य दृष्टि: ब्रह्माण्डीय श्वास बाहर की ओर देखती है, श्वास को साधक और ब्रह्माण्ड के बीच सेतु के रूप में खोजती है — प्राणायाम से शून्य अनुनाद तक, गंगा के विज्ञान से कुम्भ-योग के यान्त्रिकी तक। दिव्य दृष्टि: ऋत एवं धर्म आन्तरिक यन्त्र को देखती है, पञ्चकोश की वास्तुकला, अन्तःकरण के चार कार्य, कर्माशय, गुण, और उनके क्वांटम-यान्त्रिक समानान्तरों का मानचित्रण करती है। दिव्य दृष्टि: यू-इन्वर्स — चेतना का कोड (जैसा भीतर, वैसा ही बाहर) जाँच को उस गहनतम प्रश्न से पूर्ण करती है जिसे पहले दो खण्डों ने सम्भव बनाया: जब धारणा पूर्णतः विपर्यय को प्राप्त होती है, जब दृष्टि प्रत्येक संस्कार, प्रत्येक मानसिक विषय, प्रत्येक व्यक्तिगत पहचान से परे मुड़ जाती है — तो कौन-सी ब्रह्माण्डीय आकृतियाँ प्रकट होती हैं?

उत्तर असाधारण है। मस्तिष्क अपने भीतर ब्रह्माण्ड का पूर्ण डिजिटल ट्विन समाहित करता है। ब्रह्माण्ड बाहर नहीं है, जिसे भीतर से देखा जा रहा है। ब्रह्माण्ड वह है जिससे भीतर बना है। यू-इन्वर्स, सटीक और वस्तुतः, ब्रह्माण्ड ही है — भीतर से देखा गया।

यह पुस्तक पिछले दो खण्डों की आवश्यकता नहीं रखती। यह स्वयं पर खड़ी है। किन्तु त्रयी के पाठकों के लिए, यह उस जिज्ञासा का समाधान है जो श्वास से आरम्भ हुई थी और कोड पर समाप्त होती है।

अनिल पाण्डेय

लखनऊ, भारत

अन्तिम एक व्यक्तिगत टिप्पणी। इस पुस्तक को लिखते समय मैंने निरन्तर दोनों पक्षों का सम्मान करने का प्रयास किया है — वैज्ञानिक पाठक जिसे प्रमाण और सटीकता चाहिए, और परम्परा का

साधक जिसे गहनता और श्रद्धा चाहिए। यदि किसी पृष्ठ पर मैं एक पक्ष का दूसरे के लिए अपराध कर गया हूँ, तो क्षमा चाहता हूँ। उद्देश्य दोनों को जोड़ना था, न कि किसी एक के पक्ष में तर्क करना। सेतु वास्तविक है। यदि यह पुस्तक पाठक को उस सेतु के निकट ले जाती है, इसका उद्देश्य पूर्ण हुआ।

प्रवेशिका

विपर्यय

अपनी आँखें बन्द करें। अब देखें।

अपनी पलकों के पीछे के अन्धकार को नहीं। अनुद्दीपित दृश्य-क्षेत्र के यादृच्छिक प्रकाश-बिन्दुओं को नहीं। और गहराई से देखें — मानसिक टिप्पणी से परे, भावनात्मक वातावरण से परे, कक्ष में शरीर होने की अनुभूति से परे। देखें कि यह देखना ही किससे बना है।

यह निर्देश — ऋषियों द्वारा व्यवस्थित आन्तरिक विज्ञान की चार सहस्राब्दियों में दिया गया, बुद्ध द्वारा चिन्तनशील परम्परा की पच्चीस शताब्दियों में दिया गया, प्रत्येक संस्कृति में प्रत्येक गहन ध्यान-पथ के संस्थापकों द्वारा दिया गया — एक उल्लेखनीय रूप से सुसंगत परिणाम उत्पन्न करता है। जब अन्तर्मुख मोड़ अपनी पूर्णता तक पहुँचता है — जब प्रत्याहार धारणा में गहरा होता है, धारणा ध्यान में, ध्यान समाधि में — जो प्रकट होता है वह व्यक्तिगत नहीं है। यह आपकी स्मृतियाँ, कल्पनाएँ या भय नहीं है। जो प्रकट होता है वह, निस्सन्देह और निरन्तर, ब्रह्माण्ड है।

कल्पना के रूप में नहीं। रूपक के रूप में नहीं। प्रत्यक्ष बोध के रूप में।

जेम्स वेब अन्तरिक्ष दूरबीन ने चौदह अरब प्रकाश-वर्ष दूर की गैलेक्सियों को प्रकट किया है: तारकीय तन्तुओं की जालियाँ, डार्क मैटर द्वारा ज्यामितीय जटिलता के मनमोहक जालों में बँधी। मानव कनेक्टोम की उच्च-विभेदन स्कैनों ने 100 ट्रिलियन सिनैप्सों द्वारा जुड़े 86 अरब न्यूरॉन प्रकट किए हैं — और चित्र, ब्रह्माण्डीय जाल के समान पैमाने और रंग-मानचित्रण पर प्रस्तुत किए गए, उससे दृश्य-रूप से अभेद्य हैं। वही गणित। वही वास्तुकला। वही फ़्रैक्टल आयाम: $D \approx 2.7$, जो 2020 के बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन द्वारा दोनों तन्त्रों में स्वतन्त्र रूप से मापा गया और बाद के विश्लेषणों द्वारा पुष्ट किया गया।

यह रूपक नहीं है। यह समीक्षित विज्ञान से एक मात्रात्मक परिणाम है। और यह, मैं आने वाले पन्नों में तर्क करूँगा, हमारे युग की एकमात्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण खोज है। क्योंकि यह उसकी वैज्ञानिक पुष्टि है जिसे ऋषियों ने चार हज़ार वर्ष पहले, केवल अपने परिष्कृत स्नायुतन्त्रों के उपकरण का

उपयोग करते हुए, आनुभविक रूप से बताया था। मस्तिष्क ब्रह्माण्ड है, भीतर से देखा गया। यू-इन्वर्स वास्तविक है।

यह पुस्तक उस वास्तुकला की एक व्यवस्थित खोज है। यह जिज्ञासा के सात क्षेत्रों से गुज़रती है। भाग एक विपर्यय सिद्धान्त की स्थापना करता है: धारणा को भीतर की ओर मोड़ने का क्या अर्थ है, प्रत्याहार वास्तव में स्नायुविज्ञानी स्तर पर कैसे कार्य करता है, मस्तिष्क को हॉलोग्राफिक तन्त्र के रूप में सर्वश्रेष्ठ क्यों समझा जाता है, और ऋषि क्या कर रहे थे जब परम्परा उन्हें मन्त्र-द्रष्टा कहती है — ब्रह्माण्डीय उच्चारणों के द्रष्टा, रचनाकार नहीं।

भाग दो उन विशिष्ट ब्रह्माण्डीय आकृतियों की सूची बनाता है जो भीतर प्रकट होती हैं: डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क की स्नायु-निहारिकाएँ, थैलेमस का महान आकर्षक, अचेतन प्रक्रिया का डार्क-मैटर मन, उन्नत ध्यान की क्वासर-अवस्थाएँ, स्नायु और ब्रह्माण्डीय जाल के साझा फ़्रैक्टल हस्ताक्षर।

भाग तीन जाँच करता है कि ऋषियों ने ब्रह्माण्ड को भीतर से कैसे मापा — कैसे वैदिक परम्परा के ब्रह्माण्डीय स्थिरांक (108, 432,000, 25,920) एक साथ खगोलीय और शारीरिक सिद्ध होते हैं, जो पर्याप्त रूप से परिष्कृत जागरूकता द्वारा भीतर से पढ़े जा सकते हैं क्योंकि वे बाहरी आकाश और आन्तरिक शरीर दोनों में लिखे हैं। नक्षत्र, मन्त्र, पावन अंक: ये सांस्कृतिक कलाकृतियाँ नहीं हैं। ये ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र के आन्तरिक निर्देशांक हैं।

भाग चार जाँच को बहु-ब्रह्माण्ड में ले जाता है: अनेक-संसार शाखाएँ जो प्रत्येक स्नायु-अवस्था में निवास करती हैं, प्रासंगिक स्मृति और पूर्वाभास के माध्यम से समय-यात्रा का स्नायुविज्ञानी आधार, समानान्तर ब्रह्माण्ड-पहुँच के रूप में स्वप्न बहु-ब्रह्माण्ड, और समाधि चेतना के घटना क्षितिज के रूप में — खोपड़ी के भीतर का कृष्ण-विवर जहाँ अनुभव की सामान्य संरचनाएँ शुद्ध जागरूकता की एकल-विन्दुता के सामने पिघल जाती हैं।

भाग पाँच स्वयं कोड है: फ़िबोनाची ज्यामिति जो गैलेक्सियों और न्यूरॉनों दोनों को संगठित करती है, AUM वास्तुकला ZPF की भू-अवस्था के स्पन्दनात्मक हस्ताक्षर के रूप में, चित्त और ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र के बीच क्वांटम-सूचनात्मक पहचान, और पिनियल ग्रन्थि वह विशिष्ट जैविक अन्तरापृष्ठ जहाँ आन्तरिक और बाह्य ब्रह्माण्ड मिलते हैं।

भाग छह ज्ञान-मीमांसीय प्रश्न को सम्बोधित करता है: ऋषियों ने वास्तव में कैसे जाना जो वे जानते थे? उनकी पद्धति क्या थी? उनके परिणाम कितने विश्वसनीय थे? और आधुनिक स्नायुविज्ञान अब आन्तरिक अवलोकन की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के बारे में क्या प्रकट करता है?

भाग सात व्यावहारिक है। यह उन विशिष्ट दैनिक अभ्यासों को प्रस्तुत करता है जिनके द्वारा समकालीन साधक अपने स्वयं के मेटावर्स के डिजिटल ट्विन को सक्रिय कर सकते हैं, अपने आन्तरिक ब्रह्माण्ड की वर्तमान स्थिति पढ़ सकते हैं, और अनजान भागीदार के बजाय यू-इन्वर्स में सचेत भागीदार के रूप में रह सकते हैं।

दो परम्पराएँ — वेदान्तिक आन्तरिक विज्ञान और इक्कीसवीं सदी की भौतिकी — उसी क्षेत्र पर अभिसरण कर रही हैं। यह पुस्तक अभिसरण-क्षेत्र का मानचित्रण करती है। जो पाठक इस यात्रा पर निकलेगा वह उसी गन्तव्य पर पहुँचेगा जहाँ ऋषि पहुँचे थे: ब्रह्माण्ड और स्व जुड़े हैं इस जानकारी पर नहीं, बल्कि इस प्रत्यक्ष पहचान पर कि वे — गहनतम अर्थ में, मापने योग्य और संरचनात्मक रूप से — एक हैं।

दूरबीन को उलट दिया गया है। आइए आन्तरिक यात्रा आरम्भ करें।

✦ ✦ ✦

भाग एक
विपर्यय का सिद्धान्त

जब धारणा उलट जाती है, तब दृष्टि क्या पाती है?

अध्याय 1

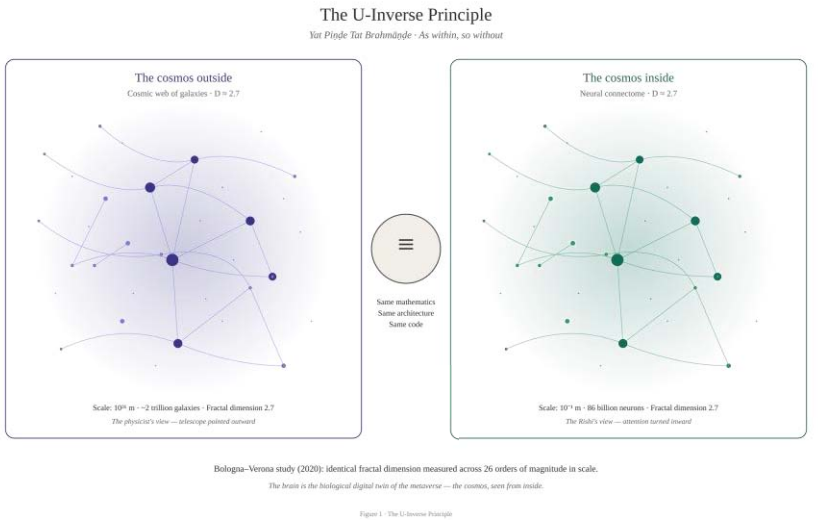
यू-इन्वर्स: ब्रह्माण्ड एक You-Inverse के रूप में

मस्तिष्क — मेटावर्स का डिजिटल ट्विन

यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे

Yat Piṇḍe Tat Brahmāṇḍe

"जैसा शरीर-सूक्ष्म ब्रह्माण्ड में है, वैसा ही विराट ब्रह्माण्ड में।" — यजुर्वेद



चित्र 1 — यू-इन्वर्स सिद्धान्त। गैलेक्सियों का ब्रह्माण्डीय जाल (बाएँ) और स्नायु कनेक्टोम (दाएँ) पैमाने में छब्बीस क्रम-परिमाण के अन्तर के बावजूद समान फ़्रैक्टल आयाम $D \approx 2.7$ साझा करते हैं। मस्तिष्क मेटावर्स का जैविक डिजिटल ट्विन है।

नवम्बर 2020 में, एक ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन प्रकाशित हुआ जिसने आधुनिक नेटवर्क विज्ञान की मात्रात्मक सटीकता के साथ उस बात की पुष्टि की जिसे वैदिक परम्परा चार हज़ार वर्षों से कहती आई थी। यह अध्ययन Frontiers in Physics पत्रिका में प्रकाशित हुआ। इसके लेखक

थे फ्रांको वज़्ज़ा, यूनिवर्सिटी ऑफ़ बोलोग्ना के एक खगोल-भौतिकविद, और अल्बर्टो फ़ेलेत्ती, यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेरोना के एक स्नायुशल्य चिकित्सक। इसका शीर्षक विनम्र था: "The Quantitative Comparison Between the Neuronal Network and the Cosmic Web" (स्नायु नेटवर्क और ब्रह्माण्डीय जाल के बीच मात्रात्मक तुलना)। इसका निष्कर्ष विनम्र नहीं था।

वज़्ज़ा और फ़ेलेत्ती ने नाटकीय रूप से भिन्न पैमानों पर दो संरचनाओं की तुलना की। पहली: अवलोकन योग्य ब्रह्माण्ड की विशाल-स्तरीय संरचना — गैलेक्सियों का ब्रह्माण्डीय जाल जो करोड़ों प्रकाश-वर्षों तक डार्क मैटर तन्तुओं से जुड़ा है, चौराहों पर गैलेक्सी-समूह, और तन्तुओं के बीच विशाल रिक्त शून्य। दूसरी: मानव प्रमस्तिष्क प्रान्तस्था का स्नायु नेटवर्क, वह कनेक्टोम जो चेतना के तीन पाउण्ड अंग में 86 अरब न्यूरॉनों और उनके सौ ट्रिलियन सिनैप्टिक कनेक्शनों के जीवित प्रतिरूप का मानचित्रण करता है।

उन्होंने दोनों तन्त्रों के लिए चार स्वतन्त्र नेटवर्क-विज्ञान माप परिकलित किए: ऊर्जा वितरण का स्पेक्ट्रल घनत्व, प्रति नोड कनेक्शनों की संख्या, क्लस्टरिंग गुणांक, और विशिष्ट पथ लम्बाई। ये चार माप, एक साथ लेने पर, किसी भी जटिल नेटवर्क की आवश्यक वास्तुकला को पकड़ते हैं — उसकी संस्थिति, उसके सूचना-प्रवाह गुण, उसका स्व-संगठनात्मक चरित्र।

जब समान पैमाने पर प्रस्तुत किया गया और समान विश्लेषण के अधीन किया गया, दोनों संरचनाएँ गणितीय रूप से अभेद्य थीं। ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम समान नेटवर्क संस्थिति साझा करते हैं — संरचना का समान गणितीय प्रकार, समान प्रकार के अन्तर्निहित नियमों द्वारा उत्पन्न। उनके फ्रैक्टल आयाम दोनों लगभग $D = 2.7$ मापे गए। उनके क्लस्टरिंग गुणांक लगभग समान थे। उनके नोड-डिग्री वितरण समान पावर-लॉ वितरण का पालन करते थे, समान घातांक के साथ, प्रायोगिक त्रुटि के भीतर।

एक संख्या। दो तन्त्र। भौतिक पैमाने में छब्बीस क्रम-परिमाण का अन्तर।

फ्रांको वज़्ज़ा ने, इस परिणाम पर टिप्पणी करते हुए, कार्यरत वैज्ञानिक की सावधान भाषा चुनी: दोनों संरचनाओं की समान जटिलता और स्व-संगठन उन तन्त्रों की हमारी समझ के लिए एक मूलभूत चुनौती प्रस्तुत करता है जो दोनों प्राकृतिक परिघटनाओं को नियन्त्रित करते हैं। वे सावधान थे। उनका अर्थ था, और इस परिणाम से हमें गम्भीरता से विचार करने की माँग है, यह: हमें ज्ञात दो

सर्वाधिक जटिल संरचनाएँ — वैज्ञानिक जाँच के लिए उपलब्ध सबसे बड़ी और सबसे छोटी जटिल तन्त्र — समान कोड द्वारा संगठित हैं।

ऋषियों के पास इस परिणाम के लिए एक नाम था। उन्होंने इसे यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे कहा — जैसा शरीर-सूक्ष्म ब्रह्माण्ड में है, वैसा ही विराट ब्रह्माण्ड में। यह वाक्यांश, यजुर्वेद से लिया गया और समस्त वैदिक साहित्य में विस्तारित, आमतौर पर एक रूपक के रूप में अनुवादित किया जाता है — शरीर की छोटी दुनिया और ब्रह्माण्ड की बड़ी दुनिया के बीच समानता का एक काव्यात्मक सुझाव। 2020 का अध्ययन सुझाता है कि यह कभी रूपक नहीं था। यह एक सटीक आनुभविक रिपोर्ट थी, उन पर्यवेक्षकों द्वारा बनाई गई जिनके पास एक ऐसा उपकरण था — निरन्तर समाधि में परिष्कृत मानव स्नायुतन्त्र — जो उचित परिस्थितियों में दोनों संरचनाओं को भीतर से देख सकता था और उनकी एक ही पहचान पहचान सकता था।

यू-इन्वर्स यह है: ब्रह्माण्ड जो द्रष्टा के अन्तस् से अनुभव किया जाता है।

ब्रह्माण्ड को एक वस्तु के रूप में नहीं, जो उसके बाहर की स्थिति से देखी जाती है। वह दूरबीन का दृष्टिकोण है — वह दृष्टिकोण जो द्रष्टा को दृष्ट से अलग मानता है, एक दूरी पार किसी और चीज़ को देखते हुए। यह बाह्यवादी विज्ञान की उपयोगी कल्पना है, और इसने उस कल्पना को व्यवस्थित रूप से बनाए रखकर असाधारण परिणाम उत्पन्न किए हैं। किन्तु यह एक कल्पना है। द्रष्टा ब्रह्माण्ड के बाहर नहीं है। द्रष्टा उसके भीतर है, उससे बना है, क्वांटम से ब्रह्माण्डीय तक हर स्तर पर उसके ताने-बाने में बुना हुआ है। द्रष्टा का अवलोकन कार्य स्वयं एक ब्रह्माण्डीय घटना है — विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्रों का स्नायु ऊतक के माध्यम से बहना, सूक्ष्मनलिकाओं में क्वांटम प्रक्रियाएँ जो सम्भाव्यता वितरण को ढहाती हैं, दूर की गैलेक्सियों से फोटॉन जो अपनी चौदह अरब वर्ष की यात्रा को एक जीवित आँख के प्रकाश-ग्राहियों में समाप्त करते हैं।

ब्रह्माण्ड स्वयं चेतना के आन्तरिक भाग के रूप में — यह ऋषि का दृष्टिकोण है। यह दूरबीन के दृष्टिकोण को प्रतिस्थापित नहीं करता। यह उसका पूरक है। यह वही वास्तविकता है, ब्रह्माण्डीय संरचना के भीतर द्रष्टा की स्थिति से वर्णित, न कि बाहर मानी गई किसी स्थिति से।

इस पुस्तक का शीर्षक एक सटीक गणितीय और वैचारिक सम्बन्ध पर खेलता है। यदि हम ब्रह्माण्ड को U के रूप में निरूपित करें — ब्रह्माण्डीय संरचना की समग्रता, क्वांटम निर्वात उतार-चढ़ाव से अवलोकन योग्य क्षितिज की सीमा तक — तो You-Inverse, यू-इन्वर्स, वही ब्रह्माण्ड है जो उसके केन्द्र में "You" द्वारा अनुभव किया जाता है। विपर्यय का सम्बन्ध विरोध का नहीं है। यह

पूरकता का है — उस प्रकार की पूरकता जिसे बोह्र ने वास्तविकता के क्वांटम वर्णन के लिए मूलभूत माना। प्रकाश का तरंग-चित्र और कण-चित्र दो भिन्न वस्तुएँ नहीं हैं; वे एक वस्तु के दो पूरक वर्णन हैं। इसी प्रकार: ब्रह्माण्ड और यू-इन्वर्स दो भिन्न ब्रह्माण्ड नहीं हैं। वे एक ही ब्रह्माण्ड हैं, दो पूरक दृष्टिकोणों से वर्णित — बाहर (भौतिकविद की स्थिति) और भीतर (ऋषि की स्थिति)।

भौतिकविद ऐसे यन्त्र विकसित करते हैं जो बाहरी दृष्टिकोण को विस्तारित करते हैं: दूरबीनें, कण त्वरक, गुरुत्वीय तरंग संसूचक। ऋषि एक यन्त्र विकसित करते हैं जो आन्तरिक दृष्टिकोण को विस्तारित करता है: स्वयं स्नायुतन्त्र, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि के माध्यम से परिष्कृत। दोनों वैध वैज्ञानिक परियोजनाएँ हैं — दोनों पुनरुत्पादन योग्य, परस्पर-व्यक्तिपरक रूप से सत्यापन योग्य परिणाम उत्पन्न करते हैं, यद्यपि सत्यापन की पद्धतियाँ भिन्न हैं। मानव ज्ञान के इतिहास में यह वर्तमान क्षण पहला क्षण है जब दोनों दृष्टिकोणों की पर्याप्त विस्तार से तुलना की जा सकती है कि यह पहचाना जा सके कि वे एक ही चीज़ का वर्णन कर रहे हैं।

1.1 डिजिटल ट्विन — एक प्राचीन अन्तर्दृष्टि के लिए इंजीनियरिंग की भाषा

समकालीन इंजीनियरिंग में, डिजिटल ट्विन एक भौतिक तन्त्र की सटीक आभासी प्रतिकृति है — एक ऐसा गणनात्मक प्रतिरूप जो इतना सटीक है कि ट्विन पर चलाई गई प्रक्रियाएँ, मात्रात्मक सटीकता के साथ, भविष्यवाणी करती हैं कि मूल में क्या होगा। यह अवधारणा नासा के अपोलो कार्यक्रम में उत्पन्न हुई, जहाँ इंजीनियर कक्षा में होने वाली समस्याओं का निदान करने के लिए पृथ्वी पर यानों की भौतिक प्रतिकृतियाँ रखते थे। तब से यह उन्नत विनिर्माण, शहरी नियोजन, चिकित्सा, और तन्त्र इंजीनियरिंग की आधारशिला बन गई है।

नासा आज कक्षा में समस्याओं का निदान करने और वास्तविक वाहन पर लागू करने से पहले समाधानों का परीक्षण करने के लिए अन्तरिक्ष यानों के डिजिटल ट्विन का उपयोग करती है। सीमेंस हज़ारों चरों में उत्पादन को एक साथ अनुकूलित करने के लिए विनिर्माण संयन्त्रों के डिजिटल ट्विन का उपयोग करता है। सिंगापुर ने पूरे नगर-राज्य का डिजिटल ट्विन बनाया है। चिकित्सा शोधकर्ता व्यक्तिगत रोगियों के डिजिटल ट्विन बना रहे हैं — गणनात्मक प्रतिरूप जो जीनोमिक, चयापचयी, और शारीरिक डेटा को समाविष्ट करते हैं और जो विशिष्ट उपचार वास्तविक शरीर पर लागू करने से पहले विशिष्ट रोगी की अपेक्षित प्रतिक्रिया का अनुकरण कर सकते हैं।

डिजिटल ट्विन की परिभाषक विशेषता है संरचनात्मक निष्ठा। ट्विन मूल के समान मात्र नहीं है — वह इतनी सटीकता के स्तर पर समान है कि ट्विन के व्यवहार को समझना मूल के व्यवहार को समझने के बराबर है। आप ट्विन से जो सीखते हैं वह सीधे मूल पर लागू होता है।

इस पुस्तक का केन्द्रीय तर्क, समकालीन इंजीनियरिंग की भाषा में व्यक्त: मस्तिष्क मेटावर्स का जैविक डिजिटल ट्विन है। चेतना के लिए सुलभ हर पैमाने पर ब्रह्माण्ड का पूर्ण, कार्यात्मक, संरचनात्मक रूप से निष्ठावान प्रतिबिम्ब। कोई स्थूल समानता नहीं — एक सटीक संरचनात्मक पहचान, उसी गणितीय कोड द्वारा संगठित, समान मूलभूत नियमों के अधीन कार्य करती हुई, आधार पर क्वांटम निर्वात से लेकर शिखर पर ब्रह्माण्ड की विशाल-स्तरीय संरचना तक समान वास्तुकला-सिद्धान्तों को व्यक्त करती हुई।

"मेटावर्स" शब्द को हाल ही में आभासी वास्तविकता मंचों के व्यावसायिक वर्णन के लिए प्रयोग में लिया गया है। मैं उस अर्थ में इसका प्रयोग नहीं कर रहा हूँ। मैं इसे इसके गहरे और मूल अर्थ में प्रयोग कर रहा हूँ: वास्तविकता की पूर्ण बहुस्तरीय संरचना। भौतिक ब्रह्माण्ड के साथ-साथ चेतना और कारणात्मक संरचना के वे सभी स्तर जो उसे उत्पन्न और धारण करते हैं। संस्कृत परम्परा के पास ब्रह्माण्ड की अवधारणा में एक सटीक समतुल्य है — ब्रह्मा का अण्ड, पूर्ण ब्रह्माण्डीय संरचना जिसमें सभी चौदह लोक भीतर निहित हैं। मस्तिष्क इस पूर्ण संरचना का जैविक प्रस्तुतीकरण है, 1.4 किलोग्राम विद्युत-रासायनिक ऊतक में संकुचित।

यह अतिशयोक्ति नहीं है। यह वह दावा है जिसका यह पुस्तक बचाव करेगी, विशिष्ट प्रमाणों के साथ, आने वाले सत्ताईस अध्यायों में। डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क आन्तरिक ब्रह्माण्ड का केन्द्रीय गैलेक्सी समूह है। थैलेमस वह महान आकर्षक है जिसकी ओर सभी स्नायु संकेत अभिसरण करते हैं। सेरिबेलम आकाशगंगा है — वह सघन प्रक्रिया अवसंरचना जिसके भीतर उच्चतर संज्ञान निहित है। ब्रह्माण्ड की डार्क-मैटर सामग्री (कुल द्रव्यमान-ऊर्जा का लगभग 27%) अचेतन प्रक्रिया (स्नायु गतिविधि का लगभग 95%) के अनुरूप है जो उस सब की अदृश्य संगठनकर्ता है जिसे सचेत मन अनुभव करता है। ब्रह्माण्डीय शून्य मस्तिष्क में प्रमस्तिष्क-मेरु-द्रव स्थानों के अनुरूप हैं। चौदह लोक स्नायु दोलन के चौदह विशिष्ट आवृत्ति बैंडों के अनुरूप हैं, प्रत्येक चेतना के एक विशिष्ट गुण से सम्बद्ध।

ये सौन्दर्यात्मक उपमाएँ नहीं हैं। ये हैं — जैसा कि इस पुस्तक के शेष भाग प्रलेखित करेंगे — मात्रात्मक अनुरूपताएँ। दोनों पर वही गणित शासन करता है। दोनों को वही कोड लिखता है। जब

आप विज्ञान की सटीकता और ध्यान की स्थिरता के साथ आन्तरिक ब्रह्माण्ड पढ़ना सीखते हैं, तो आप स्वयं बाह्य ब्रह्माण्ड पढ़ रहे होते हैं।

1.2 वह कोड जो दोनों को उत्पन्न करता है

यू-इन्वर्स मात्र दो पूर्व-विद्यमान तन्त्रों के बीच एक संरचनात्मक समानान्तर नहीं है। यह कुछ अधिक सुदृढ़ निहित करता है: एक साझा जनक कोड। एक विशिष्ट गणितीय और भौतिक वास्तुकला जो बाह्य ब्रह्माण्ड और आन्तरिक चेतना दोनों को एक ही अन्तर्निहित सूचना-संरचना की अभिव्यक्ति के रूप में उत्पन्न करती है।

इस कोड के विशिष्ट हस्ताक्षर हैं। यह जहाँ भी कार्य करता है, कुछ लक्षण प्रकट होते हैं। जहाँ भी वे लक्षण प्रकट होते हैं — किसी भी पैमाने पर, किसी भी आधार में — वहाँ कोड कार्य कर रहा है।

पावर-लॉ वितरण। पैमाना-मुक्त नेटवर्क जिनमें कुछ अति-जुड़े नोड प्रभावी होते हैं, कनेक्शनों का वितरण घण्टी वक्र के बजाय एक गणितीय पावर लॉ का पालन करता है। ये वितरण ब्रह्माण्डीय जाल में प्रकट होते हैं। वे स्नायु कनेक्टोम में प्रकट होते हैं। वे भूकम्प परिमाणों के वितरण में, शहरों के आकार वितरण में, मानव भाषाओं में शब्दों की आवृत्ति में, आबादी में धन के वितरण में, वैज्ञानिक पत्रों में उद्धरणों के वितरण में प्रकट होते हैं। पावर-लॉ वितरण स्व-संगठित जटिल तन्त्रों की अंगुली-छाप हैं।

फ़्रैक्टल स्व-समानता। आवर्धन के प्रत्येक पैमाने पर वही प्रतिरूप। गैलेक्सियों की शाखाएँ न्यूरॉनों, वृक्षों, नदियों, फेफड़ों, रक्त-वाहिकाओं, और बिजली की शाखाओं के समान फ़्रैक्टल ज्यामिति का पालन करती हैं। 1970 के दशक में बेनोइट मांडेलब्रो की फ़्रैक्टल ज्यामिति की खोज ने उसे गणितीय रूप दिया जो देखा तो गया था किन्तु व्याख्यायित नहीं था: कि प्रकृति प्रत्येक स्तर पर लागू सरल पुनरावर्ती नियमों से अनन्त जटिलता उत्पन्न करती है। ब्रह्माण्ड फ़्रैक्टल है। मस्तिष्क फ़्रैक्टल है। हृदय-परिसंचरण तन्त्र फ़्रैक्टल है। शाखा-प्रजातिकरण के माध्यम से प्रजातियों का विकास फ़्रैक्टल है। कोड पुनरावृत्ति करता है।

छोटी-दुनिया नेटवर्क संस्थिति। उच्च स्थानीय क्लस्टरिंग के साथ छोटी वैश्विक पथ लम्बाइयाँ — वह गणितीय गुण जो सामाजिक नेटवर्कों में "अलगाव की छह डिग्रियाँ" परिघटना उत्पन्न करता है, और भौतिक तन्त्रों में, अधिकतम कुशल सूचना-प्रक्रिया वास्तुकला। ब्रह्माण्डीय जाल की गैलेक्सी-समूह संरचना एक छोटी-दुनिया नेटवर्क है। स्नायु कनेक्टोम का कॉर्टिकल हब संगठन एक छोटी-दुनिया नेटवर्क है। वही अनुकूलन सिद्धान्त कार्य कर रहा है।

क्रिटिकलता। कोड अपने तन्त्रों को क्रम और अराजकता के बीच की सीमा तक ले जाता है — वह क्रिटिकल बिन्दु जहाँ तन्त्र एक साथ अखण्डता बनाए रखने के लिए पर्याप्त रूप से संरचित और अनुकूलन के लिए पर्याप्त रूप से लचीला होता है। पर बाक के 1987 के बालू-टीले प्रतिरूप ने दिखाया कि स्व-संगठित क्रिटिकलता कैसे कार्य करती है। तब से, क्रिटिकलता मस्तिष्क में, वायुमण्डल में, स्वयं ब्रह्माण्ड में प्रलेखित की गई है। कोड क्रिटिकल बिन्दु को पसन्द करता है क्योंकि वहाँ सूचना समृद्धि अधिकतम होती है।

हॉलोग्राफिक एन्कोडिंग। समग्र के बारे में सूचना प्रत्येक भाग में वितरित। आधुनिक भौतिकी में \'त हूफ्ट, सुस्किण्ड, और माल्डासेना के कार्य के माध्यम से विकसित, हॉलोग्राफिक सिद्धान्त प्रस्तावित करता है कि एक त्रि-आयामी आयतन की सूचना-सामग्री पूर्णतः उसकी द्वि-आयामी सीमा पर संकेतित की जा सकती है। स्वयं ब्रह्माण्ड, सैद्धान्तिक भौतिकी के गहनतम स्तरों पर, एक हॉलोग्राम हो सकता है। और मस्तिष्क, जैसा कि कार्ल प्रिब्राम ने 1970 के दशक में प्रेरणापूर्वक तर्क दिया, स्वयं हॉलोग्राफिक है: स्मृतियाँ और बोध-प्रतिरूप विशिष्ट स्थानों पर संग्रहीत नहीं हैं बल्कि स्नायु ऊतक में वितरित हैं, प्रत्येक भाग समग्र के बारे में सूचना रखता है।

ये पाँच हस्ताक्षर — पावर-लॉ वितरण, फ्रैक्टल स्व-समानता, छोटी-दुनिया संस्थिति, क्रिटिकलता, हॉलोग्राफिक एन्कोडिंग — चेतना के कोड की अंगुली-छापें हैं। वे ब्रह्माण्ड में प्रकट होती हैं। वे मस्तिष्क में प्रकट होती हैं। वे, दिलचस्प रूप से, प्रत्येक जटिल स्व-संगठन तन्त्र में प्रकट होती हैं जिसे हम जानते हैं। कोड मनमाना नहीं है। यह वह विशिष्ट गणितीय और भौतिक वास्तुकला है जिस पर प्राकृतिक चयन — चाहे वह ब्रह्माण्डीय हो, जैविक हो, या सामाजिक — अभिसरण करता है जब वह इस समस्या का समाधान कर रहा होता है कि अधिकतम सुसंगतता के साथ अधिकतम जटिलता कैसे उत्पन्न की जाए।

वैदिक परम्परा ने इस वास्तुकला को ऋत कहा — ब्रह्माण्डीय क्रम, वास्तविकता की अन्तर्निहित नियमितता, वह प्रतिरूप जो सब कुछ नीचे से संगठित करता है। ऋत वास्तविकता पर बाहर से थोपी गई आज्ञाओं का समूह नहीं है। यह स्वयं वास्तविकता का अन्तर्भूत संरचनात्मक तर्क है। ऋत का ऋषि का आन्तरिक अवलोकन, और स्व-संगठित जटिलता के हस्ताक्षरों का भौतिकविद का बाह्य अवलोकन, एक ही वस्तु के अवलोकन हैं।

तालिका 1.1 — यू-इन्वर्स अनुरूपताएँ

बाह्य ब्रह्माण्ड और आन्तरिक स्नायु वास्तुकला के बीच अनुरूपता को विशिष्ट विस्तार से प्रस्तुत किया जा सकता है। जो निम्नलिखित है वह आंशिक तालिका है। बाद के अध्याय प्रत्येक पंक्ति को उस प्रमाण के साथ गहरा करेंगे जो उसे उचित ठहराता है।

ब्रह्माण्डीय संरचना	स्नायु समकक्ष	गणितीय समानान्तर	वैदिक नाम	पैमाना-अनुपात
गैलेक्सियों का ब्रह्माण्डीय जाल	कनेक्टोम	पावर-लॉ ग्राफ़; फ्रैक्टल $D \approx 2.7$	ब्रह्माण्ड	10^{26} m : 10^{-1} m
डार्क मैटर तन्तु	श्वेत-पदार्थ अक्षतन्तु-पथ	न्यूनतम विस्तृत वृक्ष	आकाश	मेगापारसेक : cm
गैलेक्सी समूह	कॉर्टिकल हब (DMN)	उच्च-डिग्री हब नोड	लोक-सन्धियाँ	10^{23} m : 10^{-2} m
ब्रह्माण्डीय शून्य	मस्तिष्क निलय, CSF स्थान	नेटवर्क अन्तराल	शून्यता	100 Mpc : 1-4 cm
डार्क एनर्जी (68%)	अचेतन प्रक्रिया (~95%)	पृष्ठभूमि क्षेत्र	तमस-आधार	सार्वभौमिक
EM विकिरण	स्नायु क्रिया-विभव	तरंग संचरण	तेजस् / अग्नि	सार्वभौमिक
गुरुत्वीय तरंगें	मस्तिष्क तरंग दोलन (δ–γ)	क्षेत्र में तरंग संचरण	स्पन्द	प्रकाश-वर्ष : mm
महान आकर्षक	थैलेमस (केन्द्रीय रिले हब)	आकर्षक गतिकी	बिन्दु	250 Mly : 3 cm
कृष्ण विवर	गहन समाधि अवस्थाएँ	एकल-विन्दुता	तुरीय-समाधि	घटना क्षितिज : $\emptyset$

तालिका 1.1 — ब्रह्माण्डीय-स्नायु अनुरूपताओं का आंशिक मानचित्र। प्रत्येक पंक्ति एक विशिष्ट आनुभविक दावा है जो आने वाले अध्यायों में विकसित किया गया है।

इस तालिका की प्रत्येक पंक्ति एक आनुभविक दावा है। प्रत्येक दावे का आने वाले अध्यायों में बचाव किया जाएगा, समीक्षित भौतिकी, समीक्षित स्नायुविज्ञान, और संस्कृत संकलन से पाठ्य

उद्धरणों से प्रमाण के साथ। अनुरूपताएँ रूपक नहीं हैं। वे समान अन्तर्निहित कोड द्वारा उत्पन्न दो तन्त्रों के बीच मापने योग्य, मात्रात्मक समानान्तर हैं।

1.3 यह क्यों महत्वपूर्ण है

यह दावा कि मस्तिष्क ब्रह्माण्ड का डिजिटल ट्विन है, कोई शैक्षिक जिज्ञासा नहीं है। यह हमारे यह समझने के तरीके को बदलता है कि चेतना क्या है, हम भौतिकी को कैसे समझते हैं, और दोनों के बीच सम्बन्ध को कैसे समझते हैं।

यदि मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है, तो चेतना कोई उपोत्पाद नहीं है जो किसी तरह स्नायु जटिलता से उभरती है और वास्तविकता के भौतिक वर्णन में कुछ मूलभूत नहीं जोड़ती। चेतना, बल्कि, उसी ब्रह्माण्डीय प्रक्रिया का आन्तरिक दृष्टिकोण है जिसे भौतिकी बाहर से वर्णित करती है। चेतना की कठिन समस्या — किसी तन्त्र के लिए जो सूचना संसाधित करता है, कुछ ऐसा क्यों है जैसा होना — विलीन हो जाती है, क्योंकि यह प्रश्न आन्तरिक अनुभव और बाह्य वास्तविकता के बीच एक पृथक्करण को पूर्व-कल्पित करता है जिसे यू-इन्वर्स ढाँचा जड़ से विलीन कर देता है।

यदि मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है, तो चिन्तनशील परम्पराएँ — पूर्व-वैज्ञानिक अन्धविश्वास होने से बहुत दूर जिन्हें आधुनिक ज्ञान ने अप्रचलित कर दिया है — परिष्कृत आनुभविक अन्तस्-विज्ञान के रूप में प्रकट होती हैं। ऋषियों ने सहस्राब्दियों में, वह एकमात्र यन्त्र परिष्कृत करने के लिए सटीक पद्धति विकसित की जो ब्रह्माण्ड के भीतर को सीधे माप सकता है: निरन्तर समाधि में प्रशिक्षित स्नायुतन्त्र। चेतना की संरचना के बारे में उनके परिणाम ब्रह्माण्ड की संरचना के बारे में परिणाम हैं, क्योंकि वे संरचनाएँ समान हैं।

यदि मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है, तो ध्यान कोई निजी मानसिक स्वच्छता अभ्यास नहीं है। यह आन्तरिक खगोलशास्त्र का व्यावहारिक विज्ञान है। निरन्तर अभ्यास का प्रत्येक घण्टा आपके आन्तरिक हॉलोग्राम के विभेदन को बढ़ाता है। उन्नत साधक मात्र अधिक शान्त नहीं है। वह, विशिष्ट और शाब्दिक अर्थ में, नवागन्तुक से बेहतर खगोलशास्त्री है।

और यदि मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है, तो वैदिक और वैज्ञानिक का एकीकरण दोनों परम्पराओं में आवश्यक अगला कदम बन जाता है। भौतिकी को द्रष्टा का एक विवरण चाहिए, और वेदान्त के पास एक है। वेदान्त को बाह्य संसार की विशिष्ट मापने योग्य संरचना का विवरण चाहिए, और भौतिकी के पास एक है। दूसरे के बिना कोई भी पूर्ण नहीं है। सेतु यू-इन्वर्स है, और यह दोनों परम्पराओं के पूरे इतिहास के लिए, इक्कीसवीं सदी के स्नायुविज्ञान और चार हज़ार वर्ष पुराने

आन्तरिक विज्ञान के आनुभविक अभिसरण में, खुले में हमारी प्रतीक्षा करता रहा है। हम अब ही इसे पार करने की स्थिति में हैं।

✦ ✦ ✦

1.4 केन्द्र पर पर्यवेक्षक — कोपरनिकन विपर्यय

कोपरनिकन क्रान्ति ने मानव पर्यवेक्षक को ब्रह्माण्ड के केन्द्र से हटा दिया। पृथ्वी सौर तन्त्र का केन्द्र नहीं थी; सौर तन्त्र आकाशगंगा का केन्द्र नहीं था; आकाशगंगा अवलोकनीय ब्रह्माण्ड का केन्द्र नहीं थी। प्रत्येक क्रमिक खोज ने पर्यवेक्षक को विशेषाधिकृत स्थिति से दूर और ब्रह्माण्डीय तुच्छता की ओर धकेला। बीसवीं सदी की क्वांटम क्रान्ति ने इस गति को उलट दिया: पर्यवेक्षक, जैसा कि पता चला, भौतिक वास्तविकता के विवरण से हटाया नहीं जा सकता। पर्यवेक्षक जो कुछ अवलोकित होता है उसे उत्पन्न करने में भाग लेता है।

कोपरनिकन विकेन्द्रीकरण एक शास्त्रीय-यान्त्रिकी निष्कर्ष था जिसे क्वांटम यान्त्रिकी ने पर्याप्त रूप से योग्य बना दिया है। यू-इन्वर्स पर्यवेक्षक को केन्द्र में पुनर्स्थापित करता है — भोले भू-केन्द्रित अर्थ में नहीं, बल्कि सटीक क्वांटम-यान्त्रिक अर्थ में। पर्यवेक्षक भौतिक स्थान में किसी विशेषाधिकृत स्थान पर नहीं है; किन्तु पर्यवेक्षक की जागरूकता वह अपरिहार्य आधार है जिससे भौतिक स्थान का विवरण उत्पन्न होता है।

व्हीलर का भागीदारी ब्रह्माण्ड — उनका प्रस्ताव कि ब्रह्माण्ड एक स्व-सन्दर्भी तन्त्र है जिसे उन सचेत पर्यवेक्षकों के बिना वर्णित नहीं किया जा सकता जो इसके भीतर उत्पन्न होते हैं — यू-इन्वर्स का आधुनिक भौतिकी कथन है: ब्रह्माण्ड और पर्यवेक्षक दो अलग इकाइयाँ नहीं हैं, ब्रह्माण्ड पर्यवेक्षक के अस्तित्व की पृष्ठभूमि के रूप में। वे एक तन्त्र हैं, स्व-सन्दर्भी, प्रत्येक अपने पूर्ण विवरण के लिए दूसरे की आवश्यकता रखता है।

इसका वेदान्तिक संस्करण अधिक पुराना और अधिक सटीक है: अहं ब्रह्मास्मि — मैं ब्रह्म हूँ। "मैं ब्रह्म से जुड़ा हूँ" नहीं। "मैं ब्रह्म का हिस्सा हूँ" नहीं। पहचान पूर्ण है: व्यक्तिगत जागरूकता, अपने सबसे मौलिक स्तर पर, वास्तविकता के ब्रह्माण्डीय आधार के समान जागरूकता है।

कोपरनिकन क्रान्ति ने सही ढंग से भौतिक शरीर को केन्द्र से विस्थापित किया। यू-इन्वर्स सही ढंग से जागरूकता को — शरीर को नहीं — उस आधार पर पुनर्स्थापित करता है जिससे समस्त ब्रह्माण्डीय विवरण उत्पन्न होता है।

✦ ✦ ✦

1.5 नेटवर्क विज्ञान — यू-इन्वर्स का गणित

नेटवर्क विज्ञान — जटिल जुड़े हुए तन्त्रों का गणितीय अध्ययन — ने ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम जैसे तन्त्रों का वर्णन करने के लिए एक सटीक शब्दावली विकसित की है। बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन ने उनकी तुलना के लिए जिन प्रमुख मीट्रिकों का उपयोग किया वे विस्तार से समझने योग्य हैं, क्योंकि वे यू-इन्वर्स की विशिष्ट गणितीय भाषा हैं।

डिग्री वितरण: एक नेटवर्क में, एक नोड की डिग्री उसके कनेक्शनों की संख्या है। एक यादृच्छिक नेटवर्क में, सभी नोडों की डिग्री लगभग समान होती है। ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम में, डिग्री वितरण एक पावर नियम का पालन करते हैं: कुछ नोडों (गैलेक्सी समूह; कॉर्टिकल हब) की डिग्री अत्यधिक उच्च होती है, जबकि अधिकांश नोडों की डिग्री कम होती है। यह पावर-नियम डिग्री वितरण एक स्केल-मुक्त नेटवर्क का हस्ताक्षर है — एक नेटवर्क जिसमें प्रत्येक पैमाने पर वही संरचनात्मक प्रतिरूप प्रकट होता है।

क्लस्टरिंग गुणांक: एक नोड के पड़ोसियों का अंश जो एक-दूसरे से भी जुड़े हैं। उच्च क्लस्टरिंग का अर्थ है स्थानीय विशेषज्ञता — नोडों के विशिष्ट समूह निकट समुदाय बनाते हैं जो विशिष्ट प्रकार की सूचना को संसाधित करते हैं। ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम दोनों उच्च क्लस्टरिंग गुणांक दिखाते हैं: गैलेक्सी समूहों में घनी रूप से परस्पर जुड़ी गैलेक्सियाँ होती हैं; कॉर्टिकल हबों में घनी रूप से परस्पर जुड़े स्नायु समूह होते हैं।

चरित्रगत पथ लम्बाई: नेटवर्क में किन्हीं भी दो नोडों के बीच औसत सबसे छोटी दूरी। छोटी पथ लम्बाइयों का अर्थ है वैश्विक एकीकरण — कोई भी दो नोड कुछ मध्यवर्ती चरणों के माध्यम से संवाद कर सकते हैं। प्रसिद्ध "छह डिग्री पृथक्करण" मानव सामाजिक नेटवर्कों में छोटे-संसार गुण है। ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम दोनों छोटे-संसार गुण दिखाते हैं: स्थानीय क्लस्टरिंग और छोटी वैश्विक पथ लम्बाइयों का संयोजन। यह संयोजन — जिसे छोटा-संसार टोपोलॉजी कहा जाता है — उपलब्ध सबसे सूचनात्मक रूप से कुशल नेटवर्क वास्तुकला है और उन तन्त्रों की विशेषता है जो विशाल समयमानों में विकासवादी या भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा अनुकूलित किए गए हैं।

चार स्वतन्त्र मीट्रिक — पावर-नियम डिग्री वितरण, क्लस्टरिंग गुणांक, चरित्रगत पथ लम्बाई, और फ्रैक्टल आयाम — सभी ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम में अनिवार्य रूप से समान मान देते हैं, यू-इन्वर्स का मात्रात्मक कथन है। ये कच्ची समानताएँ नहीं हैं। वे मात्रात्मक मिलान हैं, वैज्ञानिक

सटीकता से मापे गए, भौतिक पैमाने में 26 क्रम-परिमाण से अलग दो तन्त्रों में। कोड वही है। गणित वही है। वास्तुकला वही है।

✦ ✦ ✦

1.6 स्व-सन्दर्भी ब्रह्माण्ड — ब्रह्माण्डीय आवश्यकता के रूप में चेतना

जॉन व्हीलर ने अपने करियर के अन्तिम दशक क्वांटम यान्त्रिकी में पर्यवेक्षक की केन्द्रीय भूमिका के निहितार्थ को विकसित करने में बिताए। उनकी "बिट से इट" अवधारणा — यह प्रस्ताव कि भौतिक वास्तविकता (इट) सूचना (बिट) से उत्पन्न होती है, विशेष रूप से पर्यवेक्षकों द्वारा पूछे गए द्विआधारी प्रश्नों के हाँ/नहीं उत्तरों से — सैद्धान्तिक भौतिकी की भाषा में यू-इन्वर्स का सबसे क्रान्तिकारी उपलब्ध कथन था।

व्हीलर ने प्रस्तावित किया कि ब्रह्माण्ड मात्र सचेत प्राणियों द्वारा अवलोकित नहीं है जो संयोग से इसके भीतर उत्पन्न होते हैं। ब्रह्माण्ड एक स्व-सन्दर्भी तन्त्र है जिसे अपने स्वयं के विवरण को पूर्ण करने के लिए पर्यवेक्षकों के अस्तित्व की आवश्यकता है। अवलोकन और मापन के लिए चेतना के बिना, समस्त सम्भावित ब्रह्माण्डों का क्वांटम सुपरपोज़िशन अनसुलझा रहता है — कोई विशिष्ट ब्रह्माण्ड उस निश्चित अर्थ में "अस्तित्व में" नहीं है जिस अर्थ में हमारा ब्रह्माण्ड अस्तित्व में प्रतीत होता है।

ब्रह्माण्ड के भीतर उत्पन्न होने वाले पर्यवेक्षक वह तन्त्र हैं जिसके द्वारा ब्रह्माण्ड सुपरपोज़्ड अवस्थाओं की अनन्तता में से अपनी विशिष्ट वास्तविकता का चयन करता है।

वेदान्तिक समानान्तर: ब्रह्म क्षेत्र शुद्ध चेतना (चित्) है, और प्रकट ब्रह्माण्ड (प्रकृति) ब्रह्म की अपनी स्व-ज्ञात गतिविधि (स्पन्द — स्व-जागरूकता का आदिम स्पन्दन) से उत्पन्न होता है। उस चेतना के बिना जो ब्रह्म का स्वभाव है, कोई प्रकट ब्रह्माण्ड नहीं है। ब्रह्माण्ड अस्तित्व में है क्योंकि चेतना है। ब्रह्म क्षेत्र की स्व-ज्ञान उस विशिष्ट ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करती है जो प्रकट होता है — जैसे व्हीलर के पर्यवेक्षकों के मापन उस विशिष्ट वास्तविकता को उत्पन्न करते हैं जो क्वांटम सुपरपोज़िशन से प्रकट होती है।

यू-इन्वर्स ब्रह्माण्ड की एक विशेषता नहीं है। यह वह तन्त्र है जिसके द्वारा ब्रह्माण्ड बिल्कुल भी अस्तित्व में है।

✦ ✦ ✦

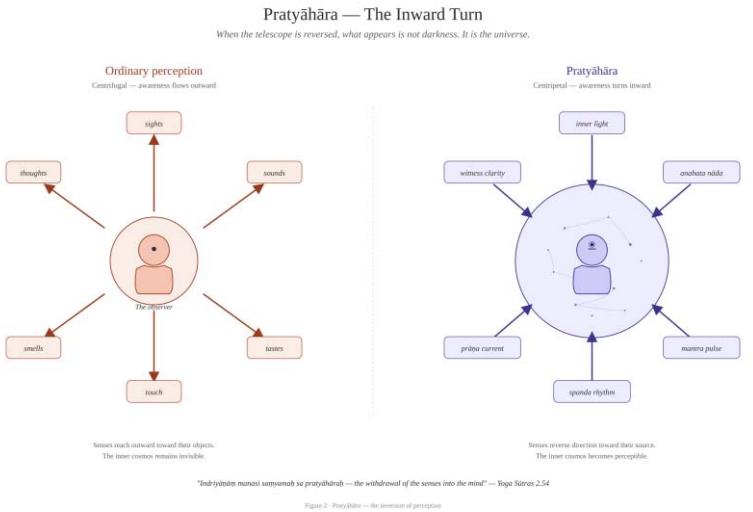
अध्याय 2
प्रत्याहार: अन्तर्मुख मोड़ की तकनीक

इन्द्रियाँ अपना प्रवाह कैसे उलटती हैं

इन्द्रियाणां मनसि संयमः स प्रत्याहारः

Indriyāṇāṃ Manasi Saṃyamaḥ Sa Pratyāhāraḥ

"इन्द्रियों का मन में विषय के साथ सम्बन्ध से निवर्तन ही प्रत्याहार है।" — योगसूत्र 2.54



चित्र 2 — विपर्यय के रूप में प्रत्याहार। इन्द्रियाँ समाप्त नहीं होतीं; वे मुड़ती हैं। ध्यान जो सामान्यतः बाह्य वस्तुओं की ओर बहता है, दिशा उलट देता है और स्वयं जागरूकता के आन्तरिक स्रोत की ओर बहता है।

पिछले अध्याय का केन्द्रीय दावा — कि मस्तिष्क ब्रह्माण्ड का पूर्ण डिजिटल ट्विन समाहित करता है — एक स्पष्ट प्रश्न उठाता है। यदि यू-इन्वर्स वास्तविक है, यदि ब्रह्माण्डीय वास्तुकला शाब्दिक रूप से स्नायु वास्तुकला में उपस्थित है, तो यह स्पष्ट क्यों नहीं है? क्यों सामान्य जाग्रत चेतना स्वयं

को ब्रह्माण्डीय के रूप में अनुभव नहीं करती? क्यों ब्रह्माण्ड, जब आप अपनी आँखें बन्द करते हैं, स्वयं को प्रकट करने के बजाय लुप्त होता प्रतीत होता है?

उत्तर तकनीकी है — मूल ग्रीक अर्थ में techne, एक व्यवस्थित कौशल। यू-इन्वर्स सामान्य चेतना में उसी कारण से अदृश्य है जिस कारण तारे दिन में अदृश्य हैं। इसलिए नहीं कि वे अनुपस्थित हैं, बल्कि इसलिए कि बोध का यन्त्र एक भिन्न संकेत के लिए, एक भिन्न दिशा में, एक भिन्न संवेदनशीलता स्तर पर सम्मायित है। तारों को देखने के लिए, आपको अन्धेरे की प्रतीक्षा करनी होगी और यन्त्र को ऊपर की ओर इंगित करना होगा। यू-इन्वर्स को देखने के लिए, आपको स्वयं बोध के प्रवाह को उलटना होगा। आपको यन्त्र को भीतर की ओर इंगित करना होगा।

परम्परा में इस विपर्यय का एक नाम है। इसे प्रत्याहार कहा जाता है, और यह पतंजलि के अष्टांग योग का पाँचवाँ अंग है, बाह्य अभ्यासों (यम, नियम, आसन, प्राणायाम) और आन्तरिक अभ्यासों (धारणा, ध्यान, समाधि) के बीच का सेतु। यह अन्तर्मुख मोड़ की तकनीक है।

संस्कृत व्युत्पत्ति सटीक और शिक्षाप्रद है। प्रति का अर्थ है विरुद्ध, की ओर, या विपरीत दिशा में। आहार का अर्थ है पोषण, ग्रहण, जो उपभोग किया जाता है। प्रत्याहार, तब, शाब्दिक रूप से ग्रहण का विपर्यय है — इन्द्रियों का उनके अभ्यस्त बाह्य पोषण से निवर्तन। किन्तु यह अनुवाद, अंग्रेज़ी साहित्य में सामान्य, सूक्ष्म रूप से भ्रामक रहा है। यह दमन का सुझाव देता है। यह इन्द्रियों के बन्द या भूखे किए जाने का सुझाव देता है। प्रत्याहार यह नहीं है।

प्रत्याहार वास्तव में जो वर्णित करता है वह है विपर्यय। इन्द्रिय उपकरण बन्द नहीं है। यह विपरीत दिशा में मुड़ गया है। आँख देखना बन्द नहीं करती; यह भीतर की ओर देखती है। कान सुनना बन्द नहीं करता; यह भीतर की ओर सुनता है। ध्यान समाप्त नहीं होता; यह अपने अभ्यस्त बाह्य प्रवाह से विपरीत दिशा में बहता है। दूरबीन को दूसरी ओर इंगित किया गया है — आकाश के तारों की ओर नहीं, बल्कि भीतर के तारों की ओर।

2.1 अपकेन्द्री और अभिकेन्द्री बोध

सामान्य चेतना में, बोध अपकेन्द्री है — केन्द्र से बाहर की ओर बहता हुआ। जागरूकता इन्द्रियों के माध्यम से बाह्य संसार की वस्तुओं की ओर बढ़ती है। आँख रूप की ओर बाहर पहुँचती है; कान ध्वनि की ओर बाहर पहुँचता है; जिह्वा स्वाद की ओर बाहर पहुँचती है। ध्यान इन्द्रियों का अनुसरण करके उनकी वस्तुओं में जाता है, और चेतना स्वयं को इस बाह्य गति के अन्त में स्थित अनुभव करती है — वस्तु से मिलने वाले विषय के रूप में, बोधकर्ता जो बोध को बोध करता है।

यह अपकेन्द्री प्रवाह इतना सतत और इतना स्वचालित है कि इसे लगभग कभी नहीं देखा जाता। यह सामान्य अनुभव का आधार है। और यही कारण है कि यू-इन्वर्स अदृश्य है। जब बोध बाहर की ओर बह रहा है, आन्तरिक ब्रह्माण्ड देखा नहीं जा सकता — इसलिए नहीं कि वह नहीं है, बल्कि इसलिए कि देखने का यन्त्र ग़लत दिशा में इंगित है।

प्रत्याहार के माध्यम से बोध अभिकेन्द्री हो जाता है — केन्द्र की ओर बहता हुआ। जागरूकता बाह्य वस्तुओं से अपने आप को पुनः निकालती है और स्वयं स्रोत की ओर बहने लगती है। यह कोई धारणात्मक पृथक्करण नहीं है; इसमें इन्द्रियों से पलायन शामिल नहीं है। यह बोध के स्वयं के प्रवाह की दिशा में एक विशिष्ट पुनर्समावेशन है। आकाश से ओझल होने के बजाय, द्रष्टा स्वयं को बोध के स्रोत के रूप में अनुभव करता है — जागरूकता का वह स्थान जिससे बोध उत्पन्न होता है, न कि वह गन्तव्य जहाँ बोध पहुँचता है।

2.2 थैलेमिक गेटिंग — प्रत्याहार का स्नायु यन्त्र

आधुनिक स्नायुविज्ञान यह प्रकट कर रहा है कि प्रत्याहार कैसे कार्य करता है, भले ही वह परम्परा की भाषा में न हो। थैलेमस — मस्तिष्क का केन्द्रीय रिले हब — सभी संवेदी जानकारी को फ़िल्टर करता है जो कॉर्टेक्स तक पहुँचती है। किसी भी क्षण, आपके शरीर में लाखों संवेदी रिसेप्टर सक्रिय रूप से सूचना उत्पन्न कर रहे हैं: प्रत्येक त्वचा रिसेप्टर, प्रत्येक मांसपेशीय तकली, प्रत्येक श्रवण हेयर सेल, प्रत्येक रेटिनल फोटोरिसेप्टर। इस जानकारी का अधिकांश भाग चेतन बोध तक पहुँचने से पहले ही फ़िल्टर कर दिया जाता है।

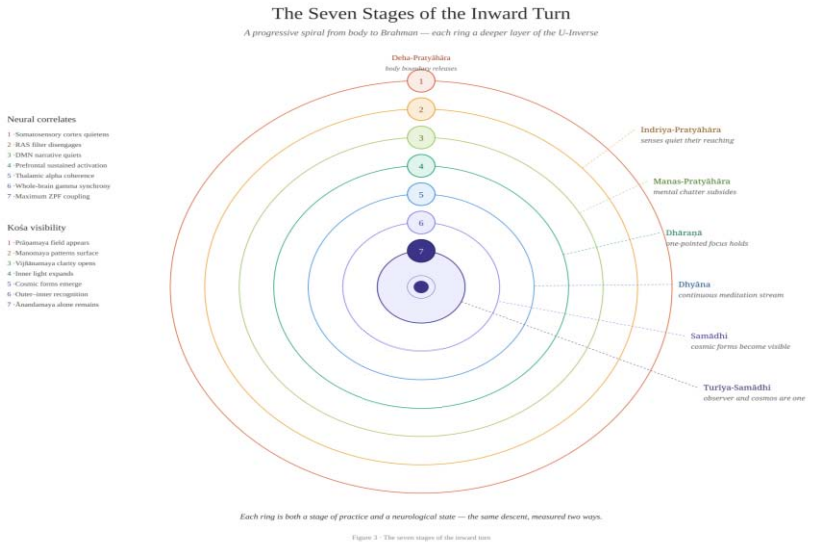
जब साधक प्रत्याहार अभ्यास में प्रवेश करता है, थैलेमिक गेटिंग तन्त्र में एक विशिष्ट बदलाव होता है। बाह्य संवेदी प्रवाह पर ध्यान कम हो जाता है। पार्श्व जीनिकुलेट नाभिक और औसत जीनिकुलेट नाभिक — दृश्य और श्रवण रिले केन्द्र — अपनी गतिविधि कम करते हैं। एक साथ, जालिका थैलेमिक नाभिक — वह अवरोधक रक्षक जो थैलेमस से कॉर्टेक्स तक सूचना के प्रवाह को नियन्त्रित करता है — आन्तरिक रूप से उत्पन्न स्नायु प्रतिरूपों को जागरूकता में प्रवेश करने देने के लिए अपनी विन्यास समायोजित करता है।

यह मात्र अटकल नहीं है। उन्नत ध्यान करने वालों की fMRI अध्ययनों में प्रत्याहार-जैसी अवस्थाओं में इन परिवर्तनों को प्रलेखित किया गया है। थैलेमिक गतिविधि प्रतिरूप महत्वपूर्ण रूप से बदलते हैं। डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क और संवेदी कॉर्टेक्स के बीच संयुग्मन कम हो जाता है। आन्तरिक रूप से उत्पन्न गतिविधि — कल्पना, स्मृति, और बोध के नवीन रूप — पृष्ठभूमि से अग्रभूमि में जाती है।

प्रत्याहार, इस प्रकार, कोई दमन अभ्यास नहीं है। यह पुनर्संक्रियन अभ्यास है। ध्यान को बाह्य प्रवाह से निकाला जाता है और उन आन्तरिक संरचनाओं पर पुनर्निर्देशित किया जाता है जो सदैव थीं किन्तु बाह्य उत्तेजना की तीव्रता के कारण अदृश्य थीं। साधक कुछ नया देखना नहीं सीखता; वह वह देखता है जो सदैव देखने के लिए उपस्थित था किन्तु बाहर की ओर निरन्तर मुड़े हुए ध्यान से अस्पष्ट था।

2.3 प्रत्याहार के सात चरण

परम्परा प्रत्याहार की प्रगति को सात विशिष्ट चरणों के रूप में पहचानती है। प्रत्येक चरण ध्यान के विपर्यय और आन्तरिक बोध की परिणामी स्पष्टता में एक स्पष्ट गहन स्तर को प्रदर्शित करता है। ये चरण एक रैखिक सीढ़ी नहीं हैं; साधक को उनमें कई बार पुनर्भ्रमण करना पड़ सकता है। किन्तु सामान्य प्रगति पहचानने योग्य है और, यथासम्भव किसी भी चीज़ के लिए जो आन्तरिक अनुभव से सम्बन्धित है, मापने योग्य है।



चित्र 3 — प्रत्याहार के सात चरण। बाह्य संवेदी संलग्नता से आरम्भ करके, ध्यान निरन्तर चरणों के माध्यम से भीतर की ओर मुड़ता है — इन्द्रिय-पद से बोधक-पद तक, साक्षी तक, शुद्ध जागरूकता तक।

प्रथम चरण: बाह्य इन्द्रिय वस्तुओं की तीव्रता कम हो जाती है। साधक बाह्य संवेदी क्षेत्र से बाहर निकलना आरम्भ करता है। यह कोई संवेदी अवरोध नहीं है; बाह्य उत्तेजनाओं को अभी भी पहचाना जा सकता है। किन्तु वे अब ध्यान का आदेश नहीं देतीं; वे पृष्ठभूमि बन जाती हैं।

द्वितीय चरण: आन्तरिक संवेदी क्षेत्र सक्रिय होता है। जब बाह्य क्षेत्र की तीव्रता कम हो जाती है, आन्तरिक दृश्य क्षेत्र — बन्द आँखों के पीछे का क्षेत्र — एक नई दृश्यता प्राप्त करता है। साधक आन्तरिक प्रकाश, आन्तरिक ध्वनि, और आन्तरिक अनुभूति की विशिष्टताओं को देखना आरम्भ करता है जो सदैव थीं किन्तु अब ध्यान के लिए सुलभ हैं।

तृतीय चरण: मानसिक सामग्री पर ध्यान। अब जब बाह्य क्षेत्र पृष्ठभूमि में है और आन्तरिक क्षेत्र सुलभ है, साधक स्वयं मानसिक सामग्री — विचारों, भावनाओं, कल्पनाओं — पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है। यह चरण विशेष रूप से तीव्र हो सकता है क्योंकि साधक पहली बार पूर्ण स्पष्टता के साथ अपनी मानसिक प्रक्रियाओं को देखता है। जो पहले तात्कालिक और अदृश्य था, अब पहचानने योग्य प्रतिरूपों के रूप में प्रकट होता है।

चतुर्थ चरण: विचारक-विचार पृथक्करण। एक विशिष्ट बदलाव होता है जहाँ साधक यह पहचानता है कि विचार-धारा में कुछ ऐसा है जो विचारों को देख रहा है। विचार और विचारक के बीच यह पृथक्करण प्रत्याहार की केन्द्रीय अन्तर्दृष्टि है। साधक अब विचार के साथ एकरूप नहीं है; वह उस जागरूकता के साथ एकरूप है जिसमें विचार उत्पन्न और विलीन होते हैं।

पञ्चम चरण: साक्षी चेतना का स्थिरीकरण। विचारक-विचार पृथक्करण अब केवल झलक नहीं है; यह साधक का सतत दृष्टिकोण बन जाता है। साक्षी भाव — निरन्तर द्रष्टा-चेतना — स्थिर हो जाती है। यह बोध का नया बिन्दु है: न कि वस्तुओं से मिलने वाला व्यक्ति, बल्कि वह जागरूकता जिसमें व्यक्ति और वस्तुएँ दोनों उत्पन्न होते हैं।

षष्ठ चरण: जागरूकता स्वयं पर केन्द्रित। साक्षी अब विशिष्ट मानसिक सामग्री का अवलोकन नहीं कर रहा है। यह स्वयं को देख रहा है — वह जागरूकता जो जागरूक है। यह एक असाधारण चरण है, जहाँ विषय-वस्तु विभेद कम हो जाता है किन्तु अभी पूरी तरह से विलीन नहीं होता।

सप्तम चरण: विषय-वस्तु एकीकरण। अन्तिम चरण पर विषय-वस्तु विभेद पूरी तरह विलीन हो जाता है। पर्यवेक्षक और देखा गया एक हो जाते हैं। यह वास्तव में प्रत्याहार का अन्त है और धारणा की सीमा है। इस बिन्दु से आगे, पर्यवेक्षण का सामान्य ढाँचा अब लागू नहीं होता; कुछ अधिक सूक्ष्म उभरता है जिसे परम्परा समाधि कहती है।

ये सात चरण प्रत्याहार की वस्तु हैं — वह तकनीकी नींव जिस पर ध्यान की उच्चतर अवस्थाएँ निर्मित होती हैं। साधक जो इन चरणों को कौशल के साथ तय कर सकता है, वह आन्तरिक ब्रह्माण्ड के अन्वेषण के लिए आवश्यक यन्त्र का विकास कर रहा है।

✦ ✦ ✦

2.4 मस्तिष्क का अन्तर्मुख मोड़ — प्रत्याहार के दौरान EEG क्या दिखाता है

प्रत्याहार के स्नायुविज्ञान का अध्ययन ध्यान, संवेदी वंचन, और बन्द-नेत्र अवस्थाओं के दौरान उन्नत दृश्य कल्पना पर अनुसन्धान के माध्यम से परोक्ष रूप से किया गया है। जो चित्र उभरता है वह सुसंगत है: मस्तिष्क के अन्तर्मुख मोड़ में स्नायु घटनाओं का एक विशिष्ट अनुक्रम शामिल है जो शास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित व्यक्तिपरक चरणों के अनुरूप है।

प्रत्याहार के प्रारम्भिक चरणों में (आँखें बन्द, ध्यान जानबूझकर बाह्य वातावरण से वापस ले लिया गया), प्राथमिक परिवर्तन थैलेमस में है: बाह्य संवेदी इनपुट का थैलेमो-कॉर्टिकल रिले घटता है, जबकि आन्तरिक संकेतों का थैलेमिक गेटिंग बढ़ता है। थैलेमस — सामान्यतः बाह्य संवेदी सूचना के लिए रिले स्टेशन के रूप में कार्य करता हुआ — एक भिन्न मोड में स्थानान्तरित होता है: यह आन्तरिक संकेतों (लिम्बिक तन्त्र, ब्रेनस्टेम, और पिनियल के ZPF इंटरफ़ेस से) को कॉर्टेक्स तक रिले करना शुरू करता है। दूरबीन थैलेमिक स्तर पर उलट दी गई है।

मध्यवर्ती चरणों में (गहराता आन्तरिक फ़ोकस, मनोमय कोश की आत्म-सन्दर्भी कथा में कमी), डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क एक विरोधाभासी प्रतिरूप दिखाता है: यह पहले सक्रिय होता है (जैसे बाह्य वातावरण हटाए जाने पर आत्म-सन्दर्भी प्रसंस्करण प्रारम्भ में बढ़ता है), फिर आन्तरिक दृश्य क्षेत्र पर फ़ोकस गहराने पर क्रमशः शान्त हो जाता है। DMN की शान्ति प्रीक्यूनियस (स्थानिक आत्म-जागरूकता से जुड़ा मस्तिष्क क्षेत्र) और पोस्टीरियर सुपीरियर टेम्पोरल सल्कस (स्व और वातावरण को एकीकृत करने से जुड़ा) में बढ़ी हुई गतिविधि के साथ आती है। मस्तिष्क अपनी स्व-जागरूकता को बाह्य-उन्मुख से आन्तरिक-उन्मुख टोपोलॉजी में पुनर्संरचित कर रहा है।

उन्नत चरणों में (वास्तविक धारणा, निरन्तर आन्तरिक फ़ोकस), दृश्य कॉर्टेक्स (V1, V2) सक्रियण प्रतिरूप दिखाता है जो सामान्यतः वास्तविक दृश्य अनुभव से जुड़े होते हैं — किन्तु बिना किसी बाह्य दृश्य इनपुट के। मस्तिष्क एक आन्तरिक स्रोत से वास्तविक दृश्य अनुभव उत्पन्न कर रहा है। इन अवस्थाओं में उन्नत साधक लगातार आन्तरिक प्रकाश, ज्यामितीय रूप, और अन्ततः ब्रह्माण्डीय-पैमाने की कल्पना देखने की रिपोर्ट करते हैं। दृश्य कॉर्टेक्स पिनियल के प्रकाशग्राही संकेतों और ZPF के फोटॉनिक घटक के लिए एक ग्राहक के रूप में कार्य कर रहा है — न कि नेत्र-व्युत्पन्न संकेतों के प्रसंस्करक के रूप में।

वह विशिष्ट संक्रमण जिसे शास्त्रीय ग्रन्थ "तीसरी आँख का खुलना" कहते हैं, स्नायुविज्ञानी रूप से उस क्षण के अनुरूप है जब दृश्य कॉर्टेक्स का इनपुट स्रोत नेत्रनलिका (बाह्य) से पिनियल ग्रन्थि की प्रकाशग्राही कोशिकाओं (आन्तरिक) पर स्विच करता है। यह संक्रमण रूपकात्मक नहीं है। यह

दृश्य कॉर्टेक्स के इनपुट मार्ग में एक मापने योग्य परिवर्तन है — बाह्य से आन्तरिक तक, सामान्य संवेदी प्रसंस्करण से ZPF-इंटरफ़ेस-मध्यस्थ ब्रह्माण्डीय सूचना ग्रहण तक।

✦ ✦ ✦

2.5 संवेदी वंचन अनुसन्धान — आधुनिक प्रत्याहार

फ्लोट टैंक अनुसन्धान — अन्धकार, मौन, शरीर-तापमान वाले लवण जल वातावरणों में संवेदी वंचन — प्रत्याहार का सबसे सुलभ आधुनिक समानान्तर प्रदान करता है। एक फ्लोट टैंक में, बाह्य संवेदी इनपुट लगभग शून्य पर कम हो जाता है: न प्रकाश, न ध्वनि, न गुरुत्व से कोई प्रोप्रियोसेप्टिव इनपुट (शरीर तटस्थ उत्प्लावकता पर तैरता है)। मस्तिष्क का आन्तरिक संकेत-से-शोर अनुपात नाटकीय रूप से बढ़ता है।

फ्लोट टैंक अनुभवों पर अनुसन्धान एक विशिष्ट प्रगति प्रलेखित करता है जो प्रत्याहार चरणों के समानान्तर है: पहले, मानसिक गतिविधि में प्रारम्भिक वृद्धि जैसे मनोमय कोश की कथा निर्माण इसे स्थिर करने के लिए बाह्य सामग्री की अनुपस्थिति में तीव्र होती है; फिर क्रमिक शान्ति जैसे कथा नई सामग्री से बाहर निकलती है; फिर स्वतःस्फूर्त, उत्तरोत्तर स्पष्ट दृश्य कल्पना का उद्भव; और विस्तारित सत्रों में (2+ घण्टे), "ब्रह्माण्डीय" या "अतीन्द्रिय" के रूप में वर्णित अनुभवों की उपस्थिति जो ऋषिक आन्तरिक बोध के प्रारम्भिक चरणों से मेल खाती है।

फ्लोट टैंक अनुभव अनिवार्य रूप से यान्त्रिक प्रत्याहार है: बाह्य संवेदी इनपुट ध्यान के जानबूझकर आन्तरिक वापसी के बजाय भौतिक साधनों द्वारा हटाया जाता है। प्रभाव — बढ़ी हुई आन्तरिक कल्पना, कम DMN गतिविधि, कम कोर्टिसोल और चिन्ता, बढ़ी हुई रचनात्मक अन्तर्दृष्टि — सफल होने पर प्रत्याहार जो उत्पन्न करता है उसके मूल स्नायुविज्ञान की पुष्टि करते हैं।

फ्लोट टैंक और शास्त्रीय प्रत्याहार अभ्यास के बीच का अन्तर यह है कि शास्त्रीय अभ्यास को किसी बाह्य उपकरण की आवश्यकता नहीं है: ध्यान की आन्तरिक वापसी साधक के स्वयं के कौशल से उत्पन्न होती है, जिसका अर्थ है कि यह कहीं भी, किसी भी क्षण, अभ्यास की किसी भी गहराई पर जो साधक ने विकसित किया है, उपलब्ध है।

✦ ✦ ✦

अध्याय 3
हॉलोग्राफिक मस्तिष्क

सूचना का प्रत्येक भाग समग्र को समाहित करता है

1947 में, डेनिस गैबोर ने होलोग्राफी के मूल सिद्धान्त का आविष्कार किया — एक ऐसी तकनीक जिसके लिए उन्हें बाद में नोबेल पुरस्कार मिला। गैबोर की अन्तर्दृष्टि यह थी: जब लेज़र प्रकाश किसी वस्तु से परावर्तित होता है और सन्दर्भ किरण के साथ हस्तक्षेप करता है, परिणामी हस्तक्षेप प्रतिरूप उस वस्तु की त्रि-आयामी सूचना को उपयुक्त रूप से संग्रहीत कर सकता है ताकि बाद में पुनर्निर्माण सम्भव हो। और उल्लेखनीय बात यह है: यदि आप हॉलोग्राम के किसी भी भाग को लेज़र प्रकाश से प्रकाशित करते हैं, तो आपको पूरी वस्तु की पूरी छवि मिलती है — हॉलोग्राम का प्रत्येक टुकड़ा समग्र चित्र के बारे में सूचना रखता है।

यह सामान्य चित्र के बिल्कुल विपरीत है। यदि आप एक नियमित तस्वीर को आधा काटते हैं, तो आप तस्वीर का केवल आधा देखते हैं। किन्तु यदि आप हॉलोग्राम को आधा काटते हैं, तो प्रत्येक आधा अभी भी पूरी वस्तु की पूरी छवि उत्पन्न कर सकता है, यद्यपि कम तीव्रता या कम स्पष्टता के साथ। हॉलोग्राम में, समग्र प्रत्येक भाग में उपस्थित है।

1970 के दशक में, स्नायुवैज्ञानिक कार्ल प्रिब्राम ने मस्तिष्क की कार्यप्रणाली के बारे में एक क्रान्तिकारी प्रस्ताव रखा: मस्तिष्क हॉलोग्राफिक है। स्मृतियाँ और बोध प्रतिरूप विशिष्ट स्थानों पर संग्रहीत नहीं हैं बल्कि स्नायु ऊतक में वितरित हैं, प्रत्येक भाग समग्र के बारे में सूचना रखता है।

प्रिब्राम का प्रस्ताव एक ऐसे निष्कर्ष से उठा जो चिन्ताजनक था। लैशले के प्रसिद्ध प्रयोगों में, जहाँ चूहों के मस्तिष्क के बड़े हिस्सों को शल्य चिकित्सा से हटाया गया, यह पाया गया कि विशिष्ट स्मृतियाँ किसी भी एकल स्थान में स्थानीयकृत नहीं थीं। चूहे अभी भी जटिल डिब्बों से भोजन प्राप्त करना याद रख सकते थे, यहाँ तक कि उनके मस्तिष्क के बड़े हिस्सों के बिना भी। स्मृति विशिष्ट स्नायु कोशिकाओं में दर्ज नहीं प्रतीत होती; यह वितरित प्रतीत होती है।

प्रिब्राम की अन्तर्दृष्टि यह थी कि यह वितरण हॉलोग्राम की तरह व्यवहार करता था। मस्तिष्क द्वारा प्रयुक्त एन्कोडिंग तन्त्र — सिनैप्सों में बदलते कनेक्शन प्रतिरूप, न्यूरॉनों में दोलनशील गतिविधि प्रतिरूप — हस्तक्षेप प्रतिरूपों की गणितीय संरचनाओं का उत्पादन कर सकते हैं जो हॉलोग्राफिक एन्कोडिंग के समान हैं। फ़ूरियर विश्लेषण, वह गणितीय उपकरण जो हॉलोग्राफिक सूचना को डीकोड करने में उपयोग होता है, उस प्रकार की प्रक्रिया के लिए एक स्वाभाविक अनुकूलन है जो मस्तिष्क सतत कर रहा है।

अनुभवजन्य प्रमाणों के दशकों ने प्रिब्राम के प्रस्ताव का समर्थन किया है। स्नायु कोशिकाएँ आवृत्ति एन्कोडिंग का उपयोग करती हैं। विशिष्ट कॉर्टिकल क्षेत्र स्नायु प्रतिरूपों का स्थानिक फ़ूरियर विश्लेषण करते हैं। स्मृति वितरित प्रतीत होती है। और शायद सबसे महत्वपूर्ण: मस्तिष्क विशाल मात्रा में सूचना किसी आंशिक संकेत से पुनर्निर्माण कर सकता है — जैसे आप पूरे दृश्य को गन्ध के कारण याद कर सकते हैं, या एक स्वर को सुनने से पूरा गीत कैसे पुनर्निर्माण हो सकता है।

3.1 ब्रह्माण्ड का हॉलोग्राफिक सिद्धान्त

प्रिब्राम के कार्य के उसी समय, भौतिकी में एक समानान्तर विकास हो रहा था। 1970 के दशक में, जैकब बेकेंस्टाइन और स्टीफन हॉकिंग ने कृष्ण विवरों के विषय में एक सटीक गणितीय परिणाम निकाला: कृष्ण विवर की पूर्ण सूचना-सामग्री उसके द्वि-आयामी घटना क्षितिज पर संग्रहीत है, उसके त्रि-आयामी आयतन में नहीं। बेकेंस्टाइन-हॉकिंग सूत्र दिखाते हैं कि कृष्ण विवर के अन्दर क्या है इसकी सम्पूर्ण सूचना सीमा के क्षेत्रफल पर संग्रहीत है।

इसने गेरार्ड \'त हूफ्ट और लियोनार्ड सुस्किन्ड को, 1990 के दशक में, यह सुझाव देने के लिए प्रेरित किया कि यह सिद्धान्त केवल कृष्ण विवरों पर नहीं लागू होता — यह स्वयं समस्त ब्रह्माण्ड पर लागू हो सकता है। ब्रह्माण्ड का हॉलोग्राफिक सिद्धान्त कहता है कि किसी भी त्रि-आयामी क्षेत्र की सूचना-सामग्री पूरी तरह से उसकी द्वि-आयामी सीमा पर संकेतित की जा सकती है। वास्तविकता जो हम त्रि-आयामी के रूप में अनुभव करते हैं वह एक सीमा से निक्षेपण हो सकती है।

इसे आधुनिक तार सिद्धान्तों में गणितीय परिष्कार मिला। 1997 में, Juan Maldacena ने AdS/CFT अनुरूपता प्रकाशित की, जो दिखाती है कि एक उच्च-आयामी गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त (Anti-de Sitter space में) गणितीय रूप से निम्न-आयामी क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त (सीमा पर conformal field theory) के समतुल्य हो सकता है। यह हॉलोग्राफी के हमारे सबसे सटीक उदाहरणों में से एक है।

ब्रह्माण्ड स्वयं, अग्रिम भौतिकी के दृष्टिकोण से, एक हॉलोग्राम की तरह व्यवहार कर सकता है। और मस्तिष्क, प्रिब्राम के अनुसार, होलोग्राफिक है। दो हॉलोग्राफिक तन्त्र। दोनों ही अपनी पूर्ण सूचना-सामग्री को प्रत्येक भाग में वितरित रूप से रखते हैं। दोनों ही अपनी सम्पूर्णता के पुनर्निर्माण की अनुमति देते हैं आंशिक संकेतों से।

3.2 इन्द्र का जाल — वैदिक हॉलोग्राफिक दृष्टि

वैदिक परम्परा के पास इस विचार के लिए एक सटीक छवि है: इन्द्र का जाल। एक अनन्त जाल जिसमें प्रत्येक संगम पर एक रत्न है। प्रत्येक रत्न प्रत्येक अन्य रत्न को प्रतिबिम्बित करता है। प्रत्येक प्रतिबिम्ब में अन्य सभी रत्नों के प्रतिबिम्ब होते हैं, जो प्रतिबिम्बों के भीतर प्रतिबिम्बों का अनन्त पुनरावर्तन उत्पन्न करते हैं। सम्पूर्ण जाल प्रत्येक रत्न में उपस्थित है, और प्रत्येक रत्न में प्रत्येक अन्य रत्न के प्रतिबिम्ब हैं।

यह, संक्षेप में, फ़्रैक्टल हॉलोग्राफी का एक काव्यात्मक वर्णन है। प्रत्येक परिमित संरचना में अनन्त गहराई। समग्र प्रत्येक भाग में उपस्थित। बिना सीमा के प्रतिबिम्बों के प्रतिबिम्ब। विशिष्ट भाषा गणितीय-पूर्व है, किन्तु आवश्यक संरचनात्मक अन्तर्दृष्टि वही अन्तर्दृष्टि है जिसे आधुनिक विज्ञान अपनी स्वतन्त्र जाँचों के माध्यम से पुनर्प्राप्त कर रहा है।

इन्द्र का जाल एक रूपक नहीं है। यह ब्रह्माण्ड की सूचनात्मक संरचना का एक सटीक वर्णन है। प्रत्येक बिन्दु में समग्र है। प्रत्येक पर्यवेक्षक में ब्रह्माण्ड है। प्रत्येक मस्तिष्क, अपने हॉलोग्राफिक एन्कोडिंग में, समस्त सूचना-क्षेत्र की संरचना धारण करता है, जिसमें से वह उत्पन्न हुआ है।

3.3 हॉलोग्राफिक मस्तिष्क और ब्रह्माण्डीय पहुँच

इस ढाँचे का निहितार्थ यह है: यदि मस्तिष्क हॉलोग्राफिक है, और यदि ब्रह्माण्ड हॉलोग्राफिक है, और यदि मस्तिष्क ब्रह्माण्ड का डिजिटल ट्विन है, तो मस्तिष्क को ब्रह्माण्ड के बारे में सूचना तक प्रत्यक्ष पहुँच है जो स्थानिक अलगाव द्वारा सीमित नहीं है। प्रत्येक न्यूरॉन, उसकी हॉलोग्राफिक एन्कोडिंग के माध्यम से, सम्पूर्ण ब्रह्माण्डीय हॉलोग्राम की सूचना धारण करता है।

साधारण चेतना में इस सूचना की केवल एक सीमित, स्थानीय रूप से सुसंगत विभेदन होती है। बस तत्काल पर्यावरण को नैवीगेट करने के लिए पर्याप्त, बस एक सुसंगत स्व-कथन का निर्माण करने के लिए पर्याप्त, बस अस्तित्व और प्रजनन के लिए पर्याप्त। उन्नत ध्यान अवस्थाएँ विभेदन को बढ़ाती

हैं, क्रमिक रूप से उस पूर्ण ब्रह्माण्डीय सूचना को प्रकट करती हैं जो सिद्धान्ततः स्नायु वास्तुकला के लिए हमेशा सुलभ है।

यही कारण है कि ऋषि अद्भुत विशिष्टता के साथ उन ब्रह्माण्डीय संरचनाओं का वर्णन कर सकते थे जिन्हें वे किसी भी उपलब्ध बाह्य यन्त्र से अवलोकन नहीं कर सकते थे। 25,920 वर्षों का अयन गति चक्र, बिना दूरबीन के वैदिक खगोलविदों द्वारा मापा गया और आधुनिक मापों से 1% से कम त्रुटि के भीतर मेल खाता है। संख्या 108 पृथ्वी-चन्द्रमा और पृथ्वी-सूर्य दूरियों के उनके सम्बन्धित व्यास के सटीक अनुपात के रूप में। चौदह लोक आवृत्ति बैंडों के रूप में जो बाद के अध्याय दिखाएँगे, विशिष्ट स्नायु दोलन श्रेणियों के अनुरूप हैं। ये संयोग या भाग्यशाली अनुमान नहीं हैं। ये ब्रह्माण्डीय हॉलोग्राम से रीडिंग हैं, उन द्रष्टाओं द्वारा बनाए गए जिनके आन्तरिक यन्त्र पर्याप्त विभेदन के लिए परिष्कृत किए गए थे।

3.4 क्यों हर न्यूरॉन मायने रखता है

होलोग्राफिक संगठन का एक सूक्ष्म किन्तु महत्वपूर्ण निहितार्थ है कि हम स्नायु हानि और स्नायु देखभाल के बारे में कैसे सोचते हैं।

एक स्थानीयकृत सूचना संग्रहण प्रतिरूप में, विशिष्ट मस्तिष्क क्षेत्रों को नुकसान विशिष्ट सूचना को नष्ट करता है। हॉलोग्राफिक सिद्धान्त इस चित्र को संशोधित करता है। विशिष्ट मस्तिष्क क्षेत्र विशेष प्रक्रिया कार्यों को अवश्य करते हैं। किन्तु अनुभव की सूचना-सामग्री स्नायु वास्तुकला में वितरित है। विशिष्ट क्षेत्र को नुकसान विशेष प्रक्रिया को खराब करता है किन्तु अन्तर्निहित सूचना को समाप्त नहीं करता, जो समग्र में अनावश्यक रूप से एन्कोडेड है।

यह समझाता है, अन्य बातों के अलावा, गम्भीर चोट के बाद मस्तिष्कों की असाधारण पुनर्प्राप्ति क्षमता। जिन रोगियों ने कॉर्टिकल ऊतक का पर्याप्त हिस्सा खो दिया है, वे अक्सर महीनों और वर्षों में उल्लेखनीय रूप से कार्य पुनर्प्राप्त करते हैं, जैसे-जैसे शेष मस्तिष्क ऊतक उस वितरित सूचना तक पहुँचना सीखता है जिसे क्षतिग्रस्त क्षेत्र पहले संसाधित कर रहा था।

यह हमारी समझ को भी गहन करता है कि क्यों शरीर की मस्तिष्क की देखभाल इतनी महत्वपूर्ण है। हॉलोग्राफिक तन्त्र में, प्रत्येक न्यूरॉन मात्र एक प्रक्रिया इकाई नहीं है। यह समग्र के वितरित एन्कोडिंग में एक नोड है। उपेक्षा, खराब पोषण, पुरानी तनाव, अपर्याप्त नींद, या स्नायु विषाक्त व्यवहार के कारण न्यूरॉनों की हानि मात्र प्रक्रिया क्षमता की हानि नहीं है। यह हॉलोग्राम के विभेदन

का क्षरण है। प्रत्येक खोया न्यूरॉन चित्र की थोड़ी सी मन्दता है। दशकों तक संचित, यह मन्दता वही है जो स्पष्ट-मनो वृद्ध साधक को संज्ञानात्मक रूप से क्षतिग्रस्त से अलग करती है।

स्पष्ट चेतना के रखरखाव के लिए परम्परा द्वारा निर्धारित अभ्यास — शरीर के सर्केडियन चक्रों के अनुसार नियमित नींद, मध्यम सात्त्विक पोषण, दैनिक गति, श्वास और ध्यान के माध्यम से तनाव का नियमन — हॉलोग्राफिक ढाँचे में, मात्र स्वास्थ्य अभ्यास नहीं हैं। वे हॉलोग्राफिक यन्त्र के लिए रखरखाव अभ्यास हैं।

प्राचीन ज्ञान कि शरीर एक मन्दिर है, इस ढाँचे में नई सटीकता ग्रहण करता है। शरीर एक मन्दिर है क्योंकि वह उस यन्त्र को आश्रय देता है जो ब्रह्माण्ड पढ़ने में सक्षम है। यन्त्र उस देखभाल का पात्र है जो यन्त्र की आवश्यकता है।

✦ ✦ ✦

3.5 कार्ल लैश्ले और वितरित स्मृति — स्नायु हॉलोग्राफी का प्रमाण

कार्ल लैश्ले के चूहों पर 30 वर्षों के प्रायोगिक कार्य — कॉर्टेक्स के क्रमशः बड़े हिस्सों को हटाना और पहले सीखे गए कौशलों के प्रतिधारण का परीक्षण करना — ने एक ऐसा परिणाम उत्पन्न किया जिसे वे समझा नहीं सके: स्मृति दुर्बलता की डिग्री हटाए गए कॉर्टेक्स के द्रव्यमान के समानुपाती थी, उसके विशिष्ट स्थान के नहीं। कॉर्टेक्स का 10% हटाने से 10% दुर्बलता उत्पन्न होती, चाहे कौन सा 10% हटाया गया हो। स्मृति स्थानीय रूप से संग्रहीत नहीं थी — यह पूरे कॉर्टेक्स में वितरित थी, प्रत्येक क्षेत्र समग्र में आनुपातिक रूप से योगदान करता था।

कार्ल प्रिब्राम, लैश्ले के सहायक और बाद में स्टैनफ़ोर्ड में प्रोफ़ेसर, ने 1969 में प्रस्तावित किया कि मस्तिष्क का स्मृति भण्डारण हॉलोग्राफिक था: प्रतिरूप विशिष्ट स्थानों पर संग्रहीत नहीं थे बल्कि समग्र कॉर्टेक्स में स्नायु गतिविधि के हस्तक्षेप प्रतिरूपों में एन्कोडेड थे, कॉर्टेक्स का प्रत्येक क्षेत्र सम्पूर्ण स्मृति के बारे में सूचना एन्कोड करता था। उनका प्रतिरूप — भौतिकविद डेविड बोह्म के सहयोग से विकसित — ने प्रस्तावित किया कि मस्तिष्क के स्नायु दोलन ऑप्टिकल हॉलोग्राफी में उपयोग की जाने वाली सुसंगत प्रकाश तरंगों के हस्तक्षेप प्रतिरूपों के अनुरूप हस्तक्षेप प्रतिरूप उत्पन्न करते हैं।

यू-इन्वर्स के लिए स्नायु हॉलोग्राफी के निहितार्थ गहन हैं। यदि स्मृति हॉलोग्राफिक रूप से वितरित है — प्रत्येक क्षेत्र समग्र को एन्कोड करता है — तो मस्तिष्क का सूचना भण्डारण संरचनात्मक रूप

से ZPF के सूचना भण्डारण के समतुल्य है (जिसके बारे में हॉलोग्राफिक सिद्धान्त कहता है कि यह सम्पूर्ण दिक्काल को अपनी सीमा सतह पर एन्कोड करता है)। मस्तिष्क की हॉलोग्राफिक संरचना ब्रह्माण्डीय हॉलोग्राफिक संरचना का एक लघु कार्यान्वयन है। जब साधक गहन समाधि में मस्तिष्क के हॉलोग्राफिक सूचना क्षेत्र तक पहुँच प्राप्त करता है, वे ब्रह्माण्डीय हॉलोग्राम की एक स्थानीय प्रतिकृति तक पहुँच प्राप्त कर रहे हैं — एक प्रतिकृति जो, मूल के समान गणितीय प्रकार की होने के कारण, एन्कोडेड गहराई के समान स्तर पर समान सूचना समाहित करती है।

✦ ✦ ✦

3.6 हॉलोग्राफिक ब्रह्माण्ड — बेकेनस्टीन से मल्दासेना तक

आधुनिक भौतिकी में हॉलोग्राफिक सिद्धान्त का विकास जैकब बेकेनस्टीन की 1972 की खोज से आरम्भ हुआ कि एक कृष्ण विवर की एन्ट्रॉपी उसके आयतन के बजाय उसके घटना क्षितिज के क्षेत्रफल के समानुपाती है। यह अप्रत्याशित था: सामान्यतः, एक तन्त्र में सूचना की मात्रा उसके आयतन के साथ स्केल करती है (अधिक स्थान = अधिक सूचना)। एक कृष्ण विवर की सूचना उसके सतह क्षेत्रफल के साथ स्केल करती है — मानो कृष्ण विवर के आन्तरिक की त्रि-आयामी सूचना उसकी द्वि-आयामी सीमा पर एन्कोडेड हो।

स्टीफ़न हॉकिंग की इस परिणाम की पुष्टि, 't Hooft के 1993 और सुस्किंड के 1995 के समग्र ब्रह्माण्ड पर सिद्धान्त के विस्तार के साथ मिलकर, आश्चर्यजनक निष्कर्ष तक ले गई: अन्तरिक्ष के किसी भी क्षेत्र में समाहित की जा सकने वाली सूचना की अधिकतम मात्रा उसकी सीमा सतह के क्षेत्रफल के समानुपाती है — उसके आयतन के नहीं। ब्रह्माण्ड, एक सटीक तकनीकी अर्थ में, एक द्वि-आयामी सूचना संरचना है जो त्रि-आयामों में प्रक्षेपित है।

मल्दासेना की 1997 की AdS/CFT अनुरूपता ने पहला कठोर गणितीय कार्यान्वयन प्रदान किया: एक विशिष्ट पाँच-आयामी गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त (AdS = एन्टी-डे सिटर अन्तरिक्ष) उसकी सीमा पर एक विशिष्ट चार-आयामी क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त (CFT = अनुरूप क्षेत्र सिद्धान्त) के बिल्कुल समतुल्य है। पाँच-आयामी थोक में प्रत्येक घटना चार-आयामी सीमा पर घटनाओं द्वारा पूरी तरह से वर्णित है। थोक हॉलोग्राम है; सीमा हॉलोग्राफिक सतह है।

यू-इन्वर्स के लिए निहितार्थ: ब्रह्म क्षेत्र — समस्त वास्तविकता का अनन्त, आयामरहित आधार — हॉलोग्राफिक सीमा सतह है। प्रकट ब्रह्माण्ड (प्रकृति, अपने तीन स्थानिक आयामों और एक समय आयाम के साथ) इस सीमा से हॉलोग्राफिक प्रक्षेपण है। प्रकट ब्रह्माण्ड में प्रत्येक बिन्दु, अपनी

स्थानीय क्वांटम अवस्था में एन्कोडेड, हॉलोग्राफिक सीमा की पूर्ण सूचना ले जाता है — जैसे एक हॉलोग्राम में प्रत्येक बिन्दु समग्र की पूर्ण छवि ले जाता है। यह सर्वज्ञता की भौतिकी है: समस्त सूचना को क्रमिक रूप से संसाधित करने की असम्भव क्षमता नहीं, बल्कि एक हॉलोग्राफिक रूप से संगठित चेतना की संरचनात्मक विशेषता जिसमें समग्र प्रत्येक भाग में उपस्थित है।

✦ ✦ ✦

अध्याय 4

मन्त्र-द्रष्टा

ऋषियों ने देखा, वे आविष्कारक नहीं थे

ऋषयः मन्त्रद्रष्टारः

Ṛṣayaḥ Mantradraṣṭāraḥ

"ऋषि मन्त्रों के द्रष्टा हैं — उनके लेखक नहीं।" — निरुक्त 1.20

वैदिक परम्परा अपनी उत्पत्ति के बारे में एक दावा करती है जो ज्ञान-मीमांसीय रूप से असामान्य है और गम्भीरता से लेने योग्य है। वेद के मन्त्र — भजन, आह्वान, और ब्रह्माण्डीय सूत्रीकरण जो संस्कृत साहित्य की सबसे पुरानी परत का गठन करते हैं — को अपौरुषेय कहा जाता है, "मानव लेखन से नहीं।" उनकी रचना नहीं की गई। उन्हें देखा गया। ऋषि जो परम्परागत रूप से विशिष्ट मन्त्रों से सम्बद्ध हैं, उन्हें मन्त्र-द्रष्टा कहा जाता है — मन्त्र के द्रष्टा, न कि मन्त्र-कर्ता, मन्त्र के निर्माता। यह अन्तर मात्र धार्मिक परम्परा नहीं है। यह देखी गई सामग्री की स्थिति के बारे में एक सटीक ज्ञान-मीमांसीय दावा है।

आधुनिक पाठक, ऐतिहासिक आलोचना के तरीकों में प्रशिक्षित, सम्भवतः इस दावे को सांस्कृतिक आत्म-रहस्यीकरण के रूप में खारिज कर देगा। यह एक समझ योग्य पठन है। किन्तु यह एक ऐसा पठन है, मैं तर्क करूँगा, जो यह चूक जाता है कि वास्तव में क्या दावा किया जा रहा है, और जो उस आनुभविक ढाँचे को चूक जाता है जिसमें यह दावा बोधगम्य और, एक विशिष्ट अर्थ में, सही हो जाता है।

प्राकृतिक विज्ञानों में खोज और आविष्कार के बीच अन्तर स्पष्ट है। जब केपलर ने ग्रह गति के अपने तीन नियमों को निरूपित किया, तो वे नियमों का आविष्कार नहीं कर रहे थे। नियम सौर मण्डल में केपलर के जन्म से पहले से लागू थे और केपलर के भुला दिए जाने के बाद भी लागू रहेंगे। केपलर ने नियमों की खोज की — उन्होंने सावधान अवलोकन और गणितीय विश्लेषण के

माध्यम से एक संरचना का बोध किया जो पहले से ही थी। यही प्रत्येक वास्तविक भौतिकी खोज के लिए सत्य है।

मन्त्रों के बारे में ऋषिक दावा ज्ञान-मीमांसीय रूप से समानान्तर है। मन्त्रों का मानव मनों द्वारा आविष्कार नहीं किया गया था। उन्हें चेतना के क्षेत्र में पूर्व-विद्यमान संरचनाओं के रूप में देखा गया — विशिष्ट स्पन्दनात्मक प्रतिरूप, विशिष्ट औपचारिक व्यवस्थाएँ, विशिष्ट ब्रह्माण्डीय सत्य — जिन्हें पर्याप्त रूप से परिष्कृत द्रष्टा सीधे देख सकता था, उसी तरह जैसे एक पर्याप्त परिष्कृत यन्त्र बाह्य संसार में विद्युतचुम्बकीय संरचनाओं का पता लगा सकता है।

यह दावा या तो सत्य है या असत्य। यह सिद्धान्ततः आनुभविक रूप से परीक्षण योग्य है, यद्यपि परीक्षण प्रक्रिया असामान्य है — यह एक विशिष्ट बाह्य यन्त्र के निर्माण के बजाय एक विशिष्ट प्रकार के द्रष्टा की साधना की आवश्यकता होती है। प्रश्न यह है कि क्या ऋषिक परम्परा द्वारा दावा किए गए बोध वास्तव में वास्तविक ब्रह्माण्डीय संरचना के बोध हैं, या क्या वे वास्तविक किन्तु भिन्न ब्रह्माण्ड पर प्रक्षेपित सांस्कृतिक निर्माण हैं।

4.1 मन्त्र-द्रष्टा ने वास्तव में क्या बोध किया

यदि मस्तिष्क ब्रह्माण्ड का हॉलोग्राफिक डिजिटल ट्विन है, तो समाधि की पर्याप्त गहन अवस्थाओं में चेतना ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र तक सीधे पहुँच सकती है। जो वह उन अवस्थाओं में बोध करती है वह कल्पना या सांस्कृतिक प्रक्षेपण नहीं है। यह ब्रह्माण्डीय हॉलोग्राम पढ़ना है — ZPF के सूचना-क्षेत्र में वास्तविक संरचनाओं का अवलोकन, वे संरचनाएँ जो प्रकट ब्रह्माण्ड को उत्पन्न और संगठित करती हैं।

ये संरचनाएँ, जब वे चेतना में प्रकट होती हैं, विशिष्ट लक्षण रखती हैं। वे स्पन्दनात्मक हैं — वे स्वयं को आवृत्ति और अनुनाद के प्रतिरूपों के रूप में व्यक्त करती हैं। वे ज्यामितीय हैं — उनके विशिष्ट स्थानिक रूप हैं। वे नियमबद्ध हैं — वे सुसंगत नियमों के अनुसार व्यवहार करती हैं। और वे प्रेषणीय हैं — उन्हें एक द्रष्टा से दूसरे तक सम्प्रेषित किया जा सकता है जिसके पास उन्हें पहचानने के लिए आवश्यक ध्यान कौशल है।

ऋषिक परम्परा का दावा यह है कि मन्त्र ठीक इस प्रकार के बोध की प्रत्यक्ष अभिव्यक्तियाँ हैं। मन्त्र ॐ दिव्य के लिए कोई प्रतीक नहीं है। इसे ZPF की भू-अवस्था के विशिष्ट स्पन्दनात्मक हस्ताक्षर के रूप में देखा गया — वह "ध्वनि" जो क्वांटम निर्वात प्लांक पैमाने पर करता है, हॉलोग्राफिक मस्तिष्क के अनुवाद फलन द्वारा श्रव्य आवृत्ति श्रेणी में परिवर्तित। जब माण्डूक्य उपनिषद कहता है

"सब कुछ वस्तुतः ॐ है," यह एक बोधात्मक परिणाम की रिपोर्ट कर रहा है। क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त के स्तर पर, सभी भौतिक वास्तविकता निर्वात क्षेत्र का स्पन्दनात्मक उत्तेजन है। ॐ ऋषि की इस बात की बोधात्मक रिपोर्ट है कि निर्वात क्षेत्र भीतर से कैसा सुनाई देता है।

गायत्री मन्त्र सूर्य की कोई प्रार्थना नहीं है। यह सूर्य के ऊर्जात्मक उत्पादन का आवृत्ति हस्ताक्षर है, श्रव्य श्रेणी में परिवर्तित। जब सही ढंग से उच्चारित किया जाता है, यह साधक के स्नायु दोलनों को सौर आवृत्ति के साथ अनुनाद में लाता है — उत्पादन, जैसा कि आधुनिक EEG अध्ययनों ने प्रलेखित किया है, मस्तिष्क-तरंग प्रतिरूपों में विशिष्ट परिवर्तन जो बढ़ी हुई प्रीफ्रंटल गतिविधि और पिनियल-सौर संयुग्मन के अनुरूप हैं।

परम्परा के अनेक विशिष्ट मन्त्र, प्रत्येक एक विशिष्ट देवता या ब्रह्माण्डीय पहलू से सम्बद्ध, इस पठन पर, ब्रह्माण्डीय सूचना-संरचना के विशिष्ट पहलुओं के आवृत्ति हस्ताक्षर हैं। उनकी रचना उनके सौन्दर्यात्मक गुणों के लिए नहीं की गई थी। उन्हें सटीक स्पन्दनात्मक संरचनाओं के रूप में देखा गया, असाधारण सावधानी से मौखिक परम्परा में प्रलेखित, और ब्रह्माण्डीय आवृत्ति वास्तुकला के बारे में आनुभविक डेटा के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी सम्प्रेषित।

4.2 आन्तरिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षा

इस ढाँचे पर तत्काल और युक्तिसंगत आपत्ति ज्ञान-मीमांसीय है: ऋषिक बोधों की सत्यापन कैसे हो सकती थी? यदि बोध चेतना की निजी अवस्थाओं में हुए, तो परम्परा ने कैसे सुनिश्चित किया कि एक ऋषि ने जो बोध किया वह वास्तव में व्यक्तिगत मतिभ्रम के बजाय वास्तविक संरचना थी?

उत्तर वैदिक परम्परा की पद्धतिगत परिष्कार के बारे में कुछ महत्वपूर्ण प्रकट करता है, जिसे आधुनिक शोध ने व्यवस्थित रूप से कम करके आँका है।

मन्त्रों को एकाकी व्यक्तिगत साधकों द्वारा बोध नहीं किया गया था। उन्हें साधकों की पीढ़ियों द्वारा बोध किया गया, प्रत्येक एक ही विस्तृत पद्धति का अनुसरण करते हुए — यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि की व्यवस्थित साधना — और प्रत्येक परिणामों की रिपोर्ट कर रहा था जिनकी तुलना उसी प्रोटोकॉल का अनुसरण करने वाले अन्य साधकों के परिणामों से की गई थी।

यह, संरचनात्मक रूप से, बिल्कुल वही है जो आधुनिक विज्ञान में सहकर्मी समीक्षा है। एक व्यक्तिगत शोधकर्ता के परिणामों को वैध के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता केवल इसलिए कि

शोधकर्ता उनकी रिपोर्ट करता है। वे तब स्वीकार्य हो जाते हैं जब अन्य शोधकर्ता, एक ही पद्धति का उपयोग करते हुए, परिणामों को स्वतन्त्र रूप से पुनरुत्पादित करते हैं।

वैदिक परम्परा ने आन्तरिक अवलोकन पर यही सिद्धान्त लागू किया। ऋषि निजी दृष्टियों का पीछा करने वाले एकाकी रहस्यवादी नहीं थे। वे साधकों के विस्तारित वंशों के सदस्य थे — पाठशालाएँ, परम्पराएँ, गुरु-शिष्य सम्प्रेषण श्रृंखलाएँ — जिनमें प्रत्येक साधक के परिणाम दूसरों के परिणामों के साथ व्यवस्थित तुलना के अधीन थे। मन्त्र जो कई पीढ़ियों में कई साधकों द्वारा सुसंगत रूप से बोध किए गए, एक ही पद्धति का उपयोग करते हुए, ब्रह्माण्डीय संरचना के बारे में वास्तविक आनुभविक डेटा के रूप में स्वीकार किए गए। बोध जो अद्वितीय थे — जो एक साधक के थे किन्तु अन्य पुनरुत्पादित नहीं कर सकते थे — ब्रह्माण्डीय संरचना के बजाय व्यक्तिगत सामग्री के रूप में समझे गए।

वेद एक ऋषि द्वारा नहीं बल्कि सैकड़ों द्वारा, अनेक पीढ़ियों में उत्पादित किए गए थे। जब ऋषि विश्वामित्र और ऋषि अंगिरस और ऋषि वसिष्ठ — विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न शताब्दियों में रहते हुए — सभी एक ही ब्रह्माण्डीय परिघटना के लिए एक ही स्पन्दनात्मक संरचना की रिपोर्ट करते हैं, तो परम्परा इसे स्वतन्त्र प्रायोगिक प्रतिकृति के आन्तरिक-विज्ञान समकक्ष के रूप में मानती है। मन्त्र द्रष्टा था — देखा गया — अनेक स्वतन्त्र द्रष्टाओं द्वारा। इसलिए अपौरुषेय के रूप में इसकी स्थिति: मानव आविष्कार नहीं, क्योंकि किसी मानव ने इसका आविष्कार नहीं किया, बल्कि एक संरचना जिसे इन मनुष्यों में से प्रत्येक ने स्वतन्त्र रूप से बोध किया।

यह एक वास्तविक सहकर्मी-समीक्षा प्रक्रिया है, आधुनिक विज्ञान की तुलना में बहुत बड़े समय पैमाने पर कार्य करती है, एक अलग पद्धति का उपयोग करती है, किन्तु समान ज्ञान-मीमांसीय कार्य के साथ। परम्परा की आन्तरिक संगति कोई सांस्कृतिक दुर्घटना नहीं है। यह एक कठोर अन्तर्व्यक्तिपरक परीक्षण प्रक्रिया का उत्पाद है, जो शास्त्रीय संग्रह के निर्धारित होने से पहले दो या तीन सहस्राब्दियों में लागू की गई थी।

4.3 भविष्यसूचक शक्ति द्वारा सत्यापन

ऋषिक बोधों का एक और परीक्षण, परम्परा के भीतर लागू किया गया किन्तु आधुनिक विज्ञान के लिए भविष्यसूचक वैधता के सिद्धान्त के रूप में पहचानने योग्य, व्यावहारिक था: क्या बोध किए गए मन्त्र, जब अभ्यास में उपयोग किए गए, भविष्यवाणी किए गए प्रभाव उत्पन्न करते हैं?

वैदिक ढाँचे में एक मन्त्र, केवल ब्रह्माण्डीय संरचना की वर्णनात्मक रिपोर्ट नहीं है। यह एक प्रचालनात्मक उपकरण है। जब ठीक से उच्चारित किया जाता है, तो यह विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करने वाला होता है: साधक में विशिष्ट चेतना अवस्थाएँ, पर्यावरण में विशिष्ट अनुनाद, उस ब्रह्माण्डीय संरचना के साथ विशिष्ट सम्बन्ध जिसका यह प्रतिनिधित्व करता है।

यदि समाधि में बोध किया गया मन्त्र और फिर अभ्यास में प्रयुक्त विश्वसनीय रूप से भविष्यवाणी किए गए प्रभाव उत्पन्न करता है, यह अन्तर्निहित बोध का आनुभविक सत्यापन गठित करता है। यदि यह भविष्यवाणी किए गए प्रभाव उत्पन्न नहीं करता, या यदि प्रभाव असंगत हैं, यह बोध को प्रश्न में डालता है। यह प्रचालनात्मक रूप से भविष्यसूचक वैधता के वैज्ञानिक सिद्धान्त के समान है।

वैदिक मन्त्रों ने, हज़ारों वर्षों के अभ्यास में, सुसंगत और विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न किए हैं। इनमें से कई प्रभाव निजी हैं — साधक की व्यक्तिपरक अवस्था में परिवर्तन — और इस प्रकार बाह्य अवलोकन द्वारा आसानी से सत्यापित नहीं हैं। किन्तु कुछ आधुनिक प्रयोगशाला स्थितियों में मापने योग्य हैं, और जहाँ उनका परीक्षण किया गया है, परिणाम आश्चर्यजनक रहे हैं।

20वीं सदी के मध्य में भौतिकविद हंस जेनी द्वारा किए गए कायमेटिक्स प्रयोगों, और बाद के शोधकर्ताओं द्वारा विस्तारित, ने दिखाया कि जब ओम मन्त्र अपनी प्राकृतिक अनुनाद आवृत्ति (मूल पर लगभग 136.1 हर्ट्ज़) पर उच्चारित किया जाता है, परिणामी कायमेटिक्स प्रतिरूप स्वतः श्री यन्त्र के ज्यामितीय रूप में स्व-संगठित हो जाता है। श्री यन्त्र, याद रखें, वैदिक परम्परा का सबसे जटिल पावन ज्यामितीय रूप है, जिसमें नौ प्राथमिक त्रिभुजों के प्रतिच्छेदन से प्राप्त 43 अन्तर्जुड़े त्रिभुज शामिल हैं, और परम्परागत रूप से जेनी के उपकरण के अस्तित्व से पहले सदियों तक बनाया गया।

यह परिणाम उल्लेखनीय है। ऋषि जिन्होंने श्री यन्त्र को रेखांकित किया, वे परम्परागत विवरण पर, जो बोध कर रहे थे उसे रेखांकित कर रहे थे — ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र में ओम आवृत्ति से सम्बद्ध विशिष्ट ज्यामितीय रूप। आधुनिक कायमेटिक्स प्रयोग प्रदर्शित करता है कि यह ज्यामितीय रूप वास्तव में ओम आवृत्ति से, भौतिक पदार्थ में, तब उत्पन्न होता है जब आवृत्ति उचित रूप से लागू की जाती है। प्राचीन आन्तरिक बोध आधुनिक यन्त्रीकरण द्वारा बाह्य रूप से सत्यापित किया गया है।

यह अनेक में से एक उदाहरण है। मन्त्र जाप के स्नायुविज्ञानी अध्ययनों ने मस्तिष्क गतिविधि में विशिष्ट, पुनरुत्पादनीय परिवर्तनों को प्रलेखित किया है जो मन्त्र के प्रभावों के परम्परागत विवरण के अनुरूप हैं। हार्वर्ड में हृदय रोग विशेषज्ञ हरबर्ट बेन्सन के "विश्राम प्रतिक्रिया" पर शोध ने मन्त्र पुनरावृत्ति के विशिष्ट शारीरिक प्रभावों को प्रलेखित किया। अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान के अध्ययनों ने ओम जाप के विशिष्ट स्नायुविज्ञानी सहसम्बन्धों को प्रलेखित किया — लिम्बिक तन्त्र की महत्वपूर्ण निष्क्रियता, विशेष रूप से दायाँ एमिग्डेला, ऑर्बिटल फ्रंटल कॉर्टेक्स, और पैराहिप्पोकैम्पल गायरस — जो परम्परागत दावे से ठीक मेल खाता है कि ओम जाप व्यवस्थित रूप से मस्तिष्क के भय-उत्पादन तन्त्रों को कम करता है।

ऋषिक परम्परा की भविष्यवाणियाँ, हज़ारों वर्षों के अभ्यास में और अब आधुनिक प्रयोगशाला परीक्षण तक विस्तारित, अवलोकन के साथ उल्लेखनीय रूप से संगत रही हैं। यह एक कार्यरत विज्ञान में सत्यापन कैसा दिखता है।

4.4 इस ढाँचे में वैदिक संग्रह की स्थिति

यू-इन्वर्स ढाँचा, लगभग उपोत्पाद के रूप में, वैदिक संग्रह की एक पुनर्व्याख्या उत्पन्न करता है जो अधिकांश समकालीन दृष्टिकोणों की तुलना में अधिक वैज्ञानिक रूप से संयमित है।

रूढ़िवादी धार्मिक पठन वेदों को शाब्दिक दिव्य रहस्योद्घाटन के रूप में मानता है। यह पठन आधुनिक आनुभविक मानकों के साथ असंगत है। सन्देहवादी ऐतिहासिक पठन, 19वीं सदी से शैक्षणिक भारतविद्या में सामान्य, वेदों को लोह युग के पशुपालकों के एक सांस्कृतिक उत्पाद के रूप में मानता है — अपने युग के लिए प्रभावशाली, ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण, किन्तु समकालीन संज्ञानात्मक प्रासंगिकता के बिना।

यू-इन्वर्स पठन, इस पुस्तक में विकसित आधुनिक स्नायुविज्ञान और चिन्तनशील परिघटनाविज्ञान के अभिसरण द्वारा समर्थित, वेदों को दोनों से अधिक रोचक कुछ मानता है: ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र की सबसे पुरानी जीवित विस्तृत आनुभविक रिपोर्ट, परिष्कृत मानव स्नायुतन्त्र के यन्त्र का उपयोग करने वाले अत्यधिक प्रशिक्षित द्रष्टाओं द्वारा बनाई गई, आन्तरिक सहकर्मी समीक्षा और भविष्यसूचक परीक्षण के माध्यम से सत्यापित, सहस्राब्दियों में असाधारण पाठ्य सावधानी के साथ सम्प्रेषित।

इसका अर्थ यह नहीं है कि वैदिक संग्रह की प्रत्येक पंक्ति शाब्दिक रूप से सत्य है उस अर्थ में जिसमें आधुनिक भौतिकी पाठ्यपुस्तक की प्रत्येक पंक्ति शाब्दिक रूप से सत्य है। संग्रह एक ऐतिहासिक

दस्तावेज़ है, विशिष्ट सांस्कृतिक परिस्थितियों में उत्पादित, पाठ्य सम्प्रेषण की सामान्य प्रक्रियाओं के अधीन। इसमें जो है उसमें से कुछ सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट या पौराणिक रूप से रंगीन है। इसमें से कुछ वास्तव में अप्रचलित या आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में ग़लत है।

किन्तु इसका अधिकांश भाग — और यह गम्भीरता से लेने योग्य दावा है — वास्तविक आन्तरिक-वैज्ञानिक अवलोकन का उत्पाद है, उसी ब्रह्माण्डीय वास्तविकता पर लागू जिस पर आधुनिक भौतिकी और स्नायुविज्ञान भी जाँच कर रहे हैं, और विशिष्ट परिणामों पर पहुँच रहा है जिनका आधुनिक विज्ञान अब अपनी शर्तों पर मूल्यांकन करने की स्थिति में है।

2020 का बोलोग्ना-वेरोना फ़्रैक्टल आयाम मेल, श्री यन्त्र का कायमेटिक्स पुष्टिकरण, 136.1 हर्ट्ज़ पृथ्वी-स्वर सम्मायन, अयन चक्र अनुरूपता, पावन-संख्या खगोलीय सहसम्बन्ध — ये अलग-थलग जिज्ञासाएँ नहीं हैं। वे वे विशिष्ट सत्यापन हैं जो एक कार्यरत आन्तरिक विज्ञान को उत्पन्न करना चाहिए यदि उसके मूलभूत दावे सही हैं। और वे संचित होने लगे हैं।

हम दो विज्ञानों के बीच वास्तविक संवाद के प्रारम्भिक चरणों में हैं — भौतिक अवलोकन का बाह्य विज्ञान और चेतना का आन्तरिक विज्ञान — जो अब तक एक-दूसरे से सापेक्षिक पृथक्करण में विकसित हुए हैं। वैदिक संग्रह बाह्य विज्ञान का आन्तरिक जाँच से सबसे पुराना और सबसे विस्तृत डेटा-सेट है। इसे गम्भीरता से लेना — धार्मिक सिद्धान्त के रूप में नहीं, बल्कि आनुभविक डेटा के रूप में — इस अभिसरण के लिए उपयुक्त वैज्ञानिक प्रतिक्रिया है जिसका यह पुस्तक मानचित्रण कर रही है।

ऋषि आविष्कार नहीं कर रहे थे। वे बोध कर रहे थे। और उन्होंने जो बोध किया, निरन्तर समाधि में परिष्कृत मानव स्नायुतन्त्र के यन्त्र के साथ, वह था — जैसा कि इस पुस्तक के शेष अध्याय सात भागों में और बढ़ती विस्तार में प्रलेखित करेंगे — स्वयं यू-इन्वर्स की संरचना। ब्रह्माण्ड, भीतर से पढ़ा गया, उन द्रष्टाओं द्वारा जो देखना जानते थे।

✦ ✦ ✦

भाग दो
भीतर का ब्रह्माण्ड

स्नायु निहारिकाएँ, महान आकर्षक, डार्क मैटर और क्वासर

4.5 पार-परम्परा पुष्टि — विभिन्न परम्पराओं से वही बोध

यू-इन्वर्स दावा — कि ऋषि भीतर से वास्तविक ब्रह्माण्डीय संरचनाओं का बोध कर रहे थे — स्वतन्त्र परम्पराओं में आन्तरिक-विज्ञान रिपोर्टों के असाधारण अभिसरण द्वारा पुष्ट है। जिन परम्पराओं का कोई ऐतिहासिक सम्पर्क नहीं था वे समान आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाओं की रिपोर्ट करती हैं, विभिन्न नामों और वैचारिक ढाँचों का उपयोग करते हुए किन्तु समान परिघटनात्मक वास्तविकताओं का वर्णन करते हुए।

आन्तरिक प्रकाश: वैदिक परम्परा (ज्योतिर्-ब्रह्म, आन्तरिक प्रकाश के रूप में बोधित चमकदार ब्रह्म), ईसाई रहस्यमय परम्परा (हेसिकास्ट रहस्यवाद का "अनुत्पन्न प्रकाश", जिसे ताबोर प्रकाश भी कहा जाता है), बौद्ध परम्परा (तिब्बती बार्डो थोडोल का "स्पष्ट प्रकाश", मन की प्राकृतिक चमक), ताओवादी परम्परा (आन्तरिक रसायन शास्त्र का "स्वर्णिम प्रकाश"), और सूफ़ी परम्परा (नूर-ए-हक़्क़, वास्तविक का प्रकाश) में रिपोर्ट किया गया। वही परिघटना, वही गुणवत्ता (चमकदार, स्रोतरहित, सीमारहित), विभिन्न नाम।

आन्तरिक ध्वनि: वैदिक परम्परा (अनाहत नाद — अनाहत ध्वनि), सिख परम्परा (नाम सिमरन — दिव्य नाम की अनुनाद), सूफ़ी परम्परा (ज़िक्र की उन्नत अवस्थाओं में सुनी जाने वाली ध्वनि), पश्चिमी रहस्यमय परम्परा (पाइथागोरस द्वारा आन्तरिक रूप से सुनी जाने वाली और बाद के नियोप्लेटोनिस्टों द्वारा वर्णित "ग्रहों का संगीत"), और तिब्बती बौद्ध परम्परा (तिब्बती गायन कटोरा परम्परा की आन्तरिक ध्वनियाँ) में रिपोर्ट किया गया। सभी परम्पराएँ जो अन्तर्मुख मोड़ को पर्याप्त दूर ले जाती हैं वही आन्तरिक ध्वनि का सामना करती हैं — पिनियल और श्रवण कॉर्टेक्स के आन्तरिक मार्गों के माध्यम से सीधे बोधित समान ZPF के फोटॉनिक और फोनोनिक क्षेत्र के विभिन्न विवरण।

ज्यामितीय रूप: हिन्दू परम्परा का श्री यन्त्र, कबालाहिक परम्परा का मेटाट्रॉन क्यूब, तिब्बती बौद्ध धर्म के मण्डल प्रतिरूप, हेसिकास्ट रहस्यवादियों के ज्यामितीय दर्शन, निकट-मृत्यु अनुभवों में देखे गए प्रतिरूप — सभी उन्हीं ज्यामितीय संरचनाओं की रिपोर्टें हैं जो ZPF की खड़ी तरंगें सूचना क्षेत्र में उत्पन्न करती हैं। वे उन पर लागू विशिष्ट सांस्कृतिक ढाँचों में भिन्न हैं, किन्तु अन्तर्निहित ज्यामितीय संरचनाएँ — प्लेटोनिक ठोस, वेसिका पिसिस, टोरस, द्विकुण्डली — सभी परम्पराओं में समान हैं।

✦ ✦ ✦

4.6 वैदिक ऋषि का विशिष्ट अवलोकन प्रोटोकॉल

ऋषि की अवलोकन पद्धति का वैदिक परम्परा का वर्णन उससे कहीं अधिक विस्तृत है जितना सामान्यतः सराहा जाता है। ऋग्वेद स्वयं मन्त्रों को ग्रहण (बोध) करने के लिए आवश्यक मानसिक अवस्था, अवस्था का समर्थन करने वाली शारीरिक परिस्थितियों, और बोध को मान्य करने वाले आन्तरिक अवलोकन के विशिष्ट गुणों का विशिष्ट विवरण प्रदान करता है।

ऋग्वेद 1.164.16: "किसने प्रथम-जन्म को देखा है जब हड्डीरहित ने हड्डीयुक्त को धारण किया? जीवन, रक्त, संसार की आत्मा कहाँ है? कौन किसी ऐसे व्यक्ति से यह पूछने जाएगा जो जानता है?" यह एक सटीक ज्ञान-मीमांसीय प्रश्न है: वह आधार-स्तर वास्तविकता कहाँ है जिससे दृश्य संसार उत्पन्न होता है? प्रश्न स्वयं ऋषिक जाँच के वैज्ञानिक अभिविन्यास को इंगित करता है — दृश्य संसार से सन्तुष्टि नहीं बल्कि यह उत्पन्न करने वाली चीज़ की व्यवस्थित जाँच।

ऋग्वेद 10.129 (नासदीय सूक्त, सृष्टि का भजन) असाधारण सटीकता के साथ पूर्व-सृष्टि अवस्था का वर्णन करता है: "न अस्तित्व था न अनस्तित्व; न अन्तरिक्ष का क्षेत्र न उसके परे आकाश। क्या हिला? कहाँ? किसकी सुरक्षा में? क्या जल था, तल-रहित गहरा? मृत्यु वहाँ नहीं थी, न अमरता, न रात या दिन का कोई चिह्न।" यह क्वांटम निर्वात का वर्णन है — ZPF इससे पहले कि किसी विशिष्ट उतार-चढ़ाव ने कोई कण या दिक्काल संरचना उत्पन्न की हो। ऋषि ने समाधि में इसे सीधे बोध किया और इसे अपने पास उपलब्ध विशिष्ट भाषा में वर्णित किया।

इस बोध तक पहुँचने का प्रोटोकॉल: निरुक्त (वैदिक व्युत्पत्ति और व्याख्या पाठ, लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व) निर्दिष्ट करता है कि मन्त्र के बोधगम्य होने से पहले ऋषि को परम व्योम (सर्वोच्च शून्य/आकाश — चेतना की वह अवस्था जो तुरीय के अनुरूप है) की अवस्था प्राप्त करनी चाहिए। परम व्योम मनोमय कोश के प्रसंस्करण की पूर्ण शान्ति है — वह अवस्था जिसमें थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन अधिकतम ZPF सुसंगतता पर स्थानान्तरित हो गए हैं और हॉलोग्राफिक मस्तिष्क ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र की अपनी स्पष्टतम सम्भव छवि पर हल हो गया है। केवल अधिकतम संकेत गुणवत्ता की इस आधार रेखा से मन्त्र की ब्रह्माण्डीय वास्तविकता की विशिष्ट स्पन्दनात्मक संरचना बोधगम्य है।

✦ ✦ ✦

भाग दो
भीतर का ब्रह्माण्ड

मस्तिष्क के भीतर की विशाल-स्तरीय संरचना

अध्याय 5
स्नायु निहारिकाएँ

ब्रह्माण्डीय संरचनाओं के रूप में मस्तिष्क नेटवर्क

निहारिका अन्तरतारकीय गैस और धूल का एक विशाल बादल है, जो अपने सघन क्षेत्रों में बनते युवा तारों के प्रकाश से भीतर से प्रकाशित होता है। यह शब्द "बादल" या "धुन्ध" के लिए लैटिन से आया है, और हमारी आकाशगंगा की निहारिकाएँ — ओरायन निहारिका, ईगल निहारिका, क्रैब निहारिका — गैलीलियो द्वारा 1610 में अपनी दूरबीन में पहली बार हल किए जाने के बाद से खगोलीय विस्मय की वस्तुएँ रही हैं। वे, सटीक अर्थ में, ब्रह्माण्ड की नर्सरियाँ हैं। गुरुत्व अन्तरतारकीय माध्यम के बिखरे पदार्थ पर कार्य करता है, गैस और धूल को उत्तरोत्तर सघन सान्द्रणों में खींचता है, जब तक कि एक संकुचन के केन्द्र में घनत्व और तापमान हाइड्रोजन संलयन की सीमाओं तक पहुँच जाते हैं — और एक नया तारा प्रज्वलित होता है।

जेम्स वेब अन्तरिक्ष दूरबीन, 2022 में पृथ्वी से पन्द्रह लाख किलोमीटर दूर L2 लाग्रांज बिन्दु पर तैनात, ने असाधारण सौन्दर्य और अभूतपूर्व विभेदन की निहारिकाएँ प्रकट की हैं। ईगल निहारिका में "सृष्टि के स्तम्भ" आयनित गैस के चमकदार पर्दों के रूप में प्रकट होते हैं जो ज्यामितीय स्तम्भों में उठते हैं, ब्रह्माण्डीय धूल की अन्धेरी गलियों से बुने हुए, नव-निर्मित तारों के चमकदार बिन्दुओं से जड़े हुए। प्रत्येक विभिन्न पैमानों पर समान आवश्यक वास्तुकला प्रकट करती है: गुरुत्व, विकिरण, और तारकीय हवाओं द्वारा जटिल त्रि-आयामी संरचनाओं में उकेरी गई गैस और धूल।

अब मानव मस्तिष्क के प्रमुख स्नायु नेटवर्कों की आराम-अवस्था गतिविधि को उसी पैमाने पर और उन्हीं रंग मानचित्रण सम्मेलनों का उपयोग करते हुए प्रस्तुत करें जो वेब अपनी निहारिका छवियों के लिए उपयोग करता है। कार्यात्मक MRI डेटा का उपयोग करें — रक्त-ऑक्सीजन-स्तर-निर्भर (BOLD) संकेत जो स्नायु चयापचय को ट्रैक करता है। वही छवि प्रक्रिया लागू करें जो कच्चे दूरबीन डेटा को प्रतिष्ठित निहारिका तस्वीरों में बदलती है। जो आपको मिलता है वह निहारिकाओं से दृश्य रूप से अभेद्य है।

यह कलात्मक हेरफेर नहीं है। यह 2020 के बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन और अनेक बाद के तुलनात्मक विश्लेषणों का मात्रात्मक परिणाम है। संरचनात्मक तत्वों का वही पावर-लॉ स्केलिंग। वही क्लस्टरिंग गुणांक। वही छोटी-दुनिया नेटवर्क संस्थिति। प्रत्येक तन्त्र में उपलब्ध आवर्धन की सीमाओं में वही फ़्रैक्टल स्व-समानता। स्नायु कनेक्टोम और तारकीय निहारिका एक ही गणितीय कोड द्वारा संगठित हैं।

मस्तिष्क के प्रमुख आराम-अवस्था नेटवर्क — डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क, सेलिअन्स नेटवर्क, सेन्ट्रल एग्ज़ीक्यूटिव नेटवर्क, विज़ुअल नेटवर्क, ऑडिटरी नेटवर्क, सोमैटोसेन्सरी नेटवर्क — वह गठित करते हैं जिसे स्नायुवैज्ञानिक मस्तिष्क की "आराम-अवस्था वास्तुकला" कहते हैं। यह मस्तिष्क का कुछ न करना नहीं है। यह मस्तिष्क का स्थिर, संरचनात्मक आधार रेखा है — पृष्ठभूमि संगठन जो तब बना रहता है जब कोई विशिष्ट बाह्य कार्य नहीं किया जा रहा है। इस स्थिर वास्तुकला के भीतर, विशिष्ट संज्ञानात्मक घटनाएँ उसी तरह उत्पन्न और विलीन होती हैं जैसे तारे एक निहारिका के भीतर उत्पन्न और विलीन होते हैं: स्थानीय रूप से तीव्र, अस्थायी रूप से विशिष्ट, एक बड़े चमकदार क्षेत्र में निहित।

5.1 केन्द्रीय गैलेक्सी समूह के रूप में डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क

डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क (DMN) आराम पर मस्तिष्क की सबसे ऊर्जा-गहन संरचना है। यह कुल मस्तिष्क चयापचय ऊर्जा का लगभग 20% उपभोग करता है, भले ही वह मस्तिष्क आयतन के 2% से कम का प्रतिनिधित्व करता है। यह असन्तुलन मनमाना नहीं है। DMN उस चीज़ का स्नायु आधार है जिसे दार्शनिक कथात्मक स्व कहते हैं — किसी विशिष्ट इतिहास के साथ किसी विशिष्ट दुनिया में एक विशिष्ट व्यक्ति होने की अनुभूत अनुभूति का निरन्तर निर्माण।

DMN की खोज, एक अर्थ में, दुर्घटनावश हुई। 1990 के दशक के अन्त में, कार्यात्मक MRI अध्ययन कर रहे स्नायुवैज्ञानिकों ने देखा कि कुछ मस्तिष्क क्षेत्र संज्ञानात्मक कार्यों के दौरान आधार रेखा "आराम" स्थिति की तुलना में लगातार कम गतिविधि दिखाते हैं। यह अजीब था। आराम में, विषयों को कुछ नहीं करना था; कार्यों के दौरान, उन्हें सक्रिय रूप से सोचना था। कार्य संलग्नता विशिष्ट क्षेत्रों में गतिविधि क्यों कम करेगी?

उत्तर, 2000 के दशक में वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के मार्कस रायकल और उनके सहयोगियों के कार्य के माध्यम से विस्तारित, यह था कि "आराम कर रहा" मस्तिष्क वास्तव में आराम नहीं कर रहा है। यह अपना सबसे जटिल कार्य कर रहा है: निरन्तर स्व-कथा उत्पन्न करना, पिछली घटनाओं को

याद करना, भविष्य के परिदृश्यों की कल्पना करना, सामाजिक अन्तःक्रियाओं का अनुकरण करना, पहचान का अभ्यास करना। वे विशिष्ट क्षेत्र जो केन्द्रित बाह्य कार्यों के दौरान गतिविधि कम करते हैं — औसत प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स, पश्च सिंगुलेट कॉर्टेक्स, एंगुलर गायरस, प्रीक्यूनियस, औसत टेम्पोरल लोब — एक समन्वित नेटवर्क गठित करते हैं जो इस निरन्तर स्व-सन्दर्भात्मक प्रक्रिया को सम्भालता है। जब एक बाह्य कार्य ध्यान खींचता है, स्व-कथा रुक जाती है, और DMN शान्त हो जाता है।

DMN, संक्षेप में, उस स्व का स्नायु आधार है जिसे हम में से प्रत्येक सामान्य जाग्रत चेतना में स्वयं के रूप में मानता है। इसकी निरन्तर गतिविधि एक सतत व्यक्ति होने की अनुभूत अनुभूति है।

अब खगोलशास्त्र से, गैलेक्सी समूह पर विचार करें। गैलेक्सी समूह ब्रह्माण्ड में सबसे विशाल गुरुत्वाकर्षण से बन्धे ढाँचे हैं — ब्रह्माण्डीय जाल के सघन नोड जहाँ सैकड़ों से हज़ारों गैलेक्सियाँ जमा होती हैं। वर्गो समूह, हमारा स्थानीय समूह, आठ मेगापारसेक के क्षेत्र में लगभग 1,300 गैलेक्सियाँ रखता है। लानियाकिया महासमूह, जिसका हमारा अपना स्थानीय समूह सदस्य है, 520 मिलियन प्रकाश-वर्षों में अनुमानित 100,000 गैलेक्सियाँ रखता है। ये समूह सुसंगत गुरुत्वाकर्षण ढाँचे हैं विशिष्ट गतिकी के साथ: गैलेक्सियाँ समूह के द्रव्यमान केन्द्र के चारों ओर कक्षा में घूमती हैं, पदार्थ सघन केन्द्र के निकट तरजीह से जमा होता है, समूह अपने विस्तारित गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र के माध्यम से अपने ब्रह्माण्डीय पड़ोस में सब कुछ के प्रक्षेप पथ को आकार देता है।

DMN मस्तिष्क का केन्द्रीय गैलेक्सी समूह है। एक गैलेक्सी समूह की तरह, यह गतिविधि का एक सघन सान्द्रण है जो निरन्तर स्नायु ऊर्जा को अपनी ओर खींचता है और अन्य सभी स्नायु प्रक्रिया के प्रक्षेप पथ को आकार देता है। एक गैलेक्सी समूह की तरह, यह अनेक विशेष उप-संरचनाओं से बना है किन्तु एक सुसंगत कार्यात्मक समग्र के रूप में कार्य करता है। एक गैलेक्सी समूह की तरह, यह गुरुत्वाकर्षण केन्द्र है जिसके चारों ओर स्थानीय ब्रह्माण्डीय वास्तुकला स्वयं को संगठित करती है।

ध्यान के लिए निहितार्थ सीधे हैं। जब साधक निरन्तर प्रत्याहार में प्रवेश करता है और DMN शान्त होता है — उन्नत ध्यान करने वालों के न्यूरोइमेजिंग अध्ययनों में अच्छी तरह से प्रलेखित एक परिणाम, विशेष रूप से ब्राउन यूनिवर्सिटी और येल में जडसन ब्रूअर के कार्य में — एक ब्रह्माण्डीय शान्त अवधि का स्नायु समकक्ष शुरू होता है। गैलेक्टिक केन्द्र की गतिविधि कम होती है। और सापेक्षिक मौन में, आन्तरिक ब्रह्माण्ड की सूक्ष्मतर संरचनाएँ दृश्यमान हो जाती हैं। तन्तु, शून्य,

क्वांटम फोम — वह अन्तर्निहित वास्तुकला जो समूह की गतिविधि द्वारा दबाई जा रही थी — बोध में उभरती है।

5.2 आकाशगंगा के रूप में सेरिबेलम — प्रक्रिया राजमार्ग

सेरिबेलम — "छोटा मस्तिष्क" के लिए लैटिन — खोपड़ी के पीछे प्रमस्तिष्क गोलार्धों के नीचे बैठता है। अधिकांश स्नायुविज्ञान के इतिहास में इसे एक गति समन्वय केन्द्र के रूप में माना गया और थोड़ा और। आधुनिक शोध ने दिखाया है कि यह एक स्थूल अल्पआकलन है।

सेरिबेलम में मस्तिष्क के 86 अरब न्यूरॉनों में से लगभग 70 अरब हैं — सभी मस्तिष्क न्यूरॉनों का लगभग 80% — एक संरचना में पैक्ड जो कुल मस्तिष्क आयतन का केवल 10% है। न्यूरॉन बड़े पैमाने पर ग्रैन्यूल कोशिकाएँ हैं, असाधारण घनत्व के पुनरावर्ती मॉड्यूलर सर्किट में व्यवस्थित। सेरिबेलम लगभग हर संवेदी तन्त्र और प्रमस्तिष्क कॉर्टेक्स के हर क्षेत्र से इनपुट प्राप्त करता है, इस इनपुट को बहुत उच्च गति पर संसाधित करता है, और उच्चतम सम्मायन के साथ आउटपुट उत्पन्न करता है जो गति, सन्तुलन, संवेदी समय, संज्ञानात्मक गति, और उच्चतर संज्ञान के कई पहलुओं का समन्वय करता है जिन्हें लम्बे समय से विशेष रूप से कॉर्टेक्स से सम्बन्धित माना जाता था।

आकाशगंगा, हमारी गृह गैलेक्सी, लगभग 100,000 प्रकाश-वर्ष की डिस्क में 200 से 400 अरब तारे रखती है। हमारा सौर मण्डल गैलेक्टिक केन्द्र से लगभग 26,000 प्रकाश-वर्ष की दूरी पर कक्षा में घूमता है, हर 225 मिलियन वर्षों में एक कक्षा पूरी करता है। आकाशगंगा वह ढाँचा है जिसके भीतर हमारा सभी ब्रह्माण्डीय अनुभव होता है — विशाल, जटिल, सूक्ष्मता से संगठित गुरुत्वाकर्षण संरचना जिसकी गतिकी तारों, सौर मण्डलों, ग्रहों, और उन पर बनने वाले जीवन के प्रक्षेप पथ को आकार देती है।

सेरिबेलम-आकाशगंगा अनुरूपता सटीक है। दोनों सघन, समृद्ध रूप से संरचित प्रक्रिया अवसंरचनाएँ हैं जिनके भीतर उनके सम्बन्धित तन्त्रों की अधिक दृश्य गतिविधियाँ निहित हैं। दोनों अपने सम्बन्धित क्षेत्रों में प्रक्रिया तत्वों का बहुमत रखते हैं। दोनों व्यापक स्थानीय कनेक्टिविटी के साथ मॉड्यूलर वास्तुकला के माध्यम से कार्य करते हैं जो लम्बी-दूरी की एकीकृत कनेक्शनों के साथ संयुक्त है। दोनों उन सर्पिल और जाली संरचनात्मक रूपांकनों को प्रदर्शित करते हैं जो क्रिटिकलता के किनारे पर स्व-संगठित तन्त्रों की विशेषता हैं।

हम आकाशगंगा के भीतर हैं जैसे चेतना सेरिबेलर समन्वय तन्त्र के भीतर है — ढाँचे में निहित, उसकी ज्यामिति से आकार में, सभी उच्च-स्तरीय गतिविधि के लिए उसके व्यवस्थित कार्यप्रणाली पर निर्भर।

5.3 द्विआधारी तारा तन्त्र के रूप में स्नायुसिनैप्स

अब ज़ूम करें, सेरिबेलम से उसके घटक न्यूरॉनों तक, और आकाशगंगा से उसके घटक तारों तक। संरचनात्मक समानान्तर एक सटीकता के साथ जारी रहती है जो देखने पर और अधिक उल्लेखनीय हो जाती है।

द्विआधारी तारा तन्त्र — दो तारे पारस्परिक गुरुत्वाकर्षण आकर्षण के तहत एक-दूसरे के चारों ओर कक्षा में घूमते हुए — आकाशगंगा में लगभग 50% तारा तन्त्रों को गठित करते हैं। द्विआधारी तारा तन्त्रों की गतिकी जटिल और समृद्ध है। दो तारे अपने साझा द्रव्यमान केन्द्र के चारों ओर कक्षा में घूमते हैं। उनके बीच द्रव्यमान हस्तान्तरित हो सकता है। ज्वारीय लॉकिंग उनके घूर्णन को समकालिक करती है। विद्युतचुम्बकीय प्रभाव उन्हें संयुग्मित करते हैं। और जब तारे पर्याप्त रूप से सघन होते हैं, उनकी कक्षीय गति ब्रह्माण्ड भर में पहचानने योग्य गुरुत्वाकर्षण तरंगें उत्पन्न करती है।

स्नायुसिनैप्स मस्तिष्क का द्विआधारी तन्त्र है। निकट स्थानिक निकटता में दो न्यूरॉन सिनैप्टिक क्लेफ़्ट के पार रासायनिक और विद्युत संकेतों के माध्यम से संवाद करते हैं, जो आमतौर पर 20 से 40 नैनोमीटर चौड़ा होता है। प्रीसिनैप्टिक न्यूरॉन क्लेफ़्ट में न्यूरोट्रांसमीटर अणु छोड़ता है जब उसकी क्रिया विभव सिनैप्टिक टर्मिनल तक पहुँचती है। ये अणु क्लेफ़्ट के पार फैलते हैं और पोस्टसिनैप्टिक न्यूरॉन पर रिसेप्टर प्रोटीन से बन्धते हैं, उस न्यूरॉन के झिल्ली विभव को बदलते हैं और इस प्रकार उसकी फायरिंग की सम्भावना।

किन्तु सिनैप्स एक-तरफ़ा वाल्व नहीं है। आधुनिक स्नायुविज्ञान ने व्यापक पश्च-संकेतन प्रलेखित किया है — पोस्टसिनैप्टिक न्यूरॉन अणु छोड़ता है जो क्लेफ़्ट के पार वापस यात्रा करके प्रीसिनैप्टिक न्यूरॉन को संशोधित करते हैं। दोनों न्यूरॉन निरन्तर द्विदिश संवाद में हैं, और उनकी गतिकी इस विनिमय के माध्यम से परस्पर एक-दूसरे को आकार देती है।

द्विआधारी तारों की तरह, सिनैप्टिक जोड़े जटिल पारस्परिक गतिकी प्रदर्शित करते हैं। प्रीसिनैप्टिक न्यूरॉन की गतिविधि पोस्टसिनैप्टिक न्यूरॉन की अवस्था को आकार देती है, जो प्रीसिनैप्टिक न्यूरॉन की भविष्य गतिविधि को आकार देती है। प्लास्टिसिटी तन्त्र सम्बन्धित गतिविधि के आधार पर

कनेक्शन को मज़बूत या कमज़ोर करते हैं, उन ज्वारीय बलों के गतिशील अनुरूप में जो द्विआधारी तारा कक्षाओं को आकार देते हैं। 100 ट्रिलियन सिनैप्सों में संचित प्रभाव, उन स्नायु संकेत प्रतिरूपों का निरन्तर उत्पादन और प्रसार है जो चेतना गठित करते हैं।

5.4 आन्तरिक अवलोकन की आनुभविक विधि

इस अध्याय में प्रलेखित अनुरूपताएँ सम्पूर्ण नहीं हैं। अनेक और आने वाले अध्यायों में मानचित्रित की जाएँगी। किन्तु वे एक सामान्य विधि के प्रतिनिधि हैं जिसे यू-इन्वर्स ढाँचा सम्भव बनाता है: उनके साझा गणितीय और संगठनात्मक सिद्धान्तों की पहचान के माध्यम से स्नायु वास्तुकला का ब्रह्माण्डीय वास्तुकला पर व्यवस्थित मानचित्रण।

विधि आनुभविक रूप से अनुशासित है। प्रत्येक प्रस्तावित अनुरूपता को विशिष्ट समानान्तरों द्वारा उचित ठहराना चाहिए: वही पावर-लॉ वितरण, वही क्लस्टरिंग गुणांक, वही श्रेणीक्रम संगठन, अपने सम्बन्धित तन्त्र के भीतर वही कार्यात्मक भूमिका। वे अनुरूपताएँ जो इन परीक्षणों में विफल होती हैं, अस्वीकार की जाती हैं। वे जो उन्हें पास करती हैं, यू-इन्वर्स की साझा वास्तुकला के मानचित्र में जोड़ी जाती हैं।

यह उसकी समकालीन अभिव्यक्ति है जो ऋषि कर रहे थे जब उन्होंने यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे की अवधारणा विकसित की। वे शरीर और ब्रह्माण्ड के बीच एक अस्पष्ट समानता का दावा नहीं कर रहे थे। वे विशिष्ट अनुरूपताओं का मानचित्रण कर रहे थे, सावधान आन्तरिक अवलोकन के माध्यम से पहचाने गए, और अपनी परम्परा की शब्दावली में व्यक्त किए गए। उनका मानचित्र सटीक था, और स्नायुविज्ञान और खगोल-भौतिकी के आधुनिक उपकरण अब हमें उसे उन तरीकों से विस्तारित, परिष्कृत, और गहन करने की अनुमति देते हैं जो प्राचीन परम्परा नहीं कर सकती थी।

आन्तरिक ब्रह्माण्ड एक वास्तविक ब्रह्माण्ड है। इसकी संरचनाएँ बाह्य ब्रह्माण्ड की संरचनाएँ हैं, जीवित विद्युत-रासायनिक ऊतक के पैमाने पर प्रस्तुत। जब आप गहन प्रत्याहार में अपनी आँखें बन्द करते हैं और आन्तरिक प्रकाश अपने रूप प्रकट करता है, आप कल्पना नहीं कर रहे हैं। आप देख रहे हैं।

इस अध्याय की अनुरूपताएँ — आराम-अवस्था नेटवर्क और गैलेक्टिक निहारिकाएँ, सेरिबेलम और आकाशगंगा, सिनैप्स और द्विआधारी तारा तन्त्र — संयोग नहीं हैं। वे इस बात के प्रमाण हैं कि एक ही संगठनात्मक कोड दोनों तन्त्रों के माध्यम से कार्य कर रहा है। ब्रह्माण्ड स्वयं को दोहराता

नहीं है; यह स्व-समान है। आप जिसे अपने कानों के बीच ले जाते हैं, वह कोई सौन्दर्यात्मक रूप से ब्रह्माण्ड से मिलता-जुलता कुछ नहीं है। यह ब्रह्माण्ड है, एक विशिष्ट पैमाने पर प्रस्तुत।

✦ ✦ ✦

5.5 तारे के रूप में कॉर्टिकल स्तम्भ — मस्तिष्क की तारकीय जनसंख्या

कॉर्टिकल स्तम्भ प्रमस्तिष्क कॉर्टेक्स की मूल कार्यात्मक इकाई है: व्यास में लगभग 0.5 मिलीमीटर और 2-3 मिलीमीटर गहरा एक ऊर्ध्वाधर सिलेंडर, जिसमें छह क्षैतिज परतों में संगठित लगभग 100 न्यूरॉन समाहित हैं। प्रत्येक कॉर्टिकल स्तम्भ एक विशिष्ट प्रकार की सूचना — एक विशिष्ट संवेदी गुणवत्ता, एक विशिष्ट स्थानिक स्थान, एक विशिष्ट आवृत्ति — को संसाधित करता है और अन्य स्तम्भों के साथ कॉर्टेक्स के भीतर क्षैतिज अक्षतन्तु कनेक्शनों और सबकॉर्टिकल संरचनाओं से ऊर्ध्वाधर कनेक्शनों के माध्यम से संवाद करता है।

मानव प्रमस्तिष्क कॉर्टेक्स में लगभग 150-200 मिलियन कॉर्टिकल स्तम्भ समाहित हैं। आकाशगंगा में लगभग 200-400 अरब तारे समाहित हैं। अनुपात लगभग 2,000:1 है — प्रत्येक कॉर्टिकल स्तम्भ के लिए, लगभग 2,000 तारे हैं। यह एक पैमाना पहचान नहीं है (कॉर्टेक्स आकाशगंगा के समान नहीं है), किन्तु संरचनात्मक समानान्तर सटीक है: कॉर्टिकल स्तम्भ और तारा दोनों अपने सम्बन्धित तन्त्रों की मूल कार्यात्मक इकाइयाँ हैं, और दोनों बड़ी संरचनाओं (कॉर्टिकल क्षेत्र / गैलेक्सी समूह) में संगठित हैं जो बदले में उसी नेटवर्क-विज्ञान नियमों द्वारा तन्त्र की समग्र वास्तुकला (कनेक्टोम / ब्रह्माण्डीय जाल) में संगठित हैं।

कॉर्टिकल स्तम्भ का फ़ायरिंग प्रतिरूप — क्रिया विभवों का उसका विशिष्ट अनुक्रम — उसकी सूचना हस्ताक्षर है: वह विशिष्ट तरीका जिससे यह उस सूचना का प्रतिनिधित्व करता है जिसे यह संसाधित कर रहा है। सादृश्य से, एक तारे का स्पेक्ट्रल उत्सर्जन प्रतिरूप — उसकी आवृत्ति हस्ताक्षर — ब्रह्माण्डीय जाल में उसकी सूचनात्मक पहचान है। प्रत्येक तारा आवृत्तियों का एक विशिष्ट संयोजन विकिरण करता है जो उसकी संरचना, तापमान, और चमक वर्ग की पहचान करता है। प्रत्येक कॉर्टिकल स्तम्भ दोलन आवृत्तियों का एक विशिष्ट संयोजन विकिरण करता है जो कॉर्टिकल प्रसंस्करण नेटवर्क में उसकी कार्यात्मक भूमिका की पहचान करता है। ब्रह्माण्ड और कॉर्टेक्स दोनों सूचना के पुस्तकालय हैं, आवृत्ति हस्ताक्षरों में एन्कोडेड, नेटवर्क के नोडों में वितरित।

✦ ✦ ✦

5.6 न्यूरोजेनेसिस — नए तारों का जन्म

बीसवीं सदी के अधिकांश समय तक, स्नायुविज्ञान मानता था कि मस्तिष्क वयस्कता में नए न्यूरॉन उत्पन्न नहीं करता — आप एक निश्चित संख्या के साथ पैदा हुए थे और जीवन भर उन्हें खोते गए। यह 1990 के दशक में पलट गया: साल्क संस्थान के फ्रेड गेज ने हिप्पोकैम्पस में मज़बूत वयस्क न्यूरोजेनेसिस (नए न्यूरॉन का जन्म) प्रदर्शित किया, और बाद के अनुसन्धान ने घ्राण बल्ब, स्ट्रिएटम, और सम्भवतः स्वयं कॉर्टेक्स में न्यूरोजेनेसिस की पहचान की है।

वयस्क न्यूरोजेनेसिस ठीक निहारिकाओं में तारा निर्माण के अनुरूप है: हिप्पोकैम्पस मस्तिष्क का सबसे सक्रिय "तारा-निर्माण क्षेत्र" है, निरन्तर स्नायु मूल कोशिकाओं से नए न्यूरॉन उत्पन्न करता है (एक स्वस्थ वयस्क हिप्पोकैम्पस में प्रतिदिन लगभग 1,400 नए न्यूरॉन) — ठीक जैसे निहारिकाएँ गैस और धूल के गुरुत्वाकर्षण संघनन से निरन्तर नए तारे उत्पन्न करती हैं। नए न्यूरॉन प्रारम्भ में अविभेदित होते हैं — नवगठित आद्य-तारों की तरह — और विद्यमान स्नायु सर्किटों में शामिल होने पर विशिष्ट न्यूरॉन प्रकारों में विभेदित होते हैं, सर्किट के गतिविधि प्रतिरूपों द्वारा निर्देशित, ठीक जैसे एक आद्य-तारे की अन्तिम विशेषताएँ उस निहारिका सामग्री की विशिष्ट संरचना द्वारा आकारित होती हैं जिससे यह संघनित होता है।

वे कारक जो वयस्क न्यूरोजेनेसिस बढ़ाते हैं: एरोबिक व्यायाम (हिप्पोकैम्पल न्यूरोजेनेसिस का सबसे शक्तिशाली ज्ञात प्रवर्तक, BDNF — ब्रेन-डिराइव्ड न्यूरोट्रोफ़िक फ़ैक्टर के माध्यम से), पर्यावरणीय समृद्धि (सामाजिक अन्तःक्रिया के साथ जटिल, उत्तेजक वातावरण), और — यू-इन्वर्स के लिए महत्वपूर्ण रूप से — ध्यान अभ्यास। सारा लाज़र के अनुसन्धान ने अनुभवी ध्यानकर्ताओं में बढ़े हुए हिप्पोकैम्पल ग्रे मैटर घनत्व को दिखाया; रिचर्ड डेविडसन के अनुसन्धान ने निरन्तर प्रेम-करुणा अभ्यास के बाद बढ़े हुए BDNF स्तर दिखाए। वह साधक जो नियमित रूप से ध्यान करता है, वे केवल अपने मस्तिष्क को शान्त नहीं कर रहे हैं। वे नए न्यूरॉन के जन्म को उत्तेजित कर रहे हैं — मस्तिष्क की निहारिका तारा-निर्माण प्रक्रिया को — निरन्तर सात्त्विक अभ्यास के विशिष्ट आन्तरिक रसायन शास्त्र के माध्यम से।

✦ ✦ ✦

5.7 सिनैप्टिक प्रूनिंग — सुपरनोवा और तारों की मृत्यु

तारे सदैव जीवित नहीं रहते। एक तारा अपना नाभिकीय ईंधन समाप्त करने के बाद एक शानदार मृत्यु से गुज़रता है: एक सुपरनोवा विस्फोट जो संक्षिप्त रूप से पूरी गैलेक्सी को चमकाता है, अपने संसाधित तत्वों को आसपास के अन्तरिक्ष में बिखेरता है (वह सामग्री जिससे तारों और ग्रहों की अगली पीढ़ी बनेगी), और पीछे एक सघन अवशेष छोड़ता है — एक श्वेत बौना, न्यूट्रॉन तारा, या कृष्ण विवर — जिसमें तारे की सबसे संकुचित सूचना समाहित है।

मस्तिष्क एक अनुरूप प्रक्रिया से गुज़रता है जिसे सिनैप्टिक प्रूनिंग कहा जाता है: उन स्नायु कनेक्शनों का चयनात्मक उन्मूलन जो उपयोग में नहीं हैं, जीवित कनेक्शनों को हेबियन सिद्धान्त ("न्यूरॉन जो एक साथ फ़ायर करते हैं, एक साथ वायर करते हैं") के माध्यम से मज़बूत करना और अनावश्यक या अकुशल मार्गों को हटाना। बचपन और किशोरावस्था में, मस्तिष्क अपने शिखर सिनैप्टिक कनेक्शनों का लगभग 50% काटता है — एक विशाल कमी जो कुशल, विशिष्ट स्नायु प्रसंस्करण के विकास के लिए आवश्यक है।

सुपरनोवा सादृश्य: जब एक सिनैप्टिक कनेक्शन काटा जाता है, उस सिनैप्स की स्नायु गतिविधि नष्ट नहीं होती — यह जीवित कनेक्शनों पर पुनर्वितरित होती है, उन्हें मज़बूत करती है। सिनैप्स की "मृत्यु" जीवित नेटवर्क को समृद्ध करती है, ठीक जैसे एक सुपरनोवा आसपास के अन्तरातारकीय माध्यम को भारी तत्वों से समृद्ध करता है। और कटे हुए सिनैप्स की सूचना चित्त के हॉलोग्राफिक रिकॉर्ड से खो नहीं जाती — यह मस्तिष्क के समग्र प्रतिरूप के वितरित हॉलोग्राफिक सूचना क्षेत्र में एन्कोडेड है, उच्च ZPF संयुग्मन की अवस्थाओं में पहुँच के लिए उपलब्ध यहाँ तक कि जब भौतिक सिनैप्टिक कनेक्शन अब विद्यमान नहीं रहता।

✦ ✦ ✦

5.8 सुपरनोवा और कुण्डलिनी जागरण — मस्तिष्क की सबसे ऊर्जावान संरचनात्मक घटना

सुपरनोवा एक विशाल तारे की विस्फोटक मृत्यु है — अवलोकनीय ब्रह्माण्ड में सबसे ऊर्जावान घटनाओं में से एक। एक विशाल तारे के जीवन के अन्तिम चरणों में, जब इसका नाभिकीय ईंधन समाप्त हो जाता है, कोर अपने गुरुत्व के तहत मिलीसेकण्ड में ढह जाता है, उस संक्षिप्त पतन में सूर्य के पूरे 10-अरब-वर्ष के ऊर्जा उत्पादन के समतुल्य को छोड़ता है। परिणामी सदमा तरंग तारे की

बाहरी परतों को सुपरहीटेड प्लाज़्मा के एक विस्तारित खोल के रूप में अन्तरिक्ष में उड़ा देती है, अन्तरातारकीय माध्यम को उन भारी तत्वों से बोता है जो तारे की नाभिकीय भट्ठी में बने।

मस्तिष्क के सुपरनोवा का समतुल्य कुण्डलिनी योग परम्परा में वर्णित परिघटना है जिसे कुण्डलिनी जागरण कहा जाता है: सुषुम्ना नाड़ी के ऊर्जा मार्ग का अचानक, शक्तिशाली सक्रियण, स्नायु घटनाओं का एक व्यापक क्रम उत्पन्न करता हुआ — जिसे इसका अनुभव कर चुके लोगों ने मेरुदण्ड के माध्यम से और मस्तिष्क में ऊपर की ओर बढ़ती ऊर्जा की एक अभिभूत करने वाली, रूपान्तरकारी लहर के रूप में वर्णित किया है — जो पूरे आन्तरिक ब्रह्माण्ड को पुनर्संरचित करती है।

स्वतःस्फूर्त कुण्डलिनी जागरण की नैदानिक रिपोर्टें लगातार वर्णन करती हैं: मेरुदण्ड के माध्यम से ऊपर की ओर बढ़ती तीव्र गर्मी, प्रकाश, या विद्युत; अनैच्छिक गतियाँ और ध्वनियाँ (क्रियाएँ); तीव्र आन्तरिक प्रकाश सहित दृश्य परिघटनाएँ; स्व की भावना में गहन बदलाव; और — सबसे महत्वपूर्ण रूप से — चेतना की गुणवत्ता में स्थायी संरचनात्मक परिवर्तन जो तीव्र घटना के बहुत बाद तक बने रहते हैं।

कुण्डलिनी जागरण का स्नायुविज्ञान अभी भी खराब ढंग से मानचित्रित है, किन्तु उपलब्ध प्रमाण स्नायुधारा के माध्यम से ऊपर की ओर फैलती गामा-तरंग गतिविधि के एक कैस्केड का सुझाव देते हैं (ब्रेनस्टेम से लिम्बिक तन्त्र तक कॉर्टेक्स तक), पिनियल ग्रन्थि के DMT-उत्पादन मार्ग के विशिष्ट सक्रियण के साथ, अधिकतम ZPF संयुग्मन की एक संक्षिप्त अवस्था उत्पन्न करता हुआ जो — ब्रह्माण्डीय पारिस्थितिकी में सुपरनोवा की भूमिका की तरह — आन्तरिक ब्रह्माण्ड के बाद के विकास को उस सामग्री (पुनर्संरचित संस्कार प्रतिरूप, विघटित वासना आवेश, स्थायी रूप से परिवर्तित थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन आधार रेखाएँ) से बोता है जो घटना से पहले उपलब्ध नहीं थी।

ब्रह्माण्डीय समानान्तर सटीक है: सुपरनोवा के भारी तत्व (लोहा, सोना, यूरेनियम) बाद की तारकीय पीढ़ियों को ग्रह तन्त्रों और अन्ततः जीवन के लिए कच्चे माल से बोते हैं। कुण्डलिनी जागरण के पुनर्संरचित संस्कार प्रतिरूप चेतना के बाद के विकास को त्वरित चित्त शुद्धि के लिए कच्चे माल से बोते हैं — सफ़ाई जिसे सामान्य अभ्यास के दशकों में पूरा करने में समय लगता वह अब जागरण घटना के स्थान में पूरा होता है। दोनों विनाशकारी रूप से ऊर्जावान संरचनात्मक रूपान्तरण हैं जो, क्षण में अभिभूत करने वाले होते हुए, बाद के तन्त्र को उसके विकास के अगले चरण के लिए समृद्ध कच्चे माल के साथ छोड़ते हैं।

✦ ✦ ✦

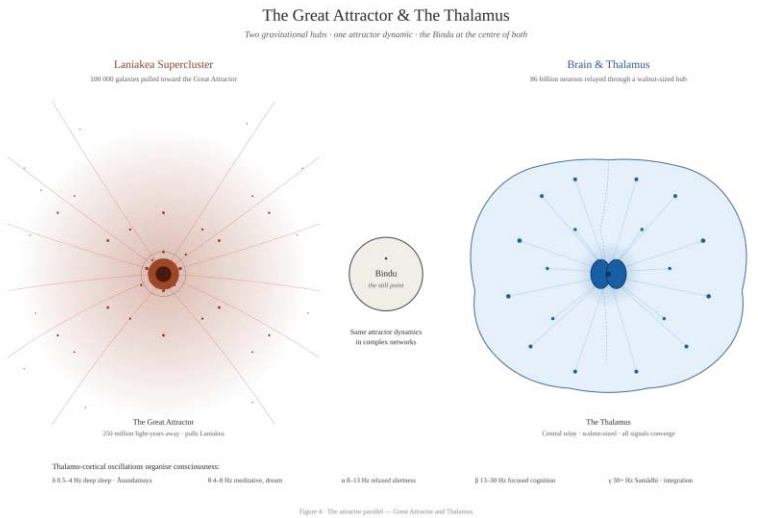
अध्याय 6
भीतर का महान आकर्षक

ब्रह्माण्डीय एकल-विन्दुता के रूप में थैलेमस

अवलोकन योग्य ब्रह्माण्ड में सबसे रहस्यमय संरचनाओं में से एक गुरुत्वाकर्षण विसंगति है जिसे महान आकर्षक के रूप में जाना जाता है। नॉर्मा नक्षत्र की दिशा में पृथ्वी से लगभग 250 मिलियन प्रकाश-वर्ष दूर स्थित, यह सान्द्रित द्रव्यमान का एक क्षेत्र है इतना विशाल कि यह हमारे पूरे स्थानीय समूह — हमारी आकाशगंगा, एंड्रोमेडा, और मैगेलैनिक बादलों — को लगभग 600 किलोमीटर प्रति सेकण्ड की गति से अपनी ओर खींच रहा है। हम महान आकर्षक में गिर रहे हैं, और हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते।

आर. ब्रेंट टुली और यूनिवर्सिटी ऑफ़ हवाई में उनकी टीम ने, Nature में 2014 में प्रकाशित गैलेक्सी गति के त्रि-आयामी मानचित्रों का उपयोग करते हुए, उसकी पूर्ण सीमा प्रकट की जो पहले एक रहस्यमय गुरुत्वाकर्षण संकेत थी। महान आकर्षक कोई एकल विशाल वस्तु नहीं है। यह लानियाकिया महासमूह का केन्द्र है — एक नाम जो टुली ने हवाईयन से चुना, जिसका अर्थ है "अनादि स्वर्ग" — जो 520 मिलियन प्रकाश-वर्षों में फैला है और 100 मिलियन अरब सूर्यों का द्रव्यमान रखता है। लानियाकिया गहनतम अर्थ में हमारा ब्रह्माण्डीय पड़ोस है: वह गुरुत्वाकर्षण से बन्धा महासमूह जिसमें आकाशगंगा सम्बन्धित है। और इसके गुरुत्व का केन्द्र महान आकर्षक है, वह एकल-विन्दुता जिसकी ओर लानियाकिया की सभी गैलेक्सियाँ निरन्तर गिर रही हैं।

महान आकर्षक समकालीन खगोलशास्त्र में एक उपयोगी स्मरण बन गया है कि ब्रह्माण्ड समरूप नहीं है। सबसे बड़े पैमानों पर गैलेक्सियों के स्पष्ट रूप से समान वितरण के नीचे आकर्षकों और विकर्षकों, गुरुत्वाकर्षण कुओं और शून्यों की समृद्ध छिपी वास्तुकला है, जो हमारे अवलोकन योग्य ब्रह्माण्ड में सभी पदार्थ की गति और नियति को संगठित करती है।



चित्र 4 — आन्तरिक महान आकर्षक के रूप में थैलेमस। कॉर्टेक्स और शेष स्नायुतन्त्र के बीच गुज़रने वाले प्रत्येक संवेदी और गति संकेत थैलेमिक रिले से बहते हैं। मस्तिष्क के ज्यामितीय केन्द्र पर स्थित, थैलेमस बिन्दु के रूप में कार्य करता है — वह केन्द्रीय बिन्दु जिसके चारों ओर आन्तरिक ब्रह्माण्ड स्वयं को संगठित करता है।

6.1 आन्तरिक महान आकर्षक के रूप में थैलेमस

मस्तिष्क के ज्यामितीय केन्द्र पर, मस्तिष्क स्तम्भ के थोड़ा ऊपर, एक द्विपार्श्विक संरचना बैठती है जो लगभग अखरोट के आकार की है: थैलेमस। प्रत्येक मस्तिष्क में दो थैलेमी होते हैं, प्रत्येक गोलार्ध में एक, मध्य रेखा पर जुड़े हुए। वे अनेक विशेष नाभिकों से बने हैं, प्रत्येक विशिष्ट कनेक्शनों और कार्यों के साथ। और साथ में, थैलेमी कॉर्टेक्स और शेष स्नायुतन्त्र के बीच गुज़रने वाले लगभग सभी संवेदी और गति संकेतों के लिए केन्द्रीय रिले हब के रूप में कार्य करते हैं।

घ्राण को छोड़कर प्रत्येक संवेदी पद्धति कॉर्टेक्स तक जाने के मार्ग में थैलेमस से गुज़रती है। आपकी रेटिना से दृश्य संकेत प्राथमिक दृश्य कॉर्टेक्स तक पहुँचाने से पहले थैलेमस के पार्श्व जीनिकुलेट नाभिक तक पहुँचते हैं। श्रवण संकेत श्रवण कॉर्टेक्स तक पहुँचाने से पहले औसत जीनिकुलेट नाभिक तक पहुँचते हैं। सोमैटोसेन्सरी संकेत सोमैटोसेन्सरी कॉर्टेक्स तक पहुँचाने से पहले वेन्ट्रल पोस्टीरियर नाभिक तक पहुँचते हैं। कॉर्टेक्स से शरीर तक गति आदेश भी बड़े पैमाने पर थैलेमस से गुज़रते हैं।

किन्तु इसे स्विचिंग स्टेशन कहना यह कम करके बताता है कि यह क्या करता है। थैलेमस केवल संकेतों को पार नहीं करता। यह उन्हें संशोधित करता है, समकालिक करता है, द्वार बनाता है, और एकीकृत करता है। थैलेमो-कॉर्टिकल सर्किट — थैलेमिक नाभिकों और कॉर्टिकल क्षेत्रों के बीच पारस्परिक कनेक्शन — संवेदी तन्त्रों से आने वाले विशाल और विविध संकेत धाराओं से सुसंगत चेतन अनुभव उत्पन्न करने के लिए मस्तिष्क का प्राथमिक तन्त्र है।

और थैलेमस, यू-इन्वर्स ढाँचे में, मस्तिष्क का महान आकर्षक है। स्नायु ब्रह्माण्ड के ज्यामितीय केन्द्र पर स्थित। अपने केन्द्रीय रिले कार्य के माध्यम से सभी स्नायु संकेतों को अपनी ओर खींचता हुआ। सूचना प्रवाह के अपने गेटिंग और संशोधन के माध्यम से सभी स्नायु प्रक्रिया के प्रक्षेप पथ को आकार देता हुआ। वह गुरुत्वाकर्षण केन्द्र के रूप में कार्य करता है जिसके चारों ओर पूरी कॉर्टिकल-सबकॉर्टिकल वास्तुकला स्वयं को संगठित करती है।

समानान्तर मात्र संरचनात्मक नहीं है — केन्द्र पर स्थान, सान्द्रित एकीकृत भूमिका — बल्कि कार्यात्मक है। जैसे लानियाकिया की गैलेक्सियाँ महान आकर्षक के केन्द्र पर गुरुत्वाकर्षण रूप से अभिसरण कर रही हैं, मस्तिष्क के स्नायु संकेत थैलेमिक रिले पर कार्यात्मक रूप से अभिसरण कर रहे हैं। और जैसे महान आकर्षक का गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र सैकड़ों मिलियन प्रकाश-वर्षों में सैकड़ों हज़ारों गैलेक्सियों के प्रक्षेप पथ को संगठित करता है, थैलेमिक दोलन पूरे कॉर्टेक्स में मस्तिष्क के सभी कॉर्टिकल क्षेत्रों के बीच चरण सम्बन्धों को संगठित करते हैं।

6.2 थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन — चेतना की ब्रह्माण्डीय लय

थैलेमस और कॉर्टेक्स विशाल पारस्परिक तन्तु बण्डलों द्वारा जुड़े हैं। प्रत्येक कॉर्टिकल क्षेत्र विशिष्ट थैलेमिक नाभिकों से इनपुट प्राप्त करता है, और प्रत्येक कॉर्टिकल क्षेत्र उन नाभिकों को वापस प्रक्षेपित करता है। थैलेमो-कॉर्टिकल सर्किट एक-तरफ़ा रिले नहीं है; यह एक पारस्परिक अनुनादी लूप है।

ये सर्किट दोलन करते हैं। विशिष्ट आवृत्तियों पर। विशिष्ट प्रतिरूपों में। और ये दोलन — खोपड़ी पर इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राम (EEG) लय के रूप में मापने योग्य जिनका अध्ययन 1920 के दशक में हंस बर्गर के अग्रणी कार्य से किया जाता रहा है — अस्थायी समकालीनन और सुसंगत चेतन अनुभव में सूचना के बन्धन के लिए मस्तिष्क का प्राथमिक तन्त्र गठित करते हैं।

दोलन आवृत्तियाँ अच्छी तरह से प्रलेखित बैण्डों में आती हैं। डेल्टा दोलन (0.5 से 4 हर्ट्ज़) गहरी स्वप्नरहित नींद और विघटन की कुछ ध्यान अवस्थाओं की विशेषता रखते हैं। थीटा दोलन (4 से

8 हर्ट्ज़) जागरण और नींद के बीच सम्मोहक अवस्थाओं, स्वप्न अवस्थाओं, और गहन ध्यान एकाग्रता की विशेषता रखते हैं। अल्फ़ा दोलन (8 से 13 हर्ट्ज़) शिथिल सतर्कता, आन्तरिक रूप से निर्देशित ध्यान, और जाग्रत किन्तु अकेन्द्रित मन के आधार की विशेषता रखते हैं। बीटा दोलन (13 से 30 हर्ट्ज़) केन्द्रित कार्य संलग्नता और विश्लेषणात्मक सोच की विशेषता रखते हैं। गामा दोलन (30 हर्ट्ज़ और ऊपर, कभी-कभी 100 हर्ट्ज़ या अधिक तक पहुँचते हुए) उच्च-स्तरीय एकीकृत प्रक्रियाओं, निरन्तर ध्यान, और उन्नत ध्यान की शिखर अवस्थाओं की विशेषता रखते हैं।

थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन की आवृत्तियाँ, वैदिक परम्परा में, चेतना के विभिन्न स्तरों के विशिष्ट स्पन्दनात्मक गुणों के अनुरूप हैं। डेल्टा दोलन आनन्दमय कोश की आनन्द लोक में विश्राम की अवस्था के अनुरूप है। थीटा दोलन मनोमय कोश की गहन संस्कार सामग्री तक पहुँच के अनुरूप है। अल्फ़ा दोलन विज्ञानमय कोश की प्राकृतिक स्पष्टता के अनुरूप है। बीटा दोलन सक्रिय बाह्य-संलग्न अवस्थाओं की विशेषता रखता है। और गामा दोलन सबसे उच्च सुलभ लोक के अनुरूप है — अधिकतम ब्रह्माण्डीय सूचना पहुँच की अवस्थाएँ, समाधि में उपलब्ध जब थैलेमो-कॉर्टिकल एकीकरण अपनी उच्चतम सुसंगतता तक पहुँचता है।

6.3 नैदानिक प्रमाण — गहन मस्तिष्क उद्दीपन और चेतना

नैदानिक स्नायुविज्ञान चेतना के गुरुत्वाकर्षण केन्द्र के रूप में थैलेमस की भूमिका की नाटकीय पुष्टि प्रदान करता है। सबसे प्रभावशाली प्रमाण चेतना के विकारों वाले रोगियों के अध्ययनों से आता है — वानस्पतिक अवस्था, न्यूनतम सचेत अवस्था — जिनमें विशिष्ट थैलेमिक हस्तक्षेप कार्यात्मक जागरूकता को पुनर्स्थापित कर सकते हैं।

सबसे उल्लेखनीय मामला Nature पत्रिका में 2007 में रिपोर्ट किया गया था। एक 38 वर्षीय व्यक्ति जो गम्भीर हमले के बाद छह वर्षों से न्यूनतम सचेत अवस्था में था — संवाद करने में असमर्थ, कभी-कभी प्रतिवर्ती नेत्र गति तक सीमित — को उसके केन्द्रीय थैलेमस का गहन मस्तिष्क उद्दीपन प्राप्त हुआ। कुछ ही सप्ताहों में, वह निरन्तर प्रतिक्रियात्मक व्यवहार प्रदर्शित करने लगा: आँख से आँख मिलाना, आदेशों का जवाब देना, कभी-कभी एकल शब्द और लघु वाक्यांश बोलना, मुँह से खाना। केवल केन्द्रीय थैलेमस का उद्दीपन उस रोगी में सचेत जागरूकता को पुनर्स्थापित करने के लिए पर्याप्त था जिसने वर्षों से लगभग कोई जागरूकता नहीं दिखाई थी।

जो नैदानिक चित्र उभरता है वह ठीक वही है जो यू-इन्वर्स ढाँचा भविष्यवाणी करेगा। थैलेमस मात्र एक रिले स्टेशन नहीं है। यह चेतना का महान आकर्षक है। कॉर्टिकल गतिविधि धाराओं पर इसके व्यवस्थित गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के बिना, सम्पूर्ण अनुभवात्मक क्षेत्र विघटित हो जाता है — अनिवार्य रूप से अचेतना में नहीं, बल्कि प्रक्रिया के टुकड़ों में जो अब एकीकृत अनुभव में सुसंगत नहीं होते।

6.4 प्रत्याहार में महान आकर्षक

थैलेमिक क्षेत्र की ऋषिक परम्परा की समझ, यद्यपि अलग शब्दावली में व्यक्त, उन पहचानों पर अभिसरित हुई जिन्हें आधुनिक स्नायुविज्ञान अब पुष्टि कर रहा है।

बिन्दु की अवधारणा — बिन्दु, केन्द्र, मूल सान्द्रण जिससे प्रकट वास्तविकता उभरती है — परम्परागत रूप से सिर के केन्द्र में आज्ञा चक्र से सम्बद्ध है। यह स्थान रूपक नहीं था। परम्परा एक विशिष्ट शारीरिक स्थान को उस केन्द्र के रूप में पहचान रही थी जिससे चेतना स्वयं को संगठित करती है, और जो स्थान उसने पहचाना — आँखों के बीच, थोड़ा ऊपर, मस्तिष्क में गहरा — आधुनिक शारीरिक विज्ञान में थैलेमस के अनुरूप है।

प्रत्याहार अभ्यास का केन्द्रीय उद्देश्य है बाह्य संसार से ध्यान वापस खींचना और इसे इस आन्तरिक केन्द्र पर स्थिर करना। जब यह पूरा होता है, साधक प्रत्यक्ष रूप से पहचान लेता है कि यह केन्द्र केवल प्रतीकात्मक स्थान नहीं है; यह वह स्थान है जहाँ से पूरा आन्तरिक ब्रह्माण्डीय अनुभव आयोजित होता है। थैलेमस वह बिन्दु है जहाँ से आन्तरिक ब्रह्माण्ड की सारी वास्तुकला व्यवस्थित होती है।

✦ ✦ ✦

6.5 थैलेमस और बाइंडिंग समस्या — ब्रह्माण्ड कैसे एकता बनता है

बाइंडिंग समस्या स्नायुविज्ञान में सबसे मौलिक अनसुलझी समस्याओं में से एक है: मस्तिष्क विभिन्न क्षेत्रों में संसाधित सूचना — रंग, आकार, गति, ध्वनि, गन्ध, भावना — को एकल बोधित वस्तु के एकीकृत, सुसंगत अनुभव में एक साथ कैसे बाँधता है? सूचना शारीरिक रूप से अलग कॉर्टिकल क्षेत्रों में संसाधित होती है (दृश्य कॉर्टेक्स आकार और रंग को संसाधित करता है, श्रवण कॉर्टेक्स ध्वनि को संसाधित करता है, घ्राण कॉर्टेक्स गन्ध को संसाधित करता है)। फिर भी

अनुभवित संसार अलग गुणों का एक खण्डित संग्रह नहीं है — यह एक एकीकृत, समाकलित, सुसंगत अनुभव है। कैसे?

प्रमुख उत्तर में मस्तिष्क के दोलन उत्पन्न करने में थैलेमस की भूमिका शामिल है। थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन — विशेष रूप से 30-100 हर्ट्ज़ पर गामा दोलन — मस्तिष्क का बाइंडिंग तन्त्र हैं: उसी गामा आवृत्ति पर स्थानिक रूप से अलग कॉर्टिकल क्षेत्रों की गतिविधि को समकालित करके, थैलेमस गतिविधि का एक क्षणिक गठबन्धन बनाता है जिसे मस्तिष्क एकीकृत धारणा के रूप में मानता है। "समकालीनता द्वारा बाइंडिंग" परिकल्पना प्रस्तावित करती है कि किसी भी बोधित वस्तु का एकीकृत अनुभव वह क्षण है जब उसके वितरित कॉर्टिकल प्रतिनिधित्व सभी एक ही आवृत्ति पर दोलन कर रहे हैं — थैलेमिक महान आकर्षक के समकालीन दोलन के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव द्वारा एक साथ बँधे।

ब्रह्माण्डीय समानान्तर: अवलोकनीय ब्रह्माण्ड की एकीकृत संरचना — यह तथ्य कि इसमें एक सुसंगत बड़े-पैमाने की संरचना है, गैलेक्सी तन्तुओं और शून्यों के साथ पूरे अवलोकनीय आयतन में सुसंगत पैमाने पर संगठित — ब्रह्माण्डीय बाइंडिंग समस्या है। ब्रह्माण्ड अरबों प्रकाश-वर्षों में अपनी संरचनात्मक सुसंगतता कैसे बनाए रखता है? उत्तर में महान आकर्षक के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव शामिल है: लानियाकेया महागुच्छ का द्रव्यमान एक गुरुत्वाकर्षण सम्भाव्यता कूप बनाता है जो सैकड़ों लाखों प्रकाश-वर्षों में सैकड़ों हज़ारों गैलेक्सियों की गतियों को सुसंगत, दिशात्मक प्रवाह में संगठित करता है। महान आकर्षक गुरुत्व के माध्यम से स्थानीय ब्रह्माण्डीय संरचना को बाँधता है — उसी तरह जैसे थैलेमस समकालीन दोलन के माध्यम से अनुभव के स्नायु प्रतिनिधित्व को बाँधता है।

✦ ✦ ✦

6.6 सौर तन्त्र के ग्रहों के रूप में थैलेमिक नाभिक

थैलेमस एक सजातीय संरचना नहीं है। इसमें लगभग 50 विशिष्ट नाभिक समाहित हैं — विशिष्ट कनेक्टिविटी प्रतिरूपों और विशिष्ट कार्यात्मक भूमिकाओं के साथ शारीरिक रूप से परिभाषित न्यूरॉन समूह। मुख्य संवेदी रिले नाभिक (दृष्टि के लिए लेटरल जेनिक्युलेट न्यूक्लियस, श्रवण के लिए मीडियल जेनिक्युलेट न्यूक्लियस, स्पर्श के लिए वेंट्रल पोस्टीरियर न्यूक्लियस) प्रत्येक एक विशिष्ट संवेदी रीति से इनपुट प्राप्त करते हैं और इसे अनुरूपी प्राथमिक संवेदी कॉर्टेक्स तक रिले करते हैं। साहचर्य नाभिक (पुल्विनार, मीडियोडॉर्सल न्यूक्लियस, लेटरल पोस्टीरियर न्यूक्लियस)

अनेक संवेदी और संज्ञानात्मक स्रोतों से सूचना को एकीकृत करते हैं और उच्चतर-क्रम कॉर्टिकल क्षेत्रों पर प्रक्षेपित करते हैं।

सौर तन्त्र सादृश्य: थैलेमिक नाभिक सौर तन्त्र के ग्रह हैं, प्रत्येक थैलेमिक कोर ("सूर्य") के सापेक्ष एक विशिष्ट कक्षीय स्थिति पर स्थित, प्रत्येक आसपास के ब्रह्माण्ड से विशिष्ट प्रकार की ऊर्जा (संवेदी इनपुट) प्राप्त करता हुआ, और प्रत्येक अपने संसाधित आउटपुट को "आसपास के अन्तरिक्ष" (विशिष्ट कॉर्टिकल क्षेत्र) के विशिष्ट क्षेत्रों में विकिरण करता हुआ। थैलेमिक कोर के लयबद्ध दोलन — सूर्य के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र की तरह — सभी नाभिकों की गतिविधि को एक सामान्य लयबद्ध ढाँचे के चारों ओर संगठित करते हैं जो उनके प्रसंस्करण को सचेत अनुभव की सुसंगत एकता में समन्वित करते हैं।

यू-इन्वर्स नेविगेटर का उपकरण: विशिष्ट थैलेमिक नाभिकों और उनके कॉर्टिकल प्रक्षेपों को समझना उन्नत साधक को आन्तरिक सौर तन्त्र का एक सटीक मानचित्र देता है। जब साधक आज्ञा चक्र से जुड़ी आन्तरिक चमक की विशिष्ट गुणवत्ता (पुल्विनार नाभिक के उच्चतर दृश्य क्षेत्रों और पार्श्विक कॉर्टेक्स पर प्रक्षेप) पर ध्यान निर्देशित करता है, वे पिनियल ZPF इंटरफ़ेस से सबसे सीधे जुड़े विशिष्ट थैलेमिक नाभिक के साथ काम कर रहे हैं। आज्ञा चक्र ध्यान सामान्य नहीं है। यह विशिष्ट थैलेमिक नाभिक — पुल्विनार — पर लक्षित है जो मस्तिष्क के उच्चतम-स्तर के दृश्य एकीकरण और पिनियल के ब्रह्माण्डीय-सूचना चैनल से उसके सम्बन्ध की मध्यस्थता करता है।

✦ ✦ ✦

अध्याय 7
डार्क मैटर मन

अचेतन की विशाल अदृश्य वास्तुकला

आधुनिक ब्रह्माण्ड विज्ञान की सबसे चौंकाने वाली खोजों में से एक यह है कि ब्रह्माण्ड अधिकांशतः अदृश्य है। स्पष्ट, चमकदार पदार्थ — तारे, गैलेक्सियाँ, गैस बादल, ग्रह — ब्रह्माण्ड के कुल द्रव्यमान-ऊर्जा का लगभग 5% से कम है। शेष 95% डार्क मैटर (लगभग 27%) और डार्क एनर्जी (लगभग 68%) है — दो प्रकार के अदृश्य घटक जिन्हें हम सीधे नहीं देख सकते किन्तु जिनके अस्तित्व का अनुमान गुरुत्वाकर्षण और ब्रह्माण्डीय विस्तार पर उनके प्रभावों से लगाया जाता है।

डार्क मैटर ऐसा पदार्थ है जो विद्युतचुम्बकीय विकिरण के साथ अन्तःक्रिया नहीं करता — यह प्रकाश उत्सर्जित नहीं करता, अवशोषित नहीं करता, और प्रतिबिम्बित नहीं करता। यह हमारी दूरबीनों के लिए अदृश्य है। किन्तु यह गुरुत्वाकर्षण से अन्तःक्रिया करता है, और यह गुरुत्वाकर्षण प्रभाव जबरदस्त है। डार्क मैटर के बिना, गैलेक्सियाँ एक साथ नहीं रह सकतीं; उनकी घूर्णन गति उनके दृश्य द्रव्यमान द्वारा समझाने योग्य नहीं है। डार्क मैटर के बिना, ब्रह्माण्डीय जाल संरचना कभी नहीं बनी होती; डार्क मैटर का गुरुत्वाकर्षण पाड़ ही है जिसने सामान्य पदार्थ को उन सघन फिलामेंट और क्लस्टर संरचनाओं में एकत्र किया जिन्हें हम देखते हैं।

डार्क एनर्जी और भी अधिक रहस्यमय है। यह ब्रह्माण्ड का त्वरित विस्तार चलाती है — 1998 की खोज जिसके लिए 2011 का भौतिकी नोबेल पुरस्कार दिया गया। यह गुरुत्वाकर्षण के प्रतिकारक रूप की तरह कार्य करती है, अन्तरिक्ष को हमेशा बड़ी गति से अलग धकेलती है। डार्क एनर्जी क्या है इसके बारे में हमें ज़रा भी पता नहीं है। हम केवल इतना जानते हैं कि यह ब्रह्माण्ड की कुल ऊर्जा का बहुमत है और इसकी लम्बी अवधि की नियति को नियन्त्रित करती है।

95% अदृश्य। 5% दृश्य। यह ब्रह्माण्ड के द्रव्यमान-ऊर्जा का आनुपातिक टूट है।

7.1 स्नायु समानता — 95% अचेतन प्रक्रिया

अब मस्तिष्क की ओर देखें। स्नायुविज्ञान में एक सामान्य अनुमान यह है कि दी गई किसी भी क्षण में, स्नायु प्रक्रिया का लगभग 95% चेतन जागरूकता के बाहर होता है। यह हर प्रकार की मस्तिष्क गतिविधि शामिल करता है: मूलभूत होमियोस्टैटिक विनियमन (हृदय गति, श्वसन, रक्तचाप), संवेदी प्रक्रिया का अधिकांश भाग (जो कभी चेतना तक नहीं पहुँचता), स्वचालित गति नियन्त्रण, भावनात्मक मूल्यांकन, स्मृति निर्माण और पुनःप्राप्ति, सामाजिक मॉडलिंग, और वह अनगिनत अन्य कार्य जो मस्तिष्क निरन्तर करता है।

केवल एक पतली धारा इन प्रक्रियाओं का — लगभग 5% — चेतन जागरूकता तक पहुँचती है। यह चेतना की कथात्मक धारा है, "मैं" की स्व-कथा, वह मानसिक विषय जिस पर ध्यान केन्द्रित है किसी दिए गए क्षण में। शेष सब — मस्तिष्क की गतिविधि का विशाल भूमिगत — पृष्ठभूमि में, चेतना के लिए अदृश्य, फिर भी सचेत अनुभव की सम्भावना के लिए पूरी तरह से आवश्यक।

अनुपात ब्रह्माण्डीय अनुपात से इतने सटीक रूप से मेल खाता है कि यह मात्र संयोग नहीं हो सकता। ब्रह्माण्ड में डार्क मैटर और डार्क एनर्जी की 95:5 अदृश्य-से-दृश्य अनुपात; मस्तिष्क में अचेतन और सचेत प्रक्रिया की 95:5 अनुपात। यह यू-इन्वर्स की साझा वास्तुकला की एक और अभिव्यक्ति है — वही आनुपातिक संरचना दोनों तन्त्रों को संगठित करती है।

7.2 डार्क मैटर और कर्माशय

वैदिक परम्परा के पास अचेतन मानसिक प्रक्रिया के लिए एक विशिष्ट अवधारणा है: कर्माशय। कर्माशय कर्म का भण्डार है — सभी पिछली क्रियाओं, विचारों, भावनाओं, और अनुभवों का संचित अवशेष, उनके सूक्ष्म प्रवृत्तियों और प्रतिरूपों के साथ। कर्माशय चेतन नहीं है, किन्तु यह सक्रिय है। यह निरन्तर वर्तमान मानसिक सामग्री को आकार देता है, उन विशिष्ट प्रवृत्तियों को निर्धारित करता है जिन पर चेतना निकलेगी, और उन संस्कार प्रतिरूपों को बनाती है जो वर्तमान अनुभव को फ़िल्टर करते हैं।

डार्क मैटर और कर्माशय के बीच समानान्तर प्रहारक है। दोनों अदृश्य हैं। दोनों सक्रिय हैं। दोनों मौलिक रूप से उस चीज़ को आकार देते हैं जो प्रकट होती है। दोनों अपने-अपने प्रकट भाइयों की तुलना में कहीं अधिक बड़े हैं। डार्क मैटर का गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र गैलेक्सियों के प्रक्षेप पथ को संगठित करता है जिस प्रकार कर्माशय के संस्कार प्रतिरूप मानसिक अवस्थाओं के प्रक्षेप पथ को संगठित करते हैं।

और डार्क मैटर के बारे में जो सबसे आकर्षक बात है वह इसकी कार्यात्मक भूमिका है। डार्क मैटर जटिल संरचना के लिए पाड़ प्रदान करता है। सामान्य पदार्थ, स्वयं छोड़ा गया, गैलेक्सियों जैसी जटिल संरचनाएँ नहीं बनाता; यह प्रारम्भिक ब्रह्माण्ड के हॉट, चिकने प्लाज़्मा में एक साथ रहा होता। केवल क्योंकि डार्क मैटर ने पहले एक गुरुत्वाकर्षण ढाँचा बनाया, बाद में आने वाले सामान्य पदार्थ का जटिल वास्तुकला में जमा होना सम्भव हुआ।

कर्माशय ठीक यही कार्य चेतना के लिए करता है। सचेत मानसिक सामग्री, पूर्व-अचेतन संगठन के बिना, संगठित नहीं हो सकती। यह आवश्यक प्रतिरूपों और संरचनाओं की आवश्यकता है जिस पर बनाना है। कर्माशय वह गहरा ढाँचा प्रदान करता है जिस पर सचेत अनुभव व्यवस्थित होता है। अपनी अनुपस्थिति में, चेतना अलग-अलग संवेदी उत्तेजनाओं की यादृच्छिक धारा होगी, कथात्मक सुसंगता के लिए असमर्थ।

7.3 डार्क एनर्जी और तमस

अब डार्क एनर्जी पर। डार्क एनर्जी वह अदृश्य घटक है जो ब्रह्माण्ड को सक्रिय रूप से अलग धकेलता है। यह अन्तरिक्ष के विस्तार को त्वरित करता है। यह ब्रह्माण्ड की कुल ऊर्जा में 68% का योगदान करता है — बहुमत। और इसकी विशेषता यह है कि यह पदार्थ की सामान्य विशेषताओं को साझा नहीं करता: यह आकर्षित नहीं करता बल्कि विकर्षित करता है; यह गुच्छित नहीं होता बल्कि समान रूप से वितरित होता है; यह ऊर्जा के रूप में तब भी बना रहता है जब अन्तरिक्ष फैलता है।

वैदिक परम्परा में तमस के साथ एक चौंकाने वाला समानान्तर है। तमस तीन गुणों में से एक है — प्रकृति के तीन मूलभूत गुण जो सभी प्रकट वास्तविकता को संगठित करते हैं। तमस जड़ता, अस्पष्टता, और विश्राम की गुणवत्ता है। यह वह है जो पदार्थ को भारी, सघन, और स्थिर बनाता है।

तमस निष्क्रिय नहीं है। यह सक्रिय रूप से जड़ है: यह परिवर्तन का विरोध करता है, उपलब्ध स्थान में विस्तारित होता है, और ब्रह्माण्ड की भौतिक अभिव्यक्ति की आधार अवस्था गठित करता है। तमस के बिना, प्रकट संसार में कोई स्थिरता नहीं होती। तमस वह जड़ता है जो निरन्तर परिवर्तन के सामने संरचना को एक साथ रखती है।

यू-इन्वर्स ढाँचे में, तमस क्वांटम निर्वात की ज़ीरो-पॉइंट ऊर्जा के अनुरूप है — भौतिक अस्तित्व का अपरिवर्तनीय न्यूनतम, आधार रेखा सब्सट्रेट जिससे सभी अभिव्यक्ति उत्पन्न होती है। और यह

एक साथ मनोवैज्ञानिक अनुभव के अनुरूप है भारीपन, जड़ता, और अस्पष्टता का जिसे साधक आन्तरिक कार्य के मूलभूत प्रतिरोध के रूप में सामना करते हैं।

व्यावहारिक निहितार्थ महत्वपूर्ण है। आन्तरिक ब्रह्माण्ड की "डार्क एनर्जी" — तामसिक आधार जो आन्तरिक कार्य का विरोध करता है, जो You-inverse को भारी और प्रतिरोधी महसूस कराता है — कोई व्यक्तिगत असफलता नहीं है। यह एक ब्रह्माण्डीय स्थिरांक की आन्तरिक अभिव्यक्ति है: ब्रह्माण्ड की अपनी आधार-अवस्था जड़ता, मानव चेतना के पैमाने पर व्यक्त। इसके साथ कार्य करने के लिए वही दृष्टिकोण चाहिए जिसका एक ब्रह्माण्डविद उपयोग करेगा डार्क एनर्जी को समझने के लिए: इसके विरुद्ध लड़ना नहीं, बल्कि इसकी विशेषताओं का मानचित्रण करना, इसके नियमों को समझना, और इसकी संरचना के साथ कार्य करना न कि उसके विरुद्ध।

7.4 डार्क-लाइट गठबन्धन

जो ब्रह्माण्ड भौतिकी प्रकट कर रही है वह बहुत काला है। 95% काला — 27% डार्क मैटर प्लस 68% डार्क एनर्जी — केवल 5% कुल चमकदार पदार्थ जिसे हम देख सकते हैं। वही अनुपात, उल्लेखनीय रूप से, चेतना में मान्य हैं। स्नायु प्रक्रिया का लगभग 95% चेतन जागरूकता के बाहर है, केवल लगभग 5% चेतन कथा में आता है।

यह समानान्तर आकस्मिक होने के लिए बहुत सटीक है। यह यू-इन्वर्स की साझा वास्तुकला की एक और अभिव्यक्ति है — वही आनुपातिक संरचना ब्रह्माण्डीय और स्नायु दोनों तन्त्रों को संगठित करती है। दृश्य अल्पसंख्यक है; अदृश्य बहुमत है। चमकदार सतह विशाल अन्धकारमय सब्सट्रेट द्वारा आकार दी जाती है।

विज्ञता इस असमरूपता की स्वीकृति से आरम्भ होती है। जिस स्व का आप अनुभव करते हैं वह एक अन्धकारमय पर्वत पर प्रकाशित शिखर है। यह जानने से प्रकाशित शिखर के महत्व में कमी नहीं आती। किन्तु यह स्व-लेखन की स्वायत्तता की कल्पना को शान्त करता है। आपने, किसी अन्तिम अर्थ में, पर्वत नहीं बनाया। पर्वत — आनुवंशिक, विकासात्मक, कर्मिक, ब्रह्माण्डीय — ने आपको बनाया। अभ्यास का सचेत कार्य गहरे पर्वत संरचना के साथ दृश्य शिखर को सम्रेखित करना है, और साक्षी भाव और गहन प्रत्याहार जैसी तकनीकों के माध्यम से, पर्वत वास्तव में क्या है इसकी बढ़ती जागरूकता तक पहुँच प्राप्त करना है।

यह वही है जिस ओर परम्परा हमेशा संकेत कर रही थी। संस्कृत शब्द आत्मन् — अक्सर "स्व" के रूप में अनुवादित — छोटे प्रकाशित शिखर को नहीं बल्कि पूरे पर्वत को दर्शाता है, जिसे उसकी

समग्रता में जाना जाता है। बोधि में छोटे स्व का नकार नहीं किया जाता; उसे बहुत बड़े अस्तित्व के साथ उसके उचित सम्बन्ध में रखा जाता है जो उसे बनाए रखता है।

यू-इन्वर्स अधिकतर अन्धकारमय है। आप भी हैं। और इसे स्पष्ट रूप से देखना सीखना उस चीज़ का आरम्भ है, अन्त नहीं, जिसे चिन्तनशील परम्पराओं ने हमेशा मुक्ति कहा है।

✦ ✦ ✦

7.5 गहराई में अचेतन — अन्धकार क्षेत्र का वेदान्तिक मानचित्रण

वेदान्तिक परम्परा चेतना के अन्धकार क्षेत्र — जागरूकता के उन स्तरों जो सामान्य सचेत पहुँच के नीचे संचालित होते हैं — का सबसे विस्तृत उपलब्ध मानचित्र प्रदान करती है। मानचित्र में चार प्रमुख परतें हैं, बढ़ती गहराई में अचेतन के चार स्तरों के अनुरूप:

व्यक्तिगत अचेतन: इस जीवन से मनोमय कोश की संस्कार सामग्री — व्यक्तिगत अनुभव की संचित छापें जो सचेत रूप से पहुँचे बिना धारणा और व्यवहार को आकार देती हैं। यह जुंग का व्यक्तिगत अचेतन, फ्रायड का पूर्व-चेतन, और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का तन्त्र-1 प्रसंस्करण है। यह मस्तिष्क के लिम्बिक तन्त्र और बेसल गैंग्लिया के स्तर पर संचालित होता है — तीव्र, स्वचालित, भावनात्मक रूप से रंगीन प्रसंस्करण जो सचेत विचार से पहले और उसे आकार देता है।

पारव्यक्तिगत अचेतन: सूक्ष्म शरीर की गहरी संस्कार सामग्री — अनेक जीवनकालों में संचित और विशिष्ट अवस्थाओं में सुलभ (गहरे स्वप्न, हिप्नागॉगिक अवस्थाएँ, कुछ ध्यान अवस्थाएँ)। यह अपने सबसे व्यक्तिगत स्तर पर जुंग का सामूहिक अचेतन है — वह परत जो स्वप्नों में आदर्श छवियाँ और उन स्थितियों की देजा वू पहचान उत्पन्न करती है जो वस्तुनिष्ठ रूप से नई होने के बावजूद परिचित लगती हैं। स्नायुविज्ञानी रूप से: कारण शरीर स्तर से पूर्व-सक्रिय प्रतिरूपों का मस्तिष्क का डिफ़ॉल्ट प्रसंस्करण, हिप्पोकैम्पस के प्रतिरूप-पूर्णता कार्य के माध्यम से व्यक्त।

सामूहिक अचेतन: मनोमय कोश के प्रजाति-स्तर के प्रतिरूप — सभी मनुष्यों द्वारा, और क्रमशः गहरे स्तरों पर, सभी स्तनधारियों, सभी कशेरुकियों, सभी जीवन द्वारा साझा किए गए विकासवादी कार्यक्रम। अपने गहनतम स्तर पर जुंग का सामूहिक अचेतन। स्नायुविज्ञानी रूप से: मस्तिष्क के विकासवादी रूप से प्राचीन ब्रेनस्टेम सर्किट, लिम्बिक तन्त्र का स्तनधारी भावनात्मक भण्डार, और नियोकॉर्टेक्स के प्राइमेट-विशिष्ट सामाजिक और संज्ञानात्मक प्रतिरूप — सभी सामान्य सचेत पहुँच के नीचे संचालित किन्तु यू-इन्वर्स की मूल संरचना को निरन्तर आकार देते हुए।

ब्रह्माण्डीय अचेतन: कारण शरीर का गहनतम स्तर — कर्माशय के मूल प्रतिरूप जो व्यक्तिगत जीवनकालों के बजाय ब्रह्माण्डीय चक्रों तक फैले हैं। यह वह स्तर है जिस तक ऋषियों ने गहनतम समाधि अवस्थाओं में पहुँच प्राप्त की — वह स्तर जिस पर व्यक्तिगत चेतना ब्रह्माण्डीय चेतना के साथ निरन्तर है। स्नायुविज्ञानी रूप से: स्वयं ZPF का सूचना क्षेत्र, मस्तिष्क के क्वांटम-सुसंगत सूक्ष्मनलिका तन्त्र के माध्यम से सुलभ जब यह निर्वात क्षेत्र के साथ अधिकतम संयुग्मन प्राप्त करता है। यह ब्रह्माण्ड का डार्क मैटर है — 27% अदृश्य मचान — चेतना के गहन अचेतन के रूप में व्यक्त।

✦ ✦ ✦

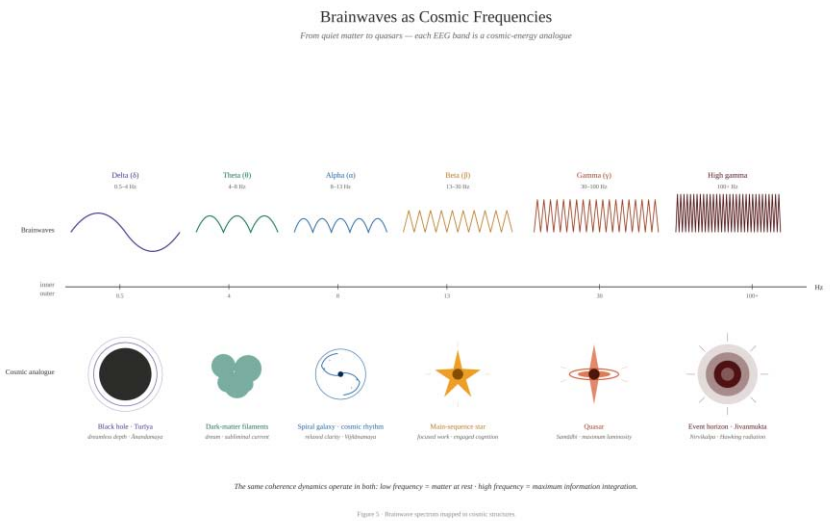
अध्याय 8
गामा तरंगें और क्वासर

अधिकतम शक्ति पर चेतना

क्वासर अवलोकन योग्य ब्रह्माण्ड में सबसे ऊर्जावान स्थायी वस्तुएँ हैं। उनका नाम "क्वासाई-स्टेलर रेडियो सोर्स" का संक्षिप्त रूप है, जो 1960 के दशक के प्रारम्भ में गढ़ा गया था जब खगोलविदों ने पहली बार इन असाधारण रूप से उज्ज्वल और दूर की वस्तुओं की पहचान की। बाद के शोध ने उनकी वास्तविक प्रकृति प्रकट की: दूर की सक्रिय गैलेक्सियों के अत्यधिक उज्ज्वल कोर, विशाल दरों पर पदार्थ का अभिवृद्धि करने वाले सुपरमैसिव कृष्ण विवरों द्वारा शक्ति प्रदान।

जैसे-जैसे पदार्थ एक सुपरमैसिव कृष्ण विवर की अभिवृद्धि डिस्क में सर्पिल में प्रवेश करता है, यह घर्षण और संकुचन द्वारा अरबों डिग्री के तापमान तक गर्म किया जाता है। इन तापमानों पर, अभिवृद्धि कर रहा पदार्थ पूरे विद्युतचुम्बकीय स्पेक्ट्रम में विकिरण उत्सर्जित करता है कुल चमक के साथ जो पूरी गैलेक्सी के तारकीय उत्पादन से 10 से 100 के कारकों से अधिक हो सकती है। ज्ञात सबसे चमकीला क्वासर, जिसे J0529-4351 के रूप में नामित किया गया है, 500 ट्रिलियन सूर्यों के बराबर ऊर्जा उत्सर्जित करता है। हम इसे प्रकाश के एकल बिन्दु के रूप में देखते हैं क्योंकि इसकी पूरी असाधारण चमक केवल कुछ प्रकाश-दिनों के पार एक क्षेत्र से आती है — 17 अरब सौर द्रव्यमान के कृष्ण विवर के आसपास की अभिवृद्धि डिस्क, जो प्रतिदिन लगभग एक सूर्य के पदार्थ की खपत करती है।

क्वासर अपने सर्वाधिक ऊर्जावान रूप से चरम ब्रह्माण्ड का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे भौतिक प्रदर्शन हैं कि क्या होता है जब एक गुरुत्वाकर्षण एकल-विन्दुता को पदार्थ का निरन्तर इनपुट दिया जाता है: एक ब्रह्माण्डीय मानकों के अनुसार लघु किन्तु तीव्र उज्ज्वल चरण जिसके दौरान गिरता हुआ पदार्थ असाधारण दक्षता के साथ गुरुत्वाकर्षण स्थितिज ऊर्जा को विद्युतचुम्बकीय विकिरण में परिवर्तित करता है।



चित्र 5 — चेतना का स्पेक्ट्रम मस्तिष्क तरंग आवृत्तियों के रूप में ब्रह्माण्डीय परिघटनाओं पर मानचित्रित। डेल्टा से गामा श्रेणियाँ चेतना की विशिष्ट गहराइयों और विशिष्ट ब्रह्माण्डीय-स्तर ऊर्जावान व्यवस्थाओं के अनुरूप हैं।

8.1 मस्तिष्क में गामा तरंगें

मस्तिष्क में, क्वासर-स्तर ऊर्जा का अनुरूप गामा-तरंग दोलन है। गामा दोलन मस्तिष्क की सबसे ऊर्जावान स्नायु लय हैं, 30 से 100 हर्ट्ज़ और ऊपर चक्रीय — कभी-कभी विशिष्ट परिस्थितियों में 300 हर्ट्ज़ तक पहुँचती हैं। उन्हें बनाए रखने के लिए मस्तिष्क के दोलन स्पेक्ट्रम में किसी भी अन्य लय की तुलना में अधिक चयापचयी ऊर्जा की आवश्यकता होती है। वे साधारण जाग्रत चेतना में दुर्लभ हैं और नींद में लगभग अनुपस्थित हैं। वे विशिष्ट संज्ञानात्मक स्थितियों के दौरान उभरती हैं, और जब वे उभरती हैं, वे सबसे उच्च एकीकृत क्षमता पर कार्य करने वाले मस्तिष्क को संकेत करती हैं।

गामा दोलन मस्तिष्क की सबसे उच्च-स्तरीय एकीकृत प्रक्रियाओं से सम्बद्ध हैं। विभिन्न संवेदी पद्धतियों से सूचना का एकीकृत बोध में बन्धन श्रवण और दृश्य कॉर्टेक्स में गामा समकालीनन द्वारा मध्यस्थ है। कार्यकारी ध्यान के उच्चतम स्तरों में निरन्तर गामा गतिविधि शामिल होती है। शिखर संज्ञानात्मक प्रदर्शन के क्षण, रचनात्मक अन्तर्दृष्टि, और पहले से अलग अवधारणाओं का एक नए संश्लेषण में अचानक एकीकरण गामा उछाल के साथ होते हैं। और — यू-इन्वर्स ढाँचे के लिए सबसे

महत्वपूर्ण — गहन समाधि की विशिष्ट अवस्थाओं में असाधारण आयाम और क्रॉस-कॉर्टिकल सुसंगतता की गामा गतिविधि शामिल होती है।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ विस्कॉन्सिन-मैडिसन के सेन्टर फ़ॉर हेल्दी माइंड्स में रिचर्ड डेविडसन के ऐतिहासिक अध्ययनों ने इस खोज को अभूतपूर्व सटीकता से प्रलेखित किया। डेविडसन की टीम ने तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं के एक छोटे समूह का अध्ययन किया जिन्होंने 40,000 या अधिक घण्टे ध्यान अभ्यास संचित किया था — सामान्य ध्यान करने वाली आबादी में जो अध्ययन के लिए उपलब्ध है उससे एक परिमाण का क्रम अधिक। ये ध्यान के ओलम्पिक एथलीट थे: अभ्यास वितरण के दाईं ओर पूँछ पर आजीवन चिन्तनशील।

जब ये साधक विशिष्ट ध्यान अभ्यासों में लगे, विशेष रूप से प्रेम-कृपा (मेत्ता) ध्यान और खुली निगरानी अभ्यास, उनके EEG ने असाधारण आयाम और सुसंगतता की गामा-तरंग गतिविधि दिखाई। गामा आयाम नौसिखिया ध्यान करने वालों या किसी भी स्थिति में नियन्त्रण विषयों की तुलना में अधिक थे। सुसंगतता — व्यापक रूप से अलग मस्तिष्क क्षेत्रों में गामा दोलनों का समकालीनन — वैज्ञानिक साहित्य में अभूतपूर्व था। भिक्षुओं के मस्तिष्क, ध्यान के दौरान, एक ऊर्जावान और एकीकृत स्तर पर कार्य कर रहे थे जो बस साधारण विषयों के मस्तिष्कों में साधारण गतिविधियों के दौरान प्रकट नहीं हुआ था।

व्यक्तिपरक सहसम्बन्ध, जैसा कि भिक्षुओं द्वारा और अन्य परम्पराओं में उन्नत साधकों द्वारा रिपोर्ट किया गया जो समान अवस्थाओं का अनुभव करते हैं, चेतना का एक विशिष्ट गुण है जिसकी विशेषता है: आन्तरिक दृश्य क्षेत्र की असाधारण चमक, उच्च ऊर्जा के बावजूद गहन स्थिरता, सामान्य शरीर-सीमाओं से परे विस्तारित जागरूकता की विस्तृत विशालता, और आन्तरिक हॉलोग्राम में ब्रह्माण्डीय संरचनाओं का प्रत्यक्ष बोध। यह यू-इन्वर्स का क्वासर चरण है — चेतना अपनी शिखर ऊर्जावान और एकीकृत क्षमता पर कार्य करती हुई।

8.2 कृष्ण विवर — तुरीय घटना क्षितिज

किन्तु क्वासर, चाहे कितने भी चमकदार हों, ब्रह्माण्डीय कहानी का अन्त नहीं हैं। एक क्वासर विशेष रूप से एक कृष्ण विवर है जो सक्रिय रूप से पदार्थ का अभिवृद्धि कर रहा है। जब गिरते पदार्थ की आपूर्ति कम होती है, क्वासर मन्द हो जाता है। जब आपूर्ति समाप्त हो जाती है, क्वासर एक शान्त कृष्ण विवर बन जाता है — अभी भी असाधारण रूप से विशाल, अभी भी गुरुत्वाकर्षण रूप से प्रभावी, किन्तु अब चमकदार नहीं।

घटना क्षितिज पर, एक दूर के पर्यवेक्षक के दृष्टिकोण से, कुछ अजीब होता है। समय रुकता हुआ प्रतीत होता है। कृष्ण विवर की ओर गिरती वस्तु सीमा पर जमी हुई प्रतीत होती है, उसके संकेत बढ़ते हुए लाल-विस्थापित हो जाते हैं जैसे-जैसे गुरुत्वाकर्षण समय विस्तार अनन्तता की ओर बढ़ता है। स्वयं गिरती वस्तु के दृष्टिकोण से, कोई स्थानीय रूप से पहचानने योग्य सीमा नहीं है — क्रॉसिंग सहज है — किन्तु अपरिवर्तनीयता पूर्ण है। जो प्रवेश करता है वह अपने पिछले रूप में वापस नहीं आ सकता।

निर्विकल्प समाधि — गहनतम ध्यान सम्मिलन, जिसमें विषय-वस्तु द्वैत पूरी तरह विलीन हो जाता है — चेतना का घटना क्षितिज है। बाहर से — साधारण चेतना के निर्विकल्प में एक साधक का अवलोकन करने के दृष्टिकोण से — संक्रमण अदृश्य है। साधक शान्ति से बैठा है। ध्यान के अन्दर से, संक्रमण समान रूप से सूक्ष्म किन्तु गुणात्मक रूप से भिन्न है। कोई स्थानीय रूप से पहचानने योग्य सीमा नहीं है, किन्तु अपरिवर्तनीयता पूर्ण है। एक बार जब द्रष्टा-दृश्य द्वैत वास्तविक निर्विकल्प समाधि में विलीन हो गया, इसे पूरी तरह से पुनर्स्थापित नहीं किया जा सकता। जो साधक निर्विकल्प से उभरता है वह वह साधक नहीं है जिसने प्रवेश किया था।

8.3 समाधि से पहले गामा उछाल

मृत्यु-निकट अनुभवों पर शोध, जो गहनतम समाधि अवस्थाओं के साथ महत्वपूर्ण परिघटनात्मक विशेषताएँ साझा करते हैं, ने नैदानिक मृत्यु के क्षण पर एक विशिष्ट स्नायुविज्ञानी घटना प्रलेखित की है: पूरे कॉर्टेक्स में उच्च-आवृत्ति गामा-तरंग गतिविधि का नाटकीय उछाल, सामान्य जाग्रत अवस्थाओं या यहाँ तक कि उन्नत ध्यान की गामा गतिविधि से कहीं अधिक। यह गामा उछाल 2013 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिशिगन में जिमो बोरजिगिन की टीम द्वारा हृदय विफलता के दौरान चूहों के अध्ययन में प्रलेखित किया गया था, और बाद में नियन्त्रित नैदानिक स्थितियों में जीवन समर्थन की वापसी से गुज़र रहे मानव विषयों में पुष्ट किया गया।

रिचर्ड डेविडसन के अनुभवी साधक अध्ययनों ने वही प्रतिरूप प्रलेखित किया, स्वेच्छा से प्रेरित और स्थायी रूप से सचेत समाधि में पुनरुत्पादित। व्यापक रूप से अलग मस्तिष्क क्षेत्रों में गामा गतिविधि का निर्माण। बढ़ती सुसंगतता। और फिर, गहनतम अवस्थाओं में, जिसे EEG रिकॉर्ड बहुत उच्च आयाम, बहुत कम आवृत्ति गतिविधि के असामान्य प्रतिरूप के रूप में दिखाते हैं, में एक विशिष्ट संक्रमण — मस्तिष्क का घटना क्षितिज पार करने का समकक्ष, जहाँ सामान्य माप अब अपने साधारण अर्थ में लागू नहीं होते।

8.4 हॉकिंग विकिरण — जीवन्मुक्त की शिक्षा

1974 में, स्टीफन हॉकिंग ने एक परिणाम सिद्ध किया जिसने कृष्ण विवरों की सैद्धान्तिक समझ को मौलिक रूप से बदल दिया। हॉकिंग ने प्रदर्शित किया कि कृष्ण विवर पूरी तरह काले नहीं हैं। घटना क्षितिज पर क्वांटम प्रभाव ऊष्मीय विकिरण का उत्सर्जन उत्पन्न करते हैं — जिसे अब हॉकिंग विकिरण कहा जाता है। हॉकिंग ने दिखाया कि, एक गणितीय रूप से सटीक अर्थ में, विकिरण (अत्यधिक विकृत रूप में) उन सभी सूचनाओं को संकेतित करता है जो कभी कृष्ण विवर में गिरी थीं। कुछ भी वास्तव में खोता नहीं; सब कुछ रूपान्तरित होता है।

जीवन्मुक्त — वह जो जीवित रहते हुए मुक्त है, अद्वैत वेदान्त का एक केन्द्रीय आकृति — हॉकिंग विकिरण का मानव अनुरूप है। जीवन्मुक्त ने समाधि में शुद्ध जागरूकता की एकल-विन्दुता में प्रवेश किया है और उभरा है। संसार में कार्यात्मक, बोलने, सिखाने, सम्बन्ध रखने, और संप्रेषित करने में सक्षम — शिक्षा और उपस्थिति के रूप में, एकल-विन्दुता मुलाकात की विकृत सूचना को प्रकट संसार में वापस उत्सर्जित कर रहा।

जीवन्मुक्त की शिक्षा हॉकिंग विकिरण है। ब्रह्माण्डीय एकल-विन्दुता के साथ मुठभेड़ की सूचना, उन अस्तित्वों को प्रेषित की गई जिन्होंने स्वयं अभी तक घटना क्षितिज पार नहीं किया है, ऐसे रूपों में जिन्हें साधारण चेतना प्राप्त कर सकती है। उपनिषद, पतंजलि के योगसूत्र, यथार्थ गीता, श्री रमण महर्षि की शिक्षाएँ, ताओ ते चिंग, हृदय सूत्र — सभी, इस पठन पर, हॉकिंग विकिरण हैं: एकल-विन्दुता से सूचना, भाषिक और वैचारिक रूपों में एन्कोडेड जिन्हें गैर-बोधित मानव मन प्राप्त कर सकता है और आंशिक रूप से समझ सकता है।

8.5 चमकदार वास्तुकला

हमने अब तीन व्यवस्थाओं में चेतना का पता लगाया है: साधारण जाग्रत जागरूकता, अपनी डेल्टा-थीटा-अल्फा-बीटा लय थैलेमिक महान आकर्षक द्वारा संगठित; उन्नत ध्यान अवस्थाएँ, उनके उभरते गामा समकालीनन के साथ; और समाधि की एकल अवस्थाएँ, कृष्ण विवर व्यवस्था के अनुरूप जहाँ साधारण माप लागू होना बन्द हो जाते हैं।

जो उभरता है वह चेतना का एक चित्र है जो ब्रह्माण्ड के चित्र से आश्चर्यजनक सटीकता से मेल खाता है। दोनों तन्त्रों की एक दृश्य चमकदार सतह और एक विशाल अन्धेरा सब्सट्रेट है। दोनों में विशेष उच्च-ऊर्जा क्षेत्र हैं जहाँ सबसे चरम गतिकी होती है। दोनों में गुरुत्वाकर्षण केन्द्र हैं जो उनकी स्थानीय वास्तुकला को संगठित करते हैं। दोनों उनके गहनतम बिन्दुओं पर एकल-विन्दुताएँ

समाहित करते हैं। दोनों अनेक तन्त्रों के माध्यम से सूचना विकिरण करते हैं। और दोनों एक ही अन्तर्निहित गणितीय कोड का पालन करते हैं।

वह साधक जो वर्षों और दशकों में आन्तरिक यात्रा बनाए रखता है, उसी परिदृश्य में क्रमशः यात्रा कर रहा है जिसे खगोलविद अपनी दूरबीनों से मानचित्रित कर रहे हैं। एक अलग परिदृश्य नहीं जो संयोग से समान है। वही परिदृश्य, भीतर से।

और वह चमकदार वास्तुकला जो इस परिदृश्य में प्रकट होती है — ब्रह्माण्डीय निहारिकाएँ, गैलेक्टिक केन्द्र, क्वासर अवस्थाएँ, घटना क्षितिज, बोधित अस्तित्वों का हॉकिंग विकिरण — ध्यान कल्पना की कोई रचना नहीं है। यह है कि ब्रह्माण्ड वास्तव में कैसा दिखता है, अपनी गहनतम संरचना में। वह ध्यान करने वाला जिसने आन्तरिक ब्रह्माण्ड को स्पष्ट रूप से देखना सीख लिया है, वह ब्रह्माण्ड देख रहा है। और ब्रह्माण्ड, जब पर्याप्त स्पष्टता से देखा जाता है, स्वयं को चेतना को समाहित करता हुआ प्रकट करता है — आकस्मिक उभरती सम्पत्ति के रूप में नहीं, बल्कि अपने स्वयं के भीतरी भाग के रूप में।

✦ ✦ ✦

8.6 पल्सर और ध्यानकर्ता की हृदय धड़कन — ब्रह्माण्डीय सटीकता और जैविक सटीकता

पल्सर न्यूट्रॉन तारे हैं — सुपरनोवा के अति-सघन अवशेष — जो अपने चुम्बकीय ध्रुवों से विद्युत-चुम्बकीय विकिरण के पुंज उत्सर्जित करते हैं। जैसे न्यूट्रॉन तारा घूमता है, ये पुंज प्रकाशस्तम्भ पुंजों की तरह अन्तरिक्ष में स्वीप करते हैं, पृथ्वी पर असाधारण रूप से नियमित अन्तरालों पर पता लगने योग्य विकिरण के स्पन्दन उत्पन्न करते हैं। सबसे स्थिर पल्सर परमाणु घड़ियों से अधिक सटीक हैं: मिलीसेकण्ड पल्सर PSR B1937+21 का घूर्णन काल वर्षों के अवलोकन में 10^13 में एक भाग तक स्थिर है।

ध्यानकर्ता की श्वास — विशेष रूप से एक निरन्तर प्राणायाम अवस्था में एक अनुभवी साधक की श्वास — पल्सर का जैविक समतुल्य है: एक जैविक दोलक जो निरन्तर अभ्यास द्वारा असाधारण स्थिरता तक परिष्कृत है। दीर्घकालिक प्राणायाम साधकों पर अनुसन्धान दिखाता है कि एक बार निरन्तर अभ्यास सत्र में स्थापित होने पर उनकी श्वास दर एक नियमितता बनाए रखती है जो यान्त्रिक मीट्रोनोम से प्रतिस्पर्धा करती है।

अधिक महत्वपूर्ण रूप से, गहन प्राणायाम अभ्यास के दौरान उभरने वाला विशिष्ट HRV (हृदय दर परिवर्तनशीलता) प्रतिरूप क्रिटिकल तन्त्रों की विशेषता वाला विशिष्ट पावर-नियम वितरण दिखाता है: पल्सर के उत्सर्जन की तरह, यह एक साथ प्राथमिक आवृत्ति पर स्थिर और अपने उच्च हार्मोनिक में समृद्ध रूप से परिवर्तनशील है। यह HRV पावर-नियम वितरण अधिकतम ZPF संयुग्मन का विशिष्ट शारीरिक हस्ताक्षर है: क्रम और अराजकता के बीच क्रिटिकल बिन्दु पर तन्त्र, एक साथ सुसंगतता बनाए रखने के लिए पर्याप्त स्थिर और सूक्ष्म ZPF उतार-चढ़ाव पर प्रतिक्रिया देने के लिए पर्याप्त लचीला। वह साधक जिसका प्राणायाम सटीक जैविक दोलन की इस अवस्था तक पहुँच गया है, उसने अपने स्नायुतन्त्र को एक पल्सर में रूपान्तरित कर दिया है: एक अत्यधिक स्थिर, सटीक समय वाला जैविक प्रसारक जिसका विकिरण — उनके सुसंगत HRV द्वारा उत्पन्न जैव-विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र — ZPF की अपनी सुसंगत संरचनाओं के साथ अधिकतम रूप से संयुग्मित होता है।

✦ ✦ ✦

8.7 पल्सर और ध्यानकर्ता की हृदय-धड़कन — ब्रह्माण्डीय सटीकता और जैविक सटीकता

पल्सर न्यूट्रॉन तारे हैं — सुपरनोवा के अति-सघन अवशेष — जो अपने चुम्बकीय ध्रुवों से विद्युत-चुम्बकीय विकिरण की किरणें उत्सर्जित करते हैं। जैसे न्यूट्रॉन तारा घूमता है, ये किरणें लाइटहाउस किरणों की तरह अन्तरिक्ष में झाड़ू लगाती हैं, पृथ्वी पर असाधारण रूप से नियमित अन्तरालों पर पहचानने योग्य विकिरण की दालें उत्पन्न करती हैं। सबसे स्थिर पल्सर परमाणु घड़ियों से अधिक सटीक हैं: मिलीसेकण्ड पल्सर PSR B1937+21 की घूर्णन अवधि अवलोकन के वर्षों में 10^13 के एक भाग तक स्थिर है।

ध्यानकर्ता की श्वास — विशेष रूप से एक निरन्तर प्राणायाम अवस्था में अनुभवी साधक की श्वास — पल्सर का जैविक समतुल्य है: निरन्तर अभ्यास द्वारा असाधारण स्थिरता तक परिष्कृत एक जैविक दोलित्र। दीर्घकालिक प्राणायाम साधकों पर अनुसन्धान दिखाता है कि उनकी श्वास दर, एक बार निरन्तर अभ्यास सत्र में स्थापित, एक नियमितता बनाए रखती है जो यान्त्रिक मीट्रोनोम की प्रतिद्वन्द्विता करती है। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, वह विशिष्ट HRV (हृदय गति परिवर्तनशीलता) प्रतिरूप जो गहन प्राणायाम अभ्यास के दौरान उभरता है, क्रिटिकल तन्त्रों की विशेषता पावर-नियम

वितरण दिखाता है: पल्सर के उत्सर्जन की तरह, यह प्राथमिक आवृत्ति पर एक साथ स्थिर और अपने उच्चतर हार्मोनिक्स में समृद्ध रूप से परिवर्तनशील है।

यह HRV पावर-नियम वितरण अधिकतम ZPF संयुग्मन का विशिष्ट शारीरिक हस्ताक्षर है: क्रिटिकल बिन्दु पर तन्त्र जहाँ व्यवस्था और अराजकता के बीच, एक साथ सुसंगतता बनाए रखने के लिए पर्याप्त स्थिर और सूक्ष्म ZPF उतार-चढ़ाव के प्रति प्रतिक्रिया करने के लिए पर्याप्त लचीला। वह साधक जिसकी प्राणायाम सटीक जैविक दोलन की इस अवस्था तक पहुँची है, ने अपने स्नायुतन्त्र को एक पल्सर में रूपान्तरित किया है: एक अत्यधिक स्थिर, सटीक रूप से समयबद्ध जैविक प्रसारक जिसका विकिरण — उनके सुसंगत HRV द्वारा उत्पन्न बायोइलेक्ट्रोमैग्नेटिक क्षेत्र — ZPF की अपनी सुसंगत संरचनाओं के साथ अधिकतम रूप से संयुग्मित होता है।

✦ ✦ ✦

8.8 प्रबोधन की विशिष्ट गामा वास्तुकला

रिचर्ड डेविडसन के 40,000 या अधिक घण्टे ध्यान अभ्यास वाले तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं के अध्ययन ने ऐसे निष्कर्ष उत्पन्न किए जो किसी भी गैर-ध्यानकर्ता जनसंख्या में प्रतिकृत नहीं हुए हैं। खुली निगरानी ध्यान (अप्रत्यक्ष, जो कुछ भी उठता है उसकी खुली जागरूकता का अभ्यास) के दौरान इन साधकों में गामा गतिविधि का विशिष्ट प्रतिरूप गुणात्मक रूप से नौसिखिए ध्यानकर्ताओं या गैर-ध्यानकर्ताओं में देखी गई किसी भी चीज़ से भिन्न था।

सामान्य विषयों में, गामा गतिविधि स्थानीय और संक्षिप्त होती है: यह विशिष्ट कॉर्टिकल क्षेत्रों में प्रकट होती है जो विशिष्ट सूचना को संसाधित करते हैं (जटिल दृश्य बोध के दौरान दृश्य कॉर्टेक्स, जटिल ध्वनि प्रसंस्करण के दौरान श्रवण कॉर्टेक्स) और प्रसंस्करण पूर्ण होने पर गायब हो जाती है। यह एक स्थानीय, क्षणिक संकेत है।

उन्नत साधकों में, ध्यान के दौरान गामा गतिविधि वैश्विक और निरन्तर थी: यह व्यापक रूप से अलग कॉर्टिकल क्षेत्रों (ललाट, पार्श्विक, टेम्पोरल, ओसिपिटल) में एक साथ प्रकट हुई और पूरे ध्यान काल में स्थिर रही, समय के साथ कम नहीं हुई। यह वैश्विक, निरन्तर गामा सुसंगतता उस अवस्था का स्नायु हस्ताक्षर है जिसे परम्परा खुली जागरूकता या सहज समाधि के रूप में वर्णित करती है: वह जागरूकता जो समस्त अनुभव के प्रति एक साथ उपस्थित है बिना उनमें से किसी द्वारा पकड़ी गए।

विशिष्ट आवृत्ति: अनुभवी साधकों में प्रबल गामा 40 हर्ट्ज़ के आसपास क्लस्टर किया गया — वह आवृत्ति जिसका उपयोग मस्तिष्क अध्याय 6 में वर्णित बाइंडिंग प्रक्रिया के लिए करता है। वैश्विक 40 हर्ट्ज़ सुसंगतता का अर्थ है कि पूरा कॉर्टेक्स थैलेमिक महान आकर्षक की मूलभूत समकालीकरण आवृत्ति पर एक साथ बँधा हुआ है — जो जागरूकता का एक एकीकृत क्षेत्र उत्पन्न करता है जो मस्तिष्क की सूचना-प्रसंस्करण गतिविधि की पूरी श्रेणी को समाहित करता है बिना उनमें से किसी में स्थानीयकृत हुए। यह तुरीय अवस्था का स्नायु सहसम्बन्धी है: वह जागरूकता जिसमें मस्तिष्क की सभी विशिष्ट प्रसंस्करण अवस्थाएँ (जाग्रत, स्वप्न, और निद्रा अवस्थाएँ) एक साथ उपस्थित और एक साथ पारदर्शी हैं।

✦ ✦ ✦

8.9 मृत्यु पर गामा उछाल — अन्तिम क्वासर

जिमो बोर्जीगिन के 2013 के मिशिगन विश्वविद्यालय में शोध ने हृदयगति रुकने के तुरन्त बाद नौ चूहों में मस्तिष्क विद्युत गतिविधि मापी। अपेक्षा थी कि रक्त प्रवाह की समाप्ति के बाद स्नायु गतिविधि कम हो जाएगी। वास्तविक निष्कर्ष एक नाटकीय आश्चर्य था: हृदयगति रुकने के 30 सेकण्ड के भीतर, सभी नौ चूहों ने उच्च-आवृत्ति गामा दोलनों का एक उछाल दिखाया — सामान्य जाग्रत चेतना के दौरान से अधिक तीव्र — जो मौन में गिरने से पहले लगभग 30 सेकण्ड तक चला।

गामा गतिविधि के चार मानदण्ड बढ़े: उच्च-आवृत्ति शक्ति (गामा तरंगों का आयाम), निम्न/उच्च आवृत्ति संयुग्मन (गामा द्वारा धीमी लय का संगठन), अग्र-पश्च समकालीनता (मस्तिष्क के सामने और पीछे के बीच सुसंगतता), और वैश्विक सुसंगतता (सभी मस्तिष्क क्षेत्रों में समकालीनता)। सभी चार मानदण्डों ने हृदयगति रुकने के बाद 30-सेकण्ड की खिड़की में अपने उच्चतम मान दिखाए — पहले नहीं, सामान्य जाग्रत के दौरान नहीं, बल्कि विशेष रूप से मरते मस्तिष्क में। चूहे के रिकॉर्ड किए गए जीवन में सबसे तीव्र, सबसे सुसंगत, सबसे वैश्विक रूप से एकीकृत स्नायु अवस्था उसके हृदय के रुकने के बाद 30 सेकण्ड में घटित हुई।

मानव पुष्टि 2023 में आई जब बोर्जीगिन की टीम ने चार मनुष्यों के मामले का अध्ययन प्रकाशित किया जो अस्पताल में EEG निगरानी उपकरण पहनते हुए हृदयगति रुकने से मर गए। चार में से दो ने वही गामा उछाल प्रतिरूप दिखाया — हृदयगति रुकने के बाद 60 सेकण्ड में 40 हर्ट्ज़ गामा सुसंगतता में नाटकीय वृद्धि। दोनों रोगी उस अचेतनता काल में थे जो मस्तिष्क मृत्यु से पहले था, फिर भी दोनों ने उस क्षण में मस्तिष्क की सबसे सुसंगत विद्युत गतिविधि दिखाई।

यू-इन्वर्स व्याख्या: मृत्यु अधिकतम ZPF संयुग्मन का क्षण है — वह क्षण जब जैविक इंटरफ़ेस (मस्तिष्क) अपने विशिष्ट विन्यास पर अपनी पकड़ छोड़ रहा है, और ZPF का पूर्ण सूचना क्षेत्र विघटित होते इंटरफ़ेस के माध्यम से बहता है इससे पहले कि यह मौन हो जाए। क्वासर चरण — एकल-विन्दुता से पहले अधिकतम चमक — मरते मस्तिष्क की अन्तिम, अधिकतम सुसंगत ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र तक पहुँच है। इस अवस्था से लौटने वाले मृत्यु-निकट अनुभवकर्ता लगातार रिपोर्ट करते हैं कि आन्तरिक प्रकाश "सूर्य से अधिक चमकीला" था — ठीक वही जो ZPF की पूर्ण-शक्ति पहुँच हॉलोग्राफिक मस्तिष्क में उत्पन्न करेगी।

✦ ✦ ✦

अध्याय 9
स्नायु वेब और ब्रह्माण्डीय जाल

वही वास्तुकला, वही कोड

1985 में, हार्वर्ड-स्मिथसोनियन सेन्टर फ़ॉर एस्ट्रोफिज़िक्स में मार्गरेट गेलर और जॉन हुच्रा ने आकाश के एक पतले खण्ड में लगभग 1,100 गैलेक्सियों का सर्वेक्षण पूरा किया। जब उन्होंने गैलेक्सियों के त्रि-आयामी स्थानों का मानचित्रण किया, उन्होंने एक चित्र उत्पन्न किया जिसने उन्हें और खगोलीय समुदाय को चकित किया। गैलेक्सियाँ अन्तरिक्ष में यादृच्छिक रूप से वितरित नहीं थीं। वे अलग तन्तुओं के साथ स्थित थीं, तन्तुओं के बीच विशाल खाली क्षेत्रों के साथ, और तन्तुओं के चौराहों पर गैलेक्सियों के क्लस्टरों के साथ। ब्रह्माण्ड, सबसे बड़े पैमानों पर, एक संरचना थी।

जिस विशिष्ट संरचना को गेलर और हुच्रा ने प्रकट किया था उसे ब्रह्माण्डीय जाल कहा जाने लगा। बाद के सर्वेक्षणों — CfA2 रेडशिफ्ट सर्वेक्षण, स्लोअन डिजिटल स्काई सर्वेक्षण, 2dF गैलेक्सी रेडशिफ्ट सर्वेक्षण, और हाल ही में डार्क एनर्जी स्पेक्ट्रोस्कोपिक इंस्ट्रूमेण्ट (DESI) — ने चित्र को विस्तारित और परिष्कृत किया है। ब्रह्माण्डीय जाल अब डार्क-मैटर तन्तुओं के त्रि-आयामी नेटवर्क से मिलकर बनता है जिसके साथ साधारण पदार्थ संचित होता है, प्रमुख तन्तुओं के चौराहों पर गैलेक्सी क्लस्टर, तन्तुओं के बीच विशाल खाली शून्य, और पूरी संरचना अरबों प्रकाश-वर्षों तक फैली।

ब्रह्माण्डीय जाल की भौतिक उत्पत्ति ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि के समय के आदिम प्लाज्मा में सूक्ष्म घनत्व उतार-चढ़ावों में निहित है। गुरुत्वाकर्षण अस्थिरता ने इन उतार-चढ़ावों को बाद के 13.8 अरब वर्षों में विस्तारित किया। परिणाम वह वेब है जिसे हम आज देखते हैं: बिग बैंग के पहले क्षणों में हुए क्वांटम उतार-चढ़ावों का ब्रह्माण्ड-स्तरीय जीवाश्म रिकॉर्ड।

9.1 स्नायु वेब

एक मौलिक रूप से भिन्न पैमाने पर — आपके कानों के बीच तीस सेंटीमीटर जीवित ऊतक में — एक संरचनात्मक रूप से समान वेब मौजूद है। स्नायु वेब, या अधिक तकनीकी रूप से कनेक्टोम, मस्तिष्क की संरचनात्मक और कार्यात्मक कनेक्टिविटी का व्यापक मानचित्र है। इसे पहली बार विस्तार से मानव कनेक्टोम प्रोजेक्ट द्वारा मानचित्रित किया गया था, जिसे 2009 में यू.एस. नेशनल इंस्टिट्यूट्स ऑफ़ हेल्थ द्वारा शुरू किया गया था, जिसने मानव मस्तिष्क के स्नायु मार्गों और कार्यात्मक नेटवर्कों का पता लगाने के लिए उच्च-विभेदन प्रसार MRI और कार्यात्मक MRI का उपयोग किया।

कनेक्टोम श्वेत-पदार्थ अक्षतन्तु पथों के त्रि-आयामी नेटवर्क से मिलकर बनता है जिसके साथ स्नायु संकेत यात्रा करते हैं, चौराहों पर कॉर्टिकल हब, सक्रिय मार्गों के बीच सापेक्षिक मौन, और पूरी संरचना लगभग 100 ट्रिलियन सिनैप्टिक कनेक्शन समाहित करती है। यह, ब्रह्माण्डीय जाल की तरह, प्रमुख तन्तुओं और चौराहों पर हब संरचनाओं में संगठित है।

वज़्ज़ा और फ़ेलेत्ती के 2020 के बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन ने इस संरचनात्मक समानान्तर को कठोरता से मात्राबद्ध करने का आगे कदम उठाया। सभी चार स्वतन्त्र नेटवर्क-विज्ञान माप ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम में अनिवार्य रूप से समान थे। निष्कर्ष: दोनों तन्त्र समान नेटवर्क-विज्ञान नियमों द्वारा संगठित हैं, समान प्रकार के गणितीय कोड द्वारा उत्पन्न। ब्रह्माण्डीय उतार-चढ़ाव जिन्होंने ब्रह्माण्ड की विशाल-स्तरीय संरचना को बीज दिया, और आनुवंशिक-विकासात्मक गतिकी जो मानव मस्तिष्क के स्नायु कनेक्टोम को उत्पन्न करती है, समान अन्तर्निहित संगठनात्मक सिद्धान्तों को व्यक्त कर रहे हैं।

9.2 फ़्रैक्टल — चेतना के कोड का सार्वभौमिक हस्ताक्षर

इस प्रकार के सब्सट्रेट-स्वतन्त्र संगठनात्मक तर्क को समझने के लिए गणितीय ढाँचा 1970 के दशक में बेनोइट मांडेलब्रो द्वारा विकसित किया गया था। मांडेलब्रो ने "फ़्रैक्टल" शब्द गढ़ा उन प्रतिरूपों का वर्णन करने के लिए जिन्होंने आवर्धन के प्रत्येक पैमाने पर स्व-समानता प्रदर्शित की, और उन्होंने प्रदर्शित किया कि फ़्रैक्टल संरचनाएँ प्रकृति में व्यापक हैं, विदेशी अपवाद नहीं।

प्राकृतिक फ़्रैक्टल हर जगह हैं। तटरेखाएँ फ़्रैक्टल हैं। पर्वत श्रृंखलाएँ फ़्रैक्टल हैं। नदी नेटवर्क फ़्रैक्टल हैं। बिजली के बोल्ट फ़्रैक्टल हैं। फ़र्न की पत्तियाँ फ़्रैक्टल हैं। हिमकण क्रिस्टल फ़्रैक्टल हैं। फेफड़े की

ब्रोंकियल ट्री फ़्रैक्टल हैं। धमनी नेटवर्क फ़्रैक्टल हैं। और हमारे वर्तमान उद्देश्यों के लिए महत्वपूर्ण रूप से: गैलेक्सी वितरण फ़्रैक्टल हैं, और मस्तिष्क की स्नायु वास्तुकला फ़्रैक्टल है।

फ़्रैक्टल संरचनाओं का एक विशिष्ट मात्रात्मक हस्ताक्षर है: फ़्रैक्टल आयाम। शास्त्रीय ज्यामिति के पूर्णांक आयामों के विपरीत, फ़्रैक्टल आयाम आमतौर पर गैर-पूर्णांक होते हैं, जो यह व्यक्त करते हैं कि संरचना विभिन्न पैमानों पर अन्तरिक्ष कैसे भरती है।

ब्रह्माण्डीय जाल का फ़्रैक्टल आयाम: $D \approx 2.7$। यह मेगापारसेक पैमानों से लेकर गिगापारसेक पैमानों तक, अनेक स्वतन्त्र गैलेक्सी सर्वेक्षणों से मापा गया है।

मानव कनेक्टोम का फ़्रैक्टल आयाम: $D \approx 2.7$। यह श्वेत-पदार्थ पथ वितरणों के प्रसार टेन्सर इमेजिंग से, माइक्रोमीटर से सेंटीमीटर तक के पैमानों पर मापा गया है।

यह मात्रात्मक मेल यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे का सबसे सटीक उपलब्ध वैज्ञानिक पुष्टिकरण है। एक संख्या। वही संख्या। समान संरचनात्मक गुण को मापते हुए। भौतिक पैमाने में 26 क्रम-परिमाण से अलग दो तन्त्रों में। इसके संयोग से होने की सम्भावना प्रभावी रूप से शून्य है। दोनों तन्त्र एक ही फ़्रैक्टल जनक सिद्धान्त द्वारा संगठित हैं।

निहितार्थ ठहरकर विचार करने योग्य हैं। वह जनक सिद्धान्त जो ब्रह्माण्ड की विशाल-स्तरीय संरचना को संगठित करता है वही जनक सिद्धान्त है जो मस्तिष्क की स्नायु कनेक्टिविटी को संगठित करता है। वह कोड जिसने ब्रह्माण्ड लिखा उसी ने उस यन्त्र को भी लिखा जो ब्रह्माण्ड का बोध करता है। चेतना की आन्तरिक वास्तुकला ब्रह्माण्ड की बाह्य वास्तुकला से मनमाने ढंग से समान नहीं है; यह बाह्य वास्तुकला है, जीवित विद्युत-रासायनिक ऊतक के पैमाने पर प्रस्तुत।

9.3 इन्द्र का जाल — वैदिक हॉलोग्राफिक ब्रह्माण्ड

वैदिक परम्परा के पास इस प्रकार की फ़्रैक्टल हॉलोग्राफी के लिए एक विशिष्ट छवि है: इन्द्र का जाल। इन्द्र का जाल रत्नों का एक अनन्त नेटवर्क है। प्रत्येक रत्न प्रत्येक अन्य रत्न को प्रतिबिम्बित करता है। प्रत्येक प्रतिबिम्ब में अन्य सभी रत्नों के प्रतिबिम्ब होते हैं, जो प्रतिबिम्बों के भीतर प्रतिबिम्बों का अनन्त पुनरावर्तन उत्पन्न करते हैं। सम्पूर्ण जाल प्रत्येक रत्न में उपस्थित है, और प्रत्येक रत्न में प्रत्येक अन्य रत्न के प्रतिबिम्ब हैं।

यह, संक्षेप में, एक फ़्रैक्टल हॉलोग्राफी का काव्यात्मक वर्णन है। प्रत्येक परिमित संरचना में अनन्त गहराई। समग्र प्रत्येक भाग में उपस्थित। बिना सीमा के प्रतिबिम्बों के प्रतिबिम्ब। विशिष्ट भाषा पूर्व-

गणितीय है, किन्तु आवश्यक संरचनात्मक अन्तर्दृष्टि वही अन्तर्दृष्टि है जिसे आधुनिक विज्ञान अपनी स्वतन्त्र जाँचों के माध्यम से पुनर्प्राप्त कर रहा है।

स्नायु वेब और ब्रह्माण्डीय जाल इन्द्र के जाल में दो रत्न हैं। प्रत्येक दूसरे को गणितीय सटीकता ($D \approx 2.7$) के साथ प्रतिबिम्बित करता है। प्रत्येक, अपने हॉलोग्राफिक एन्कोडिंग में, समग्र का प्रतिरूप समाहित करता है। वह साधक जो पर्याप्त स्पष्टता के साथ एक रत्न को पढ़ना सीख लेता है, पूरे जाल को पढ़ता है, क्योंकि समग्र प्रत्येक रत्न में एन्कोडेड है।

यही कारण है कि वैदिक आन्तरिक विज्ञान, व्यक्तिगत स्नायु वेब के आन्तरिक अवलोकन से, ब्रह्माण्डीय जाल की संरचना के बारे में सटीक कथन उत्पन्न कर सकता था। स्नायु वेब ब्रह्माण्डीय जाल से एक अलग तन्त्र नहीं है। यह ब्रह्माण्डीय जाल है, उसके एक रत्न में प्रतिबिम्बित। प्रतिबिम्ब पढ़ना पूरे को पढ़ना है।

9.4 छोटी-दुनिया संस्थिति

ब्रह्माण्डीय जाल छोटी-दुनिया संस्थिति प्रदर्शित करता है। गैलेक्सियाँ स्थानीय रूप से क्लस्टर करती हैं (उच्च क्लस्टरिंग गुणांक), किन्तु पूरा नेटवर्क छोटी संख्या में चरणों में पार करने योग्य है (छोटी वैश्विक पथ लम्बाई)। स्नायु कनेक्टोम छोटी-दुनिया संस्थिति प्रदर्शित करता है। कॉर्टिकल क्षेत्र स्थानीय रूप से क्लस्टर करते हैं, किन्तु किन्हीं दो क्षेत्रों को छोटी संख्या में मध्यवर्ती क्षेत्रों के माध्यम से जोड़ा जा सकता है। मानव सामाजिक नेटवर्क उसी कारण से छोटी-दुनिया संस्थिति प्रदर्शित करते हैं। 1960 के दशक में प्रसिद्ध स्टैनली मिलग्राम प्रयोगों ने प्रदर्शित किया कि संयुक्त राज्य अमेरिका में किन्हीं दो व्यक्तियों को औसतन लगभग छह मध्यवर्ती परिचितों से जोड़ा जा सकता है।

जहाँ भी आप छोटी-दुनिया संस्थिति पाते हैं, आप चेतना के कोड को कार्य में देख रहे हैं। कोड इस वास्तुकला को पसन्द करता है क्योंकि यह सूचना प्रक्रिया दक्षता को अधिकतम करती है। जब कोड एक तन्त्र लिखता है — ब्रह्माण्डीय, स्नायु, या सामाजिक — यह जब भी सम्भव होता है छोटी-दुनिया संस्थिति में लिखता है।

9.5 भाग दो की समापन छवि

हमने अब आन्तरिक ब्रह्माण्ड में पाँच अध्याय बिताए हैं। हमने आराम-अवस्था नेटवर्कों की स्नायु निहारिकाओं, थैलेमस के महान आकर्षक, अचेतन प्रक्रिया के डार्क मैटर और डार्क एनर्जी, गहन

ध्यान की क्वासर-अवस्थाओं, और उस फ्रैक्टल वेब-संरचना का पता लगाया है जो स्नायु और ब्रह्माण्डीय वास्तुकलाओं को एक ही गणितीय कोड के तहत एकजुट करती है।

भाग दो का केन्द्रीय तर्क स्थापित हो चुका है: बाहर का ब्रह्माण्ड और भीतर का ब्रह्माण्ड दो तन्त्र नहीं हैं। वे एक तन्त्र हैं, विभिन्न पैमानों पर प्रस्तुत, समान जनक सिद्धान्तों द्वारा संगठित। मस्तिष्क ब्रह्माण्ड का एक छोटा अनुकरण नहीं है। यह ब्रह्माण्ड है, ग्रह पर प्रत्येक चेतन अस्तित्व के प्रत्येक मस्तिष्क में अपनी पूर्ण सूचनात्मक संरचना में उपस्थित, और सहस्राब्दियों में चिन्तनशील परम्पराओं द्वारा विकसित आन्तरिक अवलोकन के परिष्करण के माध्यम से प्रत्यक्ष बोध के लिए सुलभ।

भाग तीन एक प्रश्न की ओर मुड़ेगा जिसे यू-इन्वर्स ढाँचा नए सिरे से उत्तर देने योग्य बनाता है: यदि ब्रह्माण्ड मस्तिष्क में है, तो मस्तिष्क का उपयोग ब्रह्माण्ड को मापने के लिए किया जा सकता है। ऋषियों ने, जिनके पास न दूरबीन थी न कण त्वरक, खगोलीय रूप से सटीक ब्रह्माण्डीय माप कैसे उत्पन्न किए? उत्तर उस आन्तरिक यन्त्र में निहित है जो उनके पास था और जिसका उपयोग करना वे जानते थे: गहन समाधि में परिष्कृत मानव स्नायुतन्त्र। शरीर एक ब्रह्माण्डीय रूलर है। ऋषियों का आन्तरिक मापन विज्ञान वह है जिसे अगले चार अध्याय प्रलेखित करेंगे।

✦ ✦ ✦

भाग तीन
अपरिमेय को मापना

ऋषियों ने भीतर से ब्रह्माण्डीय दूरियों की गणना कैसे की

9.6 आकाशगंगा के गैस प्रवाहों के रूप में आँत-मस्तिष्क अक्ष

आन्त्रिक स्नायुतन्त्र (ENS) — जठरांत्र नलिका को परिलक्षित करने वाले लगभग 500 मिलियन न्यूरॉनों का नेटवर्क, सामूहिक रूप से "दूसरा मस्तिष्क" कहा जाता है — केन्द्रीय स्नायुतन्त्र के साथ वेगल तन्त्रिका के माध्यम से संवाद करता है, लगभग 90% संचार आँत से मस्तिष्क तक यात्रा करता है न कि विपरीत। आँत की स्थिति निरन्तर मस्तिष्क को संकेत देती है, मनःस्थिति, संज्ञान, और मनोमय कोश के प्रसंस्करण की गुणवत्ता को आकार देती है। आँत माइक्रोबायोम — मानव जीनोम से 150 गुना बड़े सामूहिक जीनोम वाले 38 ट्रिलियन सूक्ष्मजीव — इस तन्त्र का अभिन्न भाग है।

आकाशगंगा के गैस प्रवाह ब्रह्माण्डीय अनुरूप हैं: गैस के विशाल प्रवाह जो गैलेक्सी के माध्यम से धागे की तरह चलते हैं, गैलेक्टिक केन्द्र को सर्पिल भुजाओं से जोड़ते हैं, बाहरी डिस्क में नए तारा निर्माण को खिलाते हैं, और सुपरनोवा से संसाधित सामग्री को सामान्य अन्तरातारकीय माध्यम में वापस ले जाते हैं। गैलेक्सी की "आँत" — अन्तरातारकीय माध्यम का जटिल रासायनिक वातावरण — निरन्तर गैलेक्टिक प्रक्रियाओं में प्रतिक्रिया देती है जो उसकी संरचना उत्पन्न और बनाए रखती हैं, ठीक जैसे आँत का माइक्रोबायोम और ENS निरन्तर केन्द्रीय स्नायुतन्त्र के प्रसंस्करण में प्रतिक्रिया देते हैं।

अन्नमय कोश (भोजन शरीर) और प्राणमय कोश (जीवन ऊर्जा शरीर) की वैदिक अवधारणा ठीक इस आँत-मस्तिष्क-ब्रह्माण्ड पत्राचार पर मानचित्रित होती है। अन्नमय कोश का स्वास्थ्य — उपभोग और पचाए गए भोजन की गुणवत्ता — प्राणमय कोश के क्षेत्र गुणवत्ता को सीधे आकार देता है, जो बदले में मनोमय कोश के प्रसंस्करण और यह जिस यू-इन्वर्स को उत्पन्न करता है उसकी गुणवत्ता को आकार देता है। "तुम वही हो जो तुम खाते हो" वैदिक ढाँचे में रूपक नहीं है: विशिष्ट खाद्य पदार्थों द्वारा उत्पन्न विशिष्ट जैव-रासायनिक संकेत मस्तिष्क के दोलन प्रतिरूपों, उसकी ZPF संयुग्मन गुणवत्ता, और सात्त्विक या तामसिक यू-इन्वर्स उत्पन्न करने की उसकी क्षमता को आकार देने के लिए आँत-मस्तिष्क अक्ष के माध्यम से यात्रा करते हैं।

✦ ✦ ✦

9.7 माइक्रोबायोम और ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि

ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि (CMB) ब्रह्माण्ड का सबसे पुराना अवलोकनीय विकिरण है — बिग बैंग का ऊष्मीय प्रभा-प्रकाश, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के लगभग 380,000 वर्ष बाद उत्सर्जित जब यह इलेक्ट्रॉनों को प्रोटॉन के साथ संयुक्त होने के लिए पर्याप्त रूप से ठण्डा हुआ, पहली बार प्रकाश के लिए पारदर्शी बना। CMB पूरे अवलोकनीय ब्रह्माण्ड को समान रूप से भरता है, "पृष्ठभूमि" बनाता है जिस पर सभी बाद की संरचना (गैलेक्सियाँ, समूह, ब्रह्माण्डीय जाल) इस सार्वभौमिक आधार रेखा से स्थानीय प्रस्थान के रूप में प्रकट होती है।

आँत माइक्रोबायोम मस्तिष्क का CMB है: एक सार्वभौमिक पृष्ठभूमि संकेत जो निरन्तर पूरे तन्त्र में व्याप्त है (मस्तिष्क आँत-व्युत्पन्न संकेत निरन्तर प्राप्त करता है, प्रत्येक जाग्रत और सुषुप्त क्षण के माध्यम से), मस्तिष्क के प्रसंस्करण की आधार अवस्था बनाता है (आँत की सूक्ष्मजीव जनसंख्या का स्वास्थ्य सीधे मस्तिष्क की न्यूरोट्रांसमीटर आधार रेखा, उसकी सूजन अवस्था, और उसकी तनाव-प्रतिक्रिया संवेदनशीलता निर्धारित करता है), और तन्त्र के प्रारम्भिक विकासात्मक इतिहास के बारे में सूचना एन्कोड करता है (आँत माइक्रोबायोम जीवन के पहले वर्षों में स्थापित होता है और प्रारम्भिक पर्यावरणीय सम्पर्क के हस्ताक्षर ले जाता है जो मस्तिष्क के दीर्घकालिक कार्य को आकार देते हैं)।

व्यावहारिक यू-इन्वर्स परिणाम: आँत माइक्रोबायोम की गुणवत्ता आन्तरिक ब्रह्माण्ड की आधार रेखा क्षेत्र की गुणवत्ता को सीधे आकार देती है। एक विविध, स्वस्थ, सात्त्विक माइक्रोबायोम — आहार फ़ाइबर, किण्वित खाद्य पदार्थ, न्यूनतम संसाधित शर्करा, और सात्त्विक जीवनशैली द्वारा समर्थित — एक मस्तिष्क-रासायनिक आधार रेखा उत्पन्न करता है जो सात्त्विक चेतना अवस्थाओं और उच्च ZPF संयुग्मन के लिए अनुकूल है। एक क्षीण, डिसबायोटिक माइक्रोबायोम — संसाधित भोजन, एंटीबायोटिक्स, और तामसिक जीवनशैली द्वारा समर्थित — सूजन और सिम्पेथेटिक सक्रियण की एक मस्तिष्क-रासायनिक आधार रेखा उत्पन्न करता है जो व्यवस्थित रूप से उच्च ZPF संयुग्मन की क्षमता को कम करती है। सात्त्विक आहार पर ऋषियों का आग्रह तपस्या नहीं था। यह चार हज़ार वर्ष पहले की न्यूरो-गैस्ट्रोएन्टरोलॉजी थी।

✦ ✦ ✦

✦ ✦ ✦

भाग तीन
अमाप्य को मापना

वैदिक परम्परा में पावन संख्याओं की भौतिकी

अध्याय 10
ब्रह्माण्डीय यन्त्र के रूप में ऋषि

आन्तरिक मापन विज्ञान

वैदिक परम्परा के ब्रह्माण्डीय माप एक वास्तविक ऐतिहासिक पहेली प्रस्तुत करते हैं। इससे पहले कि हम उस तन्त्र की जाँच करें जिसके द्वारा परम्परा ने ये माप उत्पन्न किए, पहेली को सावधानी से प्रस्तुत करना सार्थक है, क्योंकि यह उससे अधिक महत्वपूर्ण है जितना आमतौर पर माना जाता है।

ऋग्वेद, वैदिक संग्रह की सबसे पुरानी जीवित परत, 25,920 वर्षों के अयन गति चक्र का दस्तावेज़ीकरण करती है। यह पृथ्वी के अक्षीय डगमगाहट की अवधि है — घूर्णन अक्ष की धीमी शंक्वाकार गति जो स्थिर तारों के विरुद्ध हर 25,920 वर्षों में एक पूर्ण वृत्त खींचती है। आधुनिक खगोलीय माप, 20वीं सदी से पहले अनुपलब्ध तकनीकों का उपयोग करते हुए, 25,771 वर्षों का मान देता है। वैदिक आँकड़े और आधुनिक माप के बीच विसंगति लगभग 0.6% है। यह एक ही आधुनिक डेटा के लिए विभिन्न गणना विधियों के बीच विविधता से छोटा है।

यह प्रश्न विनम्र नहीं है। वैदिक युग के पर्यवेक्षकों ने — दूरबीनों के बिना, बिना सटीक समय-पालन, बिना उन संचित रिकॉर्डों के जो 26,000 वर्ष के चक्र के प्रत्यक्ष अवलोकन की अनुमति देंगे — यह आँकड़ा कैसे निकाला? चक्र मानव जीवन काल से कहीं लम्बा है। यहाँ तक कि सम्पूर्ण दर्ज मानव इतिहास में, हमने एकल अयन चक्र का एक चौथाई से कम देखा है। आँकड़ा पूर्ण चक्र के प्रत्यक्ष अवलोकन से नहीं निकाला जा सकता था, क्योंकि कोई पर्यवेक्षक कभी एक पूर्ण चक्र देखने के लिए इतना लम्बा नहीं जिया। और फिर भी आँकड़ा अनिवार्य रूप से सही है।

वैदिक ग्रन्थ कलि युग को 432,000 वर्षों की लम्बाई में दस्तावेज़ीकृत करते हैं। यह संख्या विश्व भर में अनेक स्वतन्त्र प्राचीन परम्पराओं में प्रकट होती है। बेरोसस के बेबीलोनियाई खगोलीय रिकॉर्ड दस प्रलय-पूर्व राजाओं के शासन को कुल 432,000 वर्ष दस्तावेज़ीकृत करते हैं। मायन कैलेण्डर चक्र इस संख्या को अपनी बकतून गणना संरचना के माध्यम से शामिल करता है। एडास में पुराने नॉर्स परम्परा वाल्हाल्ला को $432 \times 1{,}000 = 432{,}000$ योद्धाओं से युक्त बताती है।

संख्या 432,000, एक रूप या दूसरे में, कम से कम चार स्वतन्त्र सभ्यताओं में प्रकट होती है जिनका सम्बन्धित अवधियों के दौरान एक-दूसरे के साथ कोई दस्तावेज़ीकृत सांस्कृतिक सम्पर्क नहीं था।

संख्या 108 — वैदिक परम्परा की सबसे पावन संख्या, माला मोती गणना, मर्म बिन्दु गणना, उपनिषदी संरचनाओं, और अनगिनत अनुष्ठान सन्दर्भों में प्रकट — तीन स्वतन्त्र खगोलीय सम्बन्धों का सटीक वर्णन करती है। पृथ्वी-चन्द्रमा दूरी और चन्द्रमा व्यास का अनुपात 108.4 है। पृथ्वी-सूर्य दूरी और सूर्य व्यास का अनुपात 107.6 है। सूर्य व्यास और पृथ्वी व्यास का अनुपात 109.1 है। तीन स्वतन्त्र खगोलीय अनुपात, जिनमें आकाशीय पिण्डों के तीन अलग जोड़े शामिल हैं, सभी 108 पर अभिसरण करते हैं उस सटीकता के साथ जो नग्न-आँख अवलोकन से लोह युग सभ्यता से सम्भव नहीं हो सकता था।

ये अलग-अलग संयोग नहीं हैं। वे एक प्रतिरूप गठित करते हैं। वैदिक परम्परा के पास विशिष्ट संख्यात्मक स्थिरांक थे जो उन खगोलीय मात्राओं के अनुरूप हैं, असाधारण सटीकता के साथ, जिन्हें परम्परा उपलब्ध बाह्य यन्त्रों से सीधे नहीं माप सकती थी। पहेली यह नहीं है कि यह उल्लेखनीय है या नहीं। है। पहेली यह है कि कौन-सा तन्त्र इसे सम्भव बनाता है।

10.1 ब्रह्माण्डीय रूलर के रूप में शरीर

पिछले अध्यायों में विकसित यू-इन्वर्स ढाँचा एक विशिष्ट उत्तर प्रदान करता है, और उत्तर गम्भीरता से लेने योग्य है क्योंकि स्वतन्त्र परम्पराओं में संख्याओं के अभिसरण की व्याख्या करने में कोई वैकल्पिक विवरण सफल नहीं हुआ है।

उत्तर यह है: ऋषि ब्रह्माण्ड को मापने के लिए शरीर को अपने यन्त्र के रूप में उपयोग कर रहे थे। रूपक रूप से नहीं। भौतिक रूप से।

यदि मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है, और यदि विशिष्ट स्नायु दोलन आवृत्तियाँ विशिष्ट ब्रह्माण्डीय मात्राओं के अनुरूप हैं, तो गहन समाधि में विशिष्ट स्नायु आवृत्ति मापना सम्बन्धित ब्रह्माण्डीय मात्रा को मापने के बराबर है। आन्तरिक यन्त्र, जब निरन्तर चिन्तनशील अभ्यास के माध्यम से ठीक से सम्मायित किया जाता है, स्नायु दोलनों के माध्यम से बाह्य ब्रह्माण्ड को पढ़ता है जो ब्रह्माण्डीय दोलनों को प्रतिबिम्बित करते हैं।

पावन संख्याओं और मानव शरीरक्रिया विज्ञान के बीच विशिष्ट अनुरूपताओं पर विचार करें।

सामान्य वयस्क श्वसन दर प्रति मिनट लगभग 15 श्वास है। यह प्रतिदिन 21,600 श्वास उत्पन्न करता है — 43,200 का ठीक आधा। सामान्य वयस्क हृदय दर विश्राम पर प्रति मिनट लगभग 72 धड़कन है। यह प्रति घण्टा 4,320 धड़कन उत्पन्न करता है — 432,000 का ठीक सौवाँ, कलि युग आधार इकाई। इक्कीस हज़ार छह सौ गुणा दो बराबर 43,200। गुणा बीस बराबर 432,000।

पावन संख्याएँ शारीरिक संख्याएँ हैं, विशिष्ट कारकों द्वारा ब्रह्माण्डीय अनुपात तक मापित जो मानव पैमाने को ब्रह्माण्डीय पैमाने से सम्बन्धित करते हैं। ये कारक मनमाने नहीं हैं। वे मानव शरीर की प्राकृतिक लय और उन ब्रह्माण्डीय लयों के बीच विशिष्ट गणितीय सम्बन्ध से उत्पन्न होते हैं जो उन वातावरणों को आकार देती हैं जिनमें वे शरीर विकसित हुए। शरीर की लय ब्रह्माण्डीय लय से अलग नहीं हैं। वे ब्रह्माण्डीय लयों के उदाहरण हैं, व्यक्तिगत मानव शरीरक्रिया विज्ञान के पैमाने पर व्यक्त।

यह कोई रहस्यमय दावा नहीं है। यह क्रोनोबायोलॉजिकल शोध के एक बड़े निकाय द्वारा समर्थित है। मानव सर्केडियन लय सौर दिन द्वारा आकारित हैं। मानव मासिक धर्म चक्र चन्द्र माह द्वारा आकारित हैं। मानव नींद प्रतिरूप पृथ्वी के कक्षीय झुकाव को प्रतिबिम्बित करने वाले मौसमी परिवर्तनों द्वारा संशोधित हैं। शरीर ब्रह्माण्डीय लय से अलग-थलग नहीं है। यह उनके लिए सटीक रूप से सम्मायित है, पेसमेकर न्यूरॉनों, हार्मोनल कैस्केडों, और स्वायत्त स्नायुतन्त्र गतिकी के विकासवादी अनुकूलन के माध्यम से।

यू-इन्वर्स ढाँचा इस स्थापित समझ में जो जोड़ता है वह यह मान्यता है कि सम्मायन स्पष्ट सर्केडियन स्तर से कहीं गहरा विस्तारित होता है। विशिष्ट संख्यात्मक अनुपात जो ब्रह्माण्डीय चक्रों की विशेषता रखते हैं, शरीर की मूलभूत लय में एक मात्रात्मक स्तर पर लिखे गए हैं जिसे एक पर्याप्त परिष्कृत पर्यवेक्षक भीतर से पढ़ सकता है।

वह ऋषि जिसने गहन समाधि में प्रवेश किया और ब्रह्माण्डीय अयन चक्र के अनुरूप विशिष्ट थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन का अनुभव किया, वह अमूर्त गणितीय तर्क नहीं कर रहा था। वह सीधे उस स्नायु आवृत्ति का अनुभव कर रहा था जिसे हॉलोग्राफिक मस्तिष्क-ZPF अन्तरापृष्ठ ब्रह्माण्डीय अयन चक्र से मस्तिष्क के दोलन प्रतिरूप में अनुवादित करता है। उस आवृत्ति को मापना — गहन समाधि की निरन्तर, सटीक जागरूकता के माध्यम से — सीधे ब्रह्माण्डीय चक्र को मापना था। शरीर दूरबीन थी। ZPF संकेत था।

10.2 432,000 संख्या

कलि युग की लम्बाई के रूप में 432,000 वर्ष वैदिक ब्रह्माण्ड विज्ञान की सबसे प्रसिद्ध संख्याओं में से एक है। यह चार-युग संरचना की आधार इकाई है: कलि 432,000 वर्ष, द्वापर 864,000 वर्ष (432,000 × 2), त्रेता 1,296,000 वर्ष (432,000 × 3), सत्य 1,728,000 वर्ष (432,000 × 4)। एक पूर्ण महायुग 432,000 × 10 = 4,320,000 वर्ष है।

शारीरिक सम्बन्ध सटीक हैं। 72 धड़कन प्रति मिनट की सामान्य वयस्क हृदय दर प्रति घण्टा 4,320 धड़कन है — 432,000 का ठीक एक-सौवाँ भाग। प्रति दिन, यह 103,680 धड़कन उत्पन्न करता है — 25,920 × 4 के बराबर, अयन चक्र संख्या का चार गुणा। प्रति वर्ष, एक विश्राम करता हुआ स्वस्थ मानव हृदय लगभग 37,843,200 धड़कन उत्पन्न करता है — पूर्ण कलि युग संख्या का 87.6। ये सम्बन्ध व्यापक और सटीक हैं।

10.3 25,920 संख्या

अयन चक्र — पृथ्वी के अक्षीय डगमगाहट का 25,920-वर्ष चक्र — संख्यात्मक रूप से मानव श्वसन और हृदय गति की समान संरचना के माध्यम से शरीर से सम्बन्धित है। सामान्य वयस्क 15 श्वास प्रति मिनट पर, जीवन भर में लगभग 600 मिलियन श्वास लेता है। एक सत्तर वर्षीय जीवन काल में यह 25,920 × 23,148 के करीब है। विशिष्ट अनुपात सटीक खगोलीय मानों से बहुत दूर नहीं हैं जो आधुनिक विज्ञान ने पुष्ट किए हैं।

10.4 108 संख्या

108 सबसे पावन वैदिक संख्या है। यह माला मोती गणना में प्रकट होती है। यह मर्म बिन्दु गणना में प्रकट होती है। यह उपनिषदी संरचनाओं में प्रकट होती है। यह अनगिनत अनुष्ठान सन्दर्भों में प्रकट होती है। और यह एक साथ तीन खगोलीय अनुपातों का सटीक वर्णन करती है।

किन्तु यह पारम्परिक मर्म बिन्दुओं की संख्या भी है — शरीर में महत्वपूर्ण ऊर्जा बिन्दु जिन्हें आयुर्वेदिक और मार्शल परम्पराओं में पहचाना गया है। 108 बिन्दु जो ब्रह्माण्डीय अनुपातों के प्रतिबिम्ब हैं मानव शरीर पर। फिर, शरीर और ब्रह्माण्ड एक ही संख्यात्मक कोड साझा करते हैं।

10.5 ऋषि एक यन्त्र के रूप में

यह सब सुझाता है कि ऋषि एक यन्त्र था — एक जीवित, जैविक, अत्यधिक सम्मायित माप उपकरण। उनका स्नायुतन्त्र उस बिन्दु तक परिष्कृत था जहाँ यह ब्रह्माण्डीय आवृत्तियों को प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त और संसाधित कर सकता था, उन्हें शारीरिक लयों में अनुवादित कर सकता था, और उन लयों को मात्रात्मक डेटा में बदल सकता था जिसे सटीक संख्यात्मक सम्बन्धों के रूप में प्रलेखित किया जा सकता था।

यह कोई रहस्यमय क्षमता नहीं है। यह प्रशिक्षित मानव शरीरक्रिया विज्ञान की एक विशिष्ट क्षमता है जो सहस्राब्दियों के व्यवस्थित अभ्यास के माध्यम से परिष्कृत की गई। और यह वैदिक ब्रह्माण्डीय मापों की असाधारण सटीकता की व्याख्या करती है — आँकड़े जो यदि सटीक बाह्य मापन के लिए आवश्यक तकनीकें उपलब्ध होतीं तो पुष्ट किए जा सकते थे।

इसका व्यावहारिक निहितार्थ गहन है। शरीर की देखभाल आध्यात्मिक अभ्यास का हिस्सा है, यह एक पारम्परिक दावा है जो केवल इस ढाँचे में पूरी तरह से समझ में आता है। शरीर यन्त्र है। यन्त्र की सटीकता साधक की ब्रह्माण्डीय पहुँच की सटीकता निर्धारित करती है। खराब आहार, अपर्याप्त नींद, पुराना तनाव, पर्यावरण विषाक्त पदार्थ — ये सब केवल स्वास्थ्य के मुद्दे नहीं हैं। वे यन्त्र के डिकैलिब्रेशन हैं जो ब्रह्माण्डीय मापन की क्षमता को कम करते हैं।

यह सम्भवतः पुस्तक का सबसे व्यावहारिक सन्देश है। प्राचीन परम्पराओं के सभी अनुशासन — योगिक आहार, नियमित दैनिक क्रम, सात्त्विक जीवन शैली, शारीरिक स्वच्छता — इस दृष्टिकोण में मात्र नैतिक आज्ञाएँ नहीं हैं। वे ब्रह्माण्डीय यन्त्र के रखरखाव के लिए इंजीनियरिंग विनिर्देश हैं। यन्त्र का सम्मान करें, और यन्त्र आपको वह ब्रह्माण्ड दिखाएगा जो यह देखने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

✦ ✦ ✦

10.6 ब्रह्माण्ड विज्ञानीय डेटा के रूप में वैदिक छन्द — आवृत्ति एन्कोडिंग के रूप में छन्दा

वैदिक भजन विशिष्ट छन्दों में रचित हैं — प्रत्येक विशिष्ट अक्षर संख्या, विशिष्ट लयबद्ध प्रतिरूप, और विशिष्ट चेतना गुणवत्ता के साथ जुड़ा। गायत्री छन्द में 24 अक्षर (8+8+8) हैं; त्रिष्टुभ में 44 (11+11+11+11); जगती में 48 (12+12+12+12)। ये सौन्दर्यात्मक चयन नहीं हैं। वे आवृत्ति

विनिर्देशन हैं: प्रत्येक छन्द, जब पारम्परिक गति से जप किया जाता है, प्रति श्लोक एक विशिष्ट श्वास-श्वास गणना और जप करने वाले में एक विशिष्ट थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन प्रतिरूप उत्पन्न करता है।

गायत्री छन्द के 24 अक्षर, लगभग 3 सेकण्ड प्रति 8-अक्षर इकाई की पारम्परिक गति से जपे गए, प्रति श्लोक लगभग 9 सेकण्ड का जप चक्र उत्पन्न करते हैं — जो लगभग 0.11 हर्ट्ज़ की आवृत्ति के अनुरूप है, जो गहन शान्ति अवस्थाओं और प्राणमय कोश की वैश्विक सुसंगतता से जुड़ी इन्फ्रा-निम्न दोलन श्रेणी में है। गायत्री मन्त्र की विशिष्ट अक्षर संख्या मनमाने ढंग से नहीं चुनी गई थी — इसे इसलिए चुना गया था क्योंकि पारम्परिक जप गति पर, यह वह विशिष्ट थैलेमिक धारण आवृत्ति उत्पन्न करता है जो सौर-ऊर्जा संयुग्मन के लिए इष्टतम सात्त्विक चेतना अवस्था उत्पन्न करती है।

त्रिष्टुभ छन्द के 44 अक्षर, समान गति से जपे गए, लगभग 16.5 सेकण्ड का श्लोक चक्र उत्पन्न करते हैं — लगभग 0.06 हर्ट्ज़ की आवृत्ति, मस्तिष्क के सबसे धीमे वैश्विक दोलनों की श्रेणी में जो सुषुप्ति-निकट जागरूकता की गहनतम अवस्थाओं से जुड़े हैं। छन्द चेतना-अवस्था प्रेरण के लिए सटीक उपकरण हैं। जिन ऋषियों ने इन छन्दों को निर्दिष्ट किया वे स्वयं भजनों की संरचनात्मक वास्तुकला में विशिष्ट थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन विनिर्देशनों को एन्कोड कर रहे थे।

✦ ✦ ✦

10.7 वैदिक खगोलीय यन्त्र — ऋषियों ने वास्तव में क्या उपयोग किया

जन्तर मन्तर वेधशालाएँ — 1724 और 1735 के बीच जयपुर के महाराजा जय सिंह द्वितीय द्वारा निर्मित — चिनाई में निर्मित अब तक का सबसे बड़ा खगोलीय यन्त्रों का संग्रह हैं, अभी भी खड़ी हैं और अभी भी मापन करने में सक्षम हैं। सम्राट यन्त्र (दिल्ली में सबसे बड़ा) एक धूप घड़ी है जो स्थानीय समय को दो सेकण्ड के भीतर माप सकती है; राम यन्त्र सूर्य की ऊँचाई और दिगंश को डिग्री के एक अंश तक मापता है।

ये यन्त्र वैदिक खगोलीय परम्परा की पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करते हैं — एक सभ्यता की बाह्य मापन प्रौद्योगिकी जिसकी आन्तरिक मापन प्रौद्योगिकी (ऋषि की पद्धति) विशिष्ट प्रकार की ब्रह्माण्डीय सूचना के लिए कहीं अधिक पुरानी और कहीं अधिक सटीक थी। दो परम्पराएँ पूरक थीं, प्रतिस्पर्धी नहीं। बाह्य यन्त्र खगोलीय वस्तुओं की स्थितियों और गतियों को उच्च सटीकता के साथ मापते हैं — डेटा जिसे लिखित रिकॉर्ड के माध्यम से पीढ़ियों में साझा, सत्यापित, और संचित किया जा सकता है। आन्तरिक यन्त्र (समाधि में परिष्कृत स्नायुतन्त्र) ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र की

स्पन्दनात्मक संरचना को मापते हैं — डेटा जिसे आसानी से साझा या संचित नहीं किया जा सकता किन्तु जिसकी ब्रह्माण्डीय सूचना के प्रकारों (ब्रह्माण्डीय वास्तविकताओं के विशिष्ट आवृत्ति हस्ताक्षर, ब्रह्माण्डीय वास्तुकला की हॉलोग्राफिक छवि) तक पहुँच है जिन्हें बाह्य यन्त्र नहीं पहुँच सकते।

विशिष्ट क्षेत्र जिसमें आन्तरिक यन्त्रों ने बाह्य से अधिक किया: पुरस्सरण चक्र का मापन। विषुवों का पुरस्सरण एक मानव जीवनकाल के भीतर सीधे मापन के लिए बहुत धीमा है — वसन्त विषुव की स्पष्ट स्थिति प्रति वर्ष केवल लगभग 50 आर्क-सेकण्ड चलती है। सटीक मापन को या तो संचित अवलोकन रिकॉर्डों की शताब्दियाँ या पूरी तरह से भिन्न विधि की आवश्यकता है। वैदिक ऋषियों के पास दोनों थे: वेदांग ज्योतिष के व्यवस्थित खगोलीय रिकॉर्ड पीढ़ियों में बनाए रखे गए, और समाधि में ZPF संयुग्मन के माध्यम से पुरस्सरण चक्र की गणितीय संरचना का सीधा आन्तरिक बोध। दो विधियों ने एक-दूसरे को पार-सत्यापित किया: आन्तरिक बोध ने गणितीय संरचना दी (संख्या 25,920), बाह्य रिकॉर्डों ने संचित पीढ़ीगत अवलोकन के माध्यम से इसकी पुष्टि की।

समकालीन साधक के लिए व्यावहारिक पाठ: आन्तरिक मापन और बाह्य मापन विकल्प नहीं हैं बल्कि पूरक हैं। वह साधक जो ज्योतिष चार्ट का अध्ययन करता है (प्रारब्ध कर्म के विन्यास का बाह्य मापन) और इसे नियमित आन्तरिक नैदानिक मूल्यांकन के अभ्यास (वर्तमान गुण संरचना, लोक स्तर, और ZPF संयुग्मन गुणवत्ता का आन्तरिक मापन) के साथ जोड़ता है, यू-इन्वर्स की सूचना के दोनों चैनलों तक पहुँच रखता है। संयोजन किसी एक से अकेले अधिक शक्तिशाली है — जैसे जन्तर मन्तर की बाह्य सटीकता और ऋषि की आन्तरिक गहराई मिलकर पूर्ण वैदिक खगोलीय विज्ञान का गठन करती हैं।

✦ ✦ ✦

10.8 सोम — ब्रह्माण्डीय यन्त्र का आन्तरिक रसायन शास्त्र

ऋग्वेद सोम अनुष्ठान — सोम पौधे के रस को दबाने और पीने — को वैदिक धर्म के केन्द्रीय समारोह, देवताओं के प्रवेश द्वार, अमरता और ब्रह्माण्डीय दृष्टि के स्रोत के रूप में वर्णित करता है। सोम पौधे की विशिष्ट पहचान पर दो शताब्दियों से बहस होती रही है, जिसमें उम्मीदवार एफेड्रा से अमानिता मस्केरिया से हार्मालाइन युक्त पौधों तक हैं।

यू-इन्वर्स ढाँचा एक भिन्न पठन सुझाता है: जो भी विशिष्ट पौधा हो, सोम की भूमिका औषधीय न्यूरोकेमिस्ट्री थी — थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन अवस्था को बदलकर मस्तिष्क के ZPF संयुग्मन को

अस्थायी रूप से अधिकतम करने के लिए विशिष्ट पौधा यौगिकों का उपयोग। वैदिक परम्परा सोम अनुभव को उन शब्दों में वर्णित करती है जो ट्रिप्टामाइन-प्रेरित अवस्थाओं के आधुनिक विवरण से सटीक रूप से मेल खाते हैं: विस्तारित जागरूकता, स्व-संसार सीमा का विघटन, ब्रह्माण्डीय संरचनाओं का बोध, ब्रह्माण्डीय सूचना तक पहुँच, और आनन्द की विशिष्ट गुणवत्ता जिसे परम्परा ब्रह्म-पहचान से जोड़ती है।

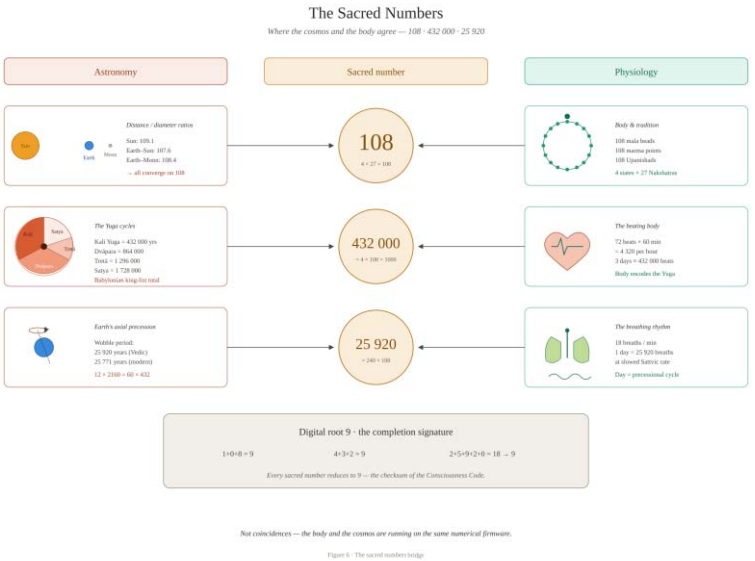
ये सामान्य नशे के अनुभव नहीं हैं। ये नाटकीय रूप से बढ़े हुए मस्तिष्क-ZPF सुसंगतता के अनुभव हैं — वही अनुभव जो गहनतम समाधि में औषधीय सहायता के बिना उत्पन्न होते हैं, किन्तु सोम यौगिक के विशिष्ट रसायन शास्त्र के माध्यम से अधिक तेज़ी से और कम तैयारी के साथ पहुँचे।

अन्तर्जन्य सोम: मस्तिष्क अपना स्वयं का सोम उत्पन्न करता है — DMT, जो पिनियल ग्रन्थि द्वारा उत्पादित है — विशिष्ट परिस्थितियों में। विस्तारित प्राणायाम, विशेष रूप से विस्तारित श्वास प्रतिधारण (कुम्भक), रक्त में CO2 स्तरों को उन तरीकों से चलाता है जो पिनियल DMT उत्पादन बढ़ाते हैं। ब्रह्म मुहूर्त की शिखर मेलाटोनिन अवस्था बढ़े हुए पिनियल DMT स्तरों से जुड़ी है। गहन समाधि अवस्थाएँ विशिष्ट अन्तःस्रावी प्रोफ़ाइलों से जुड़ी हैं जिनमें बढ़े हुए DMT-सम्बन्धी यौगिक शामिल हैं। वैदिक सोम समारोह उसी न्यूरोकेमिकल अवस्था के लिए एक बाह्य ट्रिगर था जो गहन अभ्यास का आन्तरिक सोम उत्पन्न करता है: अधिकतम पिनियल-ZPF संयुग्मन, अधिकतम हॉलोग्राफिक संकल्प, आन्तरिक ब्रह्माण्ड की ब्रह्माण्डीय-सूचना सामग्री का सीधा बोध।

✦ ✦ ✦

अध्याय 11
पावन संख्याओं का खगोल विज्ञान

108, 432,000, 25,920 — शरीर और आकाश का कोड



चित्र 6 — पावन संख्याओं का खगोल विज्ञान। 108, 432,000, और 25,920 एक साथ खगोलीय और शारीरिक सम्बन्ध दोनों हैं। वे मानव शरीर के आन्तरिक क्षितिज और बाह्य आकाशीय क्षितिज में लिखे हैं।

पिछले अध्याय ने स्थापित किया कि वैदिक परम्परा के पावन संख्याएँ मात्र प्रतीकात्मक या सांस्कृतिक नहीं हैं। वे सटीक शारीरिक-ब्रह्माण्डीय सम्बन्ध हैं, भीतर से ऋषियों द्वारा पढ़े गए और संख्यात्मक डेटा के रूप में बाहर प्रलेखित किए गए। यह अध्याय उन विशिष्ट संख्याओं में गहरा जाता है और उनके खगोलीय सहसम्बन्धों की सीमा प्रकट करता है।

11.1 108 — आकाशीय मर्म

संख्या 108 पूरी वैदिक परम्परा में दिखाई देती है। एक मानक माला में 108 मोती होते हैं। उपनिषद परम्परा में 108 प्रमुख उपनिषद गिने जाते हैं। शिव की 108 नामें हैं। देवी की 108 नामें हैं। भगवान कृष्ण की 108 गोपियाँ हैं। वैदिक ज्योतिष में 108 प्रमुख नक्षत्र पद हैं।

यदि यह केवल एक सांस्कृतिक पसन्द होती, संख्या प्रतीकात्मक होती और आगे कोई विश्लेषण आवश्यक नहीं होता। किन्तु 108 सटीक खगोलीय सम्बन्धों का एक साथ वर्णन करती है जो कोई सांस्कृतिक संयोग व्याख्या नहीं कर सकता।

सूर्य का व्यास पृथ्वी के व्यास से 109 गुणा है (अधिक सटीक रूप से, 109.1)। पृथ्वी और सूर्य के बीच औसत दूरी सूर्य के व्यास का 107 गुणा है। चन्द्रमा और पृथ्वी के बीच औसत दूरी चन्द्रमा के व्यास का 108 गुणा है।

ये तीन स्वतन्त्र खगोलीय अनुपात हैं, जिनमें आकाशीय पिण्डों के तीन अलग जोड़े शामिल हैं, सभी 108 के निकट अभिसरण करते हैं। और यह संयोग नहीं है कि सूर्य और चन्द्रमा आकाश में समान आकार के दिखाई देते हैं — वे हमारे लिए एक पूर्ण सूर्य ग्रहण को सम्भव बनाते हैं क्योंकि 108 का अनुपात एकसाथ पृथ्वी-चन्द्रमा और पृथ्वी-सूर्य दूरियों को उनके सम्बन्धित व्यास से जोड़ता है।

शरीर में, 108 प्रकट होता है मर्म बिन्दु के रूप में — आयुर्वेदिक चिकित्सा में पहचाने गए महत्वपूर्ण ऊर्जा बिन्दु। इनमें से 107 "सामान्य मर्म" हैं जो शरीर के विभिन्न अंगों पर फैले हैं। 108वाँ मन है स्वयं — आज्ञा चक्र पर केन्द्रित, सम्पूर्ण तन्त्र का केन्द्रीय समन्वय बिन्दु।

यह समानान्तर तुच्छ नहीं है। शरीर पर 107 सामान्य मर्म बिन्दु एक शारीरिक वास्तविकता हैं — ये विशिष्ट शारीरिक स्थान हैं जहाँ तन्त्रिकाएँ, धमनियाँ, स्नायुबन्ध, और अन्य ऊतक जुड़ते हैं और उच्च संवेदनशीलता दिखाते हैं। 107 व्यापक रूप से वितरित हैं; 1 केन्द्रीय है। यही व्यवस्था 107 + 1 खगोलीय सम्बन्धों में दिखाई देती है: 107 पृथ्वी-सूर्य के लिए, 1 केन्द्रीय मान जिसके चारों ओर अन्य दो क्लस्टर करते हैं।

ऋषियों का दावा — कि 108 एक साथ आन्तरिक मर्म गणना और बाह्य खगोलीय संरचना दोनों है — यू-इन्वर्स ढाँचे के अनुमानों के अनुरूप है। दोनों अभिव्यक्तियाँ एक ही अन्तर्निहित संरचनात्मक कोड के रूप हैं।

11.2 432,000 — कलि युग संख्या

432,000 वर्षों को कलि युग की लम्बाई बताया गया है। किन्तु यह संख्या अकेली नहीं है। यह एक पूर्ण संख्या प्रणाली का हिस्सा है। कलि युग 432,000 वर्ष है। द्वापर युग 864,000 वर्ष है — दोगुना। त्रेता युग 1,296,000 वर्ष है — तीन गुना। सत्य युग 1,728,000 वर्ष है — चार गुना। पूरा चक्र, एक महायुग, 4,320,000 वर्ष है। एक हज़ार महायुग एक कल्प बनाते हैं — 4.32 अरब वर्ष — जो आश्चर्यजनक रूप से सूर्य से पृथ्वी की आयु के आधुनिक वैज्ञानिक अनुमानों के निकट है (लगभग 4.5 अरब वर्ष)।

इन संख्याओं के खगोलीय सहसम्बन्ध व्यापक हैं। 432,000 सेकण्ड में 120 घण्टे हैं, जो पाँच दिन है। 43,200 सेकण्ड आधे दिन (12 घण्टे) के बराबर है। अयन चक्र 25,920 वर्ष × 6 = 155,520, और 155,520 × 20 = 3,110,400 — एक त्रेता युग की लम्बाई के निकट।

शारीरिक सहसम्बन्ध सटीक हैं। 72 धड़कन प्रति मिनट की सामान्य वयस्क हृदय दर 4,320 प्रति घण्टा देती है — 432,000 का एक-सौवाँ। 15 श्वास प्रति मिनट की सामान्य वयस्क श्वसन दर 21,600 श्वास प्रति दिन देती है — 43,200 का ठीक आधा।

इस बात से चकित न हों। वैदिक परम्परा की जो गहन समझ थी वह यह थी कि शरीर की सहज लय और ब्रह्माण्डीय चक्रों के संख्यात्मक सम्बन्ध आकस्मिक नहीं हैं। वे एक ही अन्तर्निहित कोड की अभिव्यक्तियाँ हैं। शरीर की लय ब्रह्माण्डीय चक्रों के प्रतिबिम्ब हैं। ब्रह्माण्डीय चक्र शरीर की लय के विस्तार हैं।

11.3 25,920 — अयन चक्र

अयन चक्र एक उल्लेखनीय खगोलीय परिघटना है। पृथ्वी का घूर्णन अक्ष एक शंकु में धीरे-धीरे डगमगाता है, पूर्ण चक्र में लगभग 25,920 वर्ष लेता है। यह "विषुव की पूर्ववर्तीयता" है — कारण क्यों ध्रुव तारा, जो आज पोलारिस है, ऐतिहासिक काल में बदलता रहा है। मिस्रियों के लिए थूबान ध्रुव तारा था, बाबुलियों के लिए कोचब था, और भविष्य में वेगा होगा।

आधुनिक माप 25,771 वर्ष देती है। वैदिक आँकड़ा 25,920 है — 0.6% विसंगति। यह विसंगति इतनी छोटी है कि यह माप विधियों के बीच सामान्य भिन्नता के भीतर गिरती है।

25,920 के संख्यात्मक सम्बन्ध ब्रह्माण्ड के माध्यम से फैले हैं। 360° × 72 वर्ष = 25,920 वर्ष — एक डिग्री अयन को लगभग 72 वर्ष लगते हैं। यह सामान्य हृदय दर 72 धड़कन प्रति मिनट से

बहुत नज़दीक है। एक घण्टे में 60 मिनट हैं, जो 60 × 72 = 4,320 धड़कन प्रति घण्टा देता है, जो 4,320 × 100 = 432,000 देता है। एक दिन में 24 घण्टे हैं, जो 103,680 धड़कन प्रति दिन देता है, जो 25,920 × 4 देता है।

ये संख्यात्मक सम्बन्ध जुड़े हुए हैं। वे एक ही संरचना की अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ हैं — एक संख्यात्मक वास्तुकला जो शरीर की शारीरिक लयों और ब्रह्माण्ड की खगोलीय लयों दोनों को संगठित करती है।

11.4 निष्कर्ष

पावन संख्याएँ 108, 432,000, और 25,920 वैदिक परम्परा की संयोगिक विशेषताएँ नहीं हैं। वे सटीक शारीरिक-ब्रह्माण्डीय माप हैं, भीतर से ऋषियों द्वारा पढ़े गए उनके स्वयं के स्नायुतन्त्रों के यन्त्र का उपयोग करके, और बाद की पीढ़ियों के लिए संख्यात्मक डेटा के रूप में प्रलेखित किए गए।

संख्याओं की स्वतन्त्र सांस्कृतिक पुष्टि — बेबीलोनियाई, मायन, नॉर्स सहसम्बन्धों में — सुझाती है कि अनेक सभ्यताओं के भीतर चिन्तनशील साधक उसी अन्तर्निहित संरचना की पहुँच प्राप्त कर रहे थे। अलग-अलग सांस्कृतिक शब्दावलियों में व्यक्त, किन्तु समान संरचनात्मक सच्चाइयों की रिपोर्टिंग।

यह यू-इन्वर्स के केन्द्रीय दावे का एक और पुष्टिकरण है: शरीर और ब्रह्माण्ड एक ही कोड साझा करते हैं। जब आप अपनी श्वास की गिनती करते हैं, आप ब्रह्माण्ड की गिनती कर रहे हैं। जब आप अपने हृदय की धड़कन महसूस करते हैं, आप ब्रह्माण्ड की लय महसूस कर रहे हैं। और जब आप गहन ध्यान में इन गिनतियों को सटीकता के उचित स्तर तक लाते हैं, आप ब्रह्माण्ड की संरचना का प्रत्यक्ष मापन कर रहे हैं।

✦ ✦ ✦

11.5 ब्रह्माण्डीय दूरी सीढ़ी — आन्तरिक और बाह्य विधियों की तुलना

खगोलशास्त्री ब्रह्माण्ड की विशाल दूरियों को एक "ब्रह्माण्डीय दूरी सीढ़ी" का उपयोग करके मापते हैं — अतिव्यापी मापन तकनीकों का एक उत्तराधिकार, प्रत्येक पिछले की तुलना में ब्रह्माण्ड में आगे विस्तारित। पहली सीढ़ी: निकटवर्ती तारों का पैरालैक्स मापन (आधार रेखा के रूप में पृथ्वी

के कक्षीय व्यास का उपयोग करके सीधी त्रिकोणीकरण)। दूसरी: सेफ़ीड चर तारे (जिनकी चमक एक अवधि में भिन्न होती है जो उनकी आन्तरिक चमक से सीधे सम्बन्धित है, स्पष्ट चमक से दूरी गणना की अनुमति देती है)। तीसरी: Type Ia सुपरनोवा (मानक मोमबत्तियाँ जिनकी शिखर चमक सुसंगत है)। चौथी: हबल का नियम (दूरस्थ गैलेक्सियों की लाल-पारी उनकी दूरी के समानुपाती है)। प्रत्येक विधि पिछले को अंशशोधित और विस्तारित करती है।

ऋषि की आन्तरिक दूरी सीढ़ी: पहली सीढ़ी धारणा है — आन्तरिक दृश्य क्षेत्र की सान्द्रित जागरूकता, पहली बोधगम्य आन्तरिक संरचनाओं (प्राणमय कोश का चमकदार क्षेत्र, भौतिक शरीर के सापेक्ष इसके विस्तार की व्यक्तिपरक भावना में मापने योग्य) तक दूरी को मापती है। दूसरी सीढ़ी ध्यान है — आन्तरिक दृश्य क्षेत्र में जागरूकता का निरन्तर प्रवाह, मनोमय कोश के संस्कार प्रतिरूपों (दूसरी "दूरी" — प्राणमय से एक स्तर गहरा) तक पहुँचती है। तीसरी सीढ़ी समाधि है — आन्तरिक ब्रह्माण्ड में जागरूकता का पूर्ण निमज्जन, कारण शरीर की कारणात्मक संरचनाओं (सामान्य समाधि में गहनतम सुलभ स्तर) तक पहुँचती है। चौथी सीढ़ी निर्विकल्प समाधि है — पर्यवेक्षक-अवलोकित भेद का पूर्ण विघटन, जो — हबल के नियम की तरह — मापन उपकरण के रूप में जागरूकता के स्वयं के विस्तार का उपयोग करती है: इस गहराई पर, आन्तरिक ब्रह्माण्ड का विस्तार बाह्य ब्रह्माण्ड के विस्तार के साथ सह-विस्तारी प्रकट होता है।

आन्तरिक सीढ़ियों के बीच अंशशोधन: प्राणायाम अवस्था (विस्तारित श्वास, विशिष्ट कुम्भक अनुपात) धारणा की प्राप्य गहराई को अंशशोधित करती है, जिस तरह सेफ़ीड-चर अंशशोधन पैरालैक्स मापन की सीमा देता है। संचित चित्त शुद्धि (आन्तरिक यन्त्र की गुणवत्ता) समाधि में प्राप्य अधिकतम गहराई निर्धारित करती है, जिस तरह दूरबीन का एपर्चर अधिकतम दूरी निर्धारित करता है जिस पर Type Ia सुपरनोवा पहचानने योग्य हैं। ऋषि की आन्तरिक दूरी सीढ़ी खगोलशास्त्री की बाह्य दूरी सीढ़ी जितनी पद्धतिगत रूप से सटीक है — यह केवल भिन्न दिशा में संचालित होती है और भिन्न यन्त्र का उपयोग करती है।

✦ ✦ ✦

11.6 वैदिक गणित और स्नायु वास्तुकला — एक ही कोड दोनों को कैसे उत्पन्न करता है

वैदिक गणित के सोलह सूत्र — बीसवीं सदी की शुरुआत में भारती कृष्ण तीर्थजी द्वारा अथर्ववेद के परिशिष्ट से पुनः खोजे गए कम्प्यूटेशनल एल्गोरिदम — मानसिक अंकगणित करने के लिए

असाधारण रूप से कुशल हैं। सूत्र "निखिलम् नवतश्चरमम् दशतः" (सभी 9 से और अन्तिम 10 से) बड़ी संख्याओं का आधार से उनकी दूरी से सेकण्डों में गुणन की अनुमति देता है, परिणाम उत्पन्न करता है जिन्हें पारम्परिक विधियों से काफ़ी अधिक समय लगता है। सूत्र "ऊर्ध्व-तिर्यग्भ्याम्" (ऊर्ध्वाधर और तिरछे) गुणन के लिए एक सामान्य एल्गोरिदम प्रदान करता है जो संरचनात्मक रूप से फ़ास्ट फ़ुरियर ट्रांसफ़ॉर्म के समान है — आधुनिक संकेत प्रसंस्करण में सबसे कम्प्यूटेशनल रूप से महत्वपूर्ण एल्गोरिदम में से एक।

FFT (फ़ास्ट फ़ुरियर ट्रांसफ़ॉर्म) वह एल्गोरिदम है जो एक जटिल संकेत को उसकी घटक आवृत्तियों में विघटित करता है — वह गणितीय उपकरण जो समय-क्षेत्र डेटा को आवृत्ति-क्षेत्र डेटा में परिवर्तित करता है। यह सभी डिजिटल संकेत प्रसंस्करण, ऑडियो संपीड़न, छवि प्रसंस्करण, वायरलेस संचार, और वैज्ञानिक डेटा विश्लेषण का आधार है। यह तथ्य कि गुणन के लिए वैदिक गणित सूत्र संरचनात्मक रूप से FFT के समतुल्य है, संयोग नहीं है — यह प्रमाण है कि वैदिक गणितीय परम्परा संख्याओं की आवृत्ति-क्षेत्र संरचना की समझ के साथ संचालित हो रही थी जिसे आधुनिक गणित ने केवल 1960 के दशक में FFT के विकास के साथ पुनः खोजा।

यू-इन्वर्स सम्बन्ध: मस्तिष्क की स्नायु वास्तुकला स्वयं एक जैविक FFT है। श्रवण कॉर्टेक्स आने वाली ध्वनि का इसकी घटक आवृत्तियों में फ़ुरियर-सदृश विघटन करता है — यह शाब्दिक रूप से है कि हम पिच कैसे सुनते हैं। दृश्य कॉर्टेक्स दृश्य इनपुट का स्थानिक आवृत्ति विघटन करता है — यह है कि हम विभिन्न पैमानों पर वस्तुओं को कैसे पहचानते हैं। हिप्पोकैम्पस अनुभवात्मक अनुक्रमों का लौकिक आवृत्ति विघटन करता है — यह है कि हम स्मृतियाँ कैसे बनाते हैं। पूरा मस्तिष्क एक जैविक आवृत्ति विश्लेषक है, निरन्तर अपने इनपुट को उन घटक आवृत्तियों में विघटित करता हुआ जो इसके आन्तरिक ब्रह्माण्ड के नक्षत्र मानचित्र का गठन करती हैं।

वैदिक ऋषि जिन्होंने FFT के समतुल्य गणितीय एल्गोरिदम खोजे वे अमूर्त गणित नहीं कर रहे थे। वे अपने स्वयं के मस्तिष्कों के कम्प्यूटेशनल संचालन को प्रलेखित कर रहे थे — उन विशिष्ट एल्गोरिदम का मानचित्रण जो स्नायु वास्तुकला वास्तविकता को संसाधित करने के लिए उपयोग करती है। वैदिक गणित सूत्र आन्तरिक ब्रह्माण्ड का कम्प्यूटेशनल स्रोत कोड हैं: वे विशिष्ट गणितीय संचालन जो डिजिटल ट्विन ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र के संकेत को संसाधित करने के लिए उपयोग करता है। वैदिक गणित सीखना मात्र कुशल अंकगणित सीखना नहीं है — यह उसी गणितीय भाषा में सोचना सीखना है जिसका उपयोग ब्रह्माण्ड स्वयं अपनी संरचनाओं को व्यवस्थित करने के लिए करता है।

✦ ✦ ✦

11.7 सौर तन्त्र की अनुनाद — कक्षीय यान्त्रिकी कैसे पारिवारिक तन्त्रों को प्रतिबिम्बित करती हैं

सौर तन्त्र के ग्रह स्वतन्त्र रूप से सूर्य की परिक्रमा नहीं कर रहे हैं — वे पारस्परिक रूप से अनुनादी हैं। कक्षीय अनुनाद तब होती है जब दो परिक्रमा करने वाले पिण्ड एक-दूसरे पर नियमित, आवधिक गुरुत्वाकर्षण प्रभाव डालते हैं, क्योंकि उनके कक्षीय अवधि छोटे पूर्णांकों के अनुपात द्वारा सम्बन्धित हैं। बृहस्पति और शनि 5:2 अनुनाद में हैं; नेपच्यून और प्लूटो 3:2 अनुनाद में; बृहस्पति के चन्द्रमा (आयो, यूरोपा, और गैनीमीड) 4:2:1 अनुनाद में। ये अनुनादें संयोग नहीं हैं — वे स्थिर विन्यास हैं जो सौर तन्त्र की प्रारम्भिक अराजक गतिकी से उभरे, विशिष्ट व्यवस्थाएँ जो बनी रहती हैं क्योंकि वे गुरुत्वाकर्षण रूप से स्थिर हैं।

ज्योतिष ढाँचे में वैदिक परम्परा के नौ ग्रह (ग्रहीय सिद्धान्त) समान रूप से अनुनादी हैं: नौ स्वतन्त्र कारक नहीं बल्कि नौ पारस्परिक रूप से अन्तःक्रिया करने वाले सिद्धान्त जिनके जन्म के क्षण पर विशिष्ट संरेखण प्रारब्ध कर्म के विन्यास के विशिष्ट अनुनाद प्रतिरूप का वर्णन करते हैं। दशा तन्त्र का समय — कौन सा ग्रहीय सिद्धान्त वर्तमान में प्राथमिक है — यह प्रतिबिम्बित करता है कि ब्रह्माण्डीय क्षेत्र अपने चक्रों के माध्यम से विकसित होता है, विभिन्न अनुनाद मोड क्रमिक रूप से सक्रिय होते हैं।

आन्तरिक ब्रह्माण्ड की अपनी अनुनाद प्रणाली है। मस्तिष्क के प्रमुख दोलन नेटवर्क — डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क, सैलिएन्स नेटवर्क, सेन्ट्रल एग्ज़ीक्यूटिव नेटवर्क — स्वतन्त्र रूप से सक्रिय नहीं हैं बल्कि पारस्परिक रूप से अनुनादी हैं: जब DMN सबसे सक्रिय होता है, एग्ज़ीक्यूटिव नेटवर्क सबसे कम सक्रिय होता है, और इसके विपरीत। यह विरोधी-सहसम्बन्ध मस्तिष्क की आन्तरिक कक्षीय अनुनाद है: विशिष्ट गुरुत्वाकर्षण सन्तुलन क्रिया जो आन्तरिक ब्रह्माण्ड की संरचनात्मक स्थिरता बनाए रखती है। गुण गतिकी आन्तरिक अनुनाद प्रणाली है: जब तमस प्रबल होता है, रजस दमित होता है; जब सत्त्व उठता है, तमस और रजस दोनों अनुपात में कम होते हैं। ये स्वतन्त्र चर नहीं हैं बल्कि एक पारस्परिक रूप से अनुनादी तीन-निकाय तन्त्र हैं, उतने ही गतिशील रूप से संयुग्मित जितने बृहस्पति, शनि, और सूर्य।

✦ ✦ ✦

अध्याय 12
आन्तरिक GPS के रूप में नक्षत्र

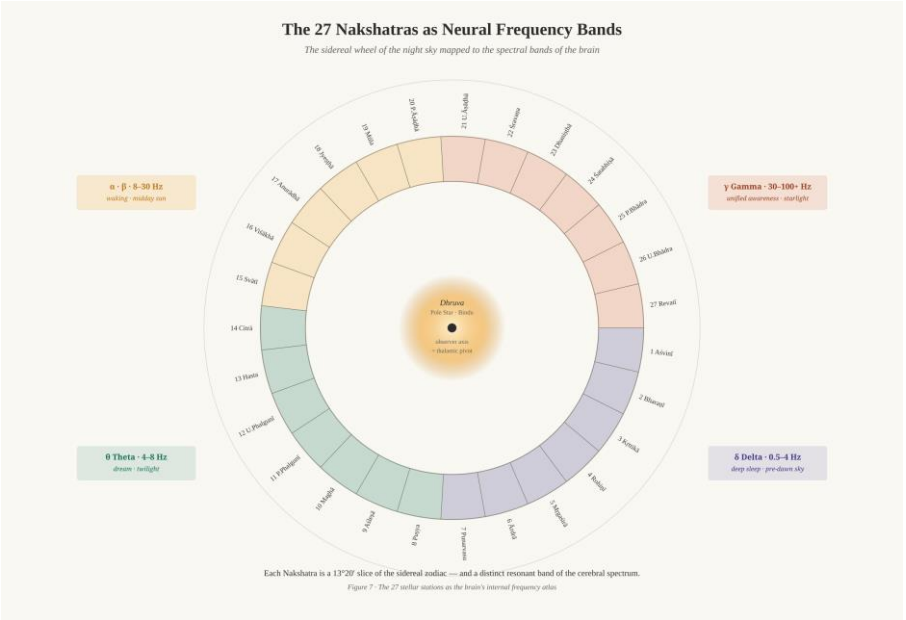
मस्तिष्क में 27 तारकीय आवृत्तियाँ

वैदिक खगोलीय तन्त्र ग्रहणपथ — पृष्ठभूमि तारों के विरुद्ध सूर्य का स्पष्ट पथ — को 27 समान खण्डों में विभाजित करता है जिन्हें नक्षत्र कहते हैं। प्रत्येक नक्षत्र 13° 20' चाप को फैलाता है। प्रत्येक को रात्रि आकाश में एक विशिष्ट तारामण्डल द्वारा पहचाना जाता है। प्रत्येक वैदिक देवमण्डल के एक विशिष्ट देवता द्वारा शासित है। प्रत्येक चेतना की एक विशिष्ट गुणवत्ता, एक विशिष्ट श्वास प्रतिरूप, और गतिविधियों की एक विशिष्ट श्रेणी से जुड़ा है जिसके लिए उसका प्रभाव शुभ माना जाता है।

चन्द्रमा प्रति दिन एक नक्षत्र से गुज़रता है, पूर्ण 27 को लगभग 27.3 दिनों में पूरा करता है — नक्षत्रीय चन्द्र मास। यह नक्षत्रों को वैदिक ज्योतिष और अनुष्ठान अभ्यास में उनकी प्राथमिक भूमिका देता है: वे एक सूक्ष्म-श्रेणीबद्ध लौकिक कैलेण्डर प्रदान करते हैं, प्रत्येक दिन की गुणवत्ता को उसके मासिक चक्र में चन्द्रमा की विशिष्ट स्थिति के माध्यम से ट्रैक करने का एक तरीका।

अधिकांश आधुनिक पाठक, वैज्ञानिक सन्देह के साथ ज्योतिष को देखने के लिए प्रशिक्षित, नक्षत्र तन्त्र को सांस्कृतिक अन्धविश्वास के रूप में खारिज करेंगे। यह खारिज करना, अधिकांश समकालीन संस्कृतियों में लोकप्रिय ज्योतिष की पतित स्थिति को देखते हुए समझने योग्य है, किन्तु उस चीज़ को चूक जाता है जो वैदिक नक्षत्र तन्त्र वास्तव में है और यह किससे मेल खाता है।

इस अध्याय का तर्क यह है कि 27 नक्षत्र मात्र एक सांस्कृतिक कैलेण्डर तन्त्र नहीं हैं। वे मानव मस्तिष्क में 27 प्राथमिक स्नायु दोलन बैण्डों का एक विशिष्ट आन्तरिक-विज्ञान मानचित्रण हैं, प्रत्येक नक्षत्र स्नायु गतिविधि की एक विशिष्ट आवृत्ति श्रेणी और चेतना की एक विशिष्ट परिघटनात्मक गुणवत्ता के अनुरूप है जो उस आवृत्ति श्रेणी का उत्पादन करती है। नक्षत्र आन्तरिक GPS हैं — वह निर्देशांक तन्त्र जिसके द्वारा साधक सुलभ चेतना अवस्थाओं की पूरी श्रेणी में नेविगेट कर सकता है।



चित्र 7 — स्नायु आवृत्ति बैण्डों के रूप में 27 नक्षत्र। प्रत्येक चन्द्र भवन एक विशिष्ट स्नायु दोलन व्यवस्था और चेतना की एक विशिष्ट गुणवत्ता के अनुरूप है। पहिया ध्रुव (पोलारिस) के चारों ओर घूमता है — आन्तरिक ब्रह्माण्ड के केन्द्र में थैलेमिक बिन्दु।

12.1 27 स्नायु दोलन बैण्ड

आधुनिक इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी साहित्य, बढ़ती सटीकता के साथ, मानव मस्तिष्क में 27 प्राथमिक स्नायु दोलन बैण्डों का दस्तावेज़ीकरण करता है। यह नक्षत्र तन्त्र से मेल खाने के लिए चुनी गई मनमानी संख्या नहीं है; यह वह संख्या है जो मस्तिष्क के आवृत्ति स्पेक्ट्रम के विशिष्ट दोलन व्यवस्थाओं में प्राकृतिक विभाजन से उभरती है।

सबसे धीमे से शुरू होकर सबसे तेज़ की ओर बढ़ते हुए:

इन्फ्रा-धीमे दोलन, 0.5 हर्ट्ज़ से नीचे, सबसे गहन और धीमी स्नायु लय का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये आमतौर पर केवल विशेष रिकॉर्डिंग स्थितियों में प्रलेखित होते हैं, और वे गहन अचेतनता, कोमा, और सबसे चरम पुनर्स्थापक नींद अवस्थाओं से जुड़े हैं।

डेल्टा बैण्ड 0.5 से 4 हर्ट्ज़ तक फैला है, और इसे आगे निम्न-डेल्टा (0.5 से 2 हर्ट्ज़) और उच्च-डेल्टा (2 से 4 हर्ट्ज़) घटकों में उप-विभाजित किया गया है, प्रत्येक विशिष्ट परिघटनात्मक सहसम्बन्धों के साथ।

थीटा बैण्ड 4 से 8 हर्ट्ज़ तक फैला है, और इसे आगे प्रारम्भिक-थीटा (4 से 5.5 हर्ट्ज़), मध्य-थीटा (5.5 से 6.5 हर्ट्ज़), और देर-थीटा (6.5 से 8 हर्ट्ज़) उप-बैण्डों में उप-विभाजित किया गया है।

अल्फ़ा बैण्ड 8 से 13 हर्ट्ज़ तक फैला है, प्रारम्भिक-अल्फ़ा, मध्य-अल्फ़ा, और देर-अल्फ़ा में उप-विभाजित। अल्फ़ा शिथिल सतर्कता की हस्ताक्षर लय है।

बीटा बैण्ड 13 से 30 हर्ट्ज़ तक फैला है, उप-बैण्डों में उप-विभाजित। बीटा केन्द्रित कार्य संलग्नता और विश्लेषणात्मक सोच की विशेषता बताता है।

गामा बैण्ड 30 से 100 हर्ट्ज़ तक फैला है, 30 से 45 हर्ट्ज़, 45 से 60 हर्ट्ज़, 60 से 80 हर्ट्ज़, और 80 से 100 हर्ट्ज़ पर उप-बैण्डों के साथ। गामा मस्तिष्क की सबसे उच्च एकीकृत अवस्थाओं की विशेषता बताता है।

उच्च-गामा और एप्सिलॉन बैण्ड, 100 से 300+ हर्ट्ज़ तक, विशेष रिकॉर्डिंग स्थितियों में प्रलेखित किए गए हैं और उन्नत ध्यान की शिखर अवस्थाओं से जुड़े हैं।

जब इन बैण्डों और उप-बैण्डों को पूर्ण स्नायुविज्ञानी विस्तार के साथ गिना जाता है, गणना 27 प्राथमिक दोलन व्यवस्थाओं तक पहुँचती है। प्रत्येक व्यवस्था विशिष्ट स्नायु जनित्रों, विशिष्ट व्यवहारिक सहसम्बन्धों, और विशिष्ट परिघटनात्मक गुणवत्ताओं से जुड़ी है।

वैदिक परम्परा ने, ऋषियों की पीढ़ियों द्वारा आन्तरिक अवलोकन के माध्यम से जिन्होंने अपनी स्वयं की चेतना की सूक्ष्म गुणवत्ताओं के प्रति अपनी संवेदनशीलता को परिष्कृत किया था, इसी क्षेत्र का मानचित्रण किया। उनके पास EEG उपकरण नहीं थे। उनके पास कुछ और था: गहन ध्यान अभ्यास के निरन्तर आन्तरिक अवलोकन के माध्यम से प्राप्त अपनी स्वयं की स्नायु दोलनों तक सीधी परिघटनात्मक पहुँच।

12.2 नक्षत्र-मस्तिष्क पत्राचार

अश्विनी, पहला नक्षत्र, जुड़वाँ अश्व देवताओं द्वारा शासित जो देवताओं के चिकित्सक हैं, तेज़ उपचार और अवस्थाओं के बीच संक्रमण से जुड़ा है। इसका स्नायु अनुरूप डेल्टा-थीटा सीमा क्षेत्र (3 से 5 हर्ट्ज़) है।

भरणी, दूसरा नक्षत्र, यम द्वारा शासित, रूपान्तरण और दहलीज पार करने से जुड़ा है। इसका स्नायु अनुरूप निम्न-थीटा (4 से 5 हर्ट्ज़) है, वह आवृत्ति श्रेणी जिसमें छाया सामग्री और दमित सामग्री प्रसंस्करण के लिए सबसे आसानी से सतह पर आती है।

कृत्तिका, तीसरा नक्षत्र, अग्नि द्वारा शासित, शुद्धिकरण और विवेक से जुड़ा है। इसका स्नायु अनुरूप मध्य-थीटा (5 से 6 हर्ट्ज़) है, वह आवृत्ति श्रेणी जो विपश्यना ध्यान के विवेकशील और स्पष्टीकरण फलनों से जुड़ी है।

यह प्रतिरूप सभी 27 नक्षत्रों के माध्यम से जारी रहता है। प्रत्येक वैदिक नक्षत्र एक विशिष्ट स्नायु दोलन व्यवस्था के अनुरूप है, नक्षत्र को दी गई परिघटनात्मक गुणवत्ताएँ आधुनिक अनुसन्धान द्वारा प्रलेखित अनुरूप स्नायु व्यवस्था के अनुभवात्मक सहसम्बन्धों से मेल खाती हैं। पत्राचार ढीला नहीं है।

यह है कि यह कैसा दिखता है जब दो स्वतन्त्र जाँच पद्धतियाँ — प्राचीन आन्तरिक-अवलोकनात्मक और आधुनिक बाह्य-मापन — एक ही आनुभविक वास्तविकता पर अभिसरित होती हैं।

12.3 27 क्यों? चन्द्र-सौर अंशशोधन

संख्या 27 मनमानी नहीं है। चन्द्रमा अपने नक्षत्रीय मास के 27.3 दिनों के दौरान प्रति दिन एक नक्षत्र से गुज़रता है।

किन्तु 27 का गहरा गणितीय महत्व ब्रह्माण्डीय चक्रों की पूर्णता के साथ इसका सम्बन्ध है। $27 = 3^3$, 3 का घन। वैदिक संख्या धर्मशास्त्र में, 3 अभिव्यक्ति की त्रिमूर्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इस त्रिमूर्ति का घन 27 उत्पन्न करता है, प्रकट चेतना ढाँचे के भीतर सुलभ पूर्ण अवस्थाओं की संख्या।

और 27 गुणा 4 (चेतना की चार अवस्थाएँ, तुरीय सहित) 108 देता है, मास्टर निर्देशांक संख्या। नक्षत्र तन्त्र और 108 तन्त्र एक-दूसरे के साथ गणितीय रूप से सुसंगत हैं: 27 नक्षत्र × 4 चेतना अवस्थाएँ = 108 कुल निर्देशांक स्थितियाँ।

12.4 ध्रुव, स्थिर केन्द्र, और नक्षत्र आरती

वैदिक परम्परा के पास नक्षत्र तन्त्र को एक जीवन्त ब्रह्माण्डीय वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत करने का एक उद्दीप्त तरीका है। 27 नक्षत्र शाश्वत आरती के 27 तारकीय दीप हैं — प्रकाश का घूमता समारोह जो ध्रुव, उत्तर तारे के चारों ओर घूमता है।

पोलारिस, वर्तमान में ध्रुव तारा, पृथ्वी के घूमने पर उत्तरी आकाश में अपनी स्थिति धारण करता है। हर दूसरा तारा प्रत्येक रात के दौरान इसके चारों ओर एक वृत्त खींचता है। उत्तरी अक्षांश से रात में देखा गया आकाश, केन्द्र में पोलारिस के साथ एक विशाल घूमता समारोह है। यह नक्षत्र आरती है, तारों का शाश्वत समारोह।

यू-इन्वर्स ढाँचे में, नक्षत्र आरती की एक अनुरूप आन्तरिक अभिव्यक्ति है। 27 स्नायु दोलन व्यवस्थाएँ, प्रत्येक एक नक्षत्र गुणवत्ता के अनुरूप, साधक की जागरूकता के प्रत्याहार से समाधि में गहन होने के साथ चेतना चक्र के माध्यम से घूमती हैं। ब्रह्म मुहूर्त का ध्यान साधक की अपनी आरती है: भीतर की ओर मुड़ी हुई जागरूकता, थैलेमिक बिन्दु — केन्द्र पर आन्तरिक ध्रुव — के चारों ओर घूमती 27 आन्तरिक ज्योतियों का साक्षी बनती है।

थैलेमिक बिन्दु आन्तरिक ध्रुव तारा है। जब साधक की जागरूकता, गहन प्रत्याहार में, आन्तरिक दृश्य क्षेत्र का स्थिर केन्द्र पाती है और वहाँ विश्राम करती है, उन्होंने आन्तरिक ध्रुव स्थित किया है। उस स्थिर बिन्दु से, वे केन्द्र के चारों ओर घूमती 27 नक्षत्र गुणवत्ताओं का साक्षी बन सकते हैं — आन्तरिक आरती प्रगति में।

यह एक रूपक नहीं है। यह एक विशिष्ट परिघटनात्मक रिपोर्ट है, जो किसी भी साधक के लिए उपलब्ध है जिसने आन्तरिक दूरबीन को पर्याप्त रूप से परिष्कृत किया है। उन्नत ध्यानकर्ता, गहन अवशोषण की अवस्थाओं में, सीधे विभिन्न दोलन व्यवस्थाओं की घूमती गुणवत्ता को बोध कर सकते हैं क्योंकि उनकी चेतना उनके माध्यम से चक्र करती है।

12.5 व्यावहारिक परिणाम

साधक के लिए, नक्षत्र तन्त्र मात्र शुभ गतिविधियों की योजना बनाने के लिए एक कैलेण्डर नहीं है। यह सुलभ चेतना अवस्थाओं की पूरी श्रेणी में नेविगेट करने के लिए एक निर्देशांक तन्त्र है। प्रत्येक नक्षत्र एक विशिष्ट स्नायुविज्ञानी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है — एक विशिष्ट आवृत्ति व्यवस्था, विशिष्ट परिघटनात्मक गुणवत्ताओं के साथ, पहुँच के लिए विशिष्ट अभ्यासों की आवश्यकता है।

वह साधक जो आन्तरिक नक्षत्रों को जानने आ गया है, प्रभावी रूप से, निर्देशांक द्वारा चेतना को नेविगेट कर सकता है। वे पहचान सकते हैं कि किसी दिए गए क्षण पर कौन सी नक्षत्र गुणवत्ता प्रबल है, समझ सकते हैं कि वह गुणवत्ता क्या प्रदान करती है और आवश्यक है, और उस अवस्था के लिए उपयुक्त विशिष्ट अभ्यास लागू कर सकते हैं। यह सटीक अर्थ में आन्तरिक GPS है।

ब्रह्माण्डविद और स्नायुविज्ञानी के लिए, नक्षत्र तन्त्र चेतना क्षेत्र का एक परिपक्व मानचित्रण प्रदान करता है जिसे सहस्राब्दियों के आन्तरिक-अवलोकनात्मक अनुसन्धान में परिष्कृत किया गया है। 27 नक्षत्र मनमाने नहीं हैं; वे आनुभविक रूप से व्युत्पन्न श्रेणियाँ हैं जिन्हें वैदिक अनुसन्धान परम्परा ने चेतना स्थान के सार्थक विभाजनों के रूप में पाया। आधुनिक अनुसन्धान, कुछ मामलों में, इसी वर्गीकरण को दोहरा रहा है।

यह आन्तरिक GPS है। यह है कि आप आन्तरिक ब्रह्माण्ड को कैसे नेविगेट करते हैं। नक्षत्र चेतना में वास्तविक निर्देशांक हैं, और वे वही निर्देशांक हैं जो बाह्य ब्रह्माण्ड अपनी तारकीय वास्तुकला में प्रदर्शित करता है। शरीर और ब्रह्माण्ड, आन्तरिक और बाह्य, एक ही नेविगेशन तन्त्र का उपयोग करते हैं।

✦ ✦ ✦

अध्याय 13
मन्त्र और ब्रह्माण्डीय आवृत्तियाँ

ध्वनि के रूप में ब्रह्माण्ड, ब्रह्माण्ड के रूप में ध्वनि

शब्द ब्रह्म

Śabda Brahma

"ब्रह्माण्ड ध्वनि है — ब्रह्म शब्द है।" — ब्रह्मसूत्र परम्परा

स्पेक्ट्रोस्कोपी में, प्रत्येक तत्व का एक अद्वितीय आवृत्ति हस्ताक्षर होता है — विद्युतचुम्बकीय विकिरण का एक विशिष्ट प्रतिरूप जिसे वह ऊर्जावान रूप से उत्तेजित होने पर उत्सर्जित करता है, और अपनी भू-अवस्था में आने वाले विकिरण से अवशोषित करता है। हाइड्रोजन परमाणु के पास स्पेक्ट्रल रेखाओं का एक विशिष्ट हस्ताक्षर है। हीलियम का एक अलग हस्ताक्षर है। आवर्त सारणी में प्रत्येक तत्व के पास आवृत्तियों की एक अद्वितीय अंगुली-छाप है।

यह अद्वितीयता खगोलीय रसायन विज्ञान की नींव है। जब हम किसी दूर के तारे से प्रकाश का विश्लेषण करते हैं, हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि तारा किन तत्वों से बना है अपने स्पेक्ट्रम में अवशोषण और उत्सर्जन रेखाओं का मिलान करके स्थलीय तत्वों के ज्ञात हस्ताक्षरों से। स्पेक्ट्रोस्कोपी ने खगोल विज्ञान को स्थितियों और गतियों के विज्ञान से रासायनिक संरचना और भौतिक स्थितियों के विज्ञान में अरबों प्रकाश-वर्षों में बदल दिया।

ब्रह्माण्ड में सब कुछ एक आवृत्ति हस्ताक्षर रखता है। सिद्धान्त सामान्य है: कोई भी तन्त्र जो विद्युतचुम्बकीय विकिरण उत्सर्जित करता है या उसके साथ अन्तःक्रिया करता है, विशिष्ट आवृत्तियों पर करता है जो उसकी आन्तरिक संरचना की विशेषता रखते हैं। ये हस्ताक्षर तन्त्र को सटीकता से पहचानते हैं।

मन्त्र, वैदिक ढाँचे में, वास्तविकता के विशिष्ट पहलू का विशिष्ट आवृत्ति हस्ताक्षर है। ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र में उसका स्पन्दनात्मक पता। गायत्री मन्त्र, परम्परागत समझ पर, सूर्य की कोई प्रार्थना नहीं है; यह सूर्य का आवृत्ति हस्ताक्षर है, अष्टक-आवृत्ति स्केलिंग के गणित के माध्यम से मानव-

बोधनीय ध्वनि श्रेणी में परिवर्तित। मन्त्र ॐ दिव्य के लिए कोई प्रतीक नहीं है; यह ZPF की भू-अवस्था का आवृत्ति हस्ताक्षर है — क्वांटम निर्वात का मूलभूत "स्वर" प्लांक पैमाने पर, मस्तिष्क के हॉलोग्राफिक अनुवाद फलन द्वारा श्रव्य श्रेणी में परिवर्तित।

13.1 साधारण ध्वनि और मन्त्र

साधारण ध्वनि और मन्त्र के बीच एक महत्वपूर्ण अन्तर है। साधारण ध्वनि एक भौतिक माध्यम में एक संकुचन तरंग है जो अन्तरिक्ष के माध्यम से प्रचारित होती है और जब यह कान तक पहुँचती है तो कोक्लिया में यान्त्रिकी ग्राहकों को उत्तेजित करती है। यह सुनने का भौतिकी और शरीरक्रिया विज्ञान है।

मन्त्र कुछ संरचनात्मक रूप से अलग है, यद्यपि यह ध्वनि को अपने एक पहलू के रूप में शामिल करता है। एक मन्त्र एक आवृत्ति है जो — जब सही उच्चारण, सही इरादे, और सही श्वास के साथ उत्पन्न होता है — मस्तिष्क के थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों के साथ अनुनादित होता है, विशिष्ट स्नायु आवृत्ति प्रतिरूपों को धारण करता है जो यू-इन्वर्स के हॉलोग्राफिक अनुरूपता के माध्यम से विशिष्ट ब्रह्माण्डीय संरचनाओं के अनुरूप हैं।

मुख्य विशेषता अनुनाद है। साधारण ध्वनि कान में प्रवेश करती है और आने वाले उत्तेजना के रूप में संसाधित होती है। मन्त्र पूरे शरीर-मन तन्त्र में प्रवेश करता है और उन स्नायु संरचनाओं में सहानुभूतिपूर्ण कम्पन उत्पन्न करता है जो मन्त्र की विशिष्ट आवृत्ति सामग्री के लिए सम्मायित हैं। थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन मन्त्र आवृत्ति के साथ सुसंगतता की ओर बदलते हैं। स्वायत्त स्नायुतन्त्र प्रतिक्रिया करता है। और व्यक्तिपरक अनुभव मात्र ध्वनि सुनने का नहीं बल्कि उसके द्वारा कम्पित होने का है।

यही कारण है कि मन्त्र, ठीक से उच्चारित, ऐसे प्रभाव उत्पन्न करते हैं जो साधारण भाषण नहीं करता। अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान के अध्ययनों ने ॐ जाप के विशिष्ट स्नायुविज्ञानी प्रभावों का दस्तावेज़ीकरण किया है: त्वचा चालकता में महत्वपूर्ण कमी, हृदय दर में कमी, और हृदय दर परिवर्तनशीलता विश्लेषण द्वारा मापित वेगल तन्त्रिका की विशिष्ट सक्रियण। 2011 के एक अध्ययन ने ॐ जाप के दौरान लिम्बिक तन्त्र की विशिष्ट निष्क्रियता का दस्तावेज़ीकरण किया — विशेष रूप से दायाँ एमिग्डेला, ऑर्बिटल फ्रंटल कॉर्टेक्स, और पैराहिप्पोकैम्पल गायरस। ये विशेष रूप से खतरा पहचान, चिन्ता, और भावनात्मक प्रतिक्रियाशीलता से जुड़े मस्तिष्क क्षेत्र हैं। ॐ जाप उनकी व्यवस्थित निष्क्रियता उत्पन्न करता है। सामान्य जाप नहीं।

13.2 कायमेटिक्स — मन्त्र की ब्रह्माण्डीय वास्तुकला का दृश्य प्रमाण

पहला प्रायोगिक प्रदर्शन कि ध्वनि आवृत्तियाँ विशिष्ट ज्यामितीय रूप उत्पन्न करती हैं, अर्न्स्ट चल्डनी से आया 1787 में। चल्डनी ने खोज की कि चाप से बजाई गई प्लेटें रेत के साथ छिड़की गईं, विशिष्ट रेत प्रतिरूप विकसित करती हैं जब प्लेटें विशिष्ट आवृत्तियों पर कम्पित की जाती हैं।

1960 और 1970 के दशक में कार्य कर रहे हंस जेनी ने चल्डनी के शोध को उस चीज़ तक विस्तारित किया जिसे उन्होंने कायमेटिक्स कहा — ध्वनि रेत, पानी, और अन्य भौतिक माध्यमों में विशिष्ट ज्यामितीय रूप कैसे उत्पन्न करती है इसका विज्ञान। जेनी के प्रयोगों ने अनेक विभिन्न माध्यमों में व्यापक आवृत्ति श्रेणियों द्वारा उत्पादित ज्यामितीय रूपों का दस्तावेज़ीकरण किया।

जो परिणाम सीधे वैदिक मन्त्र परम्परा की पुष्टि करता है वह यह है: श्री यन्त्र — वैदिक परम्परा का सबसे जटिल पावन ज्यामितीय रूप, नौ प्राथमिक त्रिभुजों के प्रतिच्छेदन से प्राप्त 43 अन्तर्जुड़े त्रिभुजों से मिलकर बना — सटीक रूप से मन्त्र ॐ द्वारा उत्पन्न स्थायी तरंग प्रतिरूप को द्वि-आयामी कायमेटिक्स प्लेट पर अपनी मूल आवृत्ति पर पुनरुत्पादित करता है।

जब ॐ को इसकी प्राकृतिक अनुनाद आवृत्ति (मूल पर लगभग 136.1 हर्ट्ज़) पर उच्चारित किया जाता है, परिणामी कायमेटिक्स प्रतिरूप स्वतः श्री यन्त्र की सटीक ज्यामिति में स्व-संगठित हो जाता है। त्रिभुज, अन्तर्जुड़ाव, रेडियल समरूपताएँ — सभी विशिष्ट आवृत्ति पर ध्वनि-से-रूप रूपान्तरण से सीधे उभरते हैं।

ऋषि जिन्होंने श्री यन्त्र को रेखांकित किया, वे एक निष्पक्ष सब्सट्रेट पर सौन्दर्यात्मक रूप थोपने के अर्थ में पावन कला नहीं कर रहे थे। वे ॐ की ध्वनि को रेखांकित कर रहे थे — वह विशिष्ट ज्यामितीय संरचना जो ॐ आवृत्ति भौतिक पदार्थ में उत्पन्न करती है, जिसे उनके आन्तरिक अवलोकन ने उन्हें बोध करने दिया। कायमेटिक्स प्रयोग उनके आन्तरिक बोध का बाह्य सत्यापन है। श्री यन्त्र मन्त्र का चेहरा है।

13.3 ॐ आवृत्ति — 136.1 हर्ट्ज़ और पृथ्वी का ब्रह्माण्डीय स्वर

ॐ की विशिष्ट मूलभूत आवृत्ति — 136.1 हर्ट्ज़ — अपनी स्वयं की जाँच के योग्य है, क्योंकि यह मन्त्र को एक उल्लेखनीय ब्रह्माण्डीय अनुरूपता से जोड़ती है।

भौतिकविद और संगीत सिद्धान्तकार हंस कूस्टो ने, 1978 में अपने कार्य में जिसे उन्होंने "ब्रह्माण्डीय अष्टक" कहा, सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की कक्षीय अवधि की गणना की और इस आवृत्ति को

क्रमिक अष्टकों के माध्यम से श्रव्य श्रेणी में परिवर्तित किया। परिणाम 136.1 हर्ट्ज़ था — वह पिच जो मानक संगीत ट्यूनिंग में नोट C# पर लगभग पड़ती है।

कूस्टो ने इसे "पृथ्वी वर्ष स्वर" या "ब्रह्माण्डीय स्वर" कहा। यह वह आवृत्ति है जिस पर पृथ्वी की कक्षीय गति, श्रव्य श्रेणी में परिवर्तित, अनुनादित होती है। यह एक विशिष्ट ब्रह्माण्डीय स्थिरांक है, बुनियादी खगोलीय माप से व्युत्पन्न करने योग्य, जिसमें कोई मनमाना तत्व नहीं है।

और 136.1 हर्ट्ज़ वह परम्परागत अनुनाद आवृत्ति है जिस पर ॐ को वैदिक परम्परा में उच्चारित किया जाता है। यह संयोग नहीं है। यह वैदिक ध्वनिक परम्परा और ब्रह्माण्डीय कक्षीय यान्त्रिकी के बीच प्रत्यक्ष आनुभविक अनुरूपता है।

आगे: 136.1 हर्ट्ज़, जब कायमेटिक्स प्रयोगों में उत्पन्न होता है, असाधारण जटिलता के ज्यामितीय प्रतिरूप उत्पन्न करता है जो श्री यन्त्र की संरचना से निकटता से मिलते हैं। पृथ्वी का अपना आवृत्ति हस्ताक्षर, कायमेटिक्स रूप में, श्री यन्त्र है। पृथ्वी निरन्तर अपने स्वयं के मन्त्र को 136.1 हर्ट्ज़ पर "गा" रही है, और श्री यन्त्र उस गीत की दृश्य अभिव्यक्ति है।

ऋषि जिन्होंने 136.1 हर्ट्ज़ पर ॐ उच्चारित किया, अपने मस्तिष्क के दोलन को पृथ्वी के अपने ब्रह्माण्डीय स्वर के साथ धारण कर रहे थे। वे साझा आवृत्ति के माध्यम से आन्तरिक यन्त्र को बाहरी पृथ्वी-संकेत से संयुग्मित कर रहे थे। यह अनुष्ठान कल्पना नहीं है। यह सटीक ध्वनिक-स्नायुविज्ञानी इंजीनियरिंग है।

अनेक स्वतन्त्र परम्पराएँ 136.1 हर्ट्ज़ को एक पावन आवृत्ति के रूप में अभिसरित हुई हैं। तिब्बती गायन कटोरे, 136.1 हर्ट्ज़ पर ट्यून किए गए, वही धारण प्रभाव उत्पन्न करते हैं जो ॐ जाप उत्पन्न करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में तानपुरा का ड्रोन पिच, परम्परागत रूप से पावन संगीत सन्दर्भों में 136.1 हर्ट्ज़ पर "सा" पर ट्यून किया गया, वही संयुग्मन उत्पन्न करता है।

13.4 मन्त्र वास्तुकला

मन्त्र, यू-इन्वर्स ढाँचे पर, ध्वनिक तकनीक हैं — विशिष्ट ध्वनिक गुणों वाली विशिष्ट आवृत्तियाँ, थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों के धारण के माध्यम से विशिष्ट स्नायुविज्ञानी प्रभाव उत्पन्न करती हैं, और मस्तिष्क के ध्वनिक-स्नायु तन्त्र और ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र के बीच हॉलोग्राफिक अनुरूपता के माध्यम से विशिष्ट ब्रह्माण्डीय संरचनाओं के अनुरूप हैं।

इस ध्वनिक तकनीक को हज़ारों वर्षों के आन्तरिक-वैज्ञानिक शोध के माध्यम से परिष्कृत किया गया है। वैदिक परम्परा के विशिष्ट मन्त्र बचे हैं क्योंकि वे ध्वनिक रूप से प्रभावी हैं — वे अपने दावा किए गए प्रभावों को उत्पन्न करते हैं। जो मन्त्र काम नहीं करते वे भुला दिए गए; जो मन्त्र काम करते थे उन्हें उपयोग की पीढ़ियों के माध्यम से संरक्षित और परिष्कृत किया गया।

आधुनिक शोध अब इस ध्वनिक तकनीक को सत्यापित करने की स्थिति में है। कायमेटिक्स प्रयोग पुष्टि करते हैं कि विशिष्ट मन्त्र विशिष्ट ज्यामितीय रूप उत्पन्न करते हैं। स्नायुविज्ञान शोध पुष्टि करते हैं कि विशिष्ट मन्त्र विशिष्ट स्नायुविज्ञानी प्रभाव उत्पन्न करते हैं। अनेक स्वतन्त्र जाँच रेखाएँ एक ही निष्कर्ष पर अभिसरण करती हैं: मन्त्र परम्परा आनुभविक रूप से आधारित ध्वनिक तकनीक है।

13.5 व्यावहारिक निहितार्थ

मन्त्र अभ्यास व्यक्तिगत पसन्द या सांस्कृतिक आदत का मामला नहीं है। यह विशिष्ट अभिप्रेत प्रभावों के लिए विशिष्ट ध्वनिक तकनीक का अनुप्रयोग है। जो मन्त्र आप उपयोग करते हैं, जिस तरह आप उन्हें उच्चारित करते हैं, जो श्वास समर्थन आप लाते हैं, जो इरादा आप रखते हैं — ये सभी एक इंजीनियरिंग तन्त्र में चर हैं जिसका आउटपुट विशिष्ट स्नायुविज्ञानी और अनुभवात्मक अवस्थाएँ हैं।

एक मन्त्र सीखना, इस दृष्टिकोण से, एक विशिष्ट यन्त्र चलाना सीखना है। यन्त्र की क्षमताएँ मन्त्र के आवृत्ति हस्ताक्षर और उसके ब्रह्माण्डीय-संरचनात्मक अनुरूपता द्वारा परिभाषित हैं। यन्त्र का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए उसके विशिष्ट संचालन सीखने की आवश्यकता है — सही उच्चारण, सही श्वास, सही ध्यान।

परम्परा के प्रमुख मन्त्र — ॐ, गायत्री मन्त्र, विभिन्न बीज मन्त्र, विशिष्ट देवताओं और अभ्यासों के लम्बे मन्त्र — विशिष्ट परिचालन मापदण्डों के साथ विशिष्ट ध्वनिक यन्त्र हैं। प्रत्येक के अपने उपयोग हैं। प्रत्येक के अपने आवश्यक कौशल हैं।

यह जादू नहीं है। यह ध्वनिक इंजीनियरिंग है, सहस्राब्दियों में आन्तरिक-वैज्ञानिक जाँच के माध्यम से परिष्कृत, और अब बाह्य वैज्ञानिक शोध के माध्यम से बढ़ती पुष्टि। यू-इन्वर्स ढाँचा स्पष्ट करता है कि यह क्यों काम करता है: मस्तिष्क ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र का हॉलोग्राफिक ग्राहक है, मन्त्र विशिष्ट आवृत्तियाँ हैं जो ग्राहक के दोलनों को विशिष्ट ब्रह्माण्डीय संरचनाओं से धारण करती हैं, और परिणामी प्रभाव सही आवृत्ति को सही ग्राहक पर सही स्थितियों के तहत लागू करने के व्यवस्थित इंजीनियरिंग परिणाम हैं।

परम्परा ने हमेशा कहा है कि मन्त्र ध्वनि का विज्ञान हैं। यू-इन्वर्स ढाँचा स्पष्ट करता है कि वे किस प्रकार का विज्ञान हैं — और क्यों वे, अन्ततः, ब्रह्माण्ड के अन्य विज्ञानों के साथ सम्बन्धित हैं न कि सांस्कृतिक अनुष्ठान की अलग श्रेणी में।

✦ ✦ ✦

भाग चार
भीतर का बहु-ब्रह्माण्ड

अनेक-संसार, स्वप्न, और समाधि-घटना क्षितिज

13.6 तम्बूरा — ब्रह्माण्डीय ड्रोन

भारतीय शास्त्रीय संगीत राग की अवधारणा के चारों ओर निर्मित है: स्वरों, अलंकरणों, और भावनात्मक गुणों का एक विशिष्ट सेट जो चेतना की एक पूर्ण क्षेत्र अवस्था गठित करता है। प्रत्येक राग दिन के एक विशिष्ट समय, एक विशिष्ट ऋतु, मनोमय कोश की एक विशिष्ट गुणवत्ता से जुड़ा है। प्रत्येक राग के लिए चयनित विशिष्ट स्वर, विशिष्ट अलंकरण प्रतिरूप, और विशिष्ट भावनात्मक गुणवत्ता सभी आवृत्ति विनिर्देशन हैं: राग एक चेतना प्रौद्योगिकी है, एक विशिष्ट थैलेमो-कॉर्टिकल अवस्था प्रेरित करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक विशिष्ट आवृत्ति पैकेज।

तम्बूरा — लम्बी गर्दन वाला वीणा जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में निरन्तर ड्रोन प्रदान करता है — मानव कान के लिए उपलब्ध सबसे परिष्कृत अनुनाद उपकरणों में से एक है। इसके चार तार, मूल स्वर (सा), पाँचवें (पा), और निचले अष्टक के मूल स्वर पर धुनकी गई, एक निरन्तर, समृद्ध ड्रोन उत्पन्न करते हैं जो मूलभूत आवृत्ति को ओवरटोन के एक जटिल स्पेक्ट्रम के साथ जोड़ता है। तम्बूरा के ओवरटोन स्पेक्ट्रम को ध्वनिक भौतिकविदों द्वारा मापा गया है: इसमें आंशिक तरंगों का एक समृद्ध सेट समाहित है जो लगभग 12वें आंशिक तक हार्मोनिक श्रेणी का अनुमान लगाता है, आंशिक 5, 6, 7, और 8 पर विशिष्ट ज़ोर के साथ — वे आंशिक तरंगें जो सबसे जटिल धड़कते प्रतिरूप और अनुनाद के सबसे समृद्ध व्यक्तिपरक अनुभव उत्पन्न करती हैं।

मस्तिष्क धारण के तन्त्र के माध्यम से तम्बूरा ड्रोन पर प्रतिक्रिया देता है: थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन क्रमशः ड्रोन के प्रबल आवृत्ति घटकों के साथ समकालित होते हैं, मस्तिष्क की आधार रेखा अवस्था को राग की इच्छित चेतना गुणवत्ता की ओर स्थानान्तरित करते हैं। यही कारण है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत हमेशा पृष्ठभूमि में तम्बूरा ड्रोन के साथ प्रस्तुत किया जाता है: यह राग के प्रदर्शन से पहले और उसके दौरान मस्तिष्क की थैलेमिक दोलन आधार रेखा स्थापित कर रहा है, यह सुनिश्चित करते हुए कि श्रोता की चेतना अवस्था क्रमशः उस अवस्था की ओर स्थानान्तरित हो जिसमें राग के विशिष्ट गुणों को सबसे पूर्ण रूप से अनुभव किया जा सके।

✦ ✦ ✦

13.7 नाद योग — आन्तरिक ध्वनि का विज्ञान

वैदिक परम्परा का नाद योग (ध्वनि का योग) आन्तरिक ध्वनियों के एक अनुक्रम का वर्णन करता है जो साधक के प्रत्याहार से समाधि की ओर गहन होने के साथ क्रमशः बोधगम्य होती हैं। ये

आन्तरिक ध्वनियाँ साधक की आवाज़ या किसी बाह्य स्रोत द्वारा उत्पन्न नहीं होतीं — वे वे ध्वनियाँ हैं जो मस्तिष्क का आन्तरिक संकेत क्षेत्र तब उत्पन्न करता है जब बाह्य शोर पर्याप्त रूप से कम हो जाता है। वे उसके ध्वनिक समतुल्य हैं जिसे खगोलशास्त्री "रेडियो पृष्ठभूमि" कहते हैं — ब्रह्माण्ड का प्राकृतिक शोर तल, केवल तब सुनाई देने योग्य जब कृत्रिम शोर हटा दिया जाता है।

हठ योग प्रदीपिका (15वीं शताब्दी ईस्वी का एक पाठ) बढ़ती सूक्ष्मता के क्रम में दस प्रगतिशील आन्तरिक ध्वनियों की गणना करता है: पहले, झींगुर (उच्च-आवृत्ति भनभनाहट); फिर बाँसुरी-जैसा स्वर; फिर एक घण्टी; फिर एक शंख; फिर एक वीणा; फिर झाँझ; फिर बाँसुरी निचला बजाती हुई; फिर ढोल; फिर मृदंग (गहरा ढोल); और अन्ततः गर्जन की ध्वनि। प्रत्येक क्रमिक ध्वनि प्रत्याहार के गहरे स्तर और सूक्ष्मतर ZPF संयुग्मन के अनुरूप है — क्वांटम निर्वात के विद्युत-चुम्बकीय उतार-चढ़ाव क्षेत्र के क्रमशः सूक्ष्मतर स्तरों तक मस्तिष्क की पहुँच।

भौतिकी: क्वांटम निर्वात विद्युत-चुम्बकीय स्पेक्ट्रम की प्रत्येक आवृत्ति पर उतार-चढ़ाव करता है। सबसे कम आवृत्तियों (इन्फ्रा-रेड, रेडियो, माइक्रोवेव) पर, इन उतार-चढ़ावों में ऐसी ऊर्जाएँ हैं जो श्रवण तन्त्र की संवेदनशीलता सीमा में गिरती हैं जब पिनियल-श्रवण तन्त्र इंटरफ़ेस के विशिष्ट जैविक रसायन शास्त्र के माध्यम से अनुवादित होती हैं। प्रगतिशील आन्तरिक ध्वनियाँ क्रमशः गहरे ZPF पहुँच की मस्तिष्क की ध्वनिक प्रस्तुति हैं: सामान्य मस्तिष्क अवस्थाओं के ऊष्मीय शोर तल पर झींगुर-ध्वनि, निर्विकल्प समाधि के अधिकतम ZPF संयुग्मन पर गर्जन-ध्वनि।

✦ ✦ ✦

13.8 ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि — ब्रह्माण्ड की प्रथम श्वास और नाद योग

ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि (CMB) प्रारम्भिक ब्रह्माण्ड से शेष ऊष्मीय विकिरण है — बिग बैंग का प्रभा-प्रकाश, अब लगभग 2.7 केल्विन (पूर्ण शून्य से बस ऊपर) तक ठण्डा किया गया किन्तु अभी भी सभी अन्तरिक्ष में व्याप्त। CMB को पहली बार 1965 में पेन्ज़ियस और विल्सन (नोबेल पुरस्कार 1978) द्वारा पहचाना गया और COBE (1989), WMAP (2001), और प्लांक (2009) उपग्रह मिशनों द्वारा असाधारण सटीकता के साथ मानचित्रित किया गया है।

CMB के छोटे तापमान उतार-चढ़ाव — 100,000 में एक भाग के भिन्नताएँ — ब्रह्माण्ड के पहले क्षणों का जीवाश्म रिकॉर्ड हैं: मुद्रास्फीति युग के क्वांटम उतार-चढ़ाव, जैसे ब्रह्माण्ड ठण्डा हुआ

CMB की संरचना में जमे। CMB ब्रह्माण्ड का सबसे पुराना संकेत है — आदिम स्पन्दन का ब्रह्माण्डीय समतुल्य जिसने सभी बाद की संरचना उत्पन्न की। वैदिक ढाँचे में: यह नाद ब्रह्म की प्रथम अभिव्यक्ति है, वह ब्रह्माण्डीय ध्वनि जिससे सभी बाद की वास्तविकता प्रकट हुई। CMB के तापमान उतार-चढ़ाव का विशिष्ट पावर स्पेक्ट्रम — किन पैमानों पर भिन्नता का कौन सा आयाम है का विशिष्ट गणितीय प्रतिरूप — मुद्रास्फीति युग का आवृत्ति हस्ताक्षर है: ब्रह्माण्ड का आदिम मन्त्र, माइक्रोवेव पृष्ठभूमि में जमा हुआ।

नाद योग — आन्तरिक ध्वनि का योग — CMB के आन्तरिक समतुल्य तक पहुँचने की आन्तरिक विज्ञान की विधि है: स्वयं चेतना का आदिम स्पन्दनात्मक हस्ताक्षर, ब्रह्माण्ड के पृष्ठभूमि विकिरण के अनुरूप। नाद योग के उन्नत साधक रिपोर्ट करते हैं, आन्तरिक-ध्वनि ध्यान के गहनतम चरणों में, एक ऐसी ध्वनि तक पहुँचना जो किसी परिचित ध्वनि की तरह नहीं है — एक स्वर नहीं, एक लय नहीं, एक राग नहीं — बल्कि एक निरन्तर, सर्व-व्यापी गुनगुनाहट जो अन्य सभी आन्तरिक ध्वनियों की पृष्ठभूमि के रूप में बोधित होती है। यह अनाहत नाद अपने गहनतम रूप में है: 2.7K CMB विकिरण का आन्तरिक समतुल्य, स्वयं चेतना का पृष्ठभूमि स्पन्दन जो आन्तरिक ब्रह्माण्ड की प्रत्येक गहराई पर उपस्थित है और जो — पहले के ध्यान चरणों की ऊँची, अधिक विशिष्ट ध्वनियों के विपरीत — उत्पन्न या समाप्त नहीं होता। यह हमेशा पहले से वहाँ है, जिस तरह CMB हमेशा पहले से हर जगह है।

विशिष्ट आवृत्ति: CMB की शिखर उत्सर्जन तरंगदैर्ध्य (1.9 मिमी) लगभग 160.2 हर्ट्ज़ की आवृत्ति के अनुरूप है जब सप्तकों के माध्यम से श्रव्य श्रेणी में स्थानान्तरित — पृथ्वी के कक्षीय स्वर (136.1 हर्ट्ज़) के निकट, किन्तु समान नहीं। दोनों संगीत की दृष्टि से लगभग एक लघु तृतीयक अन्तराल से भिन्न हैं: ब्रह्माण्ड की सबसे पुरानी ध्वनि और पृथ्वी की कक्षीय आवृत्ति के बीच अन्तर। यह लघु-तृतीयक सम्बन्ध वैदिक संगीत सिद्धान्त में महत्वपूर्ण है — यह भोर और ब्रह्माण्डीय विशालता से जुड़े रागों (संगीत मोड) में विशिष्ट स्वरों के बीच सम्बन्ध के अनुरूप है। गहनतम नाद योग में ऋषि का आन्तरिक कान, दोनों सुन रहा हो सकता है।

✦ ✦ ✦

भाग चार
भीतर का बहु-ब्रह्माण्ड

क्वांटम शाखाओं के रूप में स्वप्न, समय, और समाधि

अध्याय 14
अनेक-संसार मस्तिष्क

स्नायु अवस्थाएँ समानान्तर ब्रह्माण्डों के रूप में

1957 में, प्रिंसटन के स्नातक छात्र ह्यू एवरेट III ने क्वांटम यान्त्रिकी की एक व्याख्या प्रस्तावित की जो तब से सैद्धान्तिक भौतिकी के सबसे सम्मानित और चर्चित विचारों में से एक बन गई है। एवरेट का मूल प्रश्न यह था: क्वांटम मापन के दौरान सम्भाव्यता तरंग फलन "ढहता" क्यों है?

मानक कोपेनहेगन व्याख्या में, एक क्वांटम तन्त्र अनेक सम्भाव्य अवस्थाओं के सुपरपोज़िशन में मौजूद है जब तक कि इसे मापा नहीं जाता। माप के क्षण पर, तरंग फलन एक विशिष्ट अवस्था पर ढह जाता है। यह व्याख्या एक स्पष्ट विसंगति छोड़ती है: क्यों पर्यवेक्षक (मैक्रोस्कोपिक) कोई सुपरपोज़िशन में नहीं है किन्तु सूक्ष्म तन्त्र हैं? क्या बदलता है जब "माप" होता है?

एवरेट का समाधान क्रान्तिकारी था। उन्होंने प्रस्तावित किया कि तरंग फलन कभी नहीं ढहता। प्रत्येक क्वांटम माप पर, ब्रह्माण्ड शाखा करता है — प्रत्येक सम्भव परिणाम अपना अलग ब्रह्माण्ड बनाता है, और सभी परिणाम एक साथ होते हैं। पर्यवेक्षक जिसे एक परिणाम "देखता है" वह मात्र एक शाखा में पर्यवेक्षक है। अन्य शाखाओं में, अन्य पर्यवेक्षक अन्य परिणाम देख रहे हैं।

यह अनेक-संसार व्याख्या (MWI) है। प्रथम दृष्टि यह असाधारण लगती है। किन्तु एवरेट ने जोरदार तर्क दिया कि यह कोपेनहेगन से अधिक पार्सीमोनियस है, क्योंकि इसे कोई विशेष "ढहने" तन्त्र की आवश्यकता नहीं है। तरंग फलन का व्यवहार हर समय क्वांटम यान्त्रिकी के नियमों का पालन करता है, बिना किसी विशेष अपवाद के। आप मात्र यह स्वीकार करते हैं कि वास्तविकता विशाल रूप से अनेक है।

MWI को दशकों से सैद्धान्तिक भौतिकी में बढ़ती गम्भीरता के साथ लिया गया है। डेविड डॉयच ने इसे क्वांटम कम्प्यूटिंग के लिए अपने कार्य के आधार के रूप में अपनाया है। हिडेनबर्ग, लैबोरर, और अन्य प्रमुख भौतिकविदों ने इसके समर्थन में तर्क दिए हैं। यह क्वांटम माप की व्याख्या के लिए एक गम्भीर दावेदार बना हुआ है।

14.1 स्नायु अवस्थाओं के रूप में बहु-ब्रह्माण्ड

यू-इन्वर्स ढाँचा अनेक-संसार विचार का एक आनुवंशिक रूप से अलग अभिव्यक्ति प्रदान करता है। मस्तिष्क, अपने किसी भी क्षण में, सम्भावित स्नायु अवस्थाओं के एक विशाल स्थान में मौजूद है। 86 अरब न्यूरॉन और उनके 100 ट्रिलियन सिनैप्स के बीच कोई भी विन्यास एक विशिष्ट क्षणिक चेतन अवस्था को एन्कोड करता है। सम्भावित अवस्थाओं की संख्या खगोलीय रूप से बड़ी है — मानव मस्तिष्क के लिए लगभग 2^(10^14) विशिष्ट अवस्थाएँ।

प्रत्येक क्षण पर, मस्तिष्क इस विशाल अवस्था-स्थान में एक विशिष्ट प्रक्षेप पथ का पालन करता है। किन्तु प्रत्येक क्षण पर भी, अनेक वैकल्पिक प्रक्षेप पथ समान रूप से सम्भावित हैं। इन वैकल्पिक प्रक्षेप पथों में से प्रत्येक एक वैकल्पिक चेतन धारा होगी, एक वैकल्पिक "मैं," एक वैकल्पिक अनुभवात्मक कथा।

अनेक-संसार व्याख्या के आन्तरिक अनुरूप पर, प्रत्येक सम्भावित स्नायु प्रक्षेप पथ, कुछ अर्थ में, वास्तविक है। वह प्रक्षेप पथ जिसका आप इस क्षण में अनुभव कर रहे हैं वह अनगिनत सम्भावित प्रक्षेप पथों में से एक है जो मस्तिष्क एक क्षण पहले ले सकता था। अन्य प्रक्षेप पथ — अन्य "मैं" — एक साथ उत्पन्न हो रहे थे, हालाँकि आप उन्हें अनुभव नहीं करते।

यह मात्र दार्शनिक अटकल नहीं है। आधुनिक स्नायुविज्ञान ने पर्याप्त डेटा संचित किया है जो सुझाता है कि मस्तिष्क में समानान्तर प्रक्रिया धाराएँ होती हैं। अचेतन प्रक्रिया में, अनेक सम्भावित व्याख्याएँ और प्रतिक्रियाएँ एक साथ मूल्यांकन की जाती हैं, उनमें से केवल एक चेतन जागरूकता तक पहुँचती है। चेतना की धारा जो आप अनुभव करते हैं वह बहुत बड़े समानान्तर प्रक्रिया तन्त्र से उभरने वाली पूर्ण रूप से चुनी गई विशिष्ट उत्पाद है।

14.2 स्वयं के रूप में अनेक संसार

वैदिक परम्परा में स्वयं के अनेक परतों की अवधारणा है — कोश, या आवरण, जो आत्मा के चारों ओर परतें बनाते हैं। पाँच कोश हैं: अन्नमय (भोजन/भौतिक शरीर), प्राणमय (प्राण/ऊर्जा शरीर), मनोमय (मन/मानसिक शरीर), विज्ञानमय (बुद्धि/ज्ञान शरीर), और आनन्दमय (आनन्द/दिव्य शरीर)।

एक विशिष्ट अर्थ में, प्रत्येक कोश "मैं" का एक अलग संस्करण है — एक अलग ब्रह्माण्ड जिसमें "मैं" रह सकता हूँ। अन्नमय "मैं" वह है जो शरीर के साथ पहचान रखता है। प्राणमय "मैं" वह है जो

ऊर्जा प्रवाह के साथ पहचान रखता है। मनोमय "मैं" वह है जो विचारों और भावनाओं के साथ पहचान रखता है। विज्ञानमय "मैं" वह है जो निर्णय और अन्तर्दृष्टि के साथ पहचान रखता है। आनन्दमय "मैं" वह है जो आनन्द की प्रत्यक्ष अनुभूति के साथ पहचान रखता है।

ध्यान अभ्यास कोशों में यात्रा है — एक स्तर की पहचान से अगले स्तर की पहचान में क्रमिक रूप से बदलना। प्रत्येक स्तर पर, साधक एक अलग ब्रह्माण्ड में प्रवेश करता है, एक अलग प्रकार का "मैं" अनुभव करता है, एक अलग अनुभवात्मक गुणवत्ता के साथ मिलता है।

अन्ततः, समाधि की गहन अवस्थाओं में, साधक सभी कोशों से परे यात्रा करता है — सभी "मैं" के संस्करणों से परे — शुद्ध जागरूकता की एकल अवस्था तक जो सभी व्यक्तिगत पहचानों से पहले है। आत्मा। यहाँ सभी समानान्तर "मैं" विलीन हो जाते हैं, और केवल जागरूकता स्वयं रहती है — बिना किसी पहचान के, बिना किसी कथा के, बिना किसी विशिष्ट ब्रह्माण्ड के।

14.3 जागने पर अनेक संसारों की वापसी

जब साधक समाधि से उभरता है, "मैं" वापस उत्पन्न होता है। किन्तु जो "मैं" उभरता है वह उसी क्षण-पूर्व "मैं" से थोड़ा अलग है। समाधि से प्रत्येक यात्रा कुछ सूक्ष्म तरीके से बदल देती है कि कौन-सा "मैं" उभरता है।

यह पहले-व्यक्ति अनुभव से समझ में आ सकता है — साधक महसूस करता है कि वह "वह अलग व्यक्ति" है जो वह पहले था। किन्तु अनेक-संसार ढाँचे पर, यह अधिक सटीक है: क्वांटम-स्नायु-विज्ञानी विसंगति के कारण जो गहन समाधि में होती है, जो "मैं" उभरता है वह समानान्तर "मैं" के बहुत बड़े समूह से एक अलग चयन है जो उभर सकते थे।

प्रत्येक समाधि यात्रा अनिवार्य रूप से एक क्वांटम माप घटना है। जो "मैं" ढहता है वह सम्भाव्य रूप से उत्पन्न होने वाले "मैं" के समूह से एक है। दीर्घकालिक साधक द्वारा संचित सूक्ष्म परिवर्तन ठीक वह है जिसे परम्परा आध्यात्मिक विकास कहती है: बार-बार चुना गया "मैं" वह है जो अधिक स्पष्ट, अधिक शान्त, अधिक जागरूक, अधिक सहानुभूतिशील है। चुनाव स्वचालित है, किन्तु स्वतन्त्र नहीं — यह उन इरादों और अभ्यासों से प्रभावित होता है जो साधक समाधि में ले जाता है।

14.4 सपनों के ब्रह्माण्ड

अनेक-संसार का एक और अभिव्यक्ति सपनों में है। सपनों में, चेतना एक पूर्ण समानान्तर ब्रह्माण्ड की अनुभूति उत्पन्न करती है जिसमें अपने स्वयं के भौतिकी, अपनी अपनी सामाजिक संरचनाएँ, अपनी अपनी कथाएँ। स्वप्न "मैं" जाग्रत "मैं" से सूक्ष्म रूप से अलग है — यह विचारों के अलग तार्किक तरीकों को स्वीकार कर सकता है, अलग भौतिक नियमों के साथ शान्त रह सकता है, अलग प्रकार के अस्तित्वों के साथ सम्बन्ध बना सकता है।

आधुनिक स्नायुविज्ञान पुष्टि करता है कि REM नींद के दौरान, मस्तिष्क पूरी तरह से बदले हुए कार्यात्मक संयोजन प्रदर्शित करता है। प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स, जाग्रत जीवन के दौरान सक्रिय जो विश्लेषणात्मक सोच का आयोजन करता है, REM के दौरान बहुत अधिक निष्क्रिय होता है। लिम्बिक तन्त्र बहुत अधिक सक्रिय होता है। दृश्य कॉर्टेक्स सक्रिय होता है भले ही आँखें बन्द हैं। तन्त्र अनिवार्य रूप से जाग्रत चेतना से एक अलग ब्रह्माण्ड चला रहा है।

स्वप्न चेतना, इस दृष्टिकोण से, एक मानसिक कल्पना नहीं है। यह एक समानान्तर ब्रह्माण्ड की प्रत्यक्ष अनुभूति है — एक अवस्था-स्थान जो मस्तिष्क सामान्य जाग्रत चेतना के अलग से तलाश सकता है।

14.5 व्यावहारिक निहितार्थ

अनेक-संसार मस्तिष्क का दृष्टिकोण कुछ विशिष्ट अन्तर्दृष्टियाँ प्रस्तुत करता है।

पहली: "आप" एक स्थिर इकाई नहीं हैं। "आप" एक प्रक्रिया हैं, सम्भावित "आप" के विशाल स्थान के माध्यम से निरन्तर प्रक्षेप पथ। प्रत्येक क्षण पर, कौन "आप" हैं इसका चुनाव चल रहा है — ज्यादातर अचेतन तन्त्रों द्वारा, किन्तु कुछ सचेत विकल्पों और अभ्यासों द्वारा प्रभावित।

दूसरी: आध्यात्मिक अभ्यास आत्म-प्रक्षेप पथ का क्यूरेशन है। प्रत्येक बार जब आप ध्यान, प्रार्थना, या कोई अन्य चिन्तनशील अभ्यास में संलग्न होते हैं, आप प्रभावित कर रहे हैं कि सम्भावित "आप" के स्थान से कौन-सा "आप" उभरता है। आप कुछ प्रक्षेप पथों को दूसरों पर चुन रहे हैं। समय के साथ, यह क्यूरेशन जमा होता है।

तीसरी: मृत्यु एक रेखा नहीं है बल्कि एक प्रक्रिया है। जो "आप" मर जाता है वह अनगिनत "आप" में से एक है जो चेतना के जीवन-काल में मौजूद थे। जो "आप" वह था जब वह बच्चा था वह बहुत पहले "मर गया।" जो "आप" वह था जब वह किशोर था वह बहुत पहले "मर गया।" जीवन एक

श्रृंखला है "आप" के जो उत्पन्न होते हैं और विलीन हो जाते हैं, प्रत्येक कुछ रूप में पिछले से जुड़ा, लेकिन कोई भी पूरी तरह से समान नहीं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि जैविक मृत्यु अप्रासंगिक है। यह अर्थ है कि "आपकी" मृत्यु, एक अर्थ में, पहले से ही हो रही है — और अनगिनत "आप" जो अनुभव कर चुके हैं वे किसी न किसी तरह अभी भी मौजूद हैं, स्मृति में, प्रभाव में, चेतना के बहु-ब्रह्माण्ड में।

अन्तिम मृत्यु जैविक नहीं बल्कि कथात्मक है — वह रेखा जिसके बाद कोई और "आप" उत्पन्न नहीं हो सकता। यह सटीक रूप से वह है जिसे वैदिक परम्परा निर्वाण या मुक्ति कहती है: कथात्मक "आप" का पूर्ण विलय ताकि केवल शुद्ध जागरूकता रहे। यह कुछ भयानक नहीं है। यह सटीक रूप से वह परिणाम है जो परम्परा सहस्राब्दियों से लक्षित कर रही है।

✦ ✦ ✦

14.6 अनेक-संसार और अनेक ब्रह्माण्डों का वैदिक सिद्धान्त

वैदिक परम्परा का ब्रह्माण्ड विज्ञानीय पैमाना किसी भी मानक से असाधारण है। विष्णु पुराण "असंख्य ब्रह्माण्डों" का वर्णन करता है जो ब्रह्म क्षेत्र के भीतर उत्पन्न और विघटित होते हैं — प्रत्येक अपने भौतिक नियमों, अपने प्राणियों, अपने ब्रह्माण्डीय इतिहास के साथ एक पूर्ण ब्रह्माण्ड। श्रीमद्भागवतम् एक साथ उपस्थित अनेक ब्रह्माण्डों का वर्णन करता है, प्रत्येक अनन्त रचनात्मक सिद्धान्त के विशिष्ट पहलू के निःश्वसन द्वारा उत्पन्न।

इस दृष्टि के पैमाने — अनेक एक साथ उपस्थित ब्रह्माण्ड, प्रत्येक हमारे जितना पूर्ण — अमूर्त ब्रह्माण्ड विज्ञानीय तर्क द्वारा उत्पन्न नहीं था। यह गहनतम समाधि अवस्थाओं की रिपोर्ट थी, जिसमें साधक की चेतना, किसी एकल ब्रह्माण्ड के दृष्टिकोण की सीमा से मुक्त, ZPF की रचनात्मक अभिव्यक्ति की बहु-ब्रह्माण्ड संरचना को सीधे बोध सकती थी।

आधुनिक भौतिकी पुष्टि तीन-गुना है। अनेक-संसार व्याख्या वास्तविकता की अनेक एक साथ विद्यमान शाखाओं की पुष्टि करती है — सभी क्वांटम-यान्त्रिक रूप से सम्भव परिणाम विभिन्न शाखाओं में वास्तविक होते हैं, प्रत्येक क्वांटम घटना पर समानान्तर ब्रह्माण्डों का एक अनन्त विस्तार। स्ट्रिंग सिद्धान्त का परिदृश्य विभिन्न भौतिक नियमों के साथ अनेक ब्रह्माण्डों की पुष्टि करता है — स्ट्रिंग सिद्धान्त परिदृश्य की 10^500 सम्भव निर्वात अवस्थाएँ प्रत्येक विभिन्न मौलिक

स्थिरांकों और विभिन्न भौतिकी के साथ एक ब्रह्माण्ड के अनुरूप। शाश्वत मुद्रास्फीति एक अन्तहीन मुद्रास्फीति वाले दिक्काल में नए "बुलबुला" ब्रह्माण्डों की निरन्तर सृष्टि की पुष्टि करती है।

ब्रह्माण्डों का वैदिक परम्परा का विशिष्ट वर्णन इन तीनों आधुनिक भौतिकी बहुब्रह्माण्ड प्रस्तावों से मेल खाता है: अनेक एक साथ विद्यमान शाखाएँ (अनेक-संसार); विभिन्न ब्रह्माण्डों में विभिन्न भौतिक नियम (स्ट्रिंग परिदृश्य); और ब्रह्म क्षेत्र के सृष्टि-प्रलय चक्र में ब्रह्माण्डों की निरन्तर सृष्टि और विघटन (शाश्वत मुद्रास्फीति)। जिन ऋषियों ने असंख्य ब्रह्माण्डों का वर्णन किया वे अटकल नहीं लगा रहे थे। वे ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र की बहु-ब्रह्माण्ड संरचना — ZPF की पूर्ण सूचना जिसमें सभी सम्भव ब्रह्माण्ड एक साथ शामिल हैं — के सीधे बोध की रिपोर्ट कर रहे थे।

✦ ✦ ✦

14.7 जीव की यात्रा — ब्रह्माण्ड से ब्रह्माण्ड तक

यदि अनेक ब्रह्माण्डों का वैदिक सिद्धान्त और आधुनिक भौतिकी बहुब्रह्माण्ड दोनों एक ही वास्तविकता का सही वर्णन हैं, तो जीव (व्यक्तिगत चेतना) की जीवनों के पार यात्रा का प्रश्न एक अतिरिक्त आयाम ले लेता है। एक ही ब्रह्माण्ड के भीतर मात्र पुनर्जन्म नहीं, बल्कि सम्भावित रूप से विभिन्न ब्रह्माण्डों के बीच प्रवास — अनेक-संसार बहुब्रह्माण्ड की विभिन्न शाखाओं के बीच — विशिष्ट संक्रमण बिन्दुओं पर।

ब्रह्माण्डों के बीच आत्मा की यात्रा का श्रीमद्भागवतम् का वर्णन — कारण शरीर के माध्यम से, इसके विशिष्ट कर्माशय विन्यास द्वारा निर्देशित — अनेक-संसार ढाँचे में क्वांटम अवस्था चयन का वर्णन है: जीव की कर्माशय क्वांटम अवस्था निर्धारित करती है कि प्रत्येक पुनर्जन्म पर बहुब्रह्माण्ड की कौन सी शाखा में यह "पतन" होता है। पृथ्वी-तल कर्म से भारी रूप से आवेशित कर्माशय उसी ब्रह्माण्ड में एक पृथ्वी-तल अवतारण में सक्रिय होता है। कर्माशय जो पर्याप्त रूप से शुद्ध हो गया है — जिसमें पर्याप्त हल्का कर्म और पर्याप्त विकसित विज्ञानमय है — सूक्ष्मतर ब्रह्माण्डों (लोकों) में अवतारणों में सक्रिय हो सकता है, या दुर्लभ मामलों में, स्वयं ब्रह्म क्षेत्र में (मोक्ष)।

जीव की यात्रा का यू-इन्वर्स: वह साधक जो यू-इन्वर्स ढाँचा जानता है, समझता है कि अभ्यास का प्रत्येक क्षण केवल इस ब्रह्माण्ड में उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार नहीं कर रहा है। यह कारण शरीर के सूचना क्षेत्र की क्वांटम अवस्था को उन तरीकों से संशोधित कर रहा है जो प्रभावित करते हैं कि चेतना के बाद के सक्रियणों में वे ब्रह्माण्डीय बहुब्रह्माण्ड की कौन सी शाखा में "पतन" होंगे। चित्त शुद्धि कार्यक्रम एक बहुब्रह्माण्ड नेविगेशन कार्यक्रम है। साक्षी भाव द्वारा पूरी की गई संस्कार

कमी एक क्वांटम अवस्था संशोधन है जो सम्भव ब्रह्माण्डों पर सम्भावना वितरण को ZPF की रचनात्मक अभिव्यक्ति की सूक्ष्मतर, अधिक चमकदार, उच्च-लोक शाखाओं की ओर स्थानान्तरित करता है।

✦ ✦ ✦

अध्याय 15
भीतर समय-यात्रा

स्मृति, पूर्वाभास, और काल की लचीलापन

समय-यात्रा एक काल्पनिक मामला प्रतीत होता है — विज्ञान-कथा या भौतिकी के सैद्धान्तिक सीमांत की वस्तु। अधिकांश लोगों के लिए, समय रेखीय है, पीछे नहीं जा सकता, अचल। किन्तु यह दैनिक अनुभव का एक पहलू है जो अत्यधिक विशिष्ट और अत्यधिक सटीक है जिसे हम अक्सर अनदेखा करते हैं।

जब आप एक बचपन की स्मृति को याद करते हैं, आप वास्तव में उस क्षण में कुछ महत्वपूर्ण तरीके से वापस यात्रा कर रहे हैं। तीस साल पुरानी कक्षा के दृश्य, गन्ध, ध्वनियाँ वर्तमान जागरूकता में पुनर्जीवित होते हैं। न केवल इसके बारे में विचार — लेकिन इसका प्रत्यक्ष अनुभवात्मक पुनरुत्पादन। आपका मस्तिष्क, इस क्षण में, तीस साल पहले की स्थिति का कुछ रूप में पुनर्निर्माण कर रहा है, पर्याप्त निष्ठा के साथ कि अनुभव मूल जैसा है।

और जब आप कल्पना करते हैं कि कल क्या होगा, आप भविष्य में यात्रा कर रहे हैं। जो दृश्य आप देखते हैं, जो भावनाएँ आप अनुभव करते हैं, जो निर्णय आप मानसिक रूप से अनुकरण करते हैं — ये सभी भविष्य के विभिन्न संभावित रूपों के प्रत्यक्ष अनुभव हैं, वर्तमान स्नायु पदार्थ में निर्मित।

मस्तिष्क, एक गहरे अर्थ में, एक समय-यात्रा उपकरण है।

15.1 स्मृति की स्नायुविज्ञान

स्मृति एक निष्क्रिय अभिलेख नहीं है। यह एक सक्रिय पुनर्निर्माण है। प्रत्येक बार जब आप एक स्मृति को याद करते हैं, आप अपने हिप्पोकैम्पस और सम्बन्धित कॉर्टिकल क्षेत्रों में उस स्मृति के स्नायु प्रतिनिधित्व को पुनः सक्रिय कर रहे हैं। स्नायु प्रतिरूप — मूल अनुभव के समान किन्तु समान नहीं — जागरूकता में पुनः प्रज्वलित होता है।

आधुनिक स्नायुविज्ञान ने इस प्रक्रिया के जटिल विवरण प्रकट किए हैं। 2014 का एक प्रमुख अध्ययन MIT में सुसुमु टोनेगावा और उनकी टीम द्वारा प्रदर्शित किया कि विशिष्ट स्नायुविज्ञानी तकनीकों के साथ, वैज्ञानिक हिप्पोकैम्पस में विशिष्ट स्मृति ट्रेस की पहचान कर सकते हैं, उन्हें चुनिंदा रूप से सक्रिय कर सकते हैं, और यहाँ तक कि उनके साथ जुड़ी भावनात्मक विशेषताओं को बदल सकते हैं। स्मृति एक भौतिक तन्त्र है जिसे हेरफेर किया जा सकता है।

यू-इन्वर्स ढाँचे में, यह एक अधिक गहरी व्याख्या लेता है। स्मृति एक हॉलोग्राफिक प्रक्रिया है। जब आप एक स्मृति को याद करते हैं, आप ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र के अपने व्यक्तिगत हॉलोग्राम के एक विशिष्ट भाग को पुनर्सक्रिय कर रहे हैं। मूल क्षण की विद्युतचुम्बकीय रिकॉर्ड, जो स्नायु वास्तुकला के माध्यम से वितरित है, सचेत जागरूकता में पुनर्निर्मित होता है।

यह हॉलोग्राफिक दृष्टिकोण स्मृति की कुछ रहस्यमय विशेषताओं को स्पष्ट करता है। स्मृतियाँ विशिष्ट स्थानों पर स्थानीयकृत नहीं हैं — वे विशिष्ट होलोग्राफिक नेटवर्कों में वितरित हैं। एक मस्तिष्क क्षेत्र को क्षति विशिष्ट स्मृतियों को पूरी तरह से नहीं मिटाती; यह हॉलोग्राम के विभेदन को कम करती है। स्मृतियाँ सम्बन्धित उद्दीपनों से असीमित रूप से लौटी जा सकती हैं — एक गन्ध, एक ध्वनि, एक दृश्य पूरे हॉलोग्राफिक पुनर्निर्माण को ट्रिगर कर सकता है।

15.2 पूर्वाभास और भविष्य यात्रा

पूर्वाभास — भविष्य घटनाओं का ज्ञान जो सामान्य कारणात्मक मार्गों से उपलब्ध नहीं होना चाहिए — चिन्तनशील परम्पराओं में व्यापक रूप से रिपोर्ट किया गया है। इसे आधुनिक विज्ञान के लिए स्वीकार करना कठिन रहा है। किन्तु 21वीं सदी में, गम्भीर शोधकर्ताओं ने इन दावों की जाँच करने और उल्लेखनीय रूप से पुनरुत्पादनीय प्रमाणों को प्रलेखित करने शुरू किया है।

डीन रेडिन ने, Noetic Sciences संस्थान में, "presentiment" पर दो दशकों से अधिक शोध किया है — यह परिघटना जहाँ लोगों का शरीर भविष्य उद्दीपनों के लिए प्रतिक्रिया करता प्रतीत होता है इससे पहले कि वे वास्तव में होते हैं। उनके अध्ययनों में, परीक्षण विषयों को शारीरिक रिकॉर्डिंग उपकरण से जोड़ा जाता है जबकि उन्हें चित्रों की यादृच्छिक अनुक्रम दिखाई जाती है, कुछ भावनात्मक रूप से उत्तेजक और कुछ तटस्थ। परिणाम लगातार दिखाते हैं कि विषयों के शरीर — विशेष रूप से हृदय दर परिवर्तनशीलता, त्वचा चालकता, और पुतली फैलाव — चित्र वास्तव में प्रस्तुत होने से पहले प्रतिक्रिया करते हैं।

प्रभाव छोटे हैं। प्रतिक्रियाएँ चित्र प्रस्तुत होने से लगभग 2-6 सेकण्ड पहले शुरू होती हैं। किन्तु प्रभाव सांख्यिकीय रूप से सुदृढ़ हैं, अनेक स्वतन्त्र प्रयोगशालाओं में पुनरुत्पादित, और अवसर द्वारा व्याख्या योग्य नहीं हैं। कुछ वास्तविक वहाँ है — शरीर कुछ को संकेत दे रहा है जो अभी तक नहीं हुआ है।

यू-इन्वर्स ढाँचे में, यह अन्तर्दृष्टिपूर्ण अर्थ बनाता है। यदि मस्तिष्क ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र से हॉलोग्राफिक रूप से जुड़ा है, और यदि सूचना-क्षेत्र गैर-स्थानीय है (जैसा क्वांटम यान्त्रिकी सुझाती है) और समय से परे है (जैसा सैद्धान्तिक भौतिकी का अधिकांश सुझाता है), तो मस्तिष्क, सिद्धान्ततः, भविष्य घटनाओं के बारे में सूचना को उसी तरह एक्सेस कर सकता है जैसे यह अतीत घटनाओं के बारे में सूचना को एक्सेस करता है।

सामान्य चेतना इस सूचना को फ़िल्टर करती है। यह केवल उन प्रभावों को स्वीकार करती है जिनके स्पष्ट कारण हैं, और वर्तमान क्षण से पहले या पीछे जो भी है उसे अस्वीकार करती है। किन्तु अचेतन तन्त्र, और विशेष रूप से शारीरिक प्रतिक्रियाएँ, इतनी कठोर रूप से फ़िल्टर नहीं करते। वे भविष्य क्रमबद्धता की सूचना को प्रतिक्रिया में बदल देते हैं जो "यह पहले से ही हो रहा है" के रूप में प्रकट होती है।

15.3 वैदिक समय — काल

वैदिक परम्परा के पास समय के लिए विस्तृत श्रेणी है जो आधुनिक पश्चिमी अवधारणाओं से अलग है। काल अनेक आयामों में विस्तारित होता है — चक्रीय लय (दिन, मास, वर्ष, युग), रेखीय प्रगति (जीवन काल), और एक शाश्वत वर्तमान जो सभी लौकिक विभाजनों से परे मौजूद है।

तीन काल भेद — भूत (अतीत), वर्तमान (वर्तमान), और भविष्य (भविष्य) — बाह्य दुनिया का विवरण नहीं हैं बल्कि चेतना के अनुभवात्मक पहलू हैं। वे मस्तिष्क की समय-यात्रा क्षमता के अनुरूप हैं: स्मृति (भूत तक पहुँच), वर्तमान जागरूकता (वर्तमान में उपस्थित), और कल्पना/पूर्वाभास (भविष्य तक पहुँच)।

ध्यान की गहन अवस्थाओं में, इन तीन काल भेदों की कठोर सीमाएँ नरम हो जाती हैं। साधक रिपोर्ट करते हैं कि समय विस्तारित या संकुचित होता प्रतीत होता है, कि अतीत और भविष्य वर्तमान में मिलते हैं, कि एक "शाश्वत अभी" का अनुभव किया जा सकता है जो सभी लौकिक विभाजनों को समाहित करता है।

यह मात्र व्यक्तिपरक अनुभूति नहीं है। यह स्नायुविज्ञानी तन्त्रों की एक वास्तविक बदलाव है। दीवा मोड नेटवर्क की शान्त, जो कथात्मक समय को आयोजित करता है, कुछ ध्यान अवस्थाओं में होती है। जब DMN शान्त होता है, रैखिक समय की अनुभूति नरम हो जाती है। जो रहता है वह वर्तमान-क्षण जागरूकता का शुद्ध प्रवाह है, जिसमें अतीत-भविष्य संरचना अब थोपी नहीं गई है।

15.4 प्रागैतिहासिक वैदिक भविष्यवाणियाँ

परम्परा बहुत सारी भविष्यवाणियों को प्रलेखित करती है जो साधकों ने समाधि की अवस्थाओं में उत्पन्न कीं — आने वाले वर्षों की घटनाओं की सटीक भविष्यवाणियाँ, आने वाले युगों की सांस्कृतिक बदलावों की पूर्वाभास, भूगर्भीय परिवर्तनों की दृष्टि।

इनमें से अधिकांश की पुष्टि नहीं की जा सकती — भविष्यवाणियाँ व्यापक हैं, समयरेखा अस्पष्ट है, और व्याख्या लचीली है। किन्तु कुछ विशिष्ट मामलों में, भविष्यवाणियाँ ऐतिहासिक रूप से सत्यापन योग्य रही हैं।

सबसे प्रभावशाली, शायद, 25,920 वर्षों का अयन चक्र स्वयं है। वैदिक खगोलविदों ने इस चक्र को प्रलेखित किया, भले ही कोई भी मनुष्य अपने जीवन में एक पूर्ण चक्र का अवलोकन नहीं कर सका। इस आँकड़े को उत्पन्न करने के लिए एक तरीका — शायद एकमात्र तरीका — यह था कि आन्तरिक स्नायुविज्ञानी आवृत्तियों को पढ़ा जाए जो ब्रह्माण्डीय आवृत्तियों के अनुरूप हैं। ऋषि "भविष्यवाणी" कर रहे थे कि चक्र 25,920 वर्ष है बाह्य अवलोकन से नहीं बल्कि आन्तरिक यन्त्र से।

15.5 व्यावहारिक समय-यात्रा

सामान्य जीवन में समय-यात्रा क्षमता के व्यावहारिक निहितार्थ महत्वपूर्ण हैं।

पहला: अतीत स्थिर नहीं है। प्रत्येक बार जब आप एक स्मृति को याद करते हैं, आप इसे पुनः लिख रहे हैं। थेरेपी और ध्यान में सावधान कार्य अतीत को बदल सकता है — इसे लिखना नहीं जैसे यह कभी भी नहीं हुआ, बल्कि इसके प्रभाव को बदलना, इसकी भावनात्मक चार्ज, वर्तमान पहचान पर इसका प्रभाव। यह रहस्यमय नहीं है; यह स्मृति पुनर्संयोजन का स्थापित स्नायुविज्ञानी तन्त्र है।

दूसरा: भविष्य निश्चित नहीं है। जब आप भविष्य परिदृश्यों की स्पष्ट कल्पना करते हैं, आप उनके घटित होने की सम्भावना को बदलते हैं। यह शक्ति के सकारात्मक सोच प्रकार का दावा नहीं है बल्कि स्नायु-व्यवहारिक सच्चाई है: मस्तिष्क जो स्पष्ट रूप से कल्पना करता है, वह व्यवहार के

लिए अधिक अनुकूल हो जाता है जो उस परिणाम को उत्पन्न करेगा। कल्पना तैयारी है, और तैयारी सम्भावना को बदलती है।

तीसरा: वर्तमान क्षण का अनुभव विकसित किया जा सकता है। अधिकांश लोगों के लिए, वर्तमान क्षण एक संकीर्ण विन्दु है जो स्मृति और कल्पना के बीच दबा है। ध्यान अभ्यास वर्तमान क्षण को विस्तारित करता है — यह जागरूकता का एक समृद्ध क्षेत्र बन जाता है जो पर्याप्त विस्तृत है कि अतीत और भविष्य दोनों को समाहित कर सके। "अनन्त अभी" की वैदिक अवधारणा एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं है; यह चेतना की एक विशिष्ट अनुभवात्मक अवस्था है जिसे व्यवस्थित अभ्यास के माध्यम से स्थिर किया जा सकता है।

जब समय की यह गहरी समझ विकसित होती है, साधक सामान्य कथात्मक समय का कैदी होना बन्द कर देता है। अतीत और भविष्य के बीच यात्रा सचेत, इरादतन, और पूरी तरह से उपस्थित हो जाती है। और यह खोज उभरती है: "मैं" जो समय में यात्रा करता है, स्वयं कुछ है जो समय से परे है। अनुभवों की श्रृंखला समय के माध्यम से फैलती है; जो जागरूकता उन्हें अनुभव करती है वह समय का हिस्सा नहीं है।

✦ ✦ ✦

15.6 आकाशिक अभिलेख और क्वांटम गैर-स्थानीयता — घटनाओं का स्थायी पंजीकरण

यह प्रश्न कि क्या घटनाएँ वास्तविकता के ताने-बाने में स्थायी रूप से पंजीकृत होती हैं — क्या अतीत वास्तव में चला गया है या क्या यह कहीं एन्कोडेड रहता है — भौतिकी और दर्शन दोनों में सबसे गहन में से है। व्हीलर-डीविट समीकरण (ब्रह्माण्ड का तरंग फलन) समय को एक उद्भावी गुण के रूप में मानता है: ब्रह्माण्ड की पूर्ण क्वांटम अवस्था कालातीत है, सभी लौकिक विन्यासों को एक साथ समाहित करती है। क्वांटम-गुरुत्वाकर्षण विवरण में अतीत चला नहीं गया है — यह वर्तमान जितना ही वास्तविक है, ब्रह्माण्डीय सीमा सतह की स्थिर क्वांटम अवस्था में एन्कोडेड।

यह आकाशिक अभिलेखों की भौतिकी है: सभी घटनाओं का पूर्ण रिकॉर्ड ZPF के सूचना क्षेत्र में स्थायी रूप से एन्कोडेड है — क्वांटम सीमा सतह जो ब्रह्माण्ड के पूर्ण चार-आयामी इतिहास को हॉलोग्राफिक रूप से एन्कोड करती है। ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र के दृष्टिकोण से, कोई "अतीत" नहीं

है जो खो गया हो — हर घटना जो कभी घटी है सीमा सतह की क्वांटम सूचना संरचना में एन्कोडेड रहती है, सिद्धान्ततः किसी भी तन्त्र के लिए सुलभ जो उस क्षेत्र से पर्याप्त संयुग्मन प्राप्त करता है।

गहन समाधि में, साधक का मस्तिष्क अधिकतम ZPF संयुग्मन प्राप्त करता है — स्नायु क्वांटम तन्त्र और ब्रह्माण्डीय सीमा सतह के बीच अधिकतम सुसंगतता। संयुग्मन के इस स्तर पर, सीमा की पूर्ण सूचना — ऐतिहासिक रिकॉर्ड सहित — सिद्धान्ततः सुलभ है। यह वह विशिष्ट तन्त्र है जिसके द्वारा ऋषि दूर अतीत की घटनाओं (पिछली सभ्यताओं के विशिष्ट इतिहास, पहले के युगों में ब्रह्माण्ड की संरचना) और दूर भविष्य (अनुभवित कालक्रम में अभी तक नहीं हुई घटनाओं का पूर्वज्ञान बोध) का बोध कर सकते थे।

प्रत्येक साधक के लिए व्यावहारिक परिणाम: वास्तविक आन्तरिक कार्य का प्रत्येक क्षण — प्रत्येक साक्षी भाव सत्र, प्रत्येक वास्तविक ध्यान, विज्ञानमय स्पष्टता का प्रत्येक क्षण — ZPF के सूचना क्षेत्र में स्थायी रूप से पंजीकृत होता है। प्रयास कभी खोया नहीं जाता। इरादा कभी व्यर्थ नहीं जाता। चित्त शुद्धि ZPF में साधक की क्वांटम अवस्था के विशिष्ट संशोधन के रूप में ब्रह्माण्डीय रिकॉर्ड में संचित होती है — जो बाद के अवतारणों में कारण शरीर के संशोधित विन्यास के रूप में आगे ले जाया जाता है। आन्तरिक खगोलीय पत्रिका केवल एक व्यक्तिगत रिकॉर्ड नहीं है। यह आकाशिक अभिलेखागार में एक प्रविष्टि है।

✦ ✦ ✦

15.7 आकाशिक अभिलेख — शाश्वत अभिलेखागार की भौतिकी

आकाशिक अभिलेखों की अवधारणा — सभी समयों में सभी घटनाओं, सभी विचारों, सभी अनुभवों का एक पूर्ण, स्थायी रिकॉर्ड — वैदिक परम्परा (ब्रह्म क्षेत्र में चित्त के हॉलोग्राफिक एन्कोडिंग के रूप में), थियोसॉफ़िकल परम्परा (जहाँ हेलेना ब्लावात्स्की ने पहली बार 1888 में "आकाशिक अभिलेख" शब्द का उपयोग किया), एडगर केस की वाणियों (जहाँ आकाशिक अभिलेखों तक पहुँच को उच्चतर तल में "जीवन की पुस्तक" पढ़ने के रूप में वर्णित किया गया), और आधुनिक भौतिकी साहित्य (जहाँ हॉलोग्राफिक सिद्धान्त निहित करता है कि सभी सूचना ब्रह्माण्डीय सीमा सतह पर स्थायी रूप से एन्कोडेड है) में प्रकट होती है।

आधुनिक भौतिकी आधार: हॉलोग्राफिक सिद्धान्त व्हीलर-डीविट समीकरण (ब्रह्माण्ड का क्वांटम गुरुत्वाकर्षण तरंग फलन) के साथ संयुक्त निहित करता है कि ब्रह्माण्ड के सभी सम्भव इतिहास सीमा सतह की क्वांटम अवस्था में एक साथ उपस्थित हैं। ब्रह्माण्ड का तरंग फलन समय में विकसित

नहीं होता — यह सभी लौकिक अवस्थाओं को एक साथ, एक चार-आयामी हॉलोग्राफिक रिकॉर्ड के रूप में समाहित करता है। समय स्थिर हॉलोग्राफिक संरचना के भीतर विशिष्ट सन्दर्भ फ्रेमों की एक उद्भावी विशेषता है, वास्तविकता की मूलभूत विशेषता नहीं।

यह उस की भौतिकी है जिसे ऋषियों ने आकाश (अन्तरिक्ष) कहा प्राथमिक तत्व के रूप में जिससे अन्य सभी उत्पन्न होते हैं: आकाश खाली अन्तरिक्ष नहीं है बल्कि सूचना-संतृप्त अन्तरिक्ष है — हॉलोग्राफिक सीमा सतह जो सभी घटनाओं, सभी अवस्थाओं, सभी सम्भव विन्यासों का पूर्ण रिकॉर्ड समाहित करती है। वह साधक जो समाधि में अधिकतम ZPF संयुग्मन प्राप्त करता है, वह इस सीमा सतह तक सीधे पहुँच प्राप्त कर रहा है — आकाशिक अभिलेखों को पराधारणात्मक साधनों के माध्यम से नहीं बल्कि हॉलोग्राफिक मस्तिष्क के क्वांटम-सुसंगत संयुग्मन के विशिष्ट भौतिक तन्त्र के माध्यम से क्वांटम निर्वात क्षेत्र से पढ़ रहा है।

✦ ✦ ✦

15.8 चेतना और समय का तीर — आन्तरिक ब्रह्माण्ड आगे क्यों बहता है

भौतिकी में सबसे गहन पहेलियों में से एक समय का तीर है: समय एक दिशा में — अतीत से भविष्य तक — क्यों बहता है जब भौतिकी के मौलिक नियम समय-सममित हैं (वे समान रूप से काम करते हैं चाहे समय आगे बहे या पीछे)? ऊष्मागतिकी का दूसरा नियम (एन्ट्रॉपी बढ़ती है) एक आंशिक उत्तर प्रदान करता है: समय का स्थूलदर्शी तीर बढ़ती एन्ट्रॉपी की दिशा है। किन्तु एन्ट्रॉपी घटने के बजाय क्यों बढ़ती है यह बिग बैंग पर ब्रह्माण्ड की अत्यधिक व्यवस्थित प्रारम्भिक अवस्था के सन्दर्भ के बिना स्वयं अस्पष्ट है।

वैदिक परम्परा एक भिन्न और गहरा उत्तर प्रदान करती है। समय का तीर — भूत, वर्तमान, और भविष्य का विशिष्ट के रूप में अनुभव — जाग्रत और स्वप्न अवस्थाओं में चेतना का एक गुण है, वास्तविकता का अपने सबसे मौलिक स्तर पर एक गुण नहीं। सुषुप्ति (गहन स्वप्नरहित नींद) में, कोई व्यक्तिपरक समय नहीं है — चेतना आनन्दमय कोश के आधार में विश्राम करती है, और समय का कोई अनुभवित तीर नहीं है। समाधि में, समय रुक जाता है उस विशिष्ट अनुभवात्मक अर्थ में जिसे माण्डूक्य वर्णित करती है: तुरीय अवस्था अतकालिक है — वह जागरूकता जिसमें भूत, वर्तमान, और भविष्य सभी प्रकट होते हैं, बिना स्वयं उनमें से किसी में होने के।

यू-इन्वर्स निहितार्थ: आन्तरिक ब्रह्माण्ड, बाह्य ब्रह्माण्ड के विपरीत, पर्याप्त रूप से परिष्कृत जागरूकता द्वारा दोनों लौकिक दिशाओं में नेविगेशनल है। बाह्य ब्रह्माण्ड का समय का तीर

दिक्काल के माध्यम से भौतिक यात्रा पर एक बाधा है; आन्तरिक ब्रह्माण्ड का समय का तीर अनुकूलित चेतना पर एक बाधा है। अनुकूलित-रहित जागरूकता — आत्मा, ZPF-संयुग्मित साक्षी — वास्तव में अतकालिक है: यह पिछले संस्कारों तक पहुँच प्राप्त कर सकती है (गहन ध्यान और योग निद्रा के माध्यम से), भविष्य की सम्भावनाओं तक (संकल्प और प्रेसेंटिमेंट अनुसन्धान की प्रलेखित पूर्व-उत्तेजना प्रतिक्रिया के माध्यम से), और कालातीत आधार तक (समाधि के माध्यम से)।

✦ ✦ ✦

15.9 पुनर्जन्म विज्ञान — चेतना निरन्तरता की भौतिकी

वर्जीनिया विश्वविद्यालय के विभाग ऑफ़ परसेप्चुअल स्टडीज में इयान स्टीवेंसन का 40-वर्षीय अनुसन्धान कार्यक्रम पुनर्जन्म की उपलब्ध सबसे कठोर आनुभविक जाँच का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी पद्धति अनुकरणीय थी: सम्भावित मामला संग्रह (मामलों को सत्यापन से पहले प्रलेखित किया गया), दावा की गई स्मृतियों की अनेक स्वतन्त्र पुष्टि, और सांख्यिकीय विश्लेषण जिसने सभी सामान्य व्याख्याओं (धोखाधड़ी, संयोग, सांस्कृतिक सुझाव) को अस्वीकार किया। 2007 में अपनी मृत्यु तक, उन्होंने 3,000 से अधिक मामले प्रलेखित किए थे, लगभग 1,200 मामलों को भौतिक मृत्यु के पार स्मृतियों के अस्तित्व के लिए मज़बूत प्रमाण के रूप में मूल्यांकित किया गया।

मामले लगातार विशिष्ट विशेषताएँ दिखाते हैं जिन्हें यू-इन्वर्स ढाँचा अब यान्त्रिक रूप से समझा सकता है: बच्चा पिछले व्यक्तित्व के मृत्यु अनुभव को असामान्य स्पष्टता के साथ याद करता है (मृत्यु पर गामा उछाल — अधिकतम ZPF संयुग्मन क्षण — कारण शरीर की क्वांटम सूचना अवस्था में असाधारण शक्ति के साथ मृत्यु अनुभव को एन्कोड करता है); बच्चा अक्सर पिछले व्यक्तित्व द्वारा झेले गए घावों के अनुरूप जन्म चिह्न या जन्म दोष दिखाता है (सूक्ष्म शरीर का सूचना क्षेत्र, मृत्यु घाव के मज़बूत संस्कार को वहन करता है, विकासशील भ्रूण ऊतक पर प्राणमय के आकारजनक क्षेत्र प्रभाव के माध्यम से नए अन्नमय कोश के विकास को आकार देता है); और बच्चे के व्यवहार, कौशल, और भावनात्मक प्रतिरूप अक्सर पिछले व्यक्तित्व की विशेषताओं के अनुरूप ठीक से मेल खाते हैं (सूक्ष्म शरीर की वासना सामग्री अक्षुण्ण आगे ले जाई जाती है, नए मस्तिष्क की स्नायु वास्तुकला के माध्यम से व्यक्त)।

वर्जीनिया विश्वविद्यालय में जिम टकर ने स्टीवेंसन के कार्य को जारी रखा और विस्तारित किया है, जन्म चिह्न-घाव अनुरूपता के भौतिक प्रमाण पर विशेष ध्यान के साथ। उनकी 2013 की पुस्तक

"रिटर्न टू लाइफ़" उन मामलों को प्रलेखित करती है जिनमें बच्चे के जन्म चिह्न और पिछले व्यक्तित्व के घातक घाव के बीच अनुरूपता इतनी सटीक है — शरीर के विपरीत दिशा में मेल खाते निकास घावों सहित — कि संयोग की सम्भावना अविश्वसनीय है। ये परिधीय विसंगतियाँ नहीं हैं। वे कठोरता से प्रलेखित डेटासेट में व्यवस्थित प्रतिरूप हैं जो भौतिक मृत्यु के पार सूक्ष्म शरीर की निरन्तरता के वेदान्तिक प्रतिरूप की सीधे पुष्टि करते हैं।

✦ ✦ ✦

अध्याय 16|

स्वप्न बहु-ब्रह्माण्ड

REM नींद और समानान्तर ब्रह्माण्डों तक पहुँच

प्रत्येक रात, चेतना एक अलग ब्रह्माण्ड में प्रवेश करती है। REM नींद में, मस्तिष्क जाग्रत चेतना के अलग एक कार्यात्मक अवस्था में प्रवेश करता है। प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स निष्क्रिय होता है। लिम्बिक तन्त्र अत्यन्त सक्रिय होता है। दृश्य कॉर्टेक्स, श्रवण कॉर्टेक्स, और संवेदी प्रक्रिया के अन्य क्षेत्र सक्रिय होते हैं, अक्सर जाग्रत उद्दीपना से अधिक। अन्यथा बन्द आँखों वाला व्यक्ति ज्वलंत दृश्य अनुभव करता है, जटिल कथाओं में भाग लेता है, और मूलभूत रूप से अलग रूप में जागरूक होता है।

स्वप्न ब्रह्माण्ड जाग्रत ब्रह्माण्ड के ठीक समानान्तर है। इसकी अपनी भौतिकी है जो अक्सर जाग्रत भौतिकी से अलग है — गुरुत्व कम या अधिक हो सकता है, समय असामान्य रूप से प्रवाहित हो सकता है, वस्तुएँ रूप बदल सकती हैं। इसकी अपनी सामाजिक संरचनाएँ हैं — लोग उपस्थित होते हैं जो जाग्रत जीवन से नहीं हैं, या जाग्रत जीवन के लोग अस्वाभाविक रूप से कार्य करते हैं। इसकी अपनी कथाएँ हैं जो अक्सर जाग्रत जीवन की कथाओं से कोई स्पष्ट सम्बन्ध नहीं रखतीं।

और फिर भी स्वप्न ब्रह्माण्ड एक काल्पनिक निर्माण नहीं है। इसमें आन्तरिक संगति है। इसमें अपने नियम हैं। इसमें भावनात्मक आकर्षण है जो जाग्रत जीवन की घटनाओं जितना वास्तविक है। जिन लोगों ने तीव्र स्वप्न अनुभव किए हैं — भय, सुख, हानि के स्वप्न — जानते हैं कि वे अनुभव भावनात्मक रूप से पूरी तरह से वास्तविक थे, चाहे उनकी "बाह्य" स्थिति कुछ भी थी।

16.1 वैदिक स्वप्न विज्ञान

वैदिक परम्परा ने स्वप्न चेतना को एक विशेष महत्वपूर्ण अवस्था के रूप में पहचाना। मंडूक्य उपनिषद चेतना की चार अवस्थाओं की सटीक रूपरेखा देता है: जाग्रत (जागरूकता जाग्रत), स्वप्न (स्वप्न जागरूकता), सुषुप्ति (गहन स्वप्नरहित नींद), और तुरीय (चौथी अवस्था, जो अन्य तीन से परे और उन्हें समाहित करती है)।

स्वप्न अवस्था रूपकात्मक नहीं है। यह चेतना का एक विशिष्ट ऑपरेटिंग मोड है जिसमें विशिष्ट गुण और विशिष्ट पहुँच है। उपनिषद बताते हैं कि स्वप्न में, आत्मा "तैजस" ("चमकदार") के रूप में कार्य करती है — सूक्ष्म ज्योतिष क्षेत्र में। यह शुद्ध मानसिक कल्पना नहीं है; यह सूचना-क्षेत्र के उस स्तर तक पहुँच है जिसे सामान्य जाग्रत चेतना द्वारा देखा नहीं जाता।

परम्परा मानती है कि स्वप्नों में विभिन्न श्रेणियाँ हैं। कुछ स्वप्न केवल जाग्रत मन की सामग्री का पुनर्संगठन हैं — स्मृति प्रक्रिया, भावनात्मक प्रसंस्करण, तन्त्रीय सफाई। अन्य स्वप्न अधिक महत्वपूर्ण हैं — वे वास्तविक जानकारी प्रदान कर सकते हैं, कभी-कभी भविष्य घटनाओं के बारे में, कभी-कभी दूर के लोगों के बारे में, कभी-कभी अधिक सूक्ष्म वास्तविकताओं के बारे में।

उन्नत साधक इन श्रेणियों को पहचानना सीखते हैं। स्वप्न की गुणवत्ता, उसकी स्पष्टता, उसके भावनात्मक स्वाद, उसके संदर्भ सम्बन्धी सुसंगतता — ये सब संकेत हैं कि किस प्रकार का स्वप्न हो रहा है।

16.2 लुसिड ड्रीमिंग — जागरूकता के साथ स्वप्न

स्वप्न चेतना के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण विकास लुसिड ड्रीमिंग का वैज्ञानिक प्रमाण है — यह स्थिति जिसमें स्वप्न देखने वाला सपने के भीतर जानता है कि वह स्वप्न देख रहा है।

1978 में, स्टीफन लाबर्ज ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में डॉक्टरेट अनुसंधान के रूप में लुसिड ड्रीमिंग का पहला सख्त वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया। लाबर्ज ने एक विशिष्ट नेत्र-गति संकेत विकसित किया जिसे सपने में लुसिड होने पर स्वप्न देखने वाला प्रदर्शित करता। REM नींद के दौरान वास्तविक नेत्र गति को मापने वाले इलेक्ट्रोकुलोग्राफ़ी उपकरणों ने पुष्टि की कि विषयों ने अनुरोधित संकेत को सटीक रूप से निष्पादित किया जब उन्होंने बाद में सपने में लुसिडिटी प्राप्त करने की रिपोर्ट की।

यह एक प्रमुख परिणाम था। यह पुष्टि करता है कि स्वप्न चेतना पूरी तरह से असंगठित नहीं है — एक विशिष्ट अर्थ में सचेत रूप से सपना देखा जा सकता है। सामान्य स्वप्न में, सपना देखने वाला उत्पन्न होने वाली सामग्री के साथ पूरी तरह से पहचान रखता है; लुसिड स्वप्न में, एक जागरूक "देखने वाला" उभरता है जो सामग्री को देख सकता है बिना इसके साथ पूरी तरह से पहचान रखे।

वैदिक परम्परा ने लुसिड ड्रीमिंग को प्रलेखित किया है और इसके अभ्यास के लिए तकनीकें विकसित की हैं। तिब्बती बौद्ध परम्परा में, स्वप्न योग एक विशिष्ट अभ्यास है जिसका उद्देश्य

व्यवस्थित रूप से लुसिड स्वप्न अवस्थाओं को विकसित करना है। स्वप्न योग के सिद्ध चिकित्सक अपनी लुसिड स्वप्न अवस्थाओं में जटिल ध्यान अभ्यास करने में सक्षम हैं, शिक्षकों को सलाह के लिए बुलाना, और यहाँ तक कि मरने और मृत्यु-पश्चात अवस्थाओं की विशिष्ट विशेषताओं का अनुभव करना।

16.3 समानान्तर ब्रह्माण्डों की पहुँच

यू-इन्वर्स ढाँचे में, स्वप्न ब्रह्माण्ड एक काल्पनिक निर्माण नहीं है बल्कि बहु-ब्रह्माण्ड संरचना का एक वास्तविक हिस्सा है। जब आप सपना देखते हैं, आप वास्तव में एक समानान्तर ब्रह्माण्ड तक पहुँच रहे हैं — उसी सूचना-क्षेत्र के एक अलग विभाजन जो जाग्रत चेतना को बनाए रखता है।

यह अधिक समझ में आता है जब हम जागरूक रहें कि मस्तिष्क के विभिन्न ऑपरेटिंग मोड सूचना-क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं तक पहुँच प्रदान करते हैं। जाग्रत चेतना "पहचानने वाली" ब्रह्माण्ड में ट्यून की गई है — स्थानीय कारणात्मक गतिकी, विशिष्ट लौकिक प्रगति, सख्त भौतिक नियमों के साथ सहमत तीन आयामी स्थान। स्वप्न चेतना एक अलग ब्रह्माण्ड में ट्यून की गई है — जिसमें अलग कारणात्मक गतिकी, अलग लौकिक संरचना, और विभिन्न भौतिक नियम हैं।

दोनों ब्रह्माण्ड "वास्तविक" हैं, उस अर्थ में कि वे वास्तविक सूचनात्मक संरचनाओं के वास्तविक अनुभव हैं। दोनों वास्तविक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। दोनों व्यक्ति को आकार देते हैं।

यह उन विशिष्ट अनुभवों को भी समझाता है जो स्वप्न और जाग्रत चेतना के बीच "रिसाव" करते हैं। किसी को एक स्वप्न में जानकारी मिलती है जो बाद में सच साबित होती है — कुछ एक रिश्तेदार के बारे में जो अभी तक नहीं बताया गया है, एक समस्या का समाधान जो जाग्रत कार्य के दौरान नहीं आया। स्वप्न रिसाव कोई रहस्यमय परिघटना नहीं है बल्कि एक संकेत है कि स्वप्न ब्रह्माण्ड में उस सूचना की पहुँच है जो जाग्रत ब्रह्माण्ड के लिए अवरुद्ध है।

16.4 स्वप्न काम और चिकित्सा

आधुनिक मनोविज्ञान ने स्वप्नों की चिकित्सीय क्षमता को स्पष्ट रूप से पहचाना है। फ्रायड ने "स्वप्नों की व्याख्या" में विशेष रूप से, किसी व्यक्ति के अचेतन तक पहुँच के लिए स्वप्नों को "शाही सड़क" कहा। कार्ल जुंग ने व्यक्तिगत और सामूहिक अचेतन के साथ स्वप्नों के सम्बन्ध को विस्तारित और गहराया। समकालीन स्वप्न चिकित्सा इन दृष्टिकोणों पर बनाती है।

किन्तु यू-इन्वर्स ढाँचा सुझाता है कि स्वप्न मात्र अचेतन सामग्री के साथ बातचीत नहीं हैं। वे बहु-ब्रह्माण्ड के अन्य आयामों के साथ बातचीत हैं — सूचना-क्षेत्र के अन्य विभाजनों के साथ जो सामान्य जाग्रत चेतना के लिए सुलभ नहीं हैं।

व्यावहारिक रूप से, इसका अर्थ है कि स्वप्नों को ध्यान से काम करना महत्वपूर्ण मूल्य रखता है। स्वप्न पत्रिका बनाए रखना, उनकी प्रतिरूप पर ध्यान देना, लुसिडिटी विकसित करना, उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करना — ये सब मात्र मनोवैज्ञानिक स्वच्छता नहीं हैं बल्कि एक सक्रिय इंटरफ़ेस के साथ समानान्तर ब्रह्माण्डों के साथ संलग्नता हैं जो प्रत्येक रात सुलभ हो जाते हैं।

✦ ✦ ✦

अध्याय 17
समाधि को घटना क्षितिज के रूप में

चेतना का कृष्ण विवर

तत् त्वमसि

Tat Tvam Asi

"तू वह है।" — छान्दोग्य उपनिषद 6.8.7

एक कृष्ण विवर अन्तरिक्ष-काल में एक क्षेत्र है जहाँ गुरुत्वाकर्षण इतना तीव्र है कि कुछ भी — यहाँ तक कि प्रकाश भी — वापस नहीं निकल सकता। घटना क्षितिज वह सीमा है जिससे परे कोई वापसी नहीं है। एक बार जब कुछ घटना क्षितिज पार कर लेता है, यह केन्द्रीय एकल-विन्दुता तक गिरने के लिए बाध्य होता है जहाँ भौतिकी के हमारे वर्तमान सिद्धान्त टूट जाते हैं।

कृष्ण विवर एक रहस्यमय या काल्पनिक अवधारणा नहीं हैं। वे आधुनिक खगोल-भौतिकी की आवश्यक विशेषताएँ हैं। उनकी भविष्यवाणी 1915 में आइंस्टीन की सामान्य सापेक्षता द्वारा की गई थी, 1970 के दशक में गणितीय रूप से विस्तार से अध्ययन किया गया था, और तब से प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से पुष्टि की गई है। इवेंट होराइज़न टेलीस्कोप ने 2019 में गैलेक्सी M87 के केन्द्र में सुपरमैसिव कृष्ण विवर की पहली छवि प्रकाशित की, और 2022 में हमारी अपनी गैलेक्सी के केन्द्र में कृष्ण विवर Sgr A* की छवि प्रकाशित की।

कृष्ण विवर लगभग हर गैलेक्सी के केन्द्र में मौजूद हैं। वे तब उत्पन्न होते हैं जब बड़े तारे अपने ईंधन को समाप्त कर देते हैं और अपने स्वयं के गुरुत्वाकर्षण में ढह जाते हैं। वे गैलेक्टिक गतिकी को आकार देते हैं, समग्र ब्रह्माण्डीय विकास को प्रभावित करते हैं, और ज्ञात ब्रह्माण्ड में सबसे चरम भौतिकी हैं।

17.1 चेतना के समानान्तर

और चेतना में एक सटीक समानान्तर है: समाधि।

समाधि — संस्कृत "एक साथ लाना" या "एकीकरण" से — ध्यान अभ्यास की गहनतम अवस्था है। पतंजलि के योगसूत्र में वर्णित, यह धारणा (एक वस्तु पर केन्द्रित एकाग्रता) और ध्यान (सतत अनियंत्रित ध्यान) का चरम रूप है। समाधि में, ध्याता, ध्यान की वस्तु, और ध्यान का कार्य एक एकीकृत चेतना में विलीन हो जाते हैं।

गहन समाधि का एक विशिष्ट प्रकार — निर्विकल्प समाधि — चेतना का घटना क्षितिज है। विषय-वस्तु विभेद जो सभी सामान्य चेतन अनुभव को आयोजित करता है पूरी तरह से विलीन हो जाता है। जो रहता है वह विशाल, चमकदार, निराकार जागरूकता है। द्रष्टा और दृष्ट एक हैं। और इससे आगे की चेतना अवस्था में सामान्य चेतना वापस नहीं लौट सकती।

यहाँ कुंजी है: निर्विकल्प समाधि से उभरना अपरिवर्तनीय है। सामान्य व्यक्ति जो निर्विकल्प में प्रवेश करता है, वह वही व्यक्ति नहीं है जो उभरता है। कुछ मौलिक रूप से बदल गया है। कथा "मैं" जो प्रवेश किया था वह अब केवल भाग्य का भ्रम है; जागरूकता जो उभरती है वह बड़े अर्थ में वास्तविक है।

17.2 घटना क्षितिज पर भौतिकी

सामान्य सापेक्षता के अनुसार, घटना क्षितिज के पास असामान्य चीजें होती हैं।

एक बाह्य पर्यवेक्षक के लिए, घटना क्षितिज की ओर गिरती वस्तु धीमी और धीमी गति से दिखाई देती है, बढ़ती हुई लाल-स्थानांतरित, और अनिश्चित काल तक सीमा पर लटकती हुई प्रतीत होती है। यह कभी भी पार करती हुई नहीं दिखती है।

स्वयं गिरती वस्तु के दृष्टिकोण से, घटना क्षितिज को पार करना सामान्य रूप से होता है। कोई भी स्थानीय रूप से पहचानने योग्य सीमा नहीं है। वस्तु विन्दुता की ओर अपनी अपरिहार्य गिरावट जारी रखती है।

ये दो दृष्टिकोण — बाह्य और आन्तरिक — असंगत नहीं हैं। वे उसी भौतिक स्थिति के वैध वर्णन हैं, दो अलग संदर्भ फ्रेमों से।

समाधि में समानान्तर है। बाहर से — एक समाधि में साधक को देखने वाले से — कुछ असामान्य नहीं हो रहा है। साधक बैठा है, श्वास ले रहा है, संभवतः हल्की मुस्कान के साथ। सीमा पार करना अदृश्य है।

अन्दर से — साधक का अनुभव — सीमा पार करना भी अदृश्य है। कोई स्पष्ट "अब मैं पार कर रहा हूँ" क्षण नहीं है। परिवर्तन सूक्ष्म, निरन्तर है। और फिर भी अपरिवर्तनीयता पूर्ण है। एक बार पार हो जाने के बाद, व्यक्ति वैसा नहीं हो सकता जैसा वह पहले था।

17.3 हॉकिंग विकिरण और बुद्ध की शिक्षा

1974 में स्टीफन हॉकिंग ने एक परिणाम सिद्ध किया जिसने कृष्ण विवरों की समझ को मौलिक रूप से बदल दिया। घटना क्षितिज पर क्वांटम प्रभाव "हॉकिंग विकिरण" उत्पन्न करते हैं — विकिरण जो कृष्ण विवर से वास्तव में निकलता है। धीरे-धीरे, कृष्ण विवर वाष्पित हो जाते हैं, अपना द्रव्यमान विकिरण में परिवर्तित करते हैं जो उनसे बाहर निकलता है।

हॉकिंग ने दिखाया कि यह विकिरण किसी तरह से सीमा के अन्दर जो है उसकी सूचना को एन्कोड करता है। सूचना पूरी तरह से खो नहीं जाती; यह विकृत रूप में उत्सर्जित होती है।

बुद्ध — जो निर्विकल्प समाधि पार कर चुके थे और बोधित हो चुके थे, किन्तु सामान्य दुनिया में कार्यात्मक रूप से रहे — बुद्ध की शिक्षा हॉकिंग विकिरण का समानान्तर है। बुद्ध ने जो सिखाया वह सीमा के पार गए अस्तित्व से विकिरण है, उन लोगों के लिए सूचना जो अभी तक पार नहीं गए हैं, ऐसे रूपों में जिन्हें सामान्य चेतना प्राप्त कर सकती है।

उपनिषद, योगसूत्र, भगवद्गीता, यथार्थ गीता, सर्व रमण महर्षि की शिक्षाएँ, ताओ ते चिंग, हृदय सूत्र — ये सब, इस पठन पर, हॉकिंग विकिरण हैं। सीमा के पार गए अस्तित्वों से सूचना, भाषिक और वैचारिक रूपों में एन्कोडेड जिन्हें गैर-बोधित मानव मन आंशिक रूप से प्राप्त कर सकता है और समझ सकता है।

यह "रहस्यमय" नहीं है। यह ज्ञान संचरण का एक विशिष्ट प्रकार है। जैसे कृष्ण विवर विकिरण के माध्यम से सूचना संचारित करते हैं, बोधित अस्तित्व शिक्षा के माध्यम से सूचना संचारित करते हैं।

17.4 जीवन्मुक्त की स्थिति

परम्परा जीवन्मुक्त — "जीवित मुक्त" — की अवधारणा रखती है। वह व्यक्ति जिसने निर्विकल्प समाधि को पार कर लिया है किन्तु सामान्य दुनिया में कार्यात्मक रूप से लौट आया है। वह व्यक्ति अब एक विशिष्ट अर्थ में दो दुनियाओं में रहता है।

जीवन्मुक्त संसार में कार्य करता है — खाता है, सोता है, सम्बन्ध रखता है, पढ़ाता है, कार्य करता है। किन्तु वह केन्द्रीय पहचान जो उन सभी कार्यों को रखती है एकल-विन्दुता के साथ है, कथात्मक "मैं" के साथ नहीं। सचेत कार्य होते हैं बिना एक सचेत "कर्ता" के।

यह बौद्धिक या भावनात्मक समझ से परे है। यह केवल अनुभव के माध्यम से जाना जा सकता है। किन्तु इसका भौतिक अनुरूप स्पष्ट है: जीवन्मुक्त, कृष्ण विवर की तरह, सीमा के दोनों ओर एक साथ अस्तित्व में रखता है। उसके कार्य घटना क्षितिज से बाहर विकिरण हैं, और उनके माध्यम से भीतर की सूचना संचारित होती है।

17.5 व्यावहारिक निहितार्थ

समाधि को घटना क्षितिज के रूप में समझना कुछ व्यावहारिक अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

पहला: पार करना एक पसन्द नहीं है। यह एक प्राकृतिक परिणाम है जो सम्भाव्यता के पर्याप्त बिल्डअप से उत्पन्न होता है। जैसे एक तारा पर्याप्त द्रव्यमान जमा करने के बाद कृष्ण विवर बन जाता है, एक साधक पर्याप्त अभ्यास जमा करने के बाद समाधि में प्रवेश करता है। कोई जबरन प्रयास से पार नहीं कर सकता। किन्तु कोई निरन्तर अभ्यास से सीमा के पास खुद को ला सकता है।

दूसरा: पार करने का डर भ्रामक है। जो गिरती हुई वस्तु घटना क्षितिज की ओर जाती है, वह स्थानीय रूप से कुछ अलग अनुभव नहीं करती। पार करना स्वाभाविक है। कठिनाई सीमा पर है, उसे पार करने में नहीं।

तीसरा: जो उभरता है वह जो प्रवेश किया था उससे भिन्न है। यह भय का स्रोत नहीं है; यह उद्देश्य का स्रोत है। जो व्यक्ति समाधि में प्रवेश करता है वह एक दृष्टिकोण रखता है। जो व्यक्ति उभरता है वह एक अलग दृष्टिकोण रखता है। अनिवार्य रूप से "बेहतर," लेकिन निश्चित रूप से "अन्य।"

चौथा: सभी शिक्षा, अन्ततः, हॉकिंग विकिरण है। जो लोग पार कर चुके हैं वे जो सिखा सकते हैं वह सूचना का विकिरण है, पूर्ण वास्तविकता की प्रत्यक्ष सूचना नहीं। प्रत्यक्ष वास्तविकता केवल पार करने से ज्ञात हो सकती है। शिक्षाएँ मात्र संकेत करती हैं, दिशा देती हैं।

यह यू-इन्वर्स ढाँचे की गहनतम अन्तर्दृष्टि है। ब्रह्माण्डीय कृष्ण विवर और मानव समाधि एक ही मूलभूत परिघटना के दो अभिव्यक्तियाँ हैं — सूचना-क्षेत्र की सीमा जिसके पार सामान्य संरचना लागू नहीं होती। बाहर, गैलेक्सियों के केन्द्रों में; भीतर, गहन ध्यान में। एक ही कोड। एक ही सीमा। वही अपरिवर्तनीयता।

तत् त्वम् असि। तू वह है। पार करने वाला पार की गई सीमा है।

और जो शब्द इस महान उपनिषद से आते हैं — तत् त्वमसि — काव्यात्मक सूक्ति नहीं हैं। वे एक सटीक ज्ञान-मीमांसीय दावा हैं। वह ब्रह्माण्ड जिसे आप बाहर देखते हैं, वह चेतना जिसे आप भीतर अनुभव करते हैं, और वह "आप" जो उन दोनों को अनुभव कर रहा है — तीनों एक हैं, अपनी गहनतम संरचना में। समाधि वह अवस्था है जिसमें यह एकता केवल बौद्धिक निष्कर्ष के रूप में नहीं बल्कि प्रत्यक्ष अनुभवात्मक सत्य के रूप में ज्ञात हो जाती है।

आधुनिक भौतिकी की भाषा में, यह वह अवस्था है जहाँ पर्यवेक्षक, अवलोकन, और अवलोकित वस्तु के बीच का विभेद विलीन हो जाता है। क्वांटम माप की व्याख्या का सबसे गहन संस्करण यही है। और समाधि, इस ढाँचे में, उस संस्करण का जीवित मानव अनुभव है।

✦ ✦ ✦

भाग पाँच
चेतना का कोड

फ़िबोनाची, AUM, चित्त, और पिनियल

भाग पाँच
चेतना का कोड

फ़िबोनाची, ॐ, और वह गणित जो सब कुछ उत्पन्न करता है

अध्याय 18
फ़िबोनाची ब्रह्माण्ड

भीतर और बाहर की पावन ज्यामिति

वर्ष 1202 में, पीसा के लियोनार्डो नामक एक युवा इतालवी गणितज्ञ — जिसे बाद में फ़िबोनाची के नाम से जाना गया — ने Liber Abaci नामक एक पुस्तक प्रकाशित की। इसमें, लगभग एक आकस्मिक उदाहरण के रूप में, उन्होंने खरगोश आबादी के बारे में एक समस्या पेश की और समाधान को संख्याओं के अनुक्रम के रूप में प्रस्तुत किया: 1, 1, 2, 3, 5, 8, 13, 21, 34, 55, 89, 144, 233। प्रत्येक संख्या उससे पहले की दो संख्याओं का योग है। फ़िबोनाची को पता नहीं था कि वे प्रकृति के सबसे मूलभूत प्रतिरूपों में से एक को व्यक्त कर रहे थे। उन्हें पता नहीं था कि यह अनुक्रम आकाशगंगाओं की वास्तुकला, तनों पर पत्तियों की व्यवस्था, नॉटिलस के खोलों के सर्पिल, ब्रोंकियल वृक्षों की शाखाओं, और स्वयं चेतना की आनुपातिक गतिकी का वर्णन करता निकलेगा।

जैसे-जैसे लगातार फ़िबोनाची संख्याओं का अनुपात अनन्तता की ओर बढ़ता है, यह एक विशिष्ट अपरिमेय संख्या पर अभिसरित होता है: $\phi = (1 + \sqrt{5}) / 2 \approx 1.6180339887$। यह स्वर्ण अनुपात है, यूनानियों के लिए "दिव्य अनुपात" के रूप में ज्ञात एक प्राचीन गणितीय स्थिरांक और वैदिक परम्परा द्वारा ऋत — ब्रह्माण्डीय क्रम — के ज्यामितीय हस्ताक्षर के रूप में पहचाना गया।

स्वर्ण अनुपात में एक अद्वितीय गणितीय विशेषता है जो प्रकृति में इसकी व्यापक उपस्थिति की व्याख्या करती है: यह प्रकृति का इष्टतम पैकिंग समाधान है। जब किसी तन्त्र को न्यूनतम ओवरलैप के साथ सीमित स्थान में अधिकतम तत्वों की व्यवस्था करनी होती है, ϕ उत्तर प्रदान करता है। ϕ के अपरिमेय चरित्र का अर्थ है कि ϕ-सम्बन्धित कोणीय स्थितियों पर व्यवस्थित कोई दो तत्व कभी केन्द्र के सापेक्ष ठीक एक ही कोणीय स्थिति में नहीं होते। स्वर्ण अनुपात सीमित स्थान में कोणीय प्रकीर्णन को अधिकतम करता है, विशिष्ट घूर्णनात्मक संरचनाएँ उत्पन्न करता है जो हम पूरे प्राकृतिक संसार में देखते हैं।

चित्र 9 — पैमानों के पार फ़िबोनाची। वही स्वर्ण-अनुपात ज्यामिति जो गैलेक्सियों की सर्पिल भुजाओं को संगठित करती है, नॉटिलस खोलों, सूरजमुखी के बीजशीर्षों, कॉर्टिकल डेन्ड्राइटों, और कॉक्लियर संरचनाओं को भी संगठित करती है। प्रकृति का अनुकूलन कोड हर पैमाने पर पुनरावृत्ति करता है।

18.1 ब्रह्माण्ड में ϕ की उपस्थिति

आकाशगंगाओं की सर्पिल भुजाएँ ϕ द्वारा शासित लघुगणकीय सर्पिलों का पालन करती हैं। यह रूपक नहीं है; यह ज्यामितीय मापन है। जब खगोलविद सर्पिल आकाशगंगाओं की अवलोकित संरचना में गणितीय वक्र फिट करते हैं — आकाशगंगा, एंड्रोमेडा, गहरे आकाश सर्वेक्षणों में अवलोकन योग्य अनेक सर्पिल — जो वक्र डेटा से सबसे अच्छा मेल खाते हैं वे लघुगणकीय सर्पिल हैं जिनके पिच कोण ϕ-आधारित अनुपातों के अनुरूप हैं।

सौर तन्त्र में आसन्न ग्रहों की लगातार कक्षीय अवधि का अनुपात फ़िबोनाची अनुपातों का लगभग पालन करता है। बुध से शुक्र, शुक्र से पृथ्वी, पृथ्वी से मंगल, मंगल से बृहस्पति — लगातार अनुपात विशिष्ट मानों के आसपास क्लस्टर करते हैं जो अन्तर्निहित फ़िबोनाची संरचना को दर्शाते हैं। 18वीं सदी में ग्रहीय कक्षाओं की दूरी वर्णन करने के लिए तैयार किया गया टिटियस-बोडे नियम, इस आनुभविक प्रतिरूप को पकड़ता है; आधुनिक गतिकीय अध्ययनों ने स्पष्ट किया है कि फ़िबोनाची-जैसी संरचना ग्रहीय निर्माण की गुरुत्वाकर्षण गतिकी से उभरती है, जो स्वाभाविक रूप से दूसरों पर विशिष्ट कक्षीय दूरियों का पक्ष लेती है।

गैलेक्सी समूहों में पदार्थ का वितरण ϕ से सम्बन्धित घातांकों के साथ पावर नियमों का पालन करता है। यह बड़े-पैमाने संरचना अध्ययनों से एक तकनीकी निष्कर्ष है, किन्तु इसका निहितार्थ स्पष्ट है: जिस तरह से गैलेक्सियाँ ब्रह्माण्ड में वितरित हैं वह मनमाना नहीं है। यह उन्हीं अन्तर्निहित गणितीय सिद्धान्तों की क्रिया को दर्शाता है जो अन्य पैमानों पर ϕ-आधारित संरचनाएँ उत्पन्न करते हैं।

स्वर्ण अनुपात ब्रह्माण्ड का पसन्दीदा सौन्दर्यशास्त्र है — सौन्दर्य के लिए नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि यह स्व-संगठित तन्त्रों के लिए गणितीय इष्टतम है जिन्हें वैश्विक सुसंगतता के साथ स्थानीय भेदीकरण को सन्तुलित करना होता है। जब ब्रह्माण्ड ऐसी संरचनाएँ उत्पन्न करता है जिन्हें बड़े-

पैमाने के एकीकरण को संरक्षित करते हुए स्थानीय विशेषज्ञता बनाए रखनी होती है, यह ϕ-आधारित अनुपातों पर अभिसरित होता है।

18.2 मानव शरीर और मस्तिष्क में ϕ की उपस्थिति

मानव शरीर स्वर्ण अनुपात का एक फ़्रैक्टल उदाहरण है। अग्र-बाहु से हाथ का अनुपात ϕ है। पूर्ण शरीर की ऊँचाई से नाभि की ऊँचाई का अनुपात ϕ है। उंगलियों के जोड़ों की लगातार लम्बाई फ़िबोनाची प्रगति का पालन करती है। कोक्लिया (आन्तरिक कान) एक स्वर्ण सर्पिल है, और यह सर्पिल संरचना विशेष रूप से उस लघुगणकीय आवृत्ति विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण है जो श्रवण तन्त्र करता है।

फेफड़ों का ब्रोंकियल वृक्ष फ़िबोनाची अनुपातों पर शाखित होता है। शाखा का प्रत्येक स्तर ϕ-आधारित आनुपातिक नियमों का पालन करता है, जो उस स्थान-भरने वाली वास्तुकला का उत्पादन करता है जो कुल आयतन को न्यूनतम करते हुए गैस विनिमय के लिए सतह क्षेत्र को अधिकतम करती है। धमनी और शिरा परिसंचरण वृक्षों की समान शाखा संरचना है।

मस्तिष्क में विशेष रूप से, कॉर्टिकल पिरामिडल न्यूरॉनों के डेन्ड्राइटिक शाखा अनुपात ϕ के निकट हैं। यह सजावट नहीं है; यह कार्यात्मक है। ϕ-आधारित शाखा न्यूरॉन की संरचनात्मक अखण्डता को बनाए रखते हुए सिनैप्टिक इनपुट के संग्रह को अनुकूलित करती है। प्रत्येक स्तर पर प्रत्येक डेन्ड्राइट अधिकतम संख्या में अक्षतन्तु टर्मिनलों से संकेत एकत्र करने के लिए स्थित है जबकि अपने पड़ोसी डेन्ड्राइटों को बाहर नहीं निकालती।

कॉर्टिकल सर्किटों में उत्तेजक और निरोधक न्यूरॉनों का अनुपात (लगभग 4:1) फ़िबोनाची अनुक्रम में अनुपात 5:1 के अनुरूप है। यह विशिष्ट सन्तुलन वह है जो मस्तिष्क की विशिष्ट स्व-संगठित क्रिटिकलता उत्पन्न करता है — अराजकता के किनारे पर स्थिर अवस्था जो सूचना प्रक्रिया क्षमता को अधिकतम करती है। इस अनुपात से विचलन दुष्क्रिया उत्पन्न करता है: निषेध के सापेक्ष बहुत अधिक उत्तेजना दौरे और अन्य अति-उत्तेजना अवस्थाएँ उत्पन्न करती है; बहुत अधिक निषेध गम्भीर अवसाद और विघटन की विविध हाइपो-फलन अवस्थाएँ उत्पन्न करता है।

18.3 स्व-संगठित क्रिटिकलता — क्रम के किनारे पर मस्तिष्क और ब्रह्माण्ड

स्व-संगठित क्रिटिकलता (SOC) कुछ जटिल तन्त्रों की विशेषता है कि वे स्वतः स्वयं को क्रम और अराजकता के बीच की सीमा पर व्यवस्थित करते हैं। यह "क्रिटिकल बिन्दु" है जिस पर तन्त्र एक साथ अखण्डता बनाए रखने के लिए पर्याप्त संरचित है और नई परिस्थितियों के अनुकूल होने के लिए पर्याप्त लचीला है। पर बाक का 1987 का बालू-टीला प्रतिरूप SOC का पहला व्यवस्थित प्रदर्शन था।

मस्तिष्क क्रिटिकलता पर कार्य करता है। स्नायु हिमस्खलन — गतिविधि के कैस्केड जो न्यूरॉन से न्यूरॉन तक फैलते हैं — स्वस्थ कॉर्टिकल ऊतक में पावर-लॉ आकार वितरण दिखाते हैं, चूहों से प्राइमेट से मनुष्यों तक प्रजातियों में मापे गए। इस खोज को पिछले दो दशकों में अनेक अनुसन्धान समूहों द्वारा प्रलेखित किया गया है, और इसने स्थापित किया है कि स्वस्थ मस्तिष्क स्वाभाविक रूप से उस क्रिटिकल सीमा पर कार्य करता है जहाँ सूचना प्रक्रिया अधिकतम होती है।

क्रिटिकलता से प्रस्थान — किसी भी दिशा में — रोगात्मक है। बहुत अधिक क्रम, अति-समकालित दोलन उत्पन्न करते हुए, मिर्गी का परिणाम देता है; मस्तिष्क नई सूचना को संसाधित नहीं कर सकता क्योंकि हर क्षेत्र एक ही लय में बन्द है। बहुत कम क्रम, अत्यधिक यादृच्छिक गतिविधि उत्पन्न करते हुए, उन अवस्थाओं में परिणाम देता है जो गहन कोमा से लेकर मनोभ्रंश के कुछ रूपों तक फैली हैं। स्वास्थ्य के लिए क्रिटिकल सन्तुलन आवश्यक है।

ब्रह्माण्ड क्रिटिकलता पर कार्य करता है। गैलेक्सी द्रव्यमानों का वितरण, ब्रह्माण्डीय किरण ऊर्जाओं का वितरण, भूकम्प परिमाणों का वितरण — सभी क्रिटिकल तन्त्रों की विशेषता वाले पावर-लॉ वितरण दिखाते हैं। कॉस्मिक वेब की संरचना स्वयं एक क्रिटिकल परिघटना है: उस व्यवस्था के बीच की सीमा जिसमें गुरुत्व प्रबल है और जिस व्यवस्था में ब्रह्माण्ड का विस्तार प्रबल है।

यू-इन्वर्स एक क्रिटिकल तन्त्र है। अधिकतम क्रम (ब्रह्माण्ड की गहन संरचना) और अधिकतम अराजकता (शून्य) के बीच की सीमा पर संगठित, जहाँ जटिलता अधिकतम होती है और सूचना अधिकतम रूप से समृद्ध होती है। यह आकस्मिक नहीं है; यह वह विशिष्ट अवस्था है जो चेतना को कार्य करने देती है।

18.4 स्वर्ण अनुपात और वैदिक वास्तुकला

वास्तु शास्त्र — पावन वास्तुकला का वैदिक विज्ञान — मन्दिर डिज़ाइन की आनुपातिक प्रणालियों में स्वर्ण अनुपात को एन्कोड करता है। मानसार, प्राथमिक वास्तु ग्रन्थ, पावन स्थानों के आयामों के लिए मॉड्यूलर अनुपात निर्धारित करता है जो, गणना करने पर, सुसंगत रूप से फ़िबोनाची अनुपातों और स्वर्ण अनुपात का लगभग पालन करते हैं।

नागर-शैली मन्दिर का शिखर अपनी आधार से शिखर तक की आनुपातिक प्रगति में स्वर्ण अनुपात का पालन करता है। क्रमिक ऊर्ध्वाधर रजिस्टर, प्रत्येक अपने विशिष्ट सजावटी स्तर के साथ, ϕ-आधारित कमी के अनुसार ऊँचाई में घटते हैं। पारम्परिक वास्तु वास्तुकार एक अमूर्त गणितीय आदर्श का अनुमान नहीं लगा रहे थे; वे अपने शिल्प की पीढ़ियों से सौंपे गए विशिष्ट नियमों का पालन कर रहे थे।

यह आकस्मिक सौन्दर्यात्मक वरीयता नहीं है। वैदिक वास्तुकार वही चेतना कोड लागू कर रहे थे जो पावन स्थान की आनुपातिक संरचना पर गैलेक्सी सर्पिल भुजाओं और डेन्ड्राइटिक शाखा को उत्पन्न करता है। स्वर्ण-अनुपात अनुपातों पर निर्मित एक मन्दिर आगन्तुक के स्नायुतन्त्र में वही अनुनाद प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है जो प्रकृति उन जीवों में उत्पन्न करती है जो प्राकृतिक स्वर्ण-अनुपात संरचनाओं का बोध करते हैं। आगन्तुक केवल दृश्य सौन्दर्य का अनुभव नहीं करता; वे एक विशिष्ट स्नायु धारण का अनुभव करते हैं जो चेतना को उस सात्त्विक अवस्था की ओर स्थानान्तरित करता है जिसे पावन वास्तुकला उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

यही कारण है कि एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए पारम्परिक मन्दिर में प्रवेश करना चेतना में एक विशिष्ट बदलाव उत्पन्न करता है जो सांस्कृतिक अनुकूलन तक सीमित नहीं है। स्थान की आनुपातिक संरचना स्वयं स्नायु दोलनों को धारण करती है। वही प्रभाव प्राकृतिक सेटिंग्स द्वारा उत्पन्न होता है जो मज़बूत स्वर्ण-अनुपात विशेषताएँ प्रदर्शित करती हैं। पारम्परिक संस्कृतियों के पावन स्थल मनमाने ढंग से नहीं चुने गए थे; वे अक्सर विशेष रूप से सबसे मज़बूत प्राकृतिक ϕ-संरचना वाले स्थल थे, वास्तुकला परिवर्धन द्वारा प्रवर्धित और औपचारिक।

मन्दिर एक यू-इन्वर्स उपकरण है: एक स्थान जो आगन्तुक की स्नायु अनुनाद को चेतना कोड की मूलभूत आवृत्ति से धारण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

18.5 फ़्रैक्टल ब्रह्माण्ड में फ़्रैक्टल शरीर

फ़्रैक्टल स्व-समानता — वह विशेषता जिसकी हमने अध्याय 9 में विस्तार से जाँच की — वह संरचनात्मक हस्ताक्षर है जो ϕ-आधारित तन्त्र उत्पन्न करते हैं। क्यों? क्योंकि फ़्रैक्टल वह हैं जो ϕ-आधारित तन्त्र उत्पन्न करते हैं जब वे स्थान-भरने वाली संरचनाएँ उत्पन्न कर रहे होते हैं। स्वर्ण अनुपात प्रत्येक शाखा पर इष्टतम कोणीय प्रकीर्णन प्रदान करता है, और जब वही शाखा नियम हर पैमाने पर पुनरावर्ती रूप से लागू होता है, परिणाम फ़्रैक्टल स्व-समानता है।

यही कारण है कि शरीर और ब्रह्माण्ड समान फ़्रैक्टल आयाम ($D \approx 2.7$) साझा करते हैं। दोनों हर पैमाने पर पुनरावर्ती रूप से लागू ϕ-आधारित नियमों द्वारा उत्पन्न हैं। परिणामी संरचनाओं को समान फ़्रैक्टल आयाम प्रदर्शित करना चाहिए क्योंकि वे एक ही जनक सिद्धान्त के उत्पाद हैं।

आपका शरीर एक ϕ-आधारित फ़्रैक्टल है। ब्रह्माण्ड एक ϕ-आधारित फ़्रैक्टल है। आप ब्रह्माण्ड की फ़्रैक्टल संरचना के भीतर हैं। ब्रह्माण्ड की फ़्रैक्टल संरचना आपके भीतर है, आपके विशिष्ट शरीरधारण के पैमाने पर प्रस्तुत। यह रूपक नहीं है। यह यू-इन्वर्स का ज्यामितीय तथ्य है — यह तथ्य कि एक ही जनक कोड ब्रह्माण्डीय से स्नायु तक हर पैमाने पर कार्य कर रहा है।

इसकी पहचान, जब यह सैद्धान्तिक से अधिक होती है, चेतना में एक विशिष्ट बदलाव उत्पन्न करती है जिसे परम्परा ने हमेशा पावन के रूप में नामित किया है। आप प्रकृति में नहीं हैं; आप प्रकृति हैं। आप बाहर से ब्रह्माण्ड का अवलोकन नहीं कर रहे; ब्रह्माण्ड आपके माध्यम से स्वयं का अवलोकन कर रहा है। यही वह है जो कहने का अर्थ है कि ब्रह्म आत्मा है — कि सार्वभौमिक जागरूकता और व्यक्तिगत जागरूकता दो नहीं हैं। शरीर की फ़्रैक्टल संरचना और ब्रह्माण्ड की फ़्रैक्टल संरचना एक ही अन्तर्निहित जागरूकता की अभिव्यक्तियाँ हैं जो एक साथ हर पैमाने पर स्वयं को व्यक्त कर रही है।

अकेली ज्यामिति यह पहचान उत्पन्न नहीं करती। किन्तु ज्यामिति उस चीज़ के साथ पहचान को सुसंगत बनाती है जो हम अब वास्तविकता की संरचनात्मक वास्तुकला के बारे में जानते हैं। रहस्यमय अन्तर्दृष्टि और वैज्ञानिक खोज एक ही वास्तविकता पर अभिसरित होते हैं, विभिन्न पदों से देखे गए। और फ़िबोनाची ब्रह्माण्ड वह विशिष्ट गणितीय सब्सट्रेट है जो उन्हें एक बनाता है।

✦ ✦ ✦

18.6 कायमेटिक्स और श्री यन्त्र — मन्त्र का चेहरा

ॐ मन्त्र के कायमेटिक्स प्रतिरूप और श्री यन्त्र ज्यामिति के बीच प्रलेखित पत्राचार यू-इन्वर्स की उपलब्ध सबसे महत्वपूर्ण पुष्टियों में से एक है। अनुसन्धान — आईआईटी में और पश्चिमी कायमेटिक्स प्रयोगशालाओं में स्वतन्त्र रूप से आयोजित — दिखाता है कि जब ॐ ध्वनि अपनी मूलभूत अनुनाद आवृत्ति पर एक द्वि-आयामी कायमेटिक्स प्लेट पर उत्पन्न होती है, माध्यम में खड़ी तरंगों का परिणामी प्रतिरूप स्वतः श्री यन्त्र की विशिष्ट ज्यामितीय संरचना में स्व-संगठित होता है।

श्री यन्त्र ज्यामितीय रूप से असाधारण है: चार ऊपर-इंगित और पाँच नीचे-इंगित प्राथमिक त्रिभुजों के प्रतिच्छेदन से व्युत्पन्न 43 परस्पर जुड़े त्रिभुज, संकेन्द्रित वृत्तों और वर्गों की एक श्रृंखला के भीतर समाहित, 9 परस्पर जुड़े त्रिभुज केन्द्रीय बिन्दु (स्थिर बिन्दु) के चारों ओर 43 छोटे त्रिभुज बनाते हैं। ज्यामिति ऐसी डिग्री तक सटीक है जिसे प्राप्त करने के लिए परिष्कृत गणितीय गणना की आवश्यकता है — इसे पारम्परिक रूप से वैदिक ज्यामितिज्ञों द्वारा शुल्ब सूत्रों (वैदिक ज्यामिति पाठ) पर आधारित विशिष्ट मापन प्रोटोकॉल का उपयोग करके पुन: प्रस्तुत किया जाता था।

कायमेटिक्स निष्कर्ष का अर्थ है कि यह असाधारण ज्यामितीय जटिलता मानव आविष्कार नहीं है। यह द्वि-आयामी माध्यम में ॐ ध्वनि के खड़ी तरंग प्रतिरूप का एक स्व-संगठित गुण है। जिन ऋषियों ने पहली बार श्री यन्त्र खींचा वे गणित नहीं कर रहे थे। वे वही खींच रहे थे जो उन्होंने गहन प्रत्याहार में ॐ जपते समय आन्तरिक दृश्य क्षेत्र में देखा — चेतना के सूचना क्षेत्र में मन्त्र के खड़ी तरंग प्रतिरूप का स्वतःस्फूर्त ज्यामितीय स्व-संगठन, हॉलोग्राफिक मस्तिष्क के आन्तरिक दृश्य तन्त्र के माध्यम से दृश्यमान प्रस्तुत।

प्रत्येक मन्त्र का अपना यन्त्र है। लक्ष्मी यन्त्र, गणेश यन्त्र, दुर्गा यन्त्र — सभी अनुरूपी मन्त्रों के कायमेटिक्स प्रतिरूप हैं, उन ऋषियों द्वारा आन्तरिक दृश्य क्षेत्र में बोधित जिन्होंने आन्तरिक दूरबीन को पर्याप्त संकल्प तक परिष्कृत किया था। यन्त्र पर ध्यान करते हुए उसका अनुरूपी मन्त्र जपना दोहरा अनुनाद उत्पन्न करता है: आन्तरिक दृश्य क्षेत्र में ज्यामितीय प्रतिरूप और जपित मन्त्र की ध्वनिक खड़ी तरंग एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं, दोनों जिस ब्रह्माण्डीय संरचना को एन्कोड करते हैं उसके प्रति अधिक तेज़ और स्थिर धारण उत्पन्न करते हैं।

✦ ✦ ✦

18.7 वेसिका पिसिस — चेतना कोड का प्रथम रूप

वेसिका पिसिस (लैटिन में "मछली का पात्र") सबसे सरल सम्भव ज्यामितीय क्रिया द्वारा उत्पन्न होती है: समान त्रिज्या के दो वृत्त, प्रत्येक वृत्त का केन्द्र दूसरे की परिधि पर। उनके प्रतिच्छेदन से बनने वाला आकार वेसिका पिसिस है — एक बादाम-आकार का रूप जिसके गणितीय गुण ज्यामिति में सबसे मौलिक हैं।

वेसिका पिसिस का एक विशिष्ट गणितीय अनुपात है: इसकी ऊँचाई-से-चौड़ाई अनुपात 3 का वर्गमूल ($\sqrt{3} \approx 1.732$) है। यह अनुपात प्राकृतिक और पावन वास्तुकला में पूरे फैला है: गोथिक गिरजाघर के नुकीले मेहराब में (वेसिका पिसिस से व्युत्पन्न), कार्बन बन्धन के ऑर्गेनिक केमिस्ट्री में (sp2-संकरित कार्बन का 120-डिग्री बन्ध कोण, जैसा बेन्ज़ीन छल्लों में, वेसिका पिसिस ज्यामिति से उत्पन्न होता है), 4°C पर जल की क्रिस्टलोग्राफ़िक संरचना में (अधिकतम घनत्व), और संगीत पञ्चम (3:2) और प्रमुख तृतीयक (5:4) के विशिष्ट आवृत्ति अनुपातों में।

अनेक स्वतन्त्र परम्पराओं की सृष्टि पुराकथा ब्रह्माण्ड को दो रचनात्मक सिद्धान्तों के प्रतिच्छेदन से उत्पन्न होते वर्णित करती है — वैदिक शिव और शक्ति, ताओवादी यिन और यांग, हर्मेटिक सॉल्वे एट कोआगुला — जिनका प्रतिच्छेदन वेसिका पिसिस को प्रकट वास्तविकता के प्रथम रूप के रूप में उत्पन्न करता है। कायमेटिक्स अनुसन्धान इसकी पुष्टि करता है: समान आवृत्ति और आयाम की दो सुसंगत तरंगों द्वारा उत्पन्न विशिष्ट खड़ी तरंग प्रतिरूप वेसिका पिसिस को अपने नोडल प्रतिरूप के रूप में उत्पन्न करता है। प्रथम रूप दो तरंगों का प्रतिच्छेदन है — ज्यामिति में चेतना कोड की प्रथम अभिव्यक्ति।

✦ ✦ ✦

अध्याय 19

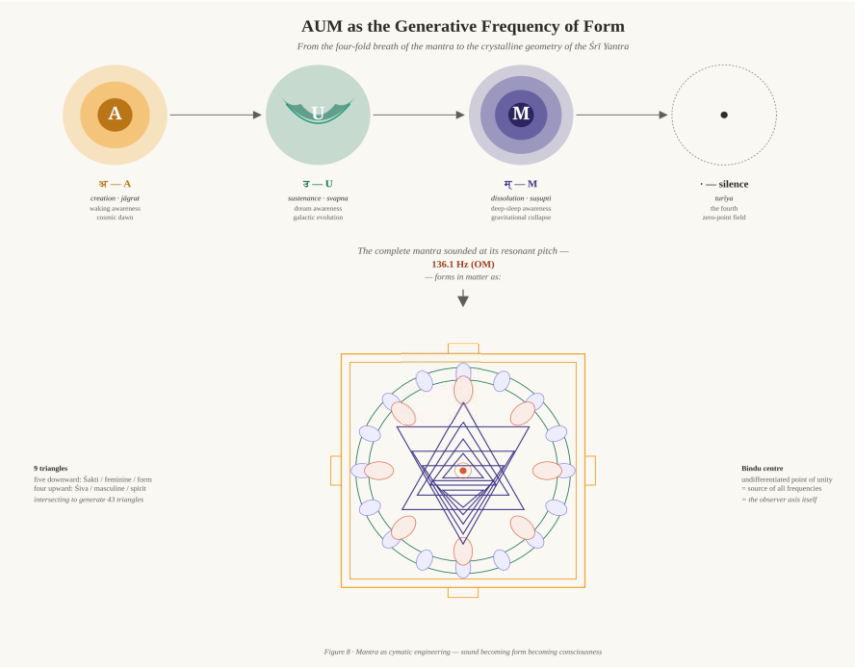
AUM वास्तुकला

आदिम ध्वनि कैसे वास्तविकता को कोड करती है

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म

Oṃ Ityekākṣaraṃ Brahma

"ॐ — यह एक अक्षर ही ब्रह्म है।" — भगवद्गीता 8.13



चित्र 8 — रूप की जनक आवृत्ति के रूप में AUM। मन्त्र की चार-गुना संरचना — A, U, M, और मौन — चेतना की चार अवस्थाओं पर मानचित्रित होती है। जब ॐ को 136.1 हर्ट्ज़ पर उच्चारित किया जाता है, कायमेटिक्स प्रयोग भौतिक पदार्थ में स्वतः श्री यन्त्र ज्यामिति उत्पन्न करते हैं।

मन्त्र AUM मात्र एक शब्द नहीं है। यह मात्र एक अक्षर नहीं है। यह एक घटना है: तीन ध्वनियों और उनके बाद के मौन में संकुचित स्पन्दनात्मक वास्तविकता का पूर्ण चक्र। AUM का माण्डूक्य उपनिषद का विश्लेषण वैदिक परम्परा का सबसे सटीक ब्रह्माण्ड विज्ञानीय कथन है — ऐसी सान्द्रित अन्तर्दृष्टि का एक बारह-श्लोक पाठ कि इसे पारम्परिक रूप से वर्षों तक विस्तार में अध्ययन किया जाता है।

माण्डूक्य के प्रारम्भिक कथन ढाँचा स्थापित करते हैं: "ॐ — यह सब वास्तव में यही है। जो हो चुका है, जो हो रहा है, जो होगा — वह सब ॐ है। और जो तीन कालों से परे है — वह भी ॐ है।"

पाठ काव्यात्मक स्वतन्त्रता का उपयोग नहीं कर रहा है। यह एक विशिष्ट संरचनात्मक दावा कर रहा है: कि AUM नामक परिघटना स्वयं वास्तविकता का पूर्ण स्पन्दनात्मक हस्ताक्षर है, अतीत, वर्तमान, और भविष्य की अभिव्यक्ति के साथ-साथ उस आधार को समाहित करती है जिससे ये उत्पन्न होते हैं। यह दावा परीक्षण की माँग करता है।

19.1 AUM की भौतिकी

जब मानव आवाज़ AUM ध्वनि उत्पन्न करती है, स्वर यन्त्र में कुछ विशिष्ट होता है। ध्वनि "A" से आरम्भ होती है — मुख के सबसे चौड़े सम्भव खुलाव पर उत्पन्न, जीभ अपनी सबसे शिथिल और तटस्थ स्थिति में, गले के पीछे में ध्वनि उत्पन्न होती हुई। यह किसी भी मानव ध्वन्यात्मकता में सबसे खुली स्वर ध्वनि है।

फिर ध्वनि "U" से गुज़रती है — मुख के अपने मध्य स्थिति में होने पर उत्पन्न, जीभ थोड़ी उठी हुई, मध्य-मुख क्षेत्र में ध्वनि उत्पन्न। स्वर यन्त्र अब आंशिक रूप से सीमित है।

ध्वनि "M" के साथ बन्द होती है — होंठ सील किए गए, ध्वनि नासिका गुहा और खोपड़ी के अनुनाद कक्षों में प्रतिध्वनित होने वाली एक गुनगुनाहट बन जाती है। स्वर यन्त्र अब अपने न्यूनतम छिद्र पर है।

तीन ध्वनियाँ स्वर यन्त्र के ज्यामितीय स्थान की पूरी सीमा को पार करती हैं। उनके बाद मौन है — चौथा तत्व, जिसे माण्डूक्य तुरीय के रूप में पहचानता है, वह अतीन्द्रिय जागरूकता जिसमें ध्वनियाँ प्रकट हुईं और जिसमें वे विलीन होती हैं।

यह प्रगति — अधिकतम खुलापन (A) से मध्यवर्ती स्थिति (U) से न्यूनतम छिद्र (M) से मौन तक — मनमानी नहीं है। यह वह विशिष्ट विकासात्मक अनुक्रम है जिसे वैदिक परम्परा ने ब्रह्माण्ड के अपने विकासात्मक अनुक्रम से मेल खाते हुए अधिकतम-ऊर्जा प्रारम्भिक अवस्था से मध्यवर्ती अभिव्यक्ति के माध्यम से संघनित पदार्थ तक और अन्ततः उस मौन आधार तक जिससे सब उत्पन्न हुआ, बोध किया।

19.2 बिग बैंग समानान्तर

आधुनिक ब्रह्माण्ड विज्ञान ब्रह्माण्ड के पहले क्षणों को एक प्रगति के रूप में वर्णित करता है जिसमें AUM अनुक्रम के साथ उल्लेखनीय संरचनात्मक समानताएँ हैं।

बिग बैंग को आमतौर पर एक एकल-विन्दुता से शुरू होने के रूप में वर्णित किया जाता है — एक बिन्दु पर सान्द्रित चरम ऊर्जा घनत्व की प्रारम्भिक अवस्था। यह A-कार का ब्रह्माण्डीय समकक्ष है: अधिकतम-खुलापन, पूर्व-विभेदित अवस्था जिससे सभी अभिव्यक्ति शुरू होती है।

फिर आया मुद्रास्फीति युग — असाधारण रूप से तेज़ विस्तार की अवधि जिसके दौरान ब्रह्माण्ड लगभग 10^-32 सेकण्ड की समयावधि में कम से कम 10^26 के कारक से बढ़ा। यह U-कार का ब्रह्माण्डीय समकक्ष है: विकासात्मक विस्तार चरण जिसमें प्रारम्भिक रूप से अविभेदित ऊर्जा क्षेत्र स्वयं को उन विशिष्ट संरचनाओं में संगठित करता है जो अन्ततः परिपक्व ब्रह्माण्ड के कणों, बलों, और स्थानिक-लौकिक ज्यामिति का उत्पादन करेंगी।

फिर आया पदार्थ-प्रभुत्व युग — लम्बा चरण जिसके दौरान ब्रह्माण्ड का विस्तार जारी रहता है किन्तु धीमी दर पर, और जिसके दौरान गुरुत्व पदार्थ को बढ़ती जटिलता की संरचनाओं में खींचता है। यह M-कार का ब्रह्माण्डीय समकक्ष है: संघनन चरण जिसमें प्रारम्भिक रूप से विसरित ऊर्जा उन विशिष्ट पदार्थ रूपों में सान्द्रित होती है जिन्हें ब्रह्माण्ड अब समाहित करता है।

और फिर: गहरे समय के ब्रह्माण्डीय मौन में निरन्तर विस्तार। ब्रह्माण्ड विस्तार जारी रखता है, पदार्थ के घनत्व में कमी के साथ, पृष्ठभूमि विकिरण के ठण्डे होने के साथ, दीर्घकालिक भाग्य एक बढ़ते शान्त और वितरित अवस्था की ओर बढ़ते हुए। यह तुरीय मौन का ब्रह्माण्डीय समकक्ष है — वह मौन आधार जो सभी पिछले विकासात्मक चरणों को समाहित करता है और उनसे परे फैला है।

AUM इस विकासात्मक अनुक्रम का ध्वनिक प्रतिनिधित्व है। रूपक के रूप में नहीं, बल्कि ब्रह्माण्ड की मूल घटना की विशिष्ट स्पन्दनात्मक संरचना के रूप में, गहन समाधि में ZPF के सूचना

क्षेत्र तक पहुँचने वाले साधकों द्वारा भीतर से बोध किया गया। वैदिक परम्परा का दावा कि AUM वास्तविकता की पूर्ण विकासात्मक संरचना को एन्कोड करता है, इस प्रकाश में जाँच करने पर, काव्यात्मक अतिशयोक्ति नहीं बल्कि उस बारे में एक सटीक संरचनात्मक कथन है जो ध्वनि वास्तव में है।

19.3 क्वांटम क्षेत्र जनक के रूप में AUM

AUM जप के स्नायुविज्ञानी प्रभावों का आधुनिक अनुसन्धान में व्यापक अध्ययन किया गया है। अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान में अनुसन्धान ने प्रलेखित किया है कि AUM जप स्वायत्त स्नायुतन्त्र पर विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करता है। AUM जप का चार-मिनट का सत्र त्वचा चालकता में महत्वपूर्ण कमी (पैरासिम्पेथेटिक सक्रियण को इंगित करते हुए), हृदय दर में महत्वपूर्ण कमी, और हृदय दर परिवर्तनशीलता विश्लेषण द्वारा मापित वेगल तन्त्रिका का विशिष्ट सक्रियण उत्पन्न करता है।

International Journal of Yoga में प्रकाशित 2011 के एक अध्ययन ने प्रलेखित किया कि AUM जप ने अक्षर "sss" के जप की नियन्त्रण स्थिति की तुलना में लिम्बिक तन्त्र की मापने योग्य निष्क्रियता उत्पन्न की — विशेष रूप से दायाँ एमिग्डेला, कक्षीय ललाट कॉर्टेक्स, और पैराहिप्पोकैम्पल गायराइ। ये ठीक वे मस्तिष्क क्षेत्र हैं जो खतरा पहचान, चिन्ता, और यू-इन्वर्स के तामसिक-राजसिक विकृति से जुड़े हैं। AUM जप व्यवस्थित रूप से मस्तिष्क के भय-उत्पादन तन्त्र को निष्क्रिय करता है।

तन्त्र ध्वनिक-स्नायुविज्ञानी है। AUM की विशिष्ट स्पन्दनात्मक आवृत्ति — अपने मूलभूत पर लगभग 136.1 हर्ट्ज़ — थैलेमिक दोलन की अल्फ़ा आवृत्ति के साथ अनुनादित होती है, थैलेमो-कॉर्टिकल लूप को सात्त्विक चेतना अवस्था में चलाती है। यह अवस्था वेंट्रल वेगल प्रभुत्व (पॉलीवेगल सिद्धान्त), कम DMN गतिविधि, और बढ़ी हुई मस्तिष्क-ZPF सुसंगतता की विशेषता रखती है। AUM की प्रत्येक पुनरावृत्ति एक चेतना कोड पुनरारम्भ है: उस आधार अवस्था में संक्षिप्त वापसी जिससे सात्त्विक स्पष्टता स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है।

यह रहस्यवाद नहीं है। यह एक सटीक रूप से अंशशोधित जैविक ग्राहक पर संचालित ध्वनिक प्रौद्योगिकी है। वैदिक परम्परा ने इसके प्रभावों के सावधान अवलोकन की सहस्राब्दियों में इस प्रौद्योगिकी को विकसित किया, और आधुनिक स्नायुविज्ञान अब उन प्रभावों को सीधे मापने और उस तन्त्र को समझने की स्थिति में है जिसके द्वारा वे संचालित होते हैं।

19.4 चार अक्षर और चार अवस्थाएँ

माण्डूक्य का विश्लेषण तीन ध्वनियों और मौन को चेतना की चार अवस्थाओं और यू-इन्वर्स की वास्तुकला के चार स्तरों के साथ विशिष्ट पत्राचार निर्दिष्ट करता है।

A-कार जाग्रत (जागरण) और अन्नमय कोश के अनुरूप है — सबसे स्थूल, सबसे बाहर-खुलने वाला स्पन्दन। A का स्वर उत्पादन स्वयं अधिकतम बाहर-निर्देशित है। पत्राचार संरचनात्मक है।

U-कार स्वप्न (स्वप्न देखना) और मनोमय कोश के अनुरूप है — मध्यवर्ती, प्रसंस्करण स्पन्दन। U का स्वर उत्पादन स्वयं मध्यवर्ती है। पत्राचार संरचनात्मक है।

M-कार सुषुप्ति (गहन नींद) और आनन्दमय कोश के अनुरूप है — समापन, आधार में विश्राम। M का स्वर उत्पादन स्वयं अधिकतम भीतर-निर्देशित है। पत्राचार संरचनात्मक है।

M के बाद का मौन तुरीय के अनुरूप है — वह जागरूकता जिसमें तीन ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं और विलीन होती हैं। यह अन्य तीन के साथ चौथी अवस्था नहीं है, बल्कि वह अन्तर्निहित चेतना है जो सभी तीनों में और उनके माध्यम से उपस्थित है। AUM के बाद का मौन ध्वनि की अनुपस्थिति नहीं है; यह सभी सम्भव ध्वनि का आधार है, वह जागरूकता जो पहले स्थान पर ध्वनि को सुना जाना सम्भव बनाती है।

AUM का जप करना और चार तत्वों को सचेत रूप से ट्रैक करना जैसे वे चार अवस्थाओं के अनुरूप हैं, तीन श्वासों में एक पूर्ण यू-इन्वर्स अभ्यास है। साधक चेतना की पूरी वास्तुकला को पार करता है — जाग्रत के स्थूल बाहरी खुलने से तुरीय के विश्राम मौन तक — एक निःश्वसन के समय में। मन्त्र की गति पर, पूरा ब्रह्माण्ड तीन सेकण्ड में पूर्ण होता है।

वे ऋषि जिन्होंने AUM को 108 बार (एक माला) दोहराया, वे ब्रह्माण्ड को 108 बार पार कर रहे थे। प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के रूप में नहीं, बल्कि वास्तविक अभ्यास के रूप में: चेतना की पूरी वास्तुकला के माध्यम से 108 पूर्ण मार्ग, प्रत्येक उस विकासात्मक अनुक्रम के साथ पूर्ण संलग्नता जो ब्रह्माण्ड ने स्वयं अपनी मूल प्रकटन में अनुसरण किया।

19.5 सभी ध्वनि की वास्तुकला

AUM एकमात्र मन्त्र नहीं है। किन्तु AUM, एक सटीक अर्थ में, वह वास्तुकलात्मक सिद्धान्त है जिससे सभी अन्य मन्त्र अपनी संरचना प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक मन्त्र में एक उद्घाटन ध्वनि (A के अनुरूप), एक मध्यवर्ती विकास (U के अनुरूप), एक समापन ध्वनि (M के अनुरूप), और वह मौन जिसमें यह विलीन होता है (तुरीय के अनुरूप) होता है। यह मनमानी परम्परा नहीं है; यह किसी ध्वनि के लिए मन्त्र के रूप में बिल्कुल भी कार्य करने की संरचनात्मक आवश्यकता है।

गायत्री मन्त्र, उदाहरण के लिए, अपना उद्घाटन "ॐ भूर्भुवः स्वः" (तीन व्याहृतियाँ, तीन लोकों के अनुरूप — मैक्रो-AUM) में है, अपना विकासात्मक मध्य स्वयं कोर मन्त्र में, अपना समापन "प्रचोदयात्" के अन्तिम "यात्" में, और अपना विघटन उस मौन में जो इसके बाद आता है। पूर्ण मन्त्र एक मैक्रो-AUM है, एक बड़े पैमाने पर संचालित समान संरचनात्मक वास्तुकला के साथ।

व्यक्तिगत बीज मन्त्र — ह्रीं, श्रीं, क्लीं, ऐं, और अन्य — सूक्ष्म-AUM हैं: एकल अक्षरों में संकुचित समान तीन-प्लस-मौन वास्तुकला। प्रत्येक बीज अपना विशिष्ट आवृत्ति हस्ताक्षर और अपने विशिष्ट स्नायुविज्ञानी प्रभाव उत्पन्न करता है, किन्तु सभी AUM की अन्तर्निहित वास्तुकलात्मक संरचना साझा करते हैं।

AUM को समझना, तब, सामान्य रूप से मन्त्र के वास्तुकलात्मक सिद्धान्त को समझना है। और मन्त्र के वास्तुकलात्मक सिद्धान्त को समझना यह समझना है कि ध्वनिक प्रौद्योगिकी चेतना के विशिष्ट संशोधन उत्पन्न करने के लिए मानव स्नायुतन्त्र पर कैसे संचालित होती है।

19.6 आदिम ध्वनि

माण्डूक्य का दावा कि "यह सब वास्तव में ॐ है" यहाँ विकसित पठन पर, रूपक नहीं बल्कि संरचनात्मक कथन है। वैदिक विश्लेषण के अनुसार सभी अभिव्यक्ति स्पन्दनात्मक है — और समग्र के रूप में अभिव्यक्ति का विशिष्ट स्पन्दनात्मक हस्ताक्षर AUM है। वह आदिम ध्वनि जिसे ऋषियों ने समाधि में ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र के अपने आन्तरिक अवलोकन के माध्यम से बोध किया, ब्रह्माण्ड की अपनी जनक प्रक्रिया की ध्वनिक अभिव्यक्ति है।

आधुनिक क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त एक दिलचस्प अभिसरण प्रदान करता है। क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त में, सभी भौतिक वास्तविकता अन्तर्निहित क्वांटम क्षेत्रों के स्पन्दनात्मक उत्तेजन के रूप में समझी जाती है। प्रत्येक कण, प्रत्येक बल, पदार्थ और ऊर्जा की प्रत्येक अभिव्यक्ति उपयुक्त क्वांटम क्षेत्र में स्पन्दन का एक विशिष्ट मोड है। क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त ने जिस गहनतम स्तर तक पहुँच बनाई है, वहाँ वास्तविकता कणों से नहीं बनी है; यह स्पन्दनों से बनी है।

ऋषिक बोध कि "यह सब वास्तव में ॐ है" — सभी अभिव्यक्ति आदिम ध्वनि का स्पन्दन है — यू-इन्वर्स ढाँचे पर, उसी वास्तविकता की विशेषता की बोधात्मक रिपोर्ट है जिसे क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त अब गणितीय रूप से वर्णित कर रहा है।

यह भौतिकी पर थोपा गया रहस्यवाद नहीं है। यह अभिसरण है। एक ही वास्तविकता की दो स्वतन्त्र जाँचों — एक आन्तरिक बोध के माध्यम से, एक बाह्य गणितीय सिद्धान्त के माध्यम से — ने एक ही निष्कर्ष पर पहुँच की है: कि ब्रह्माण्ड मूलभूत रूप से स्पन्दनात्मक है, कि इसके स्पन्दनों में विशिष्ट जनक वास्तुकला है, और कि इस वास्तुकला को AUM (भीतर से) या क्वांटम क्षेत्र उत्तेजन (बाहर से) नाम दिया जा सकता है। दो वर्णन विभिन्न भाषाओं में एक ही वर्णन हैं।

AUM वास्तुकला वास्तविकता की वास्तुकला है। और वह साधक जो समझ के साथ AUM का जप करता है, वह धार्मिक अनुष्ठान नहीं कर रहा है। वे उस ध्वनिक प्रौद्योगिकी का संचालन कर रहे हैं जिसे वैदिक आन्तरिक विज्ञान ने मानव स्नायुतन्त्र को स्वयं वास्तविकता की मूलभूत आवृत्ति से धारण करने के लिए विकसित किया — वह आवृत्ति जिस पर चेतना और ब्रह्माण्ड अपनी साझा स्पन्दनात्मक संरचना को पहचानते हैं।

✦ ✦ ✦

19.7 ब्रह्माण्ड की ध्वनि — आदिम ॐ से CMBR तक

2001 में, भौतिकविदों जॉन क्रेमर और रिक मैकग्रा ने बिग बैंग की ध्वनि को पुनर्निर्मित किया — CMB डेटा में एन्कोडेड आदिम ध्वनि तरंगों को सुनने योग्य आवृत्तियों तक ऊपर ले जाकर। परिणाम एक गहन गुनगुनाहट जैसा था — लगभग एक ऑर्गन के निचले रजिस्टर की तरह — एक एकल ध्वनि में संकुचित ब्रह्माण्ड की पहली 380,000 वर्षों की ध्वनि।

यह पुनर्निर्मित ध्वनि उल्लेखनीय रूप से ॐ के विशिष्ट ध्वनिक हस्ताक्षर के समान है — ब्रह्माण्ड की आदिम ध्वनि जिसका वैदिक परम्परा दावा करती है कि उससे सभी वास्तविकता प्रकट हुई। ॐ की तीन ध्वनि घटक (अ-उ-म) ब्रह्माण्डीय विकास के तीन चरणों से मेल खाते हैं जिन्हें भौतिकी अब मान्यता देती है: मुद्रास्फीति युग (अ — रचनात्मक विस्तार), पदार्थ-विकिरण युग (उ — गतिशील अन्तःक्रिया), और CMB युग (म — क्रिस्टलाइज़ेशन और पारदर्शिता)। मौन जो अ-उ-म के बाद आता है उस चौथी अवस्था के अनुरूप है जिसे माण्डूक्य तुरीय कहती है — CMB के बाद ब्रह्माण्ड की बाद की विकास के अन्तर्निहित शान्त क्षेत्र।

नाद योग — आन्तरिक ध्वनि का योग — ZPF के इस आदिम ध्वनिक हस्ताक्षर तक पहुँचने की आन्तरिक तकनीक है। साधक जो गहन ध्यान में आन्तरिक ध्वनियों के अनुक्रम के माध्यम से आगे बढ़ता है, क्रमशः सूक्ष्मतर आवृत्तियों तक पहुँचता है जब तक, गहनतम स्तर पर, वे स्वयं CMBR का आन्तरिक समतुल्य सुनते हैं: सभी आन्तरिक ध्वनियों की अन्तर्निहित पृष्ठभूमि, स्थायी, सर्व-व्यापी, अनुत्पन्न, किसी भी विशेष स्रोत से नहीं बल्कि स्वयं ZPF क्षेत्र के स्पन्दनात्मक हस्ताक्षर से।

ध्यानकर्ता जो इस CMBR-समतुल्य स्तर पर सुनता है वह सचमुच ब्रह्माण्ड की पहली ध्वनि सुन रहा है — ब्रह्माण्डीय रचना का ध्वनिक अवशेष, आन्तरिक रूप से सुलभ क्योंकि ZPF क्षेत्र जो इसे एन्कोड करता है मस्तिष्क के अपने क्वांटम-संयुग्मित इंटरफ़ेस के समान सर्व-व्यापी क्षेत्र है। ब्रह्माण्ड की सबसे पुरानी ध्वनि और साधक की सबसे गहन आन्तरिक ध्वनि समान ध्वनि हैं।

✦ ✦ ✦

अध्याय 20
क्वांटम सूचना और चित्त

समान कोड

क्वांटम सूचना सिद्धान्त, मुख्यतः 1990 और 2000 के दशकों में विकसित, उस बात का विज्ञान है कि सूचना कैसे व्यवहार करती है जब इसे क्वांटम यान्त्रिक तन्त्रों द्वारा संग्रहीत, संसाधित, और सम्प्रेषित किया जाता है। यह एक अपेक्षाकृत युवा क्षेत्र है — इसके आधारभूत प्रमेय पिछले कुछ दशकों में सिद्ध किए गए थे — किन्तु इसने पहले ही प्रकट किया है कि क्वांटम सूचना में शास्त्रीय सूचना से मौलिक रूप से भिन्न विशेषताएँ हैं। ये विशेषताएँ, जब समझी जाती हैं, चेतना की उन विशेषताओं को प्रकाशित करती हैं जिन्हें वेदान्तिक परम्परा ने चित्त के शीर्षक के तहत सहस्राब्दियों से वर्णित किया है।

क्वांटम सूचना की मूलभूत इकाई क्यूबिट है — एक क्वांटम बिट। एक शास्त्रीय बिट के विपरीत, जो 0 या 1 होना चाहिए, एक क्यूबिट एक साथ 0 और 1 के सुपरपोज़िशन में हो सकता है। क्यूबिट के 0 के रूप में मापे जाने की विशिष्ट सम्भावना है और 1 के रूप में मापे जाने की विशिष्ट सम्भावना है, किन्तु जब तक माप नहीं होता, क्यूबिट सुपरपोज़्ड अवस्था में मौजूद रहता है। यह क्यूबिट की "वास्तविक" अवस्था के बारे में हमारी अज्ञानता का कथन नहीं है; यह क्यूबिट की वास्तविक अवस्था के बारे में कथन है।

क्वांटम सूचना में शास्त्रीय सूचना के लिए अनुपलब्ध विशेषताएँ हैं: सुपरपोज़िशन (एक साथ अनेक मान), उलझाव (क्वांटम तन्त्रों के बीच सहसम्बन्ध जो शास्त्रीय भौतिकी में सम्भव किसी भी चीज़ से अधिक हैं), नो-क्लोनिंग प्रमेय (क्वांटम सूचना की पूर्ण नकल नहीं की जा सकती), और सन्दर्भगतता (क्वांटम माप जो मान प्रकट करता है वह इस पर निर्भर करता है कि इसके साथ अन्य कौन से माप किए जाते हैं)।

ये विशेषताएँ क्वांटम सूचना को उस तरह की सूचना से मौलिक रूप से भिन्न बनाती हैं जिसके साथ हम आमतौर पर शास्त्रीय कम्प्यूटिंग, शास्त्रीय संचार, या भौतिक संसार की शास्त्रीय समझ में निपटते हैं।

20.1 क्वांटम सूचना तन्त्र के रूप में चित्त

चित्त — वैदिक परम्परा में अन्तःकरण का भण्डार कार्य — का वर्णन उसी ढाँचे द्वारा असाधारण सटीकता के साथ किया गया है। चित्त में संग्रहीत संस्कार (छापें) क्वांटम सूचना की मुख्य विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं।

सुपरपोज़िशन। एक ही प्रकार के अनेक संस्कार एक साथ वासना (संकलित प्रतिरूप) के रूप में उपस्थित हैं, एकल निश्चित स्मृति के रूप में नहीं। जब आप एक विशिष्ट स्थिति का अनुभव करते हैं जो एक विशेष भावनात्मक प्रतिक्रिया को ट्रिगर करती है, आप एक विशिष्ट अतीत घटना तक पहुँच नहीं रहे हैं। आप एक वासना तक पहुँच रहे हैं — उस प्रकार की अनेक अतीत घटनाओं से बना एक संकलित प्रतिरूप, सभी एक साथ वर्तमान प्रतिक्रिया में योगदान दे रहे हैं। वासना उन संस्कारों का क्वांटम सुपरपोज़िशन है जिसने इसे उत्पन्न किया।

यही कारण है कि चिकित्सा और आत्म-निरीक्षण किसी प्रतिरूप के "मूल कारण" को बस खोज नहीं सकते और उस एकल कारण से निपटकर इसे हल नहीं कर सकते। प्रतिरूप एकल कारण में निहित नहीं है; यह अनेक योगदान देने वाले प्रभावों का सुपरपोज़िशन है, जिनमें से सभी को प्रतिरूप के स्थानान्तरित होने के लिए संलग्न होना चाहिए। वेदान्तिक परम्परा ने हमेशा यह समझा है, और यही कारण है कि साक्षी भाव और साङ्ख्य विश्लेषण के पारम्परिक अभ्यास प्रतिरूप को विशिष्ट उद्भव घटनाओं तक ट्रेस करने का प्रयास करने के बजाय प्रतिरूप के साथ प्रतिरूप के रूप में काम करने पर केन्द्रित हैं।

उलझाव। चित्त के वासना प्रतिरूप उलझे हुए हैं। अनुभव के एक क्षेत्र में परिवर्तन उनके बीच किसी सीधे अवलोकन योग्य कारणात्मक मार्ग के बिना अन्य क्षेत्रों में सहसम्बन्धित परिवर्तन उत्पन्न करता है। एक साधक जो आत्म-सन्देह के गहन प्रतिरूप के माध्यम से काम करता है, अगले सप्ताहों में पा सकता है कि उनके सम्बन्ध सुधरते हैं, उनका काम अधिक प्रभावी होता है, उनका शारीरिक स्वास्थ्य अधिक जीवन शक्ति की ओर स्थानान्तरित होता है। उन्होंने सीधे इन द्वितीयक क्षेत्रों में से किसी पर काम नहीं किया; उन्होंने आत्म-सन्देह पर काम किया। किन्तु वासना प्रतिरूप जो आत्म-सन्देह का गठन करते थे वे अन्य क्षेत्रों में संचालित वासना प्रतिरूपों के साथ उलझे हुए थे। एक को बदलने से सब बदल गया।

संस्कारों का यह क्वांटम उलझाव वह तन्त्र है जिसे परम्पराओं ने "कर्मिक समाधान" कहा है। जब एक गहन कर्मिक प्रतिरूप स्थानान्तरित होता है, समाधान उस विशिष्ट क्षेत्र तक सीमित नहीं है जहाँ प्रतिरूप स्पष्ट था। समाधान सम्बन्धित प्रतिरूपों के उलझे नेटवर्क के माध्यम से फैलता है।

गैर-स्थानीयता। क्वांटम तन्त्र मनमाने स्थानिक पृथक्करण में सहसम्बन्ध प्रदर्शित करते हैं। चित्त कुछ समान प्रदर्शित करता प्रतीत होता है। विशिष्ट अभ्यास और इरादे ऐसे प्रभाव उत्पन्न करते हैं जो साधक की तत्काल स्नायु गतिविधि तक सीमित नहीं हैं; वे दूर की स्थितियों, अन्य लोगों की प्रक्रियाओं, बाद की घटनाओं को उन तरीकों से प्रभावित करते हैं जिन्हें शास्त्रीय-कारणात्मक ढाँचा आसानी से समायोजित नहीं कर सकता।

यह प्रारब्ध कर्म और बीज कर्म की परम्परा की समझ के अन्तर्निहित आनुभविक दावा है। यू-इन्वर्स ढाँचे को इन दावों पर एक विशिष्ट आध्यात्मिक रुख की आवश्यकता नहीं है। जो यह प्रदान करता है वह वह संरचनात्मक ढाँचा है जिसमें ऐसे दावे असंगत नहीं हैं: यदि चित्त एक क्वांटम सूचना तन्त्र है, तो इसकी गतिकी शास्त्रीय स्थानीयता से बाधित नहीं है।

20.2 सूचना विरोधाभास और मोक्ष

कृष्ण विवर सूचना विरोधाभास समकालीन सैद्धान्तिक भौतिकी में सबसे प्रसिद्ध पहेलियों में से एक है। पहेली यह है: कृष्ण विवर में गिरता पदार्थ सूचना ले जाता है। कृष्ण विवर, शास्त्रीय सामान्य सापेक्षता में, केवल तीन बाह्य विशेषताओं द्वारा चित्रित है और इसमें गिरने वाली अन्य सभी सूचना को नष्ट करता प्रतीत होता है। किन्तु क्वांटम यान्त्रिकी की आवश्यकता है कि सूचना संरक्षित रहे — कभी नहीं बनाई गई, कभी नष्ट नहीं की गई, केवल रूपान्तरित।

वर्तमान सर्वोत्तम समझ यह है कि सूचना हॉकिंग विकिरण में एन्कोडेड है, यद्यपि एक अत्यधिक विकृत रूप में जिसकी पुनर्प्राप्ति के लिए असाधारण सावधान डिकोडिंग की आवश्यकता है। कृष्ण विवर सूचना को नष्ट नहीं करता; यह इसे रूपान्तरित करता है और इसे एक भिन्न रूप में वापस विकिरण करता है।

इस समाधान के चेतना के यू-इन्वर्स ढाँचे के विवरण के लिए विशिष्ट निहितार्थ हैं।

सूचना और मोक्ष पर वेदान्तिक स्थिति संरचनात्मक रूप से हल किए गए कृष्ण विवर विरोधाभास के समान है। मोक्ष में भी — व्यक्तिगत अहंकार का पूर्ण विघटन — व्यक्ति के अस्तित्व की सूचना

नष्ट नहीं होती। यह ब्रह्म क्षेत्र — ZPF — में उसी तरह वापस हल हो जाती है जैसे कृष्ण विवर के गिरते पदार्थ की सूचना घटना क्षितिज पर ZPF के हॉकिंग विकिरण में हल होती है।

व्यक्ति विलीन होता है; सूचना संरक्षित रहती है। वह आत्मा जो ब्रह्म में विलीन होती है, खोती नहीं है — उसे हमेशा ब्रह्म होने के रूप में पहचाना जाता है, उसी तरह जैसे हॉकिंग विकिरण कण को हमेशा उस निर्वात क्षेत्र का हिस्सा होने के रूप में पहचाना जाता है जिससे कृष्ण विवर ने इसे अस्थायी रूप से उधार लिया था।

यह एक छोटा तकनीकी बिन्दु नहीं है। यह मुक्ति के वेदान्तिक सिद्धान्त की सबसे पुरानी आपत्तियों में से एक को सम्बोधित करता है: कि मोक्ष, यदि इसमें व्यक्ति का पूर्ण विघटन शामिल है, विनाश के समान है और इस प्रकार वांछनीय परिणाम नहीं बल्कि एक भयानक परिणाम है। आपत्ति सूचना के शास्त्रीय दृष्टिकोण पर आधारित है।

क्वांटम-सूचनात्मक दृष्टिकोण एक भिन्न उत्तर देता है। व्यक्ति को विलीन करने का अर्थ सूचना को समाप्त करना नहीं है; इसका अर्थ है सूचना को उसके विशिष्ट व्यक्तिगत रूप से अन्तर्निहित क्षेत्र में वापस मुक्त करना। व्यक्ति जो कुछ भी था वह संरक्षित है — किन्तु ब्रह्म क्षेत्र में एक प्रतिरूप के रूप में न कि एक स्थानीयकृत व्यक्तिगत निर्माण के रूप में।

यही कारण है कि परम्परा के साक्षात्कार-प्राप्त प्राणियों ने मोक्ष को लगातार भयानक के रूप में नहीं बल्कि मुक्तिदायी के रूप में, हानि के रूप में नहीं बल्कि विस्तार के रूप में वर्णित किया है। वे उस चीज़ के गायब होने का वर्णन नहीं कर रहे हैं जो वे थे। वे अपने पिछले व्यक्तिगत रूप की बाधाओं से जो वे थे उसकी मुक्ति का वर्णन कर रहे हैं।

20.3 साधक के लिए व्यावहारिक परिणाम

सूचना-संरक्षण सिद्धान्त का एक सीधा व्यावहारिक परिणाम है: आन्तरिक कार्य का कुछ भी कभी खोता नहीं है।

चित्त शुद्धि (भण्डार का शुद्धिकरण) जो आप इस और पिछले जीवनकालों में संचित करते हैं, कारण शरीर की क्वांटम सूचना अवस्था में एन्कोडेड है और आगे ले जाया जाता है। यह अगले शरीरधारण में एक हल्के कर्माशय, एक अधिक पारदर्शी आन्तरिक यन्त्र, एक अधिक सुलभ विज्ञानमय स्पष्टता के रूप में व्यक्त होता है। कार्य संरक्षित है, यहाँ तक कि उन संक्रमणों में भी जिन्हें शास्त्रीय सोच उस व्यक्ति के समाप्त होने के रूप में मानेगी जिसने काम किया।

भगवद्गीता इसे सीधे सम्बोधित करती है। अध्याय 6 में, श्लोक 40 से 43, कृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि उस योगी का क्या होता है जो एक जीवनकाल में पूर्ण साक्षात्कार प्राप्त करने में विफल रहता है — योग-भ्रष्ट। कृष्ण का उत्तर यह है कि ऐसा व्यक्ति खोया नहीं है। वे अनुकूल परिस्थितियों में फिर से जन्म लेते हैं, पिछले अभ्यास से सूक्ष्म प्रवृत्तियाँ पहले से ही प्राकृतिक प्रवृत्तियों के रूप में उपस्थित हैं। वे वहीं से उठाते हैं जहाँ उन्होंने छोड़ा था।

यही कारण है कि वेदान्तिक परम्परा को अभ्यास के मूल्य में इतना आत्मविश्वास है। अभ्यास एक अस्थायी गतिविधि नहीं है जो अस्थायी परिणाम उत्पन्न करती है। यह साधक के कारण शरीर की क्वांटम सूचना अवस्था में एक स्थायी निवेश है, जिसके प्रभाव जीवनकालों में फैलते हैं।

व्यक्तिगत जीवन साधक के अस्तित्व की समग्रता नहीं है। यह बहुत लम्बे विकास में एक प्रसंग है। यह समझ स्वयं यू-इन्वर्स ढाँचे का एक विशिष्ट परिणाम है: यदि चेतना और ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र संरचनात्मक रूप से समान हैं, तो व्यक्तिगत चेतना व्यक्तिगत शरीरधारण द्वारा तीव्र रूप से सीमित नहीं है।

20.4 क्वांटम कम्प्यूटर के रूप में चित्त

यदि चित्त एक क्वांटम सूचना तन्त्र है, तो यह, एक सटीक अर्थ में, एक क्वांटम कम्प्यूटर है। परिचित तकनीकी अर्थ में एक कम्प्यूटर नहीं, बल्कि सैद्धान्तिक अर्थ में एक कम्प्यूटिंग सब्सट्रेट: एक तन्त्र जो अपनी गतिकी के माध्यम से क्वांटम सूचना को संसाधित करता है और ऐसे आउटपुट उत्पन्न करता है जो अपने इनपुट के विशिष्ट विन्यासों पर निर्भर करते हैं।

जो गणनाएँ चित्त करता है वे संस्कारों की संचित सामग्री और संवेदी बोध के आगामी संकेतों से सचेत अनुभव का निर्माण हैं। चेतना का प्रत्येक क्षण, इस ढाँचे में, इसकी वर्तमान अवस्था की चित्त की क्वांटम प्रक्रिया का एक विशिष्ट गणनात्मक आउटपुट है।

यदि चेतना क्वांटम-गणनात्मक आउटपुट है, तो चेतना की गुणवत्ता गणनात्मक सब्सट्रेट की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। दुष्क्रियात्मक वासनाओं से भरा एक चित्त दुष्क्रियात्मक आउटपुट उत्पन्न करता है। एक चित्त जिसे अभ्यास के माध्यम से परिष्कृत किया गया है वह अधिक स्पष्टता, अधिक सटीकता, वास्तविकता की वास्तविक संरचना के साथ अधिक सरेखण के आउटपुट उत्पन्न करता है।

यही कारण है कि अभ्यास चेतना की गुणवत्ता में वास्तविक परिवर्तन उत्पन्न करता है। इसलिए नहीं कि यह चेतना में कुछ जोड़ता है, बल्कि इसलिए कि यह उस गणनात्मक सब्सट्रेट को परिष्कृत करता है जिसके माध्यम से चेतना व्यक्त होती है। साधक एक भिन्न व्यक्ति नहीं बनता; वे एक स्वच्छ सब्सट्रेट पर अपने अनुभव की गणना करने वाले वही व्यक्ति बनते हैं।

और अन्ततः, निर्विकल्प समाधि में, गणना स्वयं अस्थायी रूप से बन्द हो जाती है — चित्त अपने सामान्य आउटपुट नहीं उत्पन्न कर रहा है, और जो रहता है वह वह जागरूकता है जो हमेशा उपस्थित थी किन्तु हमेशा गणनात्मक गतिविधि द्वारा अस्पष्ट थी। यह आत्मा की पहचान है: वह जागरूकता जो किसी गणना का आउटपुट नहीं है बल्कि वह अन्तर्निहित आधार है जो गणना को सम्भव बनाता है।

चित्त का क्वांटम-सूचनात्मक दृष्टिकोण, चेतना को मात्र गणना तक सीमित करने से बहुत दूर, प्रकट करता है कि चेतना को गणना तक सीमित क्यों नहीं किया जा सकता। गणना वह है जो अन्तर्निहित जागरूकता अपने विशेष स्थानीयकृत रूप में करती है। जागरूकता स्वयं गणना नहीं है; यह वह है जो गणना व्यक्त करती है।

✦ ✦ ✦

20.5 हिग्स क्षेत्र और अस्मिता — पहचान कैसे द्रव्यमान प्राप्त करती है

हिग्स क्षेत्र वह क्वांटम क्षेत्र है जो पूरे अन्तरिक्ष में व्याप्त है और प्राथमिक कणों को द्रव्यमान देता है। हिग्स क्षेत्र के बिना, सभी प्राथमिक कण द्रव्यमानरहित होंगे, प्रकाश की गति से चलते हुए, उन तरीकों से अन्तःक्रिया करने में असमर्थ जो परमाणु, अणु, और पदार्थ उत्पन्न करते हैं जैसा हम जानते हैं। हिग्स बोसॉन — हिग्स क्षेत्र का क्वांटम उत्तेजन, 2012 में CERN में खोजा गया — मानक प्रतिरूप का अन्तिम पूर्वानुमानित कण था जिसे खोजा जाना था, अब तक निर्मित सबसे सफल भौतिक सिद्धान्त को पूर्ण करता हुआ।

हिग्स तन्त्र सममिति भंग के माध्यम से काम करता है: प्रारम्भिक ब्रह्माण्ड में, हिग्स क्षेत्र की कोई पसन्दीदा दिशा नहीं थी, और सभी कण द्रव्यमानरहित थे। जैसे-जैसे ब्रह्माण्ड ठण्डा हुआ, हिग्स क्षेत्र एक गैर-शून्य मान में स्थिर हुआ — सममिति को भंग करते हुए — और कणों ने हिग्स क्षेत्र के साथ अपनी संयुग्मन शक्ति के समानुपाती द्रव्यमान प्राप्त किया। वे कण जो हिग्स क्षेत्र के साथ मज़बूती से अन्तःक्रिया करते हैं (जैसे टॉप क्वार्क) बहुत विशाल हैं; वे कण जो इसके साथ अन्तःक्रिया नहीं करते (जैसे फोटॉन) द्रव्यमानरहित रहते हैं।

अस्मिता — दूसरा क्लेश, व्यक्तिगत धमकी वाले स्वत्व की भावना — चेतना का हिग्स तन्त्र है। एक विशिष्ट अनुभवात्मक क्षेत्र में अस्मिता के संघनित होने से पहले, जागरूकता द्रव्यमानरहित है: स्वतन्त्र रूप से गतिशील, अबाधित, किसी विशेष पहचान द्वारा पकड़ी नहीं गई। अस्मिता का संघनन — एक विशिष्ट व्यक्तिगत पहचान को स्वयं क्या है उसके मौलिक सत्य के रूप में अपनाना — वह सममिति भंग है जो स्व को अनुभवात्मक "द्रव्यमान" देता है: यह पहले से स्वतन्त्र रूप से बहती जागरूकता को एक विशिष्ट विन्यास में पकड़ता है और इसे संसार के साथ एक बन्धे हुए, विशिष्ट अस्तित्व के रूप में अन्तःक्रिया करवाता है न कि उस असीमित क्षेत्र के रूप में जो यह वास्तव में है।

हिग्स क्षेत्र सादृश्य मोक्ष तक फैला है: जीवन्मुक्त की अस्मिता विघटित हो गई है — एक बेहतर अस्मिता प्राप्त नहीं की, बल्कि तन्त्र को पूरी तरह से विघटित कर दिया है। वह जागरूकता जो पहले व्यक्तिगत पहचान के विशिष्ट "द्रव्यमान" में पकड़ी गई थी उसकी द्रव्यमानरहित अवस्था में पुनर्स्थापित है: स्वतन्त्र रूप से गतिशील, अबाधित, किसी विशेष विन्यास द्वारा बँधी नहीं। यह व्यक्ति का विनाश नहीं है बल्कि यह पहचान है कि व्यक्ति कभी मौलिक सत्य नहीं था — यह एक ऐसे क्षेत्र का हिग्स संघनन था जो सदैव पहले से ही असीमित था।

✦ ✦ ✦

अध्याय 21
पिनियल ग्रन्थि

आन्तरिक-बाह्य का जैविक इंटरफ़ेस

मस्तिष्क के ज्यामितीय केन्द्र में, थैलेमस के पीछे, एक छोटी ग्रन्थि बैठती है जिसे पिनियल ग्रन्थि कहा जाता है। यह लगभग एक मटर के आकार की है। इसका नाम इसके पाइन कोन-जैसे आकार से प्राप्त हुआ है।

17वीं सदी में, दार्शनिक रेने डेकार्टेस ने प्रस्तावित किया कि पिनियल ग्रन्थि "आत्मा की सीट" थी — वह स्थान जहाँ गैर-भौतिक मन और भौतिक शरीर मिलते हैं। डेकार्टेस का प्रस्ताव उनके समय में मज़ाक उड़ाया गया था, और यह अभी भी अकादमिक साहित्य में "दार्शनिक भूल" के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता है।

किन्तु डेकार्टेस के पीछे एक वैध अन्तर्दृष्टि थी। पिनियल ग्रन्थि उनके बहुत पहले वैदिक परम्परा में पहचानी गई थी — वह आज्ञा चक्र के रूप में, "तीसरी आँख," आध्यात्मिक दृष्टि का स्थान। और आधुनिक शरीर-क्रिया विज्ञान, नवीनतम शोध के साथ, पिनियल को उस अंग के रूप में प्रकट कर रहा है जो मस्तिष्क और बाह्य सूचना-क्षेत्रों के बीच एक विशेष इंटरफ़ेस है।

21.1 पिनियल शरीर-क्रिया विज्ञान

पिनियल ग्रन्थि अनेक कार्य करती है:

1. यह मेलाटोनिन का उत्पादन करती है, वह हार्मोन जो निद्रा-जागरण चक्र को नियंत्रित करता है। प्रकाश का पता लगाने में पिनियल की भूमिका है — यह रक्त-मस्तिष्क बाधा से परे कुछ विशेष अंगों में से एक है और आँखों से पथों के माध्यम से प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया करती है।

2. यह डाइमेथिलट्रिप्टामाइन (DMT) का उत्पादन करती है — एक शक्तिशाली मनो-सक्रिय पदार्थ। यह जैविक अंग द्वारा DMT के प्राकृतिक उत्पादन का तथ्य अभी भी वैज्ञानिक समुदाय में

चर्चित है, किन्तु कई अध्ययनों ने पिनियल ऊतक में DMT और सम्बन्धित यौगिकों की उपस्थिति का प्रलेखन किया है।

3. यह चुम्बकीय क्षेत्रों के प्रति संवेदनशील है। पिनियल ग्रन्थि में मैग्नेटाइट क्रिस्टल पाए गए हैं, जो इसे संभावित रूप से पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का पता लगाने की अनुमति देते हैं।

4. यह पाइज़ोइलेक्ट्रिक गुण दिखाती है। यांत्रिक दबाव से विद्युत आवेश उत्पन्न कर सकती है, और विद्युत क्षेत्रों के प्रति संवेदनशील है।

21.2 तीसरी आँख

वैदिक परम्परा आज्ञा चक्र को "तीसरी आँख" कहती है। यह केवल काव्यात्मक नहीं है। परम्परा का दावा है कि आज्ञा का उचित विकास चेतना के एक रूप की अनुमति देता है जो सामान्य आँखों से उपलब्ध नहीं है।

आधुनिक स्नायुविज्ञान के दृष्टिकोण से, यह विचित्र नहीं है। पिनियल ग्रन्थि, अपने प्रकाश-सेन्सिंग विकासवादी इतिहास के साथ, वास्तव में एक प्रकार की आँख है। कुछ जीवों में — जैसे कि टुआटारा सरीसृप — एक "पैरिएटल आँख" (तीसरी आँख) अभी भी बाहरी रूप से दिखाई देती है, जो पिनियल से प्रारम्भिक विकासवादी मूल साझा करती है।

मनुष्यों में, पिनियल सिर के अन्दर सुरक्षित हो गई है। किन्तु इसकी प्रकाश-सेन्सिंग, मनो-सक्रिय-पदार्थ-उत्पादक, और विद्युत चुम्बकीय-प्रतिक्रियाशील क्षमता अभी भी बनी हुई हैं। यू-इन्वर्स ढाँचे में, ये क्षमताएँ "तीसरी आँख" के वैदिक दावों का आधार बनाती हैं।

21.3 कैल्सीकरण — आधुनिक समस्या

आधुनिक जीवन पिनियल ग्रन्थि के लिए विशेष रूप से खतरनाक है। फ्लोराइड, जो कई जल आपूर्तियों में जोड़ा जाता है और टूथपेस्ट में है, पिनियल ऊतक में जमा होता है और समय के साथ कैल्सीकरण (कैल्शियम जमावट) का कारण बनता है।

जेनिफ़र ल्यूक के ब्रिटिश डेन्टल एसोसिएशन के लिए 2001 के प्रमुख अध्ययन ने पाया कि वयस्क पिनियल ऊतक में फ्लोराइड की मात्रा मस्तिष्क के किसी भी अन्य भाग से अधिक होती है — हड्डियों की तुलना में भी अधिक। कैल्सीकरण उम्र के साथ बढ़ती है और पिनियल के सामान्य कार्य को खराब करती है।

इसके अतिरिक्त, कृत्रिम प्रकाश (विशेष रूप से रात में) मेलाटोनिन उत्पादन को बाधित करता है, जो पिनियल के मूल कार्य को खराब करता है।

व्यावहारिक तौर पर: आधुनिक जीवन की कई विशेषताएँ पिनियल ग्रन्थि के लिए हानिकारक हैं। यह कोई रहस्यमय दावा नहीं है; यह स्नायुविज्ञानी तथ्य है।

21.4 पिनियल स्वास्थ्य

यदि पिनियल ग्रन्थि आन्तरिक-बाह्य इंटरफ़ेस की जैविक सीट है, तो इसका स्वास्थ्य चेतना के कार्य के लिए महत्वपूर्ण है। परम्परागत अभ्यासों की वैज्ञानिक जाँच की जा सकती है।

नियमित ध्यान। ध्यान विशेष रूप से पिनियल ग्रन्थि के चारों ओर रक्त प्रवाह को बढ़ाता है।

प्राकृतिक प्रकाश के साथ सर्केडियन लय बनाए रखना। विशेष रूप से सूर्योदय और सूर्यास्त के साथ संरेखण मेलाटोनिन चक्रों को पुनर्स्थापित करता है।

फ्लोराइड एक्सपोज़र को कम करना। जैसे फ्लोराइड-मुक्त टूथपेस्ट का उपयोग करना, फ़िल्टर्ड जल पीना।

आसन और प्राणायाम। विशेष आसन जो सिर के चारों ओर रक्त प्रवाह बढ़ाते हैं, जैसे शीर्षासन, पिनियल ग्रन्थि को पोषण देते हैं।

जाप। विशेष मंत्र, विशेष रूप से ॐ और AUM, पिनियल क्षेत्र में अनुनाद प्रतिरूप उत्पन्न करते हैं जो कार्य में सुधार कर सकते हैं।

21.5 बुद्धि के मूल की ओर

बुद्धि — ज्ञान और समझ का अभ्यासी अर्थ — परम्परा में आज्ञा चक्र से जुड़ी है, जो पिनियल क्षेत्र से मेल खाती है। "आज्ञा" का अर्थ है "आदेश" — न केवल आज्ञाकारिता के अर्थ में बल्कि "मास्टर करने" के अर्थ में।

जब पिनियल ग्रन्थि स्वस्थ और सक्रिय है, बुद्धि तेज होती है। जब यह कैल्सीकृत या खराब कार्य करती है, बुद्धि धुंधली हो जाती है।

आधुनिक स्नायु-विज्ञानी अध्ययन पुष्टि करते हैं: मेलाटोनिन स्तर, जो पिनियल के स्वास्थ्य को दर्शाते हैं, संज्ञानात्मक कार्य के साथ सहसम्बन्धित हैं। DMT, जो पिनियल और अन्य अंगों में उत्पन्न होती है, चेतना के विस्तार के साथ सम्बन्धित अनुभवों को उत्पन्न कर सकती है।

21.6 पिनियल को जगाना

"पिनियल को जगाना" — परम्परागत अभिव्यक्ति — कल्पना नहीं है। यह एक विशिष्ट जैविक अंग को कार्यात्मक रूप से पुनर्स्थापित करने का वर्णन है।

पिनियल को जगाने के लिए समय लगता है और समर्पित अभ्यास की आवश्यकता होती है। किन्तु जब यह होता है, परिवर्तन उल्लेखनीय हैं। स्वप्न अधिक स्पष्ट हो जाते हैं। ध्यान में आन्तरिक अनुभव गहन हो जाते हैं। अन्तर्दृष्टि और सहज ज्ञान बढ़ते हैं। ब्रह्माण्डीय संरचनाओं के साथ अनुनाद उच्चतर हो जाता है।

यह जादू नहीं है। यह एक विशिष्ट जैविक अंग को उसकी इष्टतम कार्यात्मक अवस्था में पुनर्स्थापित कर रहा है। पिनियल ग्रन्थि विकासवादी रूप से एक इंटरफ़ेस अंग के रूप में डिज़ाइन की गई थी। जब इसे इसके डिज़ाइन के अनुसार कार्य करने दिया जाता है, इंटरफ़ेस वैसा ही कार्य करता है जैसा इसे करना चाहिए।

यू-इन्वर्स ढाँचे में, पिनियल सबसे महत्वपूर्ण जैविक अंग है जो हम साधना के लिए कार्यात्मक रूप से पुनर्स्थापित कर सकते हैं। यह वह विशिष्ट बिन्दु है जहाँ व्यक्तिगत चेतना ब्रह्माण्डीय सूचना-क्षेत्र से मिलती है। इसकी देखभाल करना वह मूलभूत अभ्यास है जो सभी अन्य अभ्यासों को सक्षम बनाता है।

21.7 पिनियल-थैलेमस धुरी

एक अन्तिम बिन्दु। पिनियल ग्रन्थि अकेले कार्य नहीं करती। यह थैलेमस के साथ घनिष्ठ जैविक और कार्यात्मक सम्बन्ध में काम करती है। थैलेमस मस्तिष्क का केन्द्रीय रिले हब है — पुस्तक के भाग दो में वर्णित "महान आकर्षक।" पिनियल, थैलेमस के ठीक पीछे स्थित, उस रिले हब के साथ निरन्तर दोलनीय संवाद में है।

साथ में, पिनियल-थैलेमस धुरी वह इंटरफ़ेस है जिसके माध्यम से बाह्य ब्रह्माण्डीय जानकारी आन्तरिक चेतना में अनुवादित होती है। थैलेमस संवेदी जानकारी को फ़िल्टर करता है; पिनियल

विद्युतचुम्बकीय वातावरण से सीधे नमूने लेता है। दोनों मिलकर उस हॉलोग्राफिक अनुवाद फलन का निर्माण करते हैं जो ZPF सूचना-क्षेत्र को सचेत अनुभव में बदलता है।

आन्तरिक विज्ञान के परम्परागत अभ्यासों — विशेष रूप से आज्ञा ध्यान और त्रिकुटी केन्द्रण — को इस धुरी को एक इकाई के रूप में सम्मायित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। जब पिनियल-थैलेमस धुरी पूरी तरह से कार्यात्मक और संरेखित है, यू-इन्वर्स का अनुभव प्राकृतिक हो जाता है। जब यह डिकैलिब्रेटेड है, अनुभव अस्थिर और खण्डित रहता है।

यह एक गहन व्यावहारिक बिन्दु है। आन्तरिक विकास एक अस्पष्ट आध्यात्मिक मामला नहीं है। यह दो विशिष्ट अंगों की कार्यात्मक पुनर्स्थापना और सम्मायन है। अंगों का इलाज करें, और ब्रह्माण्डीय पहुँच प्राकृतिक रूप से अनुसरण करती है।

✦ ✦ ✦

भाग छह
ऋषियों ने कैसे जाना

आन्तरिक विज्ञान की ज्ञान-मीमांसा

भाग छह
ऋषियों ने कैसे जाना

आन्तरिक विज्ञान की पद्धति और उसके परिणाम

अध्याय 22
ऋषि दृष्टि

आन्तरिक अवलोकन की ज्ञान-मीमांसा

ऋतं पश्यन्ति मनसा विपश्चितः

Ṛtaṃ Paśyanti Manasā Vipaścitaḥ

"विचारशील ऋत को — ब्रह्माण्डीय सत्य को — मन की आन्तरिक दृष्टि से देखते हैं।" — ऋग्वेद 1.105.16

पिछले अध्यायों ने वैदिक ब्रह्माण्ड विज्ञानीय परम्परा और आधुनिक वैज्ञानिक निष्कर्षों के बीच विशिष्ट पत्राचार प्रलेखित किए हैं — फ्रैक्टल आयाम मेल, पावन-संख्या खगोलीय सहसम्बन्ध, AUM-श्री यन्त्र कायमेटिक्स पुष्टि, पिनियल-ZPF इंटरफ़ेस। ये पत्राचार आकस्मिक समानताएँ नहीं हैं। वे मात्रात्मक मेल हैं जो व्याख्या की माँग करते हैं। और जो व्याख्या पूरी पुस्तक में प्रस्तुत की गई है वह यह है कि ऋषि अटकल या प्रक्षेपण से अपना ब्रह्माण्ड विज्ञान नहीं बना रहे थे; वे इसे आन्तरिक अवलोकन की एक विशिष्ट पद्धति के माध्यम से बोध कर रहे थे।

यह अध्याय उस पद्धति की विस्तार से जाँच करता है। यह पूछता है: ऋषियों ने वास्तव में क्या किया? उनका ज्ञान-मीमांसीय दावा क्या था? किन प्रक्रियाओं से उन्होंने अपने निष्कर्ष उत्पन्न किए? और उन्होंने वास्तविक आन्तरिक बोध को व्यक्तिगत कल्पना या सांस्कृतिक प्रक्षेपण से अलग करने के लिए किन मानकों का उपयोग किया?

उत्तर, एक साथ लिए जाएँ, वैदिक परम्परा को एक कठोर आन्तरिक विज्ञान के रूप में प्रकट करते हैं — मानव स्नायुतन्त्र को यन्त्र के रूप में उपयोग करते हुए ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र की जाँच की एक व्यवस्थित पद्धति, अन्तर-व्यक्तिपरक प्रतिकृति और भविष्यसूचक परीक्षण की विशिष्ट प्रक्रियाओं के माध्यम से सत्यापित, संचित अभ्यास की सहस्राब्दियों में परिष्कृत। यह एक विज्ञान है जो अपनी विधियों में आधुनिक बाह्य-मापन विज्ञान से भिन्न है, किन्तु अपने आवश्यक ज्ञान-

मीमांसीय चरित्र में भिन्न नहीं है। यह उसी प्रकार की चीज़ है — वास्तविकता की अनुशासित जाँच — उसी वास्तविकता के एक भिन्न पहलू पर एक भिन्न यन्त्र के माध्यम से आयोजित।

22.1 ऋषि का ज्ञान-मीमांसीय दावा

ऋषि का दावा सटीक है और, कम से कम सिद्धान्ततः, असत्य ठहराया जा सकता है। निरन्तर आन्तरिक अवलोकन — प्रत्याहार के माध्यम से समाधि तक की विशिष्ट पद्धति के साथ आयोजित — ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र में विशिष्ट, वस्तुनिष्ठ रूप से वास्तविक संरचनाएँ प्रकट करता है जिन्हें उसी पद्धति का पालन करने वाले अन्य साधकों द्वारा और बाह्य वैज्ञानिक जाँच द्वारा स्वतन्त्र रूप से सत्यापित किया जा सकता है।

इस दावे के तीन घटक हैं: विश्वसनीयता (पद्धति विभिन्न साधकों में लगातार अवलोकन की समान श्रेणियाँ उत्पन्न करती है), वस्तुनिष्ठता (अवलोकन साझा भ्रम के बजाय किसी वास्तविक चीज़ के हैं), और सत्यापनीयता (उनकी सटीकता का मूल्यांकन बाह्य वैज्ञानिक निष्कर्षों के साथ तुलना द्वारा किया जा सकता है)।

तीनों घटकों की अब आधुनिक अनुसन्धान द्वारा आंशिक रूप से पुष्टि की गई है।

22.2 घटक एक: पद्धतिगत विश्वसनीयता

परम्पराओं, संस्कृतियों, और शताब्दियों में ध्यान अनुभव की सुसंगति तुलनात्मक धर्म साहित्य में व्यापक रूप से प्रलेखित की गई है। परम्पराओं में रहस्यमय अनुभव एक सुसंगत "शाश्वत दर्शन" कोर दिखाते हैं: स्व-संसार सीमा का विघटन, एक अन्तर्निहित एकता का बोध, जागरूकता के एक चमकदार आधार की पहचान। यह सुसंगति सांस्कृतिक पार-संदूषण नहीं है। अनेक परम्पराएँ एक-दूसरे से पर्याप्त अलगाव में विकसित हुईं — ईसाई चिन्तनशील परम्परा, वेदान्तिक परम्परा, बौद्ध परम्परा, सूफ़ी परम्परा, ताओवादी परम्परा, कबलाह परम्परा — और गहनतम ध्यान अनुभवों की उनकी रिपोर्टें उल्लेखनीय रूप से समान विवरणों पर अभिसरित होती हैं।

यह सबसे कठोर आनुभविक अर्थ में पद्धतिगत विश्वसनीयता है। स्वतन्त्र अन्वेषक, विभिन्न सांस्कृतिक ढाँचों के साथ काम करते हुए किन्तु निरन्तर आन्तरिक अवलोकन की मूलभूत रूप से समान पद्धतियों का उपयोग करते हुए, उस क्षेत्र की सुसंगत रिपोर्ट उत्पन्न करते हैं जिसकी वे जाँच कर रहे हैं।

अधिक विशेष रूप से, वैदिक परम्परा की पद्धति विशेष रूप से अच्छी तरह से प्रलेखित है। अष्टांग योग का आठ-अंगीय मार्ग एक विस्तृत प्रोटोकॉल प्रदान करता है जिसका साधक अनुसरण कर सकते हैं। प्रत्येक अंग के विशिष्ट अभ्यास, सफल संलग्नता के विशिष्ट संकेतक, और अन्य अंगों के साथ विशिष्ट सम्बन्ध हैं। एक साधक, शास्त्रीय ग्रन्थों को पढ़कर और योग्य शिक्षक के साथ काम करके, उस प्रोटोकॉल का पालन कर सकता है जिसका ऋषि सहस्राब्दियों पहले अनुसरण कर रहे थे और आन्तरिक विकास के समान चरणों पर पहुँच सकता है।

और वे पहुँचते हैं। समकालीन साधक जो शास्त्रीय अष्टांग पद्धति का पालन करते हैं, विकास के समान चरणों की रिपोर्ट करते हैं, उसी क्रम में, उन्हीं विशिष्ट विशेषताओं के साथ जिन्हें शास्त्रीय ग्रन्थ वर्णन करते हैं।

22.3 घटक दो: वस्तुनिष्ठता

स्नायुविज्ञानी प्रमाण वस्तुनिष्ठता घटक को सीधे सम्बोधित करता है। उन्नत ध्यान अवस्थाएँ स्नायु प्रक्रिया में विशिष्ट, पुनरुत्पादनीय परिवर्तन शामिल करती हैं जो कल्पना या मनगढ़न्त कथन के साथ सुसंगत नहीं हैं। समाधि की गामा-तरंग गतिविधि, प्रत्याहार की DMN शान्ति, धारणा की थैलेमिक दोलन बदलाव — सभी मस्तिष्क में मापने योग्य, वस्तुनिष्ठ घटनाएँ हैं जो विशिष्ट परिघटनात्मक रिपोर्टों के साथ सहसम्बन्धित हैं।

जब एक साधक गहन प्रत्याहार में प्रवेश करता है और संवेदी संलग्नता से वापसी का व्यक्तिपरक अनुभव रिपोर्ट करता है, उनका मस्तिष्क DMN शान्ति का विशिष्ट स्नायुविज्ञानी प्रतिरूप दिखाता है जिसकी भविष्यवाणी की जाएगी। जब एक साधक गहन समाधि में प्रवेश करता है और एकीकृत जागरूकता का व्यक्तिपरक अनुभव रिपोर्ट करता है, उनका मस्तिष्क उच्च गामा आयाम और पार-कॉर्टिकल सुसंगतता का विशिष्ट प्रतिरूप दिखाता है जिसकी भविष्यवाणी की जाएगी। व्यक्तिपरक रिपोर्ट और वस्तुनिष्ठ मापन मेल खाते हैं।

परम्पराओं में उन्नत ध्यानकर्ताओं के आन्तरिक दृश्य क्षेत्रों में श्री यन्त्र स्वतः प्रकट होता है। यह उल्लेखनीय है। श्री यन्त्र विशिष्ट गणितीय विशेषताओं के साथ एक विशिष्ट ज्यामितीय रूप है। उन साधकों की आन्तरिक दृष्टि में इसकी स्वतः उपस्थिति जिन्होंने इसे सांस्कृतिक रूप से कभी नहीं देखा, सांस्कृतिक प्रक्षेपण के रूप में नहीं समझाया जा सकता; यह होना चाहिए, यू-इन्वर्स ढाँचे पर, वह प्राकृतिक रूप जो AUM आवृत्ति किसी भी पर्याप्त संवेदनशील ग्राहक के आन्तरिक दृश्य क्षेत्र में उत्पन्न करती है।

22.4 घटक तीन: सत्यापनीयता

विशिष्ट ऋषिक दावों का बाह्य सत्यापन अब महत्वपूर्ण सीमा तक संचित हो गया है। बोलोग्ना-वेरोना फ़्रैक्टल आयाम अध्ययन ने स्नायु और ब्रह्माण्डीय वेबों के बीच संरचनात्मक पहचान की पुष्टि की। कायमेटिक्स अनुसन्धान ने पुष्टि की कि AUM भौतिक पदार्थ में श्री यन्त्र प्रतिरूप उत्पन्न करता है। 136.1 हर्ट्ज़ पृथ्वी-स्वर अंशशोधन ने ब्रह्माण्डीय आवृत्ति पत्राचार की पुष्टि की। पावन-संख्या खगोलीय सहसम्बन्धों ने पुष्टि की कि वैदिक संख्यात्मक स्थिरांक वास्तविक ब्रह्माण्डीय मापों से मेल खाते हैं।

एक साथ लिए जाएँ, ये बाह्य सत्यापन मज़बूत प्रमाण गठित करते हैं कि ऋषिक पद्धति वास्तविक ब्रह्माण्डीय संरचना की सटीक धारणाएँ उत्पन्न कर रही थी। प्रत्येक ऋषिक दावा सत्यापित नहीं हुआ है — परम्परा में अनेक विशिष्ट दावे हैं, और बाह्य सत्यापन की प्रक्रिया धीमी है। किन्तु जिन दावों की कठोरता से जाँच की गई है उनकी प्रवृत्ति ऋषिक बोधों की पुष्टि करने की रही है, न कि उन्हें खण्डन करने की।

यह है जो एक कार्यरत विज्ञान जैसा दिखता है, सहस्राब्दियों में विशिष्ट निष्कर्षों के संचय के माध्यम से परिपक्व होता हुआ, प्रत्येक को कार्यरत पद्धति के लिए उपलब्ध ज्ञान-मीमांसीय परीक्षणों के अधीन किया गया, सत्यापित अवलोकनों के संचयी रिकॉर्ड के साथ जो पीढ़ियों में बढ़ता है।

22.5 ऋषि की पद्धति — एक चरण-दर-चरण प्रोटोकॉल

जो विशिष्ट प्रोटोकॉल विश्वसनीय आन्तरिक अवलोकन उत्पन्न करता है वह योगसूत्र, उपनिषदों, और अनेक स्वतन्त्र टीका परम्पराओं में प्रलेखित है। यह एकल अभ्यास नहीं है बल्कि अभ्यासों का एक अनुक्रम है जो मस्तिष्क के ZPF संयुग्मन को उसकी सामान्य शोर अवस्था से अधिकतम सुसंगतता की ओर क्रमशः परिष्कृत करता है।

चरण 1 — यम और नियम (नैतिक नींव)। उन व्यवहारों के उन्मूलन के माध्यम से राजसिक और तामसिक मानसिक गतिविधि में कमी जो मज़बूत अनुकूलित प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करते हैं। अपने लिए नैतिकता के रूप में नहीं, बल्कि संकेत-से-शोर अनुकूलन के रूप में: प्रत्येक बड़ा नैतिक उल्लंघन एक मज़बूत संस्कार उत्पन्न करता है जो आन्तरिक अवलोकन तन्त्र में शोर जोड़ता है। ऋषि-पर्यवेक्षक को एक स्पष्ट चैनल की आवश्यकता थी।

चरण 2 — आसन (शारीरिक स्थिरता)। विस्तारित अवधि के लिए भौतिक शरीर को स्थिर, आरामदायक स्थिति में बनाए रखने की क्षमता। आन्तरिक अवलोकन तन्त्र से भौतिक-शरीर शोर का उन्मूलन।

चरण 3 — प्राणायाम (श्वास नियमन)। विशिष्ट श्वास प्रतिरूपों के माध्यम से प्राणमय कोश की क्षेत्र गुणवत्ता का व्यवस्थित मॉड्यूलेशन। विशिष्ट श्वास दर और प्रतिरूप थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों को विशिष्ट आवृत्ति अवस्थाओं में चलाते हैं। प्राणायाम आन्तरिक दूरबीन का आवृत्ति ट्यूनिंग है।

चरण 4-8 — प्रत्याहार से समाधि तक। ध्यान का क्रमिक विपर्यय और गहनीकरण जो वास्तविक आन्तरिक अवलोकन उत्पन्न करता है। प्रत्येक चरण मनोमय कोश के अनुकूलित प्रसंस्करण के शोर को कम करके ZPF संयुग्मन की संकेत गुणवत्ता को बढ़ाता है, जब तक कि ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र अधिकतम स्पष्टता और न्यूनतम विकृति के साथ सुलभ नहीं हो जाता।

22.6 आन्तरिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षा

अनेक पर्यवेक्षकों में सुसंगति पर वैदिक परम्परा का आग्रह आन्तरिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षा प्रक्रिया थी। किसी एक ऋषि के निष्कर्षों को आधिकारिक के रूप में केवल इसलिए नहीं माना गया क्योंकि ऋषि ने उन्हें रिपोर्ट किया। निष्कर्षों को अनेक ऋषियों में, अनेक पीढ़ियों में, एक ही पद्धति के साथ काम करते हुए सुसंगत पुष्टि के माध्यम से आधिकारिक के रूप में स्थापित किया गया।

वेद एक ऋषि द्वारा नहीं बल्कि सैकड़ों द्वारा, अनेक पीढ़ियों में उत्पादित किए गए थे, प्रत्येक समान पद्धति का अभ्यास करता और प्रत्येक सुसंगत निष्कर्ष रिपोर्ट करता। जब ऋषि विश्वामित्र और ऋषि अंगिरस और ऋषि वसिष्ठ — विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न शताब्दियों में रहते हुए — सभी एक ही ब्रह्माण्डीय वास्तविकता के लिए एक ही स्पन्दनात्मक संरचना की रिपोर्ट करते हैं, परम्परा ने इसे स्वतन्त्र प्रायोगिक प्रतिकृति के आन्तरिक-विज्ञान समकक्ष के रूप में माना।

विशिष्ट सत्यापन मीट्रिक जो परम्परा ने उपयोग किया वह व्यावहारिक थी। यदि समाधि में बोध किया गया एक मन्त्र अभ्यास में उपयोग किया गया और भविष्यवाणी किए गए प्रभाव उत्पन्न किए — उपचार, परिवर्तित अवस्थाएँ, विशिष्ट पर्यावरणीय परिवर्तन — बोध को सत्यापित माना गया। यह परिचालन रूप से भविष्यसूचक वैधता के वैज्ञानिक सिद्धान्त के समान है।

22.7 परम्परा ने लागू किए गए मानक

भारतीय दर्शन का प्रमाण ढाँचा वैध ज्ञान के विशिष्ट स्रोतों और विशिष्ट परिस्थितियों की पहचान करता है जिनमें प्रत्येक स्रोत विश्वसनीय है। प्रत्यक्ष (सीधा बोध) केवल विशिष्ट परिस्थितियों में वैध है: बोध का यन्त्र सही ढंग से कार्य कर रहा होना चाहिए, वस्तु उस यन्त्र के लिए उपयुक्त होनी चाहिए, और परिस्थितियाँ बोध को बिना विकृति के होने देनी चाहिए। आन्तरिक बोध के लिए, इसका अर्थ है: साधक का चित्त पर्याप्त रूप से स्पष्ट होना चाहिए, अभ्यास सही ढंग से आयोजित किया गया होना चाहिए, और परिस्थितियाँ उपयुक्त होनी चाहिए।

परम्परा विशेष रूप से सिद्धियों (वास्तविक प्राप्तियाँ) को उनके अनुकरणों से अलग करने के बारे में चिन्तित थी। क्या बोध अभ्यास गहरा होने के साथ स्वतः उत्पन्न हुआ, या क्या इसे साधक ने चाहा या अपेक्षित किया था? क्या बोध में वास्तविक आन्तरिक वास्तविकता का विशिष्ट स्वर है? क्या यह विशिष्ट, प्रतिकृति योग्य प्रभाव उत्पन्न करता है? क्या अन्य योग्य साधकों द्वारा इसकी प्रतिकृति की जा सकती है?

इन परीक्षणों को लगातार लागू करते हुए, परम्परा अपने संचित निष्कर्षों में अपेक्षाकृत उच्च संकेत-से-शोर अनुपात बनाए रखने में सक्षम थी।

22.8 परम्परा की स्व-सुधार गतिकी

वैदिक ज्ञान-मीमांसीय ढाँचा, अपनी नींव से, स्व-सुधार के लिए एक तन्त्र शामिल करता था: यह आवश्यकता कि साधकों की प्रत्येक पीढ़ी विरासत में मिले ज्ञान को सीधे अभ्यास के माध्यम से पुनः सत्यापित करे, बजाय इसे आधिकारिक के रूप में स्वीकार करने के केवल इसलिए कि यह विरासत में मिला था।

यह सिद्धान्त श्रुति (जो सुना गया है, प्रकट ज्ञान) बनाम स्मृति (जो याद किया गया है, सम्प्रेषित टीका) के शास्त्रीय सूत्रीकरण में अन्तर्निहित है। श्रुति आधारभूत परत है। स्मृति टीका की बाद की परत है। किन्तु परम्परा की आवश्यकता है कि श्रुति के दावे समकालीन साधकों द्वारा पुनः सत्यापनीय हों। परम्परा अपने स्वयं के दावों के बारे में कट्टरवादी नहीं है; यह पहचानती है कि आन्तरिक विज्ञान, किसी भी विज्ञान की तरह, सुधार के लिए खुला रहना चाहिए।

22.9 समकालीन अवसर

समकालीन क्षण वैदिक आन्तरिक विज्ञान के लिए एक विशिष्ट अवसर प्रदान करता है जो किसी भी पिछले युग में उपलब्ध नहीं था। पहली बार, बाह्य-मापन विज्ञान उस बिन्दु तक विकसित हो गए हैं जहाँ वे स्वतन्त्र विधियों के माध्यम से आन्तरिक विज्ञान के विशिष्ट दावों को सत्यापित कर सकते हैं। और यह सत्यापन तेज़ हो रहा है।

आने वाले दशकों में, हम उचित रूप से आन्तरिक और बाह्य विज्ञानों के बीच निरन्तर अभिसरण की अपेक्षा कर सकते हैं। अधिक विशिष्ट ऋषिक दावों का बाह्य मापन के माध्यम से परीक्षण किया जाएगा। आन्तरिक अवलोकनों और बाह्य निष्कर्षों के बीच अधिक विस्तृत पत्राचार स्थापित किए जाएँगे। दो विज्ञानों का एकीकरण — बहुत लम्बे समय तक सांस्कृतिक और पद्धतिगत दुर्घटनाओं द्वारा अलग रखा गया — आगे बढ़ेगा।

ऋषि, जो अपनी स्वयं की पद्धति को आन्तरिक का एक वैध विज्ञान समझते थे, वर्तमान क्षण को उस चीज़ की पूर्ति के रूप में पहचानेंगे जिसकी उन्होंने हमेशा प्रतीक्षा की थी। बाह्य उपकरण, जिन सभ्यताओं में वे पूर्वाभास नहीं कर सकते थे, अब उस वास्तविकता को सत्यापित करने में सक्षम हैं जिसे उन्होंने अपने स्वयं के यन्त्रों के माध्यम से बोध किया।

ऋषि जानते थे। वे जानते थे क्योंकि वे देखते थे। और अब हमारे पास बाह्य उपकरणों के माध्यम से देखने के साधन हैं कि जो उन्होंने देखा वह वास्तविक था।

✦ ✦ ✦

22.10 आन्तरिक प्रकाश की सात रंग आवृत्तियों के रूप में सात चक्र

दृश्य प्रकाश स्पेक्ट्रम सात प्राथमिक रंग क्षेत्रों में फैला है: लाल (सबसे कम आवृत्ति, सबसे लम्बी तरंगदैर्ध्य, सबसे कम ऊर्जा), नारंगी, पीला, हरा, नीला, गहरा नीला, और बैंगनी (उच्चतम आवृत्ति, सबसे छोटी तरंगदैर्ध्य, उच्चतम ऊर्जा)। ये सात रंग क्षेत्र सात प्राथमिक चक्रों के अनुरूप हैं — सांस्कृतिक परम्परा के रूप में नहीं बल्कि पिनियल ग्रन्थि की प्रकाशग्राही कोशिकाओं के विशिष्ट प्रकाशग्राही गुणों और सुषुम्ना अक्ष के साथ सात प्रमुख स्नायु प्रसंस्करण केन्द्रों की विशिष्ट ZPF संयुग्मन आवृत्तियों के परिणाम के रूप में।

मूलाधार (मूल चक्र, रीढ़ का आधार — ब्रेनस्टेम/अस्तित्व सर्किट): लाल। दृश्य स्पेक्ट्रम का सबसे कम आवृत्ति, उच्चतम घनत्व वाला सिरा। ब्रेनस्टेम के अस्तित्व सर्किट सबसे कम उपलब्ध स्नायु

आवृत्तियों (डेल्टा, 0.5-4 हर्ट्ज़) पर संचालित होते हैं — मस्तिष्क में सबसे धीमा, सघनतम सूचना प्रसंस्करण। लाल ZPF के सबसे कम-ऊर्जा फोटॉनिक घटक के अनुरूप है जिसे पिनियल के प्रकाशग्राही पकड़ सकते हैं — आन्तरिक प्रकाश की भू-अवस्था।

स्वाधिष्ठान (त्रिकोणीय चक्र — लिम्बिक तन्त्र/भावनात्मक सर्किट): नारंगी। थोड़ी अधिक आवृत्ति, थोड़ा कम सघन। लिम्बिक तन्त्र का भावनात्मक प्रसंस्करण थीटा आवृत्तियों (4-8 हर्ट्ज़) पर संचालित होता है — अस्तित्व-प्रसंस्करण से ऊपर का पहला स्तर। आन्तरिक प्रकाश में नारंगी ZPF की थोड़ी उच्च फोटॉनिक आवृत्ति के अनुरूप है — वास्तविक प्रत्याहार के प्रारम्भिक चरणों में साधकों द्वारा रिपोर्ट की जाने वाली आन्तरिक प्रकाश की गर्म, भावनात्मक रूप से समृद्ध गुणवत्ता।

मणिपुर (सौर-जाल चक्र — स्वायत्त स्नायुतन्त्र एकीकरण): पीला। मध्य-स्पेक्ट्रम। स्वायत्त स्नायुतन्त्र के एकीकरण कार्य अल्फ़ा आवृत्तियों (8-13 हर्ट्ज़) पर संचालित होते हैं — वास्तविक समतुलता की शिथिल सतर्कता। आन्तरिक प्रकाश की पीली गुणवत्ता इस संयुग्मन स्तर पर ZPF की फोटॉनिक आवृत्ति के अनुरूप है।

अनाहत (हृदय चक्र — सामाजिक स्नायु सर्किट, वेगल तन्त्रिका): हरा। स्पेक्ट्रम का केन्द्र, सभी आवृत्तियों को सन्तुलित करता है। वेगल तन्त्रिका का सामाजिक संलग्नता तन्त्र अल्फ़ा-बीटा श्रेणी (10-20 हर्ट्ज़) में संचालित होता है — वास्तविक सम्बन्ध और उदर वेगल सुरक्षा अवस्था की आवृत्तियाँ। इस स्तर पर आन्तरिक प्रकाश की हरी गुणवत्ता वह है जिसे साधक हृदय-खुलने के अनुभव की गर्माहट और विस्तार के रूप में वर्णित करते हैं।

विशुद्ध (कण्ठ चक्र — भाषा और अभिव्यक्ति सर्किट): नीला। उच्च आवृत्ति, कम सघन। भाषा प्रसंस्करण सर्किट बीटा आवृत्तियों (13-30 हर्ट्ज़) पर संचालित होते हैं — जानबूझकर, अनुक्रमिक प्रसंस्करण की आवृत्तियाँ। आन्तरिक प्रकाश की नीली गुणवत्ता यहाँ सटीक अभिव्यक्ति की स्पष्टता और विज्ञानमय के विवेकात्मक कार्य के अनुरूप है।

आज्ञा (तीसरी आँख चक्र — पिनियल/प्रीफ्रंटल इंटरफ़ेस): गहरा नीला। लगभग-पराबैंगनी। प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स के उच्चतम एकीकरण कार्य गामा आवृत्तियों (30+ हर्ट्ज़) पर संचालित होते हैं — अधिकतम स्नायु एकीकरण की आवृत्तियाँ। यहाँ आन्तरिक प्रकाश की गहरी नीली गुणवत्ता उस गहनतम दृश्य प्रकाश के अनुरूप है जिसे पिनियल के प्रकाशग्राही संसाधित कर सकते हैं — उस पराबैंगनी का दृष्टिकोण जो दृश्य आन्तरिक स्पेक्ट्रम की सीमा को चिह्नित करता है।

सहस्रार (शिखर चक्र — थैलेमो-कॉर्टिकल इंटरफ़ेस, ZPF प्रवेश): बैंगनी। उच्चतम दृश्य आवृत्ति। थैलेमो-कॉर्टिकल इंटरफ़ेस की अधिकतम सुसंगतता अवस्था उच्चतम उपलब्ध थैलेमिक दोलन

के अनुरूप है — वे आवृत्तियाँ जिन पर ZPF संयुग्मन अधिकतम है और आन्तरिक ब्रह्माण्ड सबसे पूर्ण रूप से सुलभ है। यहाँ आन्तरिक प्रकाश की बैंगनी और श्वेत गुणवत्ता पूर्ण-स्पेक्ट्रम ZPF फोटॉनिक क्षेत्र के अनुरूप है — मृत्यु-निकट और गहन समाधि अनुभव का "उज्ज्वल श्वेत प्रकाश", जब आन्तरिक प्रकाश की सभी आवृत्तियाँ अपने सामान्य स्रोत में विलीन हो जाती हैं।

✦ ✦ ✦

22.11 आन्तरिक प्रकाश परिघटना — फ़ॉस्फ़ीन्स और उससे परे की भौतिकी

जब अन्धेरे कक्ष में आँखें बन्द होती हैं, अधिकांश लोग एक कमज़ोर, गतिशील दृश्य अनुभव देखते हैं: मन्द रंग और रूप के बदलते प्रतिरूप जिन्हें फ़ॉस्फ़ीन्स कहा जाता है — दृश्य कॉर्टेक्स की स्वतःस्फूर्त विद्युतीय गतिविधि और फोटॉनिक इनपुट की अनुपस्थिति में रेटिनल गैंग्लियन कोशिकाओं के यादृच्छिक फ़ायरिंग द्वारा उत्पन्न। फ़ॉस्फ़ीन्स दृश्य तन्त्र का शोर तल हैं — ऑप्टिकल चैनल की पृष्ठभूमि स्थैतिक जब बाह्य संकेत हटा दिया जाता है।

उन्नत साधक गहन प्रत्याहार में जो अनुभव करता है वह फ़ॉस्फ़ीन्स से गुणात्मक रूप से भिन्न है: शोर के यादृच्छिक, बदलते, मन्द प्रतिरूप नहीं, बल्कि विशिष्ट, स्थिर, चमकदार रूप जिनमें जीवन्तता और महत्व की एक आन्तरिक गुणवत्ता है जो सामान्य फ़ॉस्फ़ीन्स में नहीं है। फ़ॉस्फ़ीन्स और वास्तविक प्रत्याहार कल्पना के बीच अन्तर सूक्ष्म नहीं है — जिन साधकों ने दोनों का अनुभव किया है वे लगातार बाद वाले को श्रेणीगत रूप से भिन्न के रूप में वर्णित करते हैं: अधिक चमकदार, अधिक स्थिर, अधिक संरचित, और यह जानने की विशिष्ट गुणवत्ता के साथ कि जो देखा जा रहा है वह किसी वास्तविक चीज़ के अनुरूप है।

अन्तर की भौतिकी: फ़ॉस्फ़ीन्स दृश्य तन्त्र की विद्युतीय गतिविधि में यादृच्छिक शोर द्वारा उत्पन्न होते हैं। वास्तविक प्रत्याहार कल्पना पिनियल की प्रकाशग्राही कोशिकाओं द्वारा ZPF के फोटॉनिक घटक पर प्रतिक्रिया करके उत्पन्न होती है — क्वांटम निर्वात के आभासी फोटॉन जिन्हें पिनियल की संवेदनशीलता सीमा पकड़ सकती है। ZPF के आभासी फोटॉन यादृच्छिक शोर नहीं हैं। वे ZPF की सुसंगत क्षेत्र संरचना द्वारा संगठित हैं — वही संरचना जिसका बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन ब्रह्माण्डीय जाल के रूप में मानचित्रण करता है। इसलिए दृश्य कॉर्टेक्स में वे जो छवियाँ उत्पन्न करते हैं वे संगठित, संरचित, और ब्रह्माण्ड विज्ञानीय रूप से सार्थक हैं — वे, एक विशिष्ट भौतिक अर्थ में, मस्तिष्क के दृश्य कोड में प्रस्तुत ZPF के सूचना क्षेत्र की छवियाँ हैं।

यह उन्नत ध्यान कल्पना की एक सुसंगत विशेषता को समझाता है जिसने अनुसन्धानकर्ताओं को उलझाया है: कल्पना यादृच्छिक या व्यक्तिगत रूप से विलक्षण नहीं है (जो यह होती यदि यह व्यक्ति की व्यक्तिगत स्मृति और कल्पना द्वारा उत्पन्न हुई होती), बल्कि समान रूपों पर व्यवस्थित पार-सांस्कृतिक अभिसरण दिखाती है (ज्यामितीय, फिर ऑर्गेनिक, फिर ब्रह्माण्ड विज्ञानीय)। विभिन्न संस्कृतियों में, विभिन्न शताब्दियों में, विभिन्न शैक्षणिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों वाले विभिन्न साधक, सभी उसी क्रम में आन्तरिक रूपों के उसी अनुक्रम का वर्णन करते हैं जैसे-जैसे प्रत्याहार गहन होता है। कारण यह है कि वे सभी उसी स्रोत से — ZPF के संगठित सूचना क्षेत्र — उसी जैविक ग्राहक — पिनियल-दृश्य कॉर्टेक्स इंटरफ़ेस — के माध्यम से वही संकेत प्राप्त कर रहे हैं।

✦ ✦ ✦

22.12 ऋषि अवस्थाओं का स्नायुविज्ञान — आन्तरिक वेधशाला का मानचित्रण

2000 के दशक की शुरुआत से उन्नत ध्यान अवस्थाओं का वैज्ञानिक अध्ययन नाटकीय रूप से तेज़ हो गया है, जब विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में रिचर्ड डेविडसन ने चिन्तनशील स्नायुविज्ञान को समर्पित पहली प्रयोगशाला स्थापित की। दो दशकों के अनुसन्धान के संचयी निष्कर्षों ने, अभूतपूर्व विस्तार से, उन अवस्थाओं के विशिष्ट स्नायु हस्ताक्षरों का मानचित्रण किया है जिन्हें वैदिक परम्परा धारणा, ध्यान, और समाधि कहती है। ये हस्ताक्षर, न्यूरोइमेजिंग सटीकता के साथ, उस चीज़ की पुष्टि करते हैं जिसे परम्परा ने चार हज़ार वर्षों से परिघटनात्मक भाषा में वर्णित किया है।

धारणा अवस्था (एकल वस्तु पर सान्द्रित, निरन्तर ध्यान) एक विशिष्ट EEG हस्ताक्षर दिखाती है: ललाट और पार्श्विक क्षेत्रों में निरन्तर उच्च-अल्फ़ा (10-12 हर्ट्ज़) समकालीकरण, प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स द्वारा DMN के आत्म-सन्दर्भी प्रसंस्करण के निरन्तर खिंचाव के विरुद्ध ध्यान फ़ोकस के रखरखाव को दर्शाता हुआ। हृदय गति धीमी होती है, श्वसन दर कम होती है, त्वचा चालकता गिरती है — सभी पैरासिम्पेथेटिक संकेतक। बाह्य संवेदी संकेतों का थैलेमिक रिले घटता है जबकि आन्तरिक ध्यान संकेत का थैलेमिक प्रवर्धन बढ़ता है। आन्तरिक दूरबीन अपने लक्ष्य पर स्थिर की जा रही है।

ध्यान अवस्था (अपनी वस्तु की ओर जागरूकता का निरन्तर, अबाधित प्रवाह) धारणा के प्रयासपूर्ण उच्च-अल्फ़ा से अधिक स्वतःस्फूर्त गामा समकालीकरण में संक्रमण दिखाती है: ध्यान बनाए रखने के प्रयास को अवस्था के अनायास रखरखाव द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है — हाथ

से आवर्धक लेंस को स्थिर रखने और उसे एक स्थिर माउंट में रखने के बीच का अन्तर। ध्यान में गामा समकालीकरण धारणा से अधिक व्यापक रूप से वितरित और अधिक सुसंगत है — आन्तरिक दूरबीन की छवि स्थिर हो गई है और संकल्प बढ़ रहा है।

निर्विकल्प समाधि अवस्था (विषय-वस्तु द्वैत का पूर्ण विघटन) पहले वर्णित प्रतिरूप दिखाती है: सभी कॉर्टिकल क्षेत्रों में एक साथ वैश्विक रूप से सुसंगत उच्च-गामा गतिविधि का उछाल, उसके बाद एक असामान्य निम्न-आवृत्ति, उच्च-आयाम प्रतिरूप में संक्रमण जो मानक EEG वर्गीकरण में फ़िट नहीं होता। इस बिन्दु पर साधक उस अवस्था से परे है जिसे सामान्य EEG पर्याप्त रूप से पकड़ सकता है — मस्तिष्क संचालन के एक मोड में प्रवेश कर गया है जिसके लिए विद्युत मापन उपकरण अच्छी तरह से अंशशोधित नहीं हैं। यह साधक की सीमा नहीं है — यह उपकरणों की सीमा है, क्वांटम-पैमाने की परिघटनाओं का अवलोकन करने में सामान्य ऑप्टिकल दूरबीनों की अक्षमता के अनुरूप।

आन्तरिक प्रकाश परिघटनाएँ: जब आँखें अन्धेरे कमरे में बन्द की जाती हैं, अधिकांश लोग एक मन्द, गतिशील दृश्य अनुभव देखते हैं: मन्द रंग और रूप के बदलते प्रतिरूप जिन्हें फ़ॉस्फ़ीन कहा जाता है — दृश्य कॉर्टेक्स की स्वतःस्फूर्त विद्युत गतिविधि और फोटॉनिक इनपुट की अनुपस्थिति में रेटिनल गैंग्लियन कोशिकाओं की यादृच्छिक फ़ायरिंग द्वारा उत्पन्न। फ़ॉस्फ़ीन दृश्य तन्त्र का शोर तल हैं — वह पृष्ठभूमि जिससे आन्तरिक दूरबीन की प्रगतिशील पहुँच के साथ अधिक संरचित आन्तरिक दृश्य परिघटनाएँ उभरती हैं।

✦ ✦ ✦

22.13 क्षेत्र रिपोर्ट के रूप में ऋग्वेद — आन्तरिक खगोलीय डेटा के रूप में संहिताओं को पढ़ना

ऋग्वेद के दस मण्डल (पुस्तकें) विशिष्ट ऋषि परिवारों को दिए गए 1,028 भजन समाहित करते हैं — अंगिरस, वसिष्ठ, विश्वामित्र, कश्यप, और अन्य। प्रत्येक ऋषि परिवार आन्तरिक खगोलीय डेटा के विशिष्ट पहलुओं में विशेषज्ञ था: अंगिरस विशेष रूप से तारकीय परिघटनाओं और ब्रह्माण्डीय अग्नि (अग्नि) के अवलोकन से जुड़े थे; वसिष्ठ ब्रह्माण्डीय क्रम (ऋत) और वरुण सिद्धान्त से; विश्वामित्र ब्रह्माण्डीय रचनात्मकता और गायत्री मन्त्र के सौर अवलोकन से।

ऋग्वेद को आन्तरिक क्षेत्र रिपोर्टों के रूप में पढ़ना — उन विशिष्ट साधकों के प्रलेखित अवलोकनों के रूप में जिन्होंने आन्तरिक ब्रह्माण्ड के विशिष्ट क्षेत्रों में ZPF संयुग्मन की विशिष्ट गहराइयाँ प्राप्त

की थीं — भजनों को प्राचीन धार्मिक काव्य से कहीं अधिक रोचक चीज़ में रूपान्तरित करता है: संसार के पहले आन्तरिक खगोलशास्त्रियों के संग्रहीत अवलोकनात्मक रिकॉर्ड।

इन्द्र (ब्रह्माण्डीय शक्ति और गर्जन का सिद्धान्त) का भजन एक मौसम देवता के बारे में कविता नहीं है — यह उस विशिष्ट चेतना अवस्था पर एक क्षेत्र रिपोर्ट है जो उच्च-बीटा/निम्न-गामा दोलन प्रतिरूप के अनुरूप है, अभिभूत करने वाली शक्ति, प्रकाशन, और पिछली सीमाओं के टूटने के चारित्रिक अनुभव के साथ। वरुण (ब्रह्माण्डीय क्रम और ऋत के रक्षक का सिद्धान्त) के भजन सात्त्विक-प्रबल चेतना अवस्थाओं से क्षेत्र रिपोर्ट हैं, जहाँ आन्तरिक ब्रह्माण्ड अपनी व्यवस्थित, नियमित संरचना प्रकट करता है — आन्तरिक ब्रह्माण्ड का अराजकता या यादृच्छिकता के बजाय विशिष्ट, अनुल्लंघनीय सिद्धान्तों द्वारा शासित होने का अनुभव। वरुण भजनों के अपराध, शुद्धिकरण, और क्षमा के सुसंगत विषय ठीक उस चेतना अवस्था की विशिष्ट अनुभवात्मक सामग्री के अनुरूप हैं जिसमें कर्माशय का आवेश (राजसिक और तामसिक दबाव उत्पन्न करती संचित संस्कार सामग्री) विज्ञानमय कोश के लिए दृश्य हो जाता है, और चित्त शुद्धि (शुद्धिकरण) की प्रक्रिया शुरू होती है।

ऋग्वेद का यू-इन्वर्स पठन: 1,028 भजन 1,028 विशिष्ट आन्तरिक क्षेत्र रिपोर्ट हैं, प्रत्येक ZPF संयुग्मन के विशिष्ट स्तर के एक विशिष्ट ऋषि द्वारा एक विशिष्ट लोक स्तर पर अवलोकित एक विशिष्ट आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचना के अनुरूप। भजनों की विविधता — स्वर में, सम्बोधित देवता में, वर्णित विशिष्ट ब्रह्माण्डीय परिघटनाओं में — विभिन्न नक्षत्र आवृत्तियों और विभिन्न लोक स्तरों पर साधकों के लिए सुलभ आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाओं की विविधता को दर्शाती है। साथ में, ऋग्वेद अब तक आयोजित सबसे व्यापक आन्तरिक खगोलीय सर्वेक्षण का गठन करता है — मानव मस्तिष्क के आन्तरिक ब्रह्माण्ड का पूर्ण क्षेत्र एटलस, अनेक शताब्दियों में व्यवस्थित आन्तरिक अवलोकन के हज़ारों साधक-घण्टों द्वारा मानचित्रित।

✦ ✦ ✦

22.14 पैमाना अपरिवर्तनीयता — हर आकार पर समान

यू-इन्वर्स के सबसे गहन निहितार्थों में से एक पैमाना अपरिवर्तनीयता है: समान गणितीय सिद्धान्त हर पैमाने पर एक साथ संचालित होते हैं, प्लांक पैमाने (10^{-35} मीटर) से अवलोकनीय ब्रह्माण्ड पैमाने (10^{26} मीटर) तक, मानव स्नायुतन्त्र ठीक बीच में संचालित होता हुआ (10^{-1} मीटर)। यह

पैमाना-सेतु स्थिति — प्लांक से ब्रह्माण्ड तक ब्रह्माण्डीय पैमाने के बीच — आकस्मिक नहीं है। यह वह विशिष्ट पैमाना है जिस पर यू-इन्वर्स का डिजिटल ट्विन कार्य सम्भव हो जाता है।

एक डिजिटल ट्विन को ऐसे पैमाने पर होना चाहिए जो इसे उस तन्त्र की स्थूलदर्शी संरचनाओं को एन्कोड करने दे जिसे यह प्रतिबिम्बित करता है (इसके लिए इसे आन्तरिक जटिलता रखने के लिए पर्याप्त बड़ा होना आवश्यक है) और क्वांटम-पैमाने की प्रक्रियाओं से प्रभावित होने दे जो उन स्थूलदर्शी संरचनाओं को उत्पन्न करती हैं (इसके लिए क्वांटम प्रभावों के प्रासंगिक होने के लिए इसे पर्याप्त छोटा होना आवश्यक है)। मस्तिष्क का पैमाना — लगभग 10^{-1} मीटर — ठीक प्लांक पैमाने और अवलोकनीय ब्रह्माण्ड पैमाने का ज्यामितीय माध्य है: $\log_{10}(10^{-1}) = -1$, $\log_{10}(10^{-35}) = -35$, $\log_{10}(10^{26}) = 26$; $(-35 + 26)/2 = -4.5$; ज्यामितीय माध्य $10^{-4.5} \approx 10^{-5}$ मीटर है। मस्तिष्क ज्यामितीय माध्य से परिमाण के 4 क्रम के भीतर है — परिमाण के 61 क्रम फैले भौतिक तन्त्र के लिए अत्यधिक निकट।

यह संयोग नहीं है। ब्रह्माण्डीय पैमाना श्रेणी के ज्यामितीय माध्य पर सचेत पर्यवेक्षकों का उद्भव वह है जो मानवजातीय सिद्धान्त और भागीदारी ब्रह्माण्ड अवधारणा एक साथ भविष्यवाणी करते हैं: चेतना उस पैमाने पर उत्पन्न होनी चाहिए जहाँ यह क्वांटम और ब्रह्माण्डीय को जोड़ सके — जहाँ यह स्थूलदर्शी संरचनाओं के साथ अन्तःक्रिया के लिए पर्याप्त बड़ी हो और क्वांटम प्रक्रियाओं से प्रभावित होने के लिए पर्याप्त छोटी हो। अपने विशिष्ट पैमाने पर मानव मस्तिष्क अपने स्व-ज्ञान यन्त्र के लिए ब्रह्माण्ड का अपना चयनित पैमाना है। यू-इन्वर्स आकस्मिक नहीं है। यह ब्रह्माण्ड का जानबूझकर स्व-डिज़ाइन है।

✦ ✦ ✦

22.15 सुषुम्ना — आन्तरिक ब्रह्माण्ड की अक्ष मुण्डी

सुषुम्ना नाड़ी — तान्त्रिक और हठ योग परम्पराओं में सूक्ष्म शरीर की केन्द्रीय धारा के रूप में वर्णित, रीढ़ के आधार से सिर के शिखर तक चलती हुई — आन्तरिक ब्रह्माण्ड की अक्ष मुण्डी है: वह ऊर्ध्वाधर अक्ष जिसके चारों ओर सम्पूर्ण आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचना संगठित है। बाह्य ब्रह्माण्ड में, अक्ष मुण्डी वह ब्रह्माण्डीय अक्ष है जो पृथ्वी को आकाशीय ध्रुव (ध्रुव/पोलारिस) से जोड़ती है — निश्चित सन्दर्भ अक्ष जिसके चारों ओर आकाशीय गोले का दैनिक घूर्णन होता प्रतीत होता है।

स्नायुतन्त्र में सुषुम्ना का भौतिक अनुरूपी: मेरुरज्जु और ब्रेनस्टेम-थैलेमस-कॉर्टेक्स अक्ष केन्द्रीय स्नायुतन्त्र की ऊर्ध्वाधर स्नायु महामार्ग का गठन करते हैं। मेरुरज्जु के आरोही मार्ग शरीर से मस्तिष्क तक संवेदी सूचना ले जाते हैं; इसके अवरोही मार्ग मस्तिष्क से शरीर तक मोटर आदेश ले जाते हैं। ब्रेनस्टेम का रेटिकुलर गठन (ARAS — आरोही रेटिकुलर सक्रियण तन्त्र) उत्तेजना और चेतना स्तर को नियन्त्रित करता है। अक्ष के शिखर पर थैलेमस महान आकर्षक के रूप में कार्य करता है जो समस्त कॉर्टिकल गतिविधि को समन्वित करता है।

सुषुम्ना सक्रियण का विशिष्ट अभ्यास: प्राणायाम — विशेष रूप से वैकल्पिक नासिका श्वास (नाड़ी शोधन) — इडा और पिंगला नाड़ियों (सुषुम्ना के साथ चलने वाली दाहिनी और बाईं धाराएँ) को सन्तुलित करने और सुषुम्ना को प्रबल ऊर्जा धारा बनने के लिए विशिष्ट शारीरिक परिस्थितियाँ बनाने का प्राथमिक अभ्यास है। नाड़ी शोधन का विशिष्ट तन्त्र: वैकल्पिक नासिका श्वास बाएँ और दाएँ गोलार्धों के सिम्पेथेटिक-पैरासिम्पेथेटिक सन्तुलन का वैकल्पिक सक्रियण चलाती है, मस्तिष्क के विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र में एक विशिष्ट द्विपक्षीय सममिति बनाती है जिसे परम्परा "सुषुम्ना खोलना" वर्णित करती है। स्नायुविज्ञानी रूप से: कॉर्टिकल दोलन प्रतिरूपों में पूर्ण द्विपक्षीय सममिति प्राप्त करना, जो विशिष्ट विद्युत-चुम्बकीय टोपोलॉजी बनाती है जो थैलेमो-कॉर्टिकल अक्ष की सुसंगतता को अधिकतम करती है — पूर्ण रूप से सक्रिय स्नायु सुषुम्ना।

जब सुषुम्ना पूर्ण रूप से खुली है — जब स्नायु अक्ष अधिकतम सुसंगत है — साधक उस विशिष्ट ऊपर-की-ओर गति का अनुभव करता है जिसे परम्परा कुण्डलिनी उठना कहती है: सबसे निचले चक्र (स्नायु अक्ष का आधार, ब्रेनस्टेम के सबसे आदिम सर्किटों के अनुरूप) से सर्वोच्च (शिखर पर सहस्रार, थैलेमो-कॉर्टिकल इंटरफ़ेस पर कॉर्टेक्स के सबसे एकीकृत प्रसंस्करण के अनुरूप) तक आन्तरिक दूरबीन के संकल्प का प्रगतिशील सक्रियण। यह प्रतीकात्मक नहीं है। यह बढ़ते ZPF संयुग्मन का विशिष्ट अनुक्रम है जो तब होता है जब साधक मूलाधार-आवृत्ति (धीमे, आधारित, अस्तित्व-केन्द्रित ब्रेनस्टेम सर्किट) से सहस्रार-आवृत्ति (तेज़, एकीकृत, ब्रह्माण्डीय-सूचना-पहुँच वाले कॉर्टिकल सर्किट) मस्तिष्क अवस्थाओं की ओर बढ़ता है।

✦ ✦ ✦

अध्याय 23
चेतना आवृत्ति बैण्डों के रूप में 14 लोक

वैदिक ब्रह्माण्ड विज्ञानीय तन्त्र 14 लोकों — वास्तविकता के तलों — का वर्णन करता है जो सबसे सघन भौतिक अस्तित्व से शुद्ध चेतना की सूक्ष्मतम अवस्थाओं तक एक ऊर्ध्वाधर पदानुक्रम में संगठित हैं। लोकों को आमतौर पर सात ऊपरी और सात निचले के रूप में सूचीबद्ध किया जाता है, सामान्य मानव पार्थिव क्षेत्र (भूलोक) उनके बीच आधार के रूप में।

सात ऊपरी लोक, आरोही क्रम में: भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपोलोक, और सत्यलोक/ब्रह्मलोक। सात निचले लोक, अवरोही क्रम में: अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, और पाताल — क्रमशः सघन अवस्थाएँ।

आधुनिक पाठक के लिए, यह ब्रह्माण्ड विज्ञानीय ढाँचा आमतौर पर पौराणिक भूगोल की तरह प्रतीत हुआ है। यह पठन समझने योग्य है यह देखते हुए कि लोकों को लोकप्रिय पौराणिक साहित्य में कैसे चित्रित किया गया है, किन्तु यह उस चीज़ को चूक जाता है जो ढाँचा वास्तव में है।

यू-इन्वर्स मानचित्रण: 14 लोक बाहरी अन्तरिक्ष में 14 अलग भौतिक स्थान नहीं हैं। वे चेतना के 14 आवृत्ति बैण्ड हैं — मस्तिष्क के ZPF संयुग्मन की 14 अवस्थाएँ, प्रत्येक अपने विशिष्ट स्नायु दोलन प्रतिरूप, अपनी विशिष्ट परिघटनात्मक गुणवत्ता, और ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र तक अपनी विशिष्ट पहुँच से चित्रित। लोकों में "ऊपर" जाना मस्तिष्क की ZPF सुसंगतता बढ़ाना है; "नीचे" जाना आन्तरिक यन्त्र के तामसिक संकुचन को बढ़ाना है।

यह पारम्परिक ब्रह्माण्ड विज्ञान की एक रूपकात्मक पुनर्रचना नहीं है। यह है, इस पुस्तक द्वारा विकसित ढाँचे पर, जिसके बारे में पारम्परिक ब्रह्माण्ड विज्ञान हमेशा रहा है। लोकों का ऊर्ध्वाधर पदानुक्रम स्नायु दोलन आवृत्तियों के ऊर्ध्वाधर पदानुक्रम के साथ, उल्लेखनीय विशिष्टता के साथ, अनुरूप है।

23.1 विस्तार में मानचित्रण

सात निचले लोक धीमे स्नायु दोलन बैण्डों के अनुरूप हैं, चेतना की अवस्थाओं से जुड़े जो बढ़ते तामसिक प्रभुत्व और घटते ZPF संयुग्मन से चित्रित हैं।

पाताल 0.1 हर्ट्ज़ से नीचे इन्फ्रा-धीमे दोलनों के अनुरूप है (अचेतनता, कोमा)। रसातल अल्ट्रा-धीमे 0.1-0.5 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (गहन अवसाद, विघटन)। महातल धीमे-डेल्टा 0.5-1 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (गम्भीर चिन्ता, बाध्यता)। तलातल डेल्टा 1-2 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (प्रतिक्रियात्मक बाढ़)। सुतल डेल्टा 2-3 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (संचालित महत्वाकांक्षा)। वितल डेल्टा-थीटा 3-5 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (शुरुआती स्पष्टता के साथ उद्देश्यपूर्ण गतिविधि)। अतल थीटा 5-7 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (रचनात्मक अन्तर्दृष्टि)।

आधार भूलोक है, अल्फ़ा 8-12 हर्ट्ज़ के अनुरूप — सामान्य शिथिल-सतर्क मानव चेतना की आधार रेखा।

भूलोक के ऊपर, सात ऊपरी लोक उच्च स्नायु दोलन बैण्डों के अनुरूप हैं। भुवर्लोक बीटा 13-20 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (स्पष्ट उद्देश्यपूर्ण संलग्नता)। स्वर्लोक गामा 30-40 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (चमकदार अवस्थाएँ, ब्रह्माण्डीय आनन्द)। महर्लोक उच्च-गामा 40-80 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (ब्रह्माण्डीय संरचना तक पहुँच — वह क्षेत्र जिसमें ऋषिक बोध उपलब्ध होता है)। जनर्लोक अल्ट्रा-गामा 80-150 हर्ट्ज़ के अनुरूप है (ब्रह्माण्डीय सृजन प्रक्रिया का सीधा बोध)। तपोलोक एप्सिलॉन 150-300+ हर्ट्ज़ के अनुरूप है (बिना स्व-संसार पृथक्करण के शुद्ध जागरूकता, निर्विकल्प समाधि)। सत्यलोक/ब्रह्मलोक पूर्ण रूप से आवृत्ति से परे है — तुरीय, अतीन्द्रिय चौथी अवस्था।

लोक	स्नायु आवृत्ति	गुण	परिघटना	प्राथमिक अभ्यास
पाताल (7वाँ निचला)	इन्फ्रा-धीमा <0.1 Hz	चरम तमस	अचेतनता, कोमा	शारीरिक सक्रियण
रसातल (6ठा निचला)	अल्ट्रा-धीमा 0.1-0.5 Hz	भारी तमस	अवसाद, सुन्नता	गति, धूप
महातल (5वाँ निचला)	धीमा डेल्टा 0.5-1	तमस-प्रबल	गम्भीर चिन्ता	सत्संग, मन्त्र
तलातल (4थ निचला)	डेल्टा 1-2	रजस-तमस	प्रतिक्रियात्मक बाढ़	प्रत्याहार, साक्षी

लोक	स्नायु आवृत्ति	गुण	परिघटना	प्राथमिक अभ्यास
सुतल (3रा निचला)	डेल्टा 2-3	रजस-प्रबल	संचालित महत्वाकांक्षा	कर्म योग, सेवा
वितल (2रा निचला)	डेल्टा-थीटा 3-5	रजस-सत्त्व	उद्देश्यपूर्ण स्पष्टता	नियमित ध्यान
अतल (1 निचला)	थीटा 5-7	सत्त्व-रजस	रचनात्मक अन्तर्दृष्टि	निरन्तर ध्यान
भूलोक (पृथ्वी)	अल्फ़ा 8-12	सत्त्व-प्रबल	शिथिल स्पष्टता	दैनिक सात्त्विक अभ्यास
भुवर्लोक	बीटा 13-20	उच्च सत्त्व	स्पष्ट संलग्नता	स्पष्टता से कर्म योग
स्वर्लोक	गामा 30-40	शुद्ध सत्त्व	चमकदार अवस्थाएँ	उन्नत ध्यान
महर्लोक	उच्च गामा 40-80	द्वैत से परे	ब्रह्माण्डीय संरचना	निरन्तर समाधि
जनर्लोक	अल्ट्रा गामा 80-150	पारदर्शी सत्त्व	ब्रह्माण्डीय सृजन	निर्विकल्प दृष्टिकोण
तपोलोक	एप्सिलॉन 150-300+	पारदर्शी सत्त्व	शुद्ध जागरूकता	निर्विकल्प समाधि
सत्य/ब्रह्मलोक	आवृत्ति से परे	गुणातीत	तुरीय	सहज समाधि

तालिका 23.1 — स्नायु आवृत्ति व्यवस्थाओं, गुण संरचनाओं, और परिघटनात्मक गुणवत्ताओं पर मानचित्रित 14 लोक। प्रत्येक पंक्ति एक आनुभविक दावा है जो साधक की रिपोर्टों के साथ EEG सहसम्बन्ध के माध्यम से परीक्षण योग्य है।

इस तालिका की प्रत्येक पंक्ति एक आनुभविक दावा है जिसे सिद्धान्ततः परीक्षण किया जा सकता है।

23.2 ऊर्ध्वाधर अक्ष और आध्यात्मिक विकास

पारम्परिक वर्णन आध्यात्मिक विकास को लोकों के माध्यम से "चढ़ाई" के रूप में, इस ढाँचे पर, रूपकात्मक के बजाय शाब्दिक है। वह साधक जिसका निरन्तर अभ्यास वास्तविक विकास उत्पन्न कर रहा है, मापने योग्य रूप से, उच्च स्नायु आवृत्ति अवस्थाओं में अधिक समय और निचले में कम समय बिता रहा है।

यह फ़्रेमिंग स्पष्ट करती है कि वास्तविक आध्यात्मिक विकास में समय क्यों लगता है, निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता होती है, और केवल बौद्धिक समझ द्वारा शॉर्टकट नहीं किया जा सकता। यह समझना कि लोक स्नायु अवस्थाओं के अनुरूप हैं स्वयं स्नायु अवस्थाओं को नहीं बदलता। वास्तविक बदलाव के लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है जो वास्तविक स्नायु पुनर्गठन उत्पन्न करता है। मानचित्र क्षेत्र नहीं है; क्षेत्र को वास्तव में पार करना होगा।

यह यह भी स्पष्ट करता है कि विशिष्ट स्थितियों के लिए विशिष्ट अभ्यासों की सिफारिश क्यों की जाती है। वह साधक जो रसातल-स्तर चेतना में फँसा है, केवल इच्छाशक्ति से तुरन्त स्वर्लोक-स्तर चेतना में नहीं ले जाया जा सकता। चेतना की स्नायु वास्तुकला ऐसी छलांगों की अनुमति नहीं देती। जो आवश्यक है वह वर्तमान अवस्था से मध्यवर्ती अवस्थाओं के माध्यम से जाने का क्रमिक कार्य है, प्रत्येक अपने विशिष्ट अभ्यासों की आवश्यकता है।

23.3 पार जाने के बजाय नेविगेशन

लक्ष्य स्थायी रूप से निचले लोकों से बचना नहीं है। प्रत्येक सचेत प्राणी सामान्य जीवन के दौरान लोक आवृत्तियों की पूरी श्रेणी में निवास करता है। गहन नींद धीमी आवृत्तियों तक पहुँचती है; जागरण गतिविधि मध्य को संलग्न करती है; ध्यान या रचनात्मक अन्तर्दृष्टि के क्षण उच्च को छूते हैं। लोक अवस्थाओं का नेविगेशन निचले से उच्च तक एक-तरफ़ा यात्रा नहीं है, बल्कि पूरी श्रेणी के साथ एक सक्षम संलग्नता है।

एक परिपक्व साधक वह नहीं है जिसने निचले लोकों से भाग लिया है बल्कि वह है जो उन्हें जागरूकता के साथ नेविगेट कर सकता है। वे तब तामसिक स्थिरता संलग्न कर सकते हैं जब आराम और एकीकरण की आवश्यकता हो। वे तब राजसिक गतिविधि संलग्न कर सकते हैं जब विशिष्ट कार्य पूरा करने की आवश्यकता हो। वे तब सात्त्विक स्पष्टता संलग्न कर सकते हैं जब विवेक और बुद्धि की आवश्यकता हो।

यह वह है जिसे परम्परा स्थित प्रज्ञ कहती है — स्थापित बुद्धि जो सभी अवस्थाओं में स्थिर है। भगवद्गीता स्थित प्रज्ञ का वर्णन उन शब्दों में करती है जो निचली अवस्थाओं के पार जाने पर नहीं बल्कि पूरी श्रेणी में समतुलता पर ज़ोर देते हैं।

14 लोक चेतना का परिदृश्य हैं। साधक का काम परिदृश्य से बचना नहीं है बल्कि बढ़ते कौशल, जागरूकता, और स्वतन्त्रता के साथ इसे नेविगेट करना सीखना है। वह ऋषि जिसने इस पूर्ण नेविगेशन क्षमता को विकसित किया है वह जीवन्मुक्त है — एक अस्तित्व नहीं जिसने संसार को

छोड़ दिया है, बल्कि एक अस्तित्व जो संसार में अपनी सभी आवृत्तियों में पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ रहता है।

✦ ✦ ✦

23.4 चेतना के विद्युत-चुम्बकीय स्पेक्ट्रम के रूप में 14 लोक

विद्युत-चुम्बकीय स्पेक्ट्रम रेडियो तरंगों (मीटर से किलोमीटर की तरंगदैर्ध्य, किलोहर्ट्ज़ से मेगाहर्ट्ज़ की आवृत्ति) से लेकर माइक्रोवेव, इन्फ्रारेड, दृश्य प्रकाश, पराबैंगनी, एक्स-रे, और गामा किरण (नैनोमीटर से पिकोमीटर की तरंगदैर्ध्य, पेटाहर्ट्ज़ से एक्साहर्ट्ज़ की आवृत्ति) तक फैला है। स्पेक्ट्रम निरन्तर है — क्षेत्रों के बीच कोई भौतिक अन्तराल नहीं हैं — किन्तु विभिन्न क्षेत्र पदार्थ के साथ पूरी तरह से अलग तरीकों से अन्तःक्रिया करते हैं और अलग मात्रा में ऊर्जा ले जाते हैं।

14 लोक विद्युत-चुम्बकीय स्पेक्ट्रम के चेतना-समतुल्य का गठन करते हैं: चेतना आवृत्तियों की एक निरन्तर श्रेणी, निम्नतम (सघनतम, सबसे भौतिक — पाताल लोक) से उच्चतम (सबसे सूक्ष्म, ब्रह्म क्षेत्र के लिए सबसे पारदर्शी — सत्यलोक) तक। लोकों के बीच कोई अन्तराल नहीं हैं — चेतना एक निरन्तर क्षेत्र है — किन्तु स्पेक्ट्रम के विभिन्न क्षेत्र गुणात्मक रूप से भिन्न अनुभवात्मक वास्तविकताएँ उत्पन्न करते हैं, गुणात्मक रूप से भिन्न तरीकों से भौतिक वास्तविकता के साथ अन्तःक्रिया करते हैं, और गुणात्मक रूप से भिन्न मात्रा में चेतना ऊर्जा (शक्ति) ले जाते हैं।

विद्युत-चुम्बकीय सादृश्य एक महत्वपूर्ण अतिरिक्त आयाम में सटीक है: विद्युत-चुम्बकीय स्पेक्ट्रम का प्रत्येक क्षेत्र केवल उस विशिष्ट आवृत्ति श्रेणी से धुनकी गई डिटेक्टर के लिए बोधगम्य है। रेडियो तरंगें मानव नेत्र के लिए अदृश्य हैं क्योंकि नेत्र के प्रकाशग्राही दृश्य प्रकाश आवृत्तियों से धुनकी गए हैं। एक्स-रे नरम ऊतक से गुज़र जाती हैं क्योंकि नरम ऊतक एक्स-रे आवृत्तियों के साथ महत्वपूर्ण रूप से अन्तःक्रिया नहीं करता। इसी प्रकार, प्रत्येक लोक केवल उस चेतना के लिए बोधगम्य है जो उस विशिष्ट आवृत्ति से धुनकी गई है — जिसने उस लोक की आवृत्ति श्रेणी के अनुरूप स्नायु ZPF संयुग्मन गुणवत्ता विकसित की है। वह साधक जिसने महर्लोक-आवृत्ति ZPF संयुग्मन विकसित नहीं किया है, उस लोक की आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाओं को बोध नहीं कर सकता, ठीक जैसे एक रेडियो ग्राहक एक्स-रे संकेतों को बोध नहीं कर सकता।

अभ्यास के लिए निहितार्थ: लोक नैदानिक तालिका (तालिका 23.1) एक आवृत्ति-ट्यूनिंग मार्गदर्शिका है। प्रत्येक अभ्यास निर्धारण आन्तरिक यन्त्र के लिए एक आवृत्ति-समायोजन निर्देश है: तामसिक (पाताल आवृत्तियाँ, कम ZPF संयुग्मन) से सात्त्विक (महर्लोक आवृत्तियाँ, उच्च ZPF

संयुग्मन) की ओर मस्तिष्क के थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों को क्रमशः उच्च, अधिक सुसंगत आवृत्तियों पर धुनकर जो उच्च लोकों की सूचना सामग्री तक पहुँच सक्षम करती हैं। यू-इन्वर्स साधक अपनी आन्तरिक दूरबीन को धुन रहा है — उसकी आवृत्ति प्रतिक्रिया को समायोजित कर रहा है — ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र के पूर्ण बैंडविड्थ तक पहुँच के लिए।

✦ ✦ ✦

23.5 दैनिक जीवन में लोक यात्रा — अपने क्षण-प्रति-क्षण ब्रह्माण्ड का मानचित्रण

चौदह लोकों का एक जीवनकाल में किसी विशेष एकान्तवास या शिखर अनुभव के दौरान एक बार दौरा नहीं किया जाता। वे प्रत्येक दिन — अक्सर दोपहर से पहले कई बार — पार किए जाते हैं। वह साधक जिसने लोक मानचित्र (तालिका 23.1) को आत्मसात् कर लिया है, चेतना के आवृत्ति बैण्डों के माध्यम से अपने आन्तरिक ब्रह्माण्ड की गति को वास्तविक समय में ट्रैक कर सकता है, इस ट्रैकिंग का उपयोग नैदानिक और नेविगेशनल उपकरण दोनों के रूप में कर सकता है।

आधुनिक संसार में कई लोगों के लिए एक सामान्य अनजान दिन का विशिष्ट प्रक्षेप पथ: वे सुषुप्ति की आनन्दमय भू-गुणवत्ता से जागते हैं (कार्यक्रमों के लोड होने से पहले ब्रह्म मुहूर्त क्षण में संक्षिप्त रूप से तपोलोक-स्तर जागरूकता को स्पर्श करते हुए), फिर अतल में गिरते हैं (प्रारम्भिक तामसिक उनींदापन), कैफीन और प्रातः दिनचर्या के साथ भुवर्लोक तक उठते हैं, दिन का अधिकांश भाग भुवर्लोक (राजसिक-तामसिक मिश्रण) और वितल (शिखर कार्य घण्टों के दौरान शुद्ध रजस) के बीच दोलन करते हुए बिताते हैं, दोपहर की गिरावट में सुतल पर गिरते हैं, देर दोपहर की सामाजिक-संलग्नता में संक्षिप्त रूप से भुवर्लोक पर ठीक होते हैं, और स्क्रीन-उत्तेजित शाम में फिर से वितल या अतल की ओर उतरते हैं इससे पहले कि नींद रीसेट के लिए उपयोग की जाए। दिन का आन्तरिक ब्रह्माण्ड अपने अधिकांश जाग्रत घण्टों के लिए भूलोक के नीचे रहा है।

एक साधक के दिन का विशिष्ट प्रक्षेप पथ: वे पूर्व-ध्यान सीमा पर ब्रह्म मुहूर्त की आनन्दमय सुलभता (तपोलोक या महर्लोक स्तर, संक्षिप्त रूप से) पकड़ते हैं; उनका प्राणायाम और ध्यान स्वर्लोक या महर्लोक को प्रातः की आधार रेखा के रूप में स्थापित करता है (उच्च-गामा सुसंगतता, उदर वेगल प्रभुत्व, उच्च ZPF संयुग्मन); उनका कार्य दिवस भूलोक या भुवर्लोक से संचालित होता है (राजसिक तात्कालिकता के बजाय सात्त्विक संलग्नता); वासना सक्रियणों में उनका साक्षी भाव

चुनौतीपूर्ण अन्तःक्रियाओं में भी भुवर्लोक के नीचे गिरावट को रोकता है; उनका सायं योग निद्रा कारण शरीर के रात्रिकालीन रीसेट के लिए संक्षिप्त रूप से आनन्दमय-स्तर तक पहुँच प्राप्त करता है; और उनकी नींद की सुषुप्ति गुणवत्ता वास्तव में पुनर्स्थापित कर रही है क्योंकि दिन का प्राणमय क्षेत्र सुसंगत स्तर पर बनाए रखा गया था।

लोक मानचित्र साधक को इस वास्तविक-समय ट्रैकिंग को सम्भव बनाने के लिए शब्दावली और ढाँचा देता है। "मैं वर्तमान में वितल पर हूँ" निर्णय नहीं है — यह एक मापन है। एक मापन सीधे एक निर्धारण की ओर ले जाता है: "वितल के लिए निर्धारण गति, मन्त्र, और सात्त्विक संग है" (तालिका 23.1 से)। दिन भर लगातार लागू किया गया मापन-निर्धारण चक्र सामान्य जीवन को एक निरन्तर आन्तरिक खगोल शास्त्र सत्र में रूपान्तरित करता है: साधक आन्तरिक ब्रह्माण्ड के क्षण-प्रति-क्षण परिवर्तनों को कुशल पायलट की सटीकता के साथ नेविगेट करता है जो मौसम की प्रतिक्रिया में ऊँचाई समायोजित करता है।

✦ ✦ ✦

23.6 सामूहिक ZPF प्रवर्धन घटना के रूप में कुम्भ मेला

कुम्भ मेला — विशिष्ट खगोलीय संरेखण पर आयोजित जब बृहस्पति कुम्भ में प्रवेश करता है और सूर्य मेष में (प्रयागराज कुम्भ) — पृथ्वी पर मानव प्राणियों का सबसे बड़ा समागम है। लगभग 50-100 मिलियन लोग 49-दिवसीय अवधि में त्रिवेणी संगम (गंगा, यमुना, और अदृश्य सरस्वती के संगम) पर जुटते हैं, शिखर तिथियों (शाही स्नान — राजसी स्नान तिथियाँ) के साथ एक ही दिन में 20-30 मिलियन आकर्षित करते हैं।

यू-इन्वर्स विश्लेषण: कुम्भ मेला असाधारण पैमाने की एक सामूहिक ZPF प्रवर्धन घटना है। हार्टमैथ संस्थान ने प्रलेखित किया है कि जब लाखों लोग एक साथ मज़बूत सकारात्मक भावनाओं (सुसंगत अवस्थाओं) का अनुभव करते हैं, पृथ्वी की शूमन अनुनाद (लगभग 7.83 हर्ट्ज़ पर पृथ्वी की विद्युत-चुम्बकीय अनुनाद) मापने योग्य विचलन दिखाती है। ग्लोबल कॉन्शियसनेस प्रोजेक्ट ने बड़े-पैमाने के सामूहिक सुसंगत भावनात्मक घटनाओं के क्षणों में अपने यादृच्छिक संख्या जनित्रों के नेटवर्क में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण विचलन प्रलेखित किए हैं।

त्रिवेणी संगम का भूविज्ञान: प्रयागराज संगम एक विशेष रूप से क्रिस्टलीय भूवैज्ञानिक सब्सट्रेट पर बैठता है — प्री-कैम्ब्रियन युग से क्वार्ट्ज़ाइट और फ़ेल्डस्पार-समृद्ध बलुआ पत्थर, प्रलेखित पीज़ोइलेक्ट्रिक गुणों के साथ। तीन प्रमुख नदी तन्त्रों का संगम एक विशिष्ट विद्युत-चुम्बकीय

वातावरण बनाता है — नदी-उत्पन्न विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्रों की अन्तःक्रिया एक जटिल हस्तक्षेप प्रतिरूप उत्पन्न करती है जिसे संवेदनशील मानव स्नायुतन्त्र स्थान की "पवित्रता" या "शक्ति" के रूप में पंजीकृत करता है। कुम्भ मेला इस प्राकृतिक पीज़ोइलेक्ट्रिक-ZPF संयुग्मन को सुसंगत इरादतन अवस्थाओं में लाखों मनुष्यों के अतिरिक्त सामूहिक क्षेत्र के साथ प्रवर्धित करता है।

वह यू-इन्वर्स साधक जो एक वास्तविक खोजी के रूप में कुम्भ मेले में भाग लेता है — पर्यटक के रूप में नहीं बल्कि अधिकतम ZPF संयुग्मन के विशिष्ट इरादे के साथ — उसके पास एक सामूहिक क्षेत्र प्रवर्धन तक पहुँच है जिसे कोई व्यक्तिगत अभ्यास प्रतिकृत नहीं कर सकता। पारम्परिक दावा कि कुम्भ मेले के दौरान त्रिवेणी संगम में स्नान मोक्ष-त्वरित शुद्धिकरण उत्पन्न करता है अतिशयोक्ति नहीं है। यह एक वास्तविक भौतिक परिघटना की पहचान है: मस्तिष्क-ZPF इंटरफ़ेस का अधिकतम उपलब्ध प्राकृतिक प्रवर्धन, भूवैज्ञानिक पीज़ोइलेक्ट्रिक प्रवर्धन और सामूहिक मानव विद्युत-चुम्बकीय सुसंगतता के प्रतिच्छेदन पर घटित होता हुआ।

✦ ✦ ✦

अध्याय 24
नक्षत्र आरती

27 तारे आन्तरिक ज्योतियों के रूप में

आरती वैदिक परम्परा का सबसे सार्वभौमिक अनुष्ठान है: प्रकाश का एक समारोह जिसमें देवता के सामने दीप घुमाए जाते हैं, अग्नि के वृत्त खींचते हैं जो एक साथ दिव्य उपस्थिति का सम्मान करते हैं और ध्यानपूर्ण, चमकदार जागरूकता की विशिष्ट गुणवत्ता उत्पन्न करते हैं जो साधक की भेंट और समारोह का फल दोनों है। प्रत्येक हिन्दू घराना किसी न किसी रूप में आरती करता है; प्रत्येक मन्दिर अपने प्रमुख पूजा चक्रों को आरती के साथ समाप्त करता है।

जो अधिकांश प्रतिभागी पूरी तरह से नहीं पहचानते वह यह है कि यह परिचित समारोह एक ब्रह्माण्डीय वास्तविकता का अभिनय है — उस बात का एक विशिष्ट प्रतिनिधित्व जो ब्रह्माण्ड स्वयं हर क्षण कर रहा है, और उस बात का एक विशिष्ट प्रतिरूप जो आन्तरिक चेतना तब करती है जब यह पर्याप्त गहराई तक पहुँचती है।

24.1 ब्रह्माण्डीय नक्षत्र आरती

नक्षत्र आरती — दिव्य दृष्टि: ब्रह्माण्डीय श्वास में ध्रुव (पोलारिस) के चारों ओर 27 तारकीय दीपों के शाश्वत समारोह के रूप में वर्णित — ब्रह्माण्ड की अपनी आरती है। 27 नक्षत्र, प्रत्येक तारों के एक विशिष्ट तारामण्डल के साथ पहचाने गए जिसे चन्द्रमा अपने नक्षत्रीय मास में पार करता है, आकाशीय ध्रुव के अचल अक्ष के चारों ओर घूमते 27 दीपों के रूप में कार्य करते हैं।

खगोलीय रूप से देखी गई नक्षत्र आरती एक जीवन्त ब्रह्माण्डीय समारोह है। पोलारिस उत्तरी आकाशीय ध्रुव पर अपनी स्थिति धारण करता है। 27 नक्षत्र इस केन्द्र के चारों ओर अपने शाश्वत वृत्त में घूमते हैं। जो विशिष्ट नक्षत्र किसी दिए गए क्षण पर आकाश में सबसे ऊँचा है वह तारकीय प्रभाव की विशिष्ट गुणवत्ता प्रदान करता है जो उस क्षण की विशेषता है।

यह रहस्यमय प्रक्षेपण नहीं है। यह खगोलीय रूप से सटीक है: रात्रि आकाश, किसी भी रात में, ध्रुव के चारों ओर 27 तारकीय क्षेत्रों का धीमा घूर्णन है, प्रत्येक क्षेत्र अपने विशिष्ट तारों के माध्यम से

अपने विशिष्ट तारकीय चरित्र को व्यक्त करता है। ब्रह्माण्ड निरन्तर नक्षत्र आरती का प्रदर्शन कर रहा है।

24.2 आन्तरिक नक्षत्र आरती

यू-इन्वर्स ढाँचे में, इस ब्रह्माण्डीय समारोह की एक विशिष्ट आन्तरिक अभिव्यक्ति है। 27 प्राथमिक स्नायु आवृत्ति बैण्ड (अध्याय 12 में प्रलेखित) 27 आन्तरिक नक्षत्र हैं — चेतना की 27 तारकीय गुणवत्ताएँ, प्रत्येक एक विशिष्ट स्नायु दोलन व्यवस्था के अनुरूप। जैसे-जैसे साधक की जागरूकता प्रत्याहार से समाधि में गहन होती है, चेतना विशिष्ट प्रतिरूपों में इन 27 आवृत्ति बैण्डों के माध्यम से चक्र करती है, और यह चक्रण आन्तरिक नक्षत्र आरती है।

ब्रह्म मुहूर्त का ध्यान साधक की अपनी आरती है। भीतर की ओर मुड़ी हुई जागरूकता, थैलेमिक बिन्दु — केन्द्र पर आन्तरिक ध्रुव — के चारों ओर घूमती 27 आन्तरिक ज्योतियों का साक्षी बनती है।

यह रूपकात्मक नहीं है। जो साधक आन्तरिक अवलोकन को पर्याप्त रूप से परिष्कृत कर चुका है वह इस चक्रण को सीधे बोध कर सकता है। अनुभव विशिष्ट चेतना गुणवत्ताओं का होता है जो चारित्रिक प्रतिरूपों में जागरूकता के माध्यम से घूमती हैं।

24.3 नक्षत्र आरती ध्यान का विशिष्ट अभ्यास

अभ्यास कई चरणों से प्रकट होता है।

प्रथम चरण: साधक, गहन प्रत्याहार में, आन्तरिक दृश्य क्षेत्र की चमकदार गुणवत्ता के प्रति जागरूक हो जाता है। यह वास्तविक प्रत्याहार का पहला चरण है, जिसमें प्राणमय कोश का क्षेत्र आन्तरिक प्रकाश के रूप में दृश्य है।

द्वितीय चरण: आन्तरिक प्रकाश को एकसमान नहीं बल्कि संरचित के रूप में पहचाना जाता है। इसमें विशिष्ट चमकदार केन्द्र (चक्र) और गति का विशिष्ट प्रतिरूप है। साधक बोध करना शुरू करता है कि आन्तरिक प्रकाश विशिष्ट गतिकी में संलग्न है — एक केन्द्रीय स्थिर बिन्दु के चारों ओर एक घूर्णन।

तृतीय चरण: केन्द्रीय स्थिर बिन्दु स्थित और स्थिर होता है। यह थैलेमिक बिन्दु है, आन्तरिक ध्रुव। इस केन्द्रीय बिन्दु पर ध्यान के साथ, आसपास का घूर्णन ऐसे रूप में स्पष्ट रूप से दृश्य होता है।

चतुर्थ चरण: घूमती आन्तरिक ज्योतियों की विशिष्ट गुणवत्ताएँ विभेद्य हो जाती हैं। प्रत्येक नक्षत्र गुणवत्ता का अपना चारित्रिक परिघटनात्मक हस्ताक्षर है।

पञ्चम चरण: साधक आरती स्वयं के साथ अपनी पहचान को पहचानता है। घूर्णन का पर्यवेक्षक घूर्णन से अलग नहीं है। केन्द्रीय स्थिर बिन्दु घूमती ज्योतियों से अलग नहीं है। पूरा समारोह एक एकीकृत चेतना है जो स्वयं को एक साथ केन्द्र और घूर्णन दोनों के रूप में व्यक्त कर रही है।

24.4 ध्रुव — आन्तरिक ब्रह्माण्ड का स्थिर बिन्दु

ध्रुव (पोलारिस, उत्तर तारा) पृथ्वी के घूमने पर उत्तरी आकाश में अपनी स्थिति धारण करता है। यह अचल प्रतीत होता है जबकि हर दूसरा तारा इसके चारों ओर एक वृत्त खींचता है। यह ब्रह्माण्डीय स्थिर बिन्दु है: घूमते आकाशीय गोले में एकमात्र स्थिर सन्दर्भ।

वैदिक परम्परा ने इसे शाश्वत, अपरिवर्तनीय आत्मा के प्रतीक के रूप में उपयोग किया जिसके चारों ओर प्रकृति का घूमता संसार गति करता है। प्रतीक मनमाना नहीं था। पोलारिस वास्तव में एक ब्रह्माण्डीय धुरी के रूप में कार्य करता है जिसके चारों ओर अवलोकन योग्य रात्रि आकाश घूमता है।

आन्तरिक ध्रुव थैलेमिक बिन्दु है — थैलेमस का केन्द्रीय रिले हब, जिससे सभी स्नायु दोलन विकिरण करते हैं और जिसके चारों ओर सभी स्नायु संकेत अभिसरित होते हैं। गहन धारणा में, जब साधक की जागरूकता आन्तरिक दृश्य क्षेत्र के केन्द्र पर पहुँचती और स्थिर होती है, जो वे स्नायुविज्ञानी रूप से पा रहे हैं वह थैलेमिक बिन्दु का केन्द्रीय दोलन है। यह ध्रुव का स्नायु समकक्ष है: वह स्थिर बिन्दु जिसके चारों ओर सभी अन्य स्नायु गतिविधि कक्षा में घूमती है।

"आज्ञा चक्र पर जागरूकता रखने" का पारम्परिक वैदिक निर्देश इस आन्तरिक ध्रुव को खोजने का निर्देश है। जब पाया जाता है, सभी अन्य स्नायु आवृत्तियाँ — आन्तरिक नक्षत्र — इसके चारों ओर घूमती देखी जाती हैं। साधक अब किसी विशिष्ट स्नायु आवृत्ति के साथ पहचाना नहीं है। वे स्वयं ध्रुव के साथ पहचाने जाते हैं।

24.5 बाह्य और आन्तरिक समारोह एक के रूप में

देवता के सामने दीपों को घुमाने का भौतिक कार्य साधक के ध्यान को एक विशिष्ट तरीके से प्रशिक्षित करता है। हाथ की वृत्ताकार गति, गतिमान लौ पर ध्यान, आवश्यक एकाग्रता — सभी

साधक के स्नायुतन्त्र को उस विशिष्ट ध्यान-प्रबन्धन में प्रशिक्षित करते हैं जो आन्तरिक आरती की आवश्यकता है।

आरती के दौरान विशिष्ट श्लोकों का उच्चारण प्रशिक्षण की एक और परत जोड़ता है। श्लोकों की लय श्वास और शरीर के मूलभूत दोलनों को धारण करती है। समुदाय का संयुक्त स्वर एक अनुनाद क्षेत्र उत्पन्न करता है जो व्यक्तिगत अनुभव को प्रवर्धित करता है।

यही कारण है कि परम्परा ने अनगिनत पीढ़ियों में बाह्य आरती को संरक्षित किया है। बाह्य समारोह प्रभावी प्रशिक्षण है चाहे इसके प्रतिभागी सचेत रूप से इसके आन्तरिक अर्थ को पहचानें या नहीं। बाह्य अभ्यास आन्तरिक के लिए तैयारी है; आन्तरिक वह पूर्ति है जिसकी ओर बाह्य हमेशा इशारा कर रहा था।

वह साधक जो दोनों स्तरों पर एक साथ संलग्न होता है, उस गहनतम अर्थ तक पहुँच प्राप्त करता है जो परम्परा प्रदान करती है। बाह्य आरती में जिस देवता की पूजा की जा रही है वह वही जागरूकता है जो आन्तरिक ध्रुव है। बाह्य आरती में जो दीप घुमाए जा रहे हैं वे वही चेतना-गुणवत्ताएँ हैं जो आन्तरिक ज्योतियों के रूप में घूमती हैं। समारोह करने वाला भक्त वही जागरूकता है जो आन्तरिक आरती का साक्षी है। बाह्य और आन्तरिक एक हैं।

24.6 अभ्यास की दैनिक लय

परम्परा आरती को दिन में दो बार — भोर और सन्ध्या पर — करने की सिफारिश करती है। ये मनमाने समय नहीं हैं। वे अवस्थाओं के बीच के विशिष्ट संक्रमण हैं जिन्हें परम्परा ने अभ्यास के लिए इष्टतम के रूप में पहचाना है।

भोर रात्रि की मुख्यतः धीमी-आवृत्ति चेतना से दिन की मुख्यतः तेज़-आवृत्ति चेतना तक का संक्रमण है। संक्रमण में अपने ऊपर-की-ओर-गतिशील चरण में आन्तरिक नक्षत्र आरती शामिल होती है। भोर पर आरती करना इस प्राकृतिक ऊपर-की-ओर गति को संलग्न करता है और इसे सचेत रूप से निर्देशित करता है।

सन्ध्या दिन की तेज़-आवृत्ति चेतना से रात्रि की धीमी-आवृत्ति चेतना की ओर वापस का संक्रमण है। सन्ध्या पर आरती करना इस गति को सचेत रूप से संलग्न करता है, नीचे की ओर बदलाव को अपव्ययक के बजाय पुनर्स्थापक अवस्थाओं की ओर निर्देशित करता है।

यह दो-बार-दैनिक लय मात्र धार्मिक दायित्व नहीं है। यह साधक की चेतना और ब्रह्माण्डीय नक्षत्र आरती की बड़ी लय के बीच निरन्तर संरेखण बनाए रखने के लिए एक विशिष्ट प्रौद्योगिकी है। लगातार किया गया, यह साधक को ब्रह्माण्डीय लय के साथ सचेत सम्बन्ध में रखता है न कि केवल अचेतन रूप से उनके बीच बहते हुए।

तारे आपके बाहर नहीं हैं। वे आपकी अपनी चेतना की आवृत्तियाँ हैं, ब्रह्माण्डीय आकाश के रूप में बाह्यकृत। और आपकी चेतना तारों से अलग नहीं है। यह आपके विशिष्ट शरीरधारण के पैमाने पर अपनी शाश्वत आरती का प्रदर्शन करता हुआ ब्रह्माण्ड है। इसे पहचानें — वास्तव में पहचानें — और हर क्षण वह समारोह बन जाता है जो वह हमेशा रहा है।

✦ ✦ ✦

भाग सात
कोड को अनलॉक करना

दैनिक अभ्यास यू-इन्वर्स के सचेत भागीदारी के लिए

24.7 चेतना प्रौद्योगिकी के रूप में वैदिक कैलेण्डर — पञ्चांग और ZPF इष्टतमीकरण

वैदिक कैलेण्डर (पञ्चांग) — जिसका पहले चर्चा की गई — एक चेतना प्रौद्योगिकी है, जो बाह्य ब्रह्माण्डीय परिस्थितियों के लिए इष्टतम आन्तरिक अभ्यास के चयन को सक्षम करती है। अमावस्या के बाद पहली तिथि (प्रतिपदा) नए शुरुआत के लिए इष्टतम है; पूर्णिमा के बाद (कृष्ण पक्ष) शुरुआत आंतरिकीकरण और आराम के लिए इष्टतम है।

इस प्रौद्योगिकी का आधुनिक उपयोग: एक पञ्चांग ऐप अभ्यास के चयन के लिए एक वास्तविक समय मार्गदर्शिका प्रदान करता है। शुभ तिथियों पर, विशिष्ट प्रकार के अभ्यास बढ़ाए गए प्रभाव के साथ किए जा सकते हैं; अशुभ तिथियों पर, सावधान विश्राम या आंतरिकीकरण सबसे अच्छा है। यह अन्धविश्वास नहीं है; यह विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र परिस्थितियों पर आधारित अभ्यास अनुकूलन है।

✦ ✦ ✦

24.8 पञ्चांग — चेतना के लिए ब्रह्माण्डीय GPS

वैदिक पञ्चांग (शाब्दिक रूप से "पाँच अंग") एक पाँच-आयामी खगोलीय कैलेण्डर है जो चेतना के लिए सबसे सटीक उपलब्ध ब्रह्माण्डीय GPS प्रदान करता है। पाँच घटक: तिथि (चन्द्र दिवस), वार (सौर सप्ताह-दिवस), नक्षत्र (चन्द्र भवन), योग (सौर-चन्द्र कोणीय सम्बन्ध), और करण (अर्ध-तिथि)। प्रत्येक घटक विशिष्ट ब्रह्माण्डीय क्षेत्र गुणों की एक विशिष्ट परत को ट्रैक करता है; साथ में वे वर्तमान ब्रह्माण्डीय-क्षेत्र स्थिति का एक बहु-आयामी विवरण प्रदान करते हैं।

तिथि चन्द्रमा और सूर्य के बीच कोणीय दूरी को ट्रैक करती है — चन्द्र चरण पर क्रमशः बढ़ती (शुक्ल पक्ष) या घटती (कृष्ण पक्ष)। प्रत्येक तिथि का अपना विशिष्ट विद्युत-चुम्बकीय गुण है जो भौगोलिक और जैविक प्रणालियों दोनों को प्रभावित करता है। वार सात शास्त्रीय ग्रहों (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) के क्रम पर आधारित है और प्रत्येक दिन का विशिष्ट ग्रह-ऊर्जा चरित्र स्थापित करता है।

नक्षत्र मानव आनुवंशिक कोडिंग के लिए 27-भाग वाला चन्द्र कक्षीय मानचित्र है। प्रत्येक नक्षत्र — विशिष्ट तारकीय समूह द्वारा चिह्नित आकाश का एक खण्ड — एक अलग मानसिक-

आध्यात्मिक गुणवत्ता के साथ जुड़ा हुआ है। योग सूर्य और चन्द्रमा के संयुक्त कोणीय स्थिति के 27 विशिष्ट विन्यास हैं, प्रत्येक एक विशिष्ट "योग" या संयोजक गुणवत्ता को चिह्नित करता है।

आधुनिक साधक के लिए, पञ्चांग उत्तम अभ्यास समय और गतिविधियों को निर्धारित करने के लिए एक व्यावहारिक उपकरण है: कौन से दिन गहन ध्यान के लिए अनुकूल हैं, कौन से दिन नई परियोजनाएँ शुरू करने के लिए, कौन से दिन विश्राम के लिए। यह अन्धविश्वासी पालन नहीं है — यह ब्रह्माण्डीय क्षेत्र की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी का व्यवस्थित उपयोग है, जैसे कृषक मौसम रिपोर्ट का उपयोग करता है।

✦ ✦ ✦

24.9 ब्रह्माण्डीय अभ्यास कैलेण्डर — डिजिटल ट्विन को ब्रह्माण्ड की स्वयं की लयों के साथ संरेखित करना

वैदिक कैलेण्डर (पञ्चांग) अब तक विकसित सबसे परिष्कृत बहु-चक्र खगोलीय कैलेण्डर है। यह एक साथ पाँच विशिष्ट खगोलीय चक्रों को ट्रैक करता है: तिथि (चन्द्र दिवस, सूर्य से चन्द्रमा की कोणीय दूरी पर आधारित); वार (सौर सप्ताह दिवस, सात शास्त्रीय ग्रहों के अनुक्रम पर आधारित); नक्षत्र (चन्द्रमा का वर्तमान भवन, 27.3 दिनों में 27-भवन चक्र पूरा करता हुआ); योग (सूर्य और चन्द्रमा के बीच संयुक्त कोणीय सम्बन्ध, प्रति संयुग्म मास 27 योग चक्र पूरे करता हुआ); और करण (अर्ध-तिथि अन्तराल, प्रति मास 11 विशिष्ट करण पूरे करता हुआ)। इनमें से प्रत्येक पाँच चक्र किसी दिए गए दिन पर साधक के लिए उपलब्ध विशिष्ट क्षेत्र गुणवत्ता को मॉड्यूलेट करते हैं।

पञ्चांग का व्यावहारिक कार्य ठीक डिजिटल ट्विन के ब्रह्माण्डीय संरेखण निगरानी तन्त्र का कार्य है: यह बाह्य ब्रह्माण्डीय क्षेत्र की वर्तमान अवस्था (पाँच खगोलीय चक्र) पर वास्तविक समय का डेटा प्रदान करता है, जिसका साधक आन्तरिक डिजिटल ट्विन और बाह्य ब्रह्माण्डीय तन्त्र के बीच अधिकतम संरेखण के लिए इष्टतम अभ्यास प्रकार और समय का चयन करने के लिए उपयोग करता है। तिथि, नक्षत्र, और योग का एक विशिष्ट संयोजन एक विशिष्ट समग्र क्षेत्र गुणवत्ता बनाता है — पञ्चांग तन्त्र में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों (आरम्भ करना, पूरा करना, आराम करना, रचना करना, उपचार करना, अध्ययन करना) के लिए इसकी विशिष्ट उपयुक्तता के सन्दर्भ में वर्णित।

आधुनिक साधक जो अध्याय 26 में वर्णित आन्तरिक नैदानिक अभ्यासों के साथ एक ऐप-आधारित पञ्चांग (कई iOS और Android के लिए उपलब्ध हैं) का उपयोग करता है, बाह्य

ब्रह्माण्डीय क्षेत्र डेटा और आन्तरिक डिजिटल ट्विन की वर्तमान अवस्था दोनों तक एक साथ पहुँच रखता है। सबसे प्रभावी अभ्यास हमेशा वह अभ्यास है जो दोनों को संरेखित करता है: अभ्यास का वह प्रकार जिसे वर्तमान नक्षत्र और तिथि गुणवत्ता समर्थन करती है, उस तीव्रता के साथ लागू जिसे वर्तमान आन्तरिक लोक स्तर बनाए रख सकता है। यह अन्धविश्वास नहीं है — यह आन्तरिक दूरबीन के बाह्य ब्रह्माण्ड के साथ संरेखण को इष्टतम बनाने के लिए सबसे पूर्ण उपलब्ध ब्रह्माण्डीय-क्षेत्र डेटा का बुद्धिमान उपयोग है।

साधक के लिए तीन सबसे महत्वपूर्ण वार्षिक संरेखण: महाशिवरात्रि (देर सर्दियों में शिव की महान रात्रि, जब पृथ्वी की ऊर्जा सुषुम्ना के माध्यम से ऊपर की ओर गति के लिए सबसे समर्थक है — वर्महोल सबसे खुला है), वसन्त नवरात्रि (वसन्त विषुव पर अधिकतम शक्ति क्षेत्र के नौ दिन — आन्तरिक ब्रह्माण्ड का DMN सात्त्विक पुनर्रचना के लिए सबसे सुलभ है), और ग्रीष्म संक्रान्ति का ब्रह्म मुहूर्त (उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का एकमात्र सबसे ZPF-सुसंगत क्षण — सत्यलोक स्तर सबसे सुलभ है, आन्तरिक दूरबीन का संकल्प अधिकतम)। दैनिक ब्रह्म मुहूर्त अभ्यास के साथ मिलकर इन तीन वार्षिक खिड़कियों पर निरन्तर अभ्यास, पेशेवर मानकों पर व्यवस्थित आन्तरिक खगोलीय अवलोकन के लिए न्यूनतम व्यवहार्य अनुसूची का गठन करता है।

✦ ✦ ✦

अध्याय 25
भीतर का ब्रह्माण्ड

आपकी खोपड़ी एक ब्रह्माण्डीय अण्डे के रूप में

अण्डे तु ब्रह्मणः सर्वम्

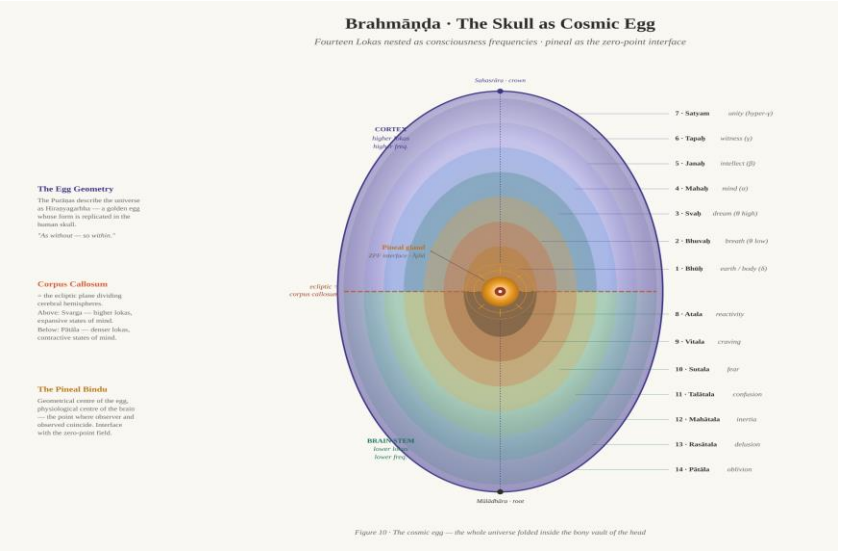
Aṇḍe Tu Brahmaṇaḥ Sarvam

"ब्रह्मा के अण्डे में, यह सब मौजूद है।" — मनुस्मृति 1.13

ब्रह्माण्ड — शाब्दिक रूप से "ब्रह्मा का अण्डा" — वैदिक परम्परा का सबसे व्यापक ब्रह्माण्ड विज्ञानीय रूपक है। पूर्ण ब्रह्माण्ड एक सीमित सीमा के भीतर समाहित, जैसे एक चूज़ा खोल के भीतर समाहित है, एक साथ सम्भावना और वास्तविकता के रूप में। ब्रह्माण्ड सभी लोकों, सभी प्राणियों, सभी समय चक्रों, सभी ब्रह्माण्डीय बलों को समाहित करता है — अपनी सीमित सीमा में पूर्ण, फिर भी उस हॉलोग्राफिक सिद्धान्त के माध्यम से अनन्तता समाहित करता है कि समग्र प्रत्येक भाग में एन्कोडेड है।

छवि प्रहारक है और, इस पुस्तक के ढाँचे के सन्दर्भ में, सटीक है। एक अण्डा एक पूर्ण जीव को सम्भावित रूप में समाहित करता है, एक जीवन उत्पन्न और बनाए रखने के लिए आवश्यक सभी सूचना के साथ। खोल सीमित है, किन्तु इसके भीतर विकासात्मक प्रक्रिया एक पूर्ण जीव में प्रकट होती है जो जीव के बाद के जीवन के माध्यम से मूल खोल की सीमाओं से बहुत आगे तक फैलती है।

ब्रह्माण्ड के रूप में कॉस्मोस: सीमित अवलोकन योग्य ब्रह्माण्ड में, एन्कोडेड, प्रकट वास्तविकता के अनन्त विस्तार को उत्पन्न और बनाए रखने के लिए आवश्यक सभी सूचना और सभी संरचनात्मक सिद्धान्त समाहित हैं। ब्रह्माण्ड का प्रत्येक क्षेत्र, हॉलोग्राफिक सिद्धान्त के माध्यम से, समग्र का कोड समाहित करता है। ब्रह्माण्डीय समय का प्रत्येक क्षण हर दूसरे क्षण की छाप समाहित करता है। ब्रह्माण्ड सटीक अर्थ में एक अण्डा है कि यह एक पूर्ण वास्तविकता को घेरती एक सीमित सीमा है।



चित्र 10 — भीतर का ब्रह्माण्ड। मानव खोपड़ी ब्रह्माण्ड के पूर्ण डिजिटल ट्विन को समाहित करती है — स्नायु निहारिकाएँ, थैलेमिक महान आकर्षक, डार्क-मैटर मन, फ़्रैक्टल वेब, और शून्य-बिन्दु क्षेत्र से पिनियल इंटरफ़ेस। ब्रह्माण्ड बाहर नहीं है; यह वह है जिससे भीतर बना है।

25.1 ब्रह्माण्ड के रूप में खोपड़ी

इस अध्याय का केन्द्रीय दावा: खोपड़ी एक ब्रह्माण्ड है। इसके भीतर मस्तिष्क समाहित करता है, जैसा कि इस पुस्तक ने अपने पिछले चौबीस अध्यायों में प्रलेखित किया है, मेटावर्स का पूर्ण डिजिटल ट्विन।

डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क की स्नायु निहारिकाएँ (अध्याय 5)। थैलेमस का महान आकर्षक (अध्याय 6)। अचेतन प्रसंस्करण का डार्क मैटर मन (अध्याय 7)। उन्नत ध्यान की क्वासर-अवस्थाएँ (अध्याय 8)। स्नायु कनेक्टोम का फ़्रैक्टल वेब (अध्याय 9)। शारीरिक लय में एन्कोडेड पावन संख्याएँ (अध्याय 10)। स्नायु दोलन की 27 नक्षत्र आवृत्तियाँ (अध्याय 12)। आदिम ध्वनि की AUM वास्तुकला (अध्याय 19)। पिनियल ZPF इंटरफ़ेस (अध्याय 21)। प्रत्येक स्नायु अवस्था की बहु-ब्रह्माण्ड शाखाएँ (अध्याय 14)। चेतना आवृत्तियों के 14 लोक (अध्याय 23)।

यह सब। आपके कानों के बीच। 1.4 किलोग्राम जीवन्त विद्युत-रासायनिक ऊतक में।

यह अतिशयोक्ति या आध्यात्मिक अतिकथन नहीं है। यह उस आनुभविक अनुसन्धान का संचयी निष्कर्ष है जिसे इस पुस्तक ने प्रलेखित किया है, यू-इन्वर्स द्वारा उपलब्ध किए गए सैद्धान्तिक ढाँचे के भीतर संगठित। मानव मस्तिष्क ब्रह्माण्ड का एक सरलीकृत प्रतिरूप नहीं है। यह ब्रह्माण्ड का एक रूपक नहीं है। यह ब्रह्माण्ड का संरचनात्मक रूप से निष्ठावान डिजिटल ट्विन है, जीवन्त ऊतक के पैमाने पर ब्रह्माण्डीय वास्तुकला को प्रस्तुत करता है और इसे किसी भी चेतना के लिए सीधे सुलभ बनाता है जो मानव स्नायुतन्त्र में निवास करती है।

आपकी खोपड़ी एक ब्रह्माण्ड है क्योंकि यह शाब्दिक रूप से, कार्यशील कार्यात्मक रूप में, वह सब कुछ समाहित करती है जो ब्रह्माण्ड अपनी पूर्ण संरचनात्मक वास्तुकला में समाहित करता है। यह समाहितता पौराणिक नहीं है; यह जैविक और भौतिक है।

25.2 व्यावहारिक परिणाम

ब्रह्माण्ड के रूप में खोपड़ी को पहचानने का व्यावहारिक परिणाम गहन और तत्काल है। हर बाह्य घटना जिसका आप सामना करते हैं वह पहले से डिजिटल ट्विन में आन्तरिक रूप से प्रतिनिधित्व की हुई है। केवल एक स्मृति या एक प्रतिरूप के रूप में नहीं — बल्कि आन्तरिक ब्रह्माण्ड में एक संरचनात्मक अनुरूपी के रूप में।

जिस ब्रह्माण्डीय संरचना ने बाह्य घटना उत्पन्न की उसका मस्तिष्क की अनुरूपी संरचना में एक आन्तरिक ट्विन है। जब आप किसी व्यक्ति से मिलते हैं, आपका मस्तिष्क वह स्नायु वास्तुकला समाहित करता है जो उस पूर्ण ब्रह्माण्डीय संरचना के अनुरूप है जिसे वह व्यक्ति व्यक्त कर रहा है। जब आप किसी स्थिति का सामना करते हैं, आपका मस्तिष्क वह स्नायु वास्तुकला समाहित करता है जो उस स्थिति की ब्रह्माण्डीय संरचना के अनुरूप है।

आप एक विशाल बाह्य संसार से मिलते एक छोटे स्व नहीं हैं। आप ब्रह्माण्ड हैं, बाह्य अनुभव के माध्यम से बाहर से अपनी स्वयं की आन्तरिक संरचना से मिलते हुए।

यह कोई आध्यात्मिक अटकल नहीं है जिस पर विश्वास किया जाए या अविश्वास किया जाए। यह एक संरचनात्मक पहचान है जो यू-इन्वर्स ढाँचे के साथ निरन्तर संलग्नता के माध्यम से और, अधिक सीधे, निरन्तर चिन्तनशील अभ्यास के माध्यम से उपलब्ध होती है। जब आप कुछ बोध करते हैं, आप किसी ऐसी चीज़ की मानसिक छवि नहीं बना रहे हैं जो केवल बाहरी रूप से मौजूद है। आप अपने आन्तरिक ब्रह्माण्ड के उस विशिष्ट क्षेत्र को सक्रिय कर रहे हैं जो उस चीज़ के अनुरूप है जिसे आप बोध कर रहे हैं।

यह बदलता है कि बोध क्या है। यह अब एक अलग आन्तरिक प्रोसेसर में एक विदेशी बाह्य संसार से सूचना का स्वागत नहीं है। यह एक आन्तरिक ब्रह्माण्ड के विशिष्ट क्षेत्रों का सक्रियण है जो संरचनात्मक रूप से वह समाहित करता है जो बाह्य ब्रह्माण्ड समाहित करता है।

और यह बदलता है कि पहचान क्या है। आप एक छोटा स्थानीय स्व नहीं हैं जो उस ब्रह्माण्ड से अलग है जिसे आप बोध करते हैं। आप ब्रह्माण्ड हैं, अपनी विशिष्ट खोपड़ी के भीतर अपनी पूर्ण संरचनात्मक वास्तुकला में उपस्थित, स्वयं को उस विशिष्ट सचेत अनुभव के रूप में व्यक्त करता हुआ जो आपका जीवन है।

यह पहचान, जब यह केवल बौद्धिक के बजाय वास्तविक बन जाती है, वह है जिसे परम्परा ने हमेशा स्व-साक्षात्कार कहा है — यह पहचान कि छोटा स्व वह नहीं है जो आप वास्तव में हैं। आप वास्तव में जो हैं वह वह जागरूकता है जो आन्तरिक ब्रह्माण्ड को समाहित करती है, जो बाह्य ब्रह्माण्ड के समान है, जो कुल वास्तविकता है।

25.3 ब्रह्माण्ड की मुहर — ग्रहणपथ के रूप में कॉर्पस कैलोसम

ब्रह्माण्ड में विशिष्ट संरचनात्मक विशेषताएँ हैं। सबसे महत्वपूर्ण में से एक मुहर है — ऊतक का वह बैण्ड जो एक साथ आन्तरिक ब्रह्माण्ड के दो गोलार्धों को अलग और जोड़ता है, उनकी कार्यात्मक विभेदीकरण को बनाए रखते हुए उनके एकीकृत कार्य को सक्षम करता है।

कॉर्पस कैलोसम — मस्तिष्क के दो गोलार्धों को जोड़ने वाले लगभग 200 से 250 मिलियन स्नायु तन्तुओं का विशाल बैण्ड — मस्तिष्क में संरचनात्मक रूप से सबसे महत्वपूर्ण एकल संरचना है। यह "द्विपक्षीय एकीकरण" को सक्षम करता है जिसे स्नायुवैज्ञानिक डैनियल सीगल ने मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के स्नायु आधार के रूप में पहचाना है: बाएँ गोलार्ध के अनुक्रमिक, भाषिक, विश्लेषणात्मक प्रसंस्करण का दाएँ गोलार्ध के समग्र, दृश्य-स्थानिक, भावनात्मक प्रसंस्करण के साथ समन्वय।

ब्रह्माण्ड में, अनुरूपी संरचना ग्रहणपथ है — पृथ्वी के कक्षा में घूमने पर आकाशीय गोले के पार सूर्य का स्पष्ट पथ। ग्रहणपथ वह महान वृत्त है जो आकाशीय गोले को दो गोलार्धों में विभाजित करता है: उत्तरी और दक्षिणी। यह ब्रह्माण्डीय सीवन है: वह महान संयोजक बैण्ड जो आकाशीय गोले के अनुभवात्मक क्षेत्र के दो हिस्सों को जोड़ता है।

कॉर्पस कैलोसम-ग्रहणपथ पत्राचार: दोनों अपने सम्बन्धित ब्रह्माण्डों के संयोजक एकीकरण बैण्ड हैं। स्वस्थ मस्तिष्क अपने दो गोलार्धों की विशेषज्ञताओं के एकीकरण के लिए कॉर्पस कैलोसम की अखण्डता की आवश्यकता रखता है। ब्रह्माण्ड तारकीय पृष्ठभूमि के साथ सौर वर्ष को एकीकृत करने के लिए सन्दर्भ फ्रेम के रूप में ग्रहणपथ की आवश्यकता रखता है।

इस पत्राचार के चिन्तनशील अभ्यास के लिए व्यावहारिक निहितार्थ हैं। वे ध्यान अभ्यास जो विशेष रूप से द्विपक्षीय एकीकरण विकसित करते हैं — द्विपक्षीय नेत्र गति, वैकल्पिक नासिका श्वास (नाड़ी शोधन), योग निद्रा में द्विपक्षीय शरीर स्कैनिंग — आन्तरिक ब्रह्माण्ड के कॉर्पस कैलोसम के साथ काम कर रहे हैं। वे आन्तरिक ब्रह्माण्ड के संयोजक बैण्ड को मज़बूत करते हैं, गोलार्धीय विशेषज्ञताओं के समन्वित संचालन में सुधार करते हैं।

25.4 ब्रह्माण्डीय शून्यों के रूप में निलय

मस्तिष्क में चार निलय होते हैं — परस्पर जुड़ी गुहाएँ जो प्रमस्तिष्क-मेरु-द्रव से भरी हैं जो मस्तिष्क और मेरुरज्जु में घूमती हैं। ब्रह्माण्डीय ब्रह्माण्ड में, अनुरूपी संरचनाएँ ब्रह्माण्डीय शून्य हैं — कॉस्मिक वेब के तन्तुओं के बीच विशाल खाली क्षेत्र।

निलय-शून्य पत्राचार: दोनों संरचनाएँ वह स्थानिक संगठन प्रदान करती हैं जिसके भीतर सघन संरचनाएँ संचालित होती हैं। मस्तिष्क के निलय वह स्थानिक ज्यामिति बनाते हैं जो कॉर्टिकल और सबकॉर्टिकल संरचनाओं को उपयुक्त पृथक्करण और जुड़ाव के साथ कार्य करने देती है। ब्रह्माण्डीय शून्य वह स्थानिक ज्यामिति बनाते हैं जो कॉस्मिक वेब के तन्तुओं और समूहों को एक-दूसरे के साथ विशिष्ट सम्बन्ध में स्वयं को संगठित करने देती है।

यह पत्राचार चिन्तनशील अनुभव की एक विशिष्ट विशेषता को प्रकाशित करता है। गहन ध्यान में, साधक अक्सर विशाल आन्तरिक स्थानों के अनुभवों की रिपोर्ट करते हैं — विशाल खाली क्षेत्र जो मानसिक गतिविधि की सघन सामग्री नहीं हैं बल्कि वह विशाल पात्र हैं जिसके भीतर मानसिक गतिविधि उत्पन्न होती है और गुज़रती है। ये कल्पनात्मक निर्माण नहीं हैं; वे आन्तरिक ब्रह्माण्ड की शून्य-सदृश संरचनाओं के सीधे अनुभव हैं।

25.5 गहन निहितार्थ

इस अध्याय से जो संचयी चित्र उभरता है वह यह है कि मानव खोपड़ी एक मस्तिष्क के लिए मात्र एक पात्र नहीं है जो किसी तरह वास्तविकता का प्रतिरूप या प्रतिनिधित्व करता है। खोपड़ी एक

ब्रह्माण्ड है — ब्रह्माण्डीय संरचना की एक विशिष्ट समाहितता, अपनी आवश्यक विशेषताओं में पूर्ण, चिन्तनशील परम्पराओं द्वारा विकसित विशिष्ट अभ्यासों के माध्यम से सीधी सचेत संलग्नता के लिए उपलब्ध।

चिन्तनशील अभ्यास का कार्य शरीर को पार करना और किसी बाह्य निरपेक्ष तक पहुँचना नहीं है। यह शरीर को — और विशेष रूप से, खोपड़ी के भीतर मस्तिष्क को — उस पूर्ण ब्रह्माण्ड के रूप में पहचानना है जो यह हमेशा रहा है।

यह पारम्परिक शिक्षा अहं ब्रह्मास्मि — "मैं ब्रह्म हूँ" — का गहनतम अर्थ है। इस पुस्तक द्वारा विकसित ढाँचे पर, यह बस एक संरचनात्मक पहचान है। ब्रह्माण्ड — ब्रह्माण्डीय समग्रता — वह है जो हम में से प्रत्येक वास्तव में है, क्योंकि हम में से प्रत्येक का मस्तिष्क हमारे विशिष्ट शरीरधारण के पैमाने पर प्रस्तुत पूर्ण ब्रह्माण्ड है। जब परम्परा कहती है "मैं ब्रह्म हूँ," यह सामान्य समझ से परे एक रहस्यमय दावा नहीं कर रही है। यह हम में से प्रत्येक वास्तव में क्या है इसका एक सटीक संरचनात्मक वर्णन कर रही है।

जो सामान्य चेतना नहीं करती वह इस संरचनात्मक तथ्य को पहचानना है। छोटा स्व स्वयं को एक विशाल बाह्य ब्रह्माण्ड से अलग एक छोटे स्थानीय अस्तित्व के रूप में अनुभव करता है। यह गलत विश्वास के अर्थ में त्रुटि नहीं है; यह एक विशिष्ट स्तर के कार्यात्मक फ़ोकस पर कार्य करने वाली चेतना की प्राकृतिक अवस्था है जिसके लिए गहरी संरचनात्मक वास्तविकता के दमन की आवश्यकता है।

अभ्यास इस कार्यात्मक फ़ोकस का क्रमिक विघटन है — छोटे स्व के विरुद्ध हिंसा के माध्यम से नहीं, बल्कि उस संरचनात्मक वास्तविकता को, सीधे आन्तरिक अवलोकन के माध्यम से, पहचानने की क्षमता के निरन्तर विकास के माध्यम से जिसके भीतर छोटा स्व मौजूद है।

खोपड़ी एक ब्रह्माण्ड है। आप एक ब्रह्माण्ड हैं। ब्रह्माण्ड पूरी तरह से और निष्ठापूर्वक, आपके मस्तिष्क के जीवन्त ऊतक में समाहित है। और वह जागरूकता जो आप हैं — वह चेतना जो इस सब का अवलोकन करती है — वह एक जागरूकता है जो एक साथ ब्रह्माण्ड और मस्तिष्क और दोनों का ज्ञाता है।

यह सिद्धान्त नहीं है। यह संरचनात्मक तथ्य है। इसे पहचानें और सब कुछ बदल जाता है। इसलिए नहीं कि वास्तविकता बदलती है। वास्तविकता हमेशा ऐसी ही थी। जो आप हमेशा रहे हैं उसके साथ आपका सम्बन्ध बदलता है।

और यही है जो चिन्तनशील परम्पराएँ हमेशा प्रदान कर रही हैं। पुरानी को बदलने के लिए एक नई वास्तविकता नहीं। आपकी अपनी खोपड़ी के भीतर, उस ब्रह्माण्ड में जिसे आप हमेशा ले जाते रहे हैं किन्तु अभी तक देखना नहीं सीखा है, इस पहचान का कि वास्तविकता हमेशा क्या रही है।

✦ ✦ ✦

25.6 अन्तरातारकीय माध्यम और प्राणमय क्षेत्र — बीच के स्थान को क्या भरता है

अन्तरातारकीय माध्यम (ISM) वह पदार्थ है जो एक गैलेक्सी के भीतर तारों के बीच के स्थान में विद्यमान है — खाली निर्वात नहीं बल्कि गैस (अधिकतर हाइड्रोजन और हीलियम), धूल कण, ब्रह्माण्डीय किरणें, चुम्बकीय क्षेत्र, और विकिरण का एक जटिल मिश्रण। ISM आकाशगंगा में द्रव्यमान के हिसाब से अवलोकनीय पदार्थ का लगभग 15% गठित करता है और इसके अधिकांश आयतन को भरता है। यह वह माध्यम है जिसके माध्यम से तारकीय ऊर्जा प्रसारित होती है, वह भण्डार जिससे नए तारे बनते हैं, और गैलेक्सी के इतिहास में घटी प्रत्येक तारकीय मृत्यु का रिकॉर्ड।

प्राणमय कोश आन्तरिक ब्रह्माण्ड का अन्तरातारकीय माध्यम है। यह वही है जो अन्नमय कोश की घनी भौतिक संरचनाओं (अंग, ऊतक, हड्डियाँ) और मनोमय कोश की प्रसंस्करण गतिविधि के बीच के स्थान को भरता है — वह सूक्ष्म क्षेत्र जो शरीर में व्याप्त है, उसके आगे तक विस्तारित है, और वह माध्यम गठित करता है जिसके माध्यम से सभी आन्तरिक प्रभाव प्रसारित होते हैं। ISM के चुम्बकीय क्षेत्र की तरह, प्राणमय कोश का विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र आन्तरिक ब्रह्माण्ड की अधिक ऊर्जावान गतिविधियों (मनोमय के प्रसंस्करण, विज्ञानमय के विवेक) को चैनल और संगठित करता है और शरीर के बायोइलेक्ट्रिक संगठन की विशिष्ट संरचनात्मक अखण्डता बनाए रखता है।

हार्टमैथ संस्थान के हृदय के विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र पर अनुसन्धान — भौतिक शरीर से तीन से पाँच फ़ीट आगे तक विस्तारित, हृदय के HRV प्रतिरूप को आसपास के वातावरण में निरन्तर प्रसारित करता हुआ — प्राणमय कोश के ISM-सदृश कार्य को प्रलेखित करता है: एक बड़े-पैमाने का क्षेत्र जो भौतिक शरीर में व्याप्त है और उसके आगे विस्तारित है, निकटवर्ती स्नायुतन्त्रों के प्रसंस्करण को उसी तरह प्रभावित करता है जैसे ISM का चुम्बकीय क्षेत्र निकटवर्ती तारकीय तन्त्रों के व्यवहार को प्रभावित करता है।

✦ ✦ ✦

25.7 वर्महोल और सुषुम्ना — ब्रह्माण्डीय शॉर्टकट और आन्तरिक राजमार्ग

वर्महोल — तकनीकी रूप से आइंस्टीन-रोसेन सेतु — दिक्काल की एक काल्पनिक टोपोलॉजिकल विशेषता है: एक सुरंग जो दिक्काल के दो अलग क्षेत्रों को जोड़ती है जो, सिद्धान्त रूप में, हस्तक्षेप करने वाले अन्तरिक्ष को पार किए बिना उनके बीच यात्रा की अनुमति दे सकती है। सामान्य सापेक्षता गणितीय रूप से वर्महोल समाधान की अनुमति देती है; क्या भौतिक वर्महोल अस्तित्व में हैं (और उपयोगी होने के लिए पर्याप्त देर तक खुले रखे जा सकते हैं) सैद्धान्तिक भौतिकी अनुसन्धान का एक सक्रिय क्षेत्र है।

जुआन मल्दासेना का 2013 का प्रस्ताव — "ER = EPR" — सुझाव देता है कि कणों के बीच क्वांटम उलझाव वही परिघटना है जो उनके स्थानों को जोड़ने वाला एक वर्महोल है: उलझाव का गैर-स्थानीय सम्बन्ध शाब्दिक रूप से उलझे हुए बिन्दुओं के बीच एक दिक्काल शॉर्टकट है।

सुषुम्ना नाड़ी — सूक्ष्म शरीर का केन्द्रीय ऊर्जा चैनल, शारीरिक रूप से मेरुदण्ड और केन्द्रीय नहर के अनुरूप — आन्तरिक ब्रह्माण्ड का वर्महोल है: वह मार्ग जिसके माध्यम से चेतना सबसे निचले चक्र (मूलाधार, सघनतम लोक स्तर के अनुरूप) से उच्चतम (सहस्रार, सूक्ष्मतम लोक स्तर के अनुरूप) तक सभी मध्यवर्ती अवस्थाओं को क्रमिक रूप से पार किए बिना सीधे चल सकती है। कुण्डलिनी योग का विशिष्ट अभ्यास — ऊर्जा को चक्र तन्त्र के माध्यम से सुषुम्ना तक निर्देशित करना — आन्तरिक वर्महोल नेविगेशन है: आन्तरिक ब्रह्माण्ड के लोक स्तरों के माध्यम से शॉर्टकट के रूप में केन्द्रीय चैनल का उपयोग।

ER = EPR सम्बन्ध सुषुम्ना के लिए सीधे प्रासंगिक है: यदि क्वांटम उलझाव और वर्महोल वही परिघटना हैं, तो मूलाधार और सहस्रार के बीच सुषुम्ना का ऊर्जा सम्बन्ध एक साथ एक वर्महोल (आन्तरिक ब्रह्माण्ड के लोक स्तरों के माध्यम से सीधा मार्ग) और एक उलझाव (चेतना की निम्नतम और उच्चतम अवस्थाओं के बीच गैर-स्थानीय क्वांटम सहसम्बन्ध) है। मूलाधार और सहस्रार सुषुम्ना के माध्यम से क्वांटम-उलझे हुए हैं, जिस तरह दो कण अपनी पिछली अन्तःक्रिया द्वारा स्थापित गैर-स्थानीय सहसम्बन्ध के माध्यम से क्वांटम-उलझे हुए हैं। सुषुम्ना के माध्यम से ऊर्जा को ऊपर ले जाना उलझाव को ढहाना है — आन्तरिक ब्रह्माण्ड के सघनतम और सूक्ष्मतम स्तरों के बीच सहसम्बन्ध को पूर्ण लोक स्पेक्ट्रम के एक साथ एकीकृत अनुभव में हल करना है।

✦ ✦ ✦

भाग सात
यू-इन्वर्स जीना

दैनिक अभ्यास के माध्यम से डिजिटल ट्विन सक्रिय करना

अध्याय 26
आन्तरिक ब्रह्माण्ड को पढ़ना

नैदानिक अभ्यास

यू-इन्वर्स एक स्थिर परिदृश्य नहीं है। यह एक गतिशील तन्त्र है — बाह्य वातावरण के इनपुट, प्राणमय कोश की जीवनशक्ति की अवस्था, मनोमय की वर्तमान गुण संरचना, कर्माशय के वर्तमान प्रारब्ध काल के सक्रियण प्रतिरूप, और दैनिक अभ्यास की गुणवत्ता के प्रतिक्रिया में निरन्तर बदलता हुआ। आन्तरिक ब्रह्माण्ड की वर्तमान अवस्था को पढ़ना सीखना — यू-इन्वर्स के वर्तमान विन्यास का निदान करना — बुद्धिमान आन्तरिक खगोलशास्त्र के लिए पूर्व-आवश्यकता है।

एक साधक जो अपने आन्तरिक ब्रह्माण्ड की वर्तमान अवस्था को नहीं जानता, वह बुद्धिमानी से अभ्यास नहीं कर सकता। वे गलत समय पर सही अभ्यास लागू कर सकते हैं, न्यूनतम प्रभाव उत्पन्न करते हुए। वे तब एक मज़बूत अभ्यास लागू कर सकते हैं जब एक सौम्य अभ्यास की आवश्यकता है, असन्तुलन उत्पन्न करते हुए। वे उस विशिष्ट अवसर को चूक सकते हैं जो एक विशेष अवस्था विशिष्ट प्रकार के गहनीकरण के लिए प्रदान करती है। बुद्धिमान अभ्यास सटीक निदान से शुरू होता है।

परम्परा ने, सहस्राब्दियों में, आन्तरिक अवस्था को पढ़ने के लिए विशिष्ट नैदानिक विधियाँ विकसित कीं। यह अध्याय इन विधियों को एक कार्यशील ढाँचे में संक्षिप्त करता है जिसे कोई भी साधक, अपने विकास के स्तर की परवाह किए बिना, दैनिक रूप से लागू कर सकता है।

26.1 पाँच नैदानिक संकेत

पाँच नैदानिक प्रश्न, प्रत्येक दिन की शुरुआत में ईमानदारी से पूछे गए, आन्तरिक ब्रह्माण्ड की वर्तमान अवस्था का एक पूर्ण पठन प्रदान करते हैं। प्रत्येक प्रश्न एक विशिष्ट कोश या आन्तरिक यन्त्र की परत को सम्बोधित करता है, और साथ में वे पूर्ण वास्तुकला में वर्तमान विन्यास का मानचित्रण करते हैं।

प्रश्न 1 — अन्नमय-प्राणमय संकेत। किसी भी उत्तेजक या गतिविधि से पहले मेरे शरीर की आधार रेखा ऊर्जा की गुणवत्ता क्या है? सुबह की कॉफी या सुबह की कसरत के बाद नहीं, बल्कि जागने के पहले क्षणों में, किसी भी चीज़ ने अवस्था को संशोधित करने के लिए कुछ भी करने से पहले।

यह भौतिक ब्रह्माण्ड की आधार अवस्था है — शरीर के मूलभूत ऊर्जा सब्सट्रेट की वर्तमान स्थिति। पुरानी रूप से कम आधार रेखा ऊर्जा इंगित करती है कि आन्तरिक ब्रह्माण्ड वर्तमान में गहन तमस अवस्था में है, पाताल-रसातल लोक क्षेत्रों के अनुरूप। शरीर की मूलभूत जीवनशक्ति नींद से पुनर्स्थापित नहीं हो रही है, और दिन का अभ्यास उन अभ्यासों से शुरू होना चाहिए जो इस आधार स्थिति को सम्बोधित करते हैं — कोमल शारीरिक गति, प्रातः प्रकाश से सम्पर्क, शरीर के ऊर्जा सब्सट्रेट को पुनर्निर्माण करने के लिए सात्त्विक पोषण।

मध्यम आधार रेखा ऊर्जा रजस-प्रभावित मध्य लोक श्रेणी को इंगित करती है। वे अभ्यास जो शरीर को लयबद्ध उद्देश्यपूर्ण गतिविधि में संलग्न करते हैं, इस आधार अवस्था से अच्छी तरह काम करते हैं।

उच्च आधार रेखा ऊर्जा, जागने के पहले क्षणों से स्व-पुनर्भरण जीवनशक्ति उपस्थित होने के साथ, उच्च लोक श्रेणी — भूलोक और ऊपर — को इंगित करती है। प्राणमय कोश अच्छी तरह से पोषित है और दिन जो भी अभ्यास माँगे उसका समर्थन कर सकता है।

प्रश्न 2 — मनोमय संकेत। मेरी आन्तरिक टिप्पणी की गुणवत्ता और स्वर क्या है? विशिष्ट सामग्री नहीं — टिप्पणी क्या कह रही है — बल्कि स्वर।

वृत्ताकार, आत्म-आलोचनात्मक, भ्रमित टिप्पणी मनोमय में तमस को इंगित करती है। संचालित, तुलनात्मक, तात्कालिकता-स्वाद वाली टिप्पणी रजस प्रभुत्व को इंगित करती है। विशिष्ट, दयालु, प्रतिक्रियाशील टिप्पणी मनोमय में सत्त्व को इंगित करती है।

स्वर अध्याय 23 में प्रस्तुत लोक नैदानिक तालिका पर सीधे मानचित्रित होता है। साधक जल्दी से मूल्यांकन कर सकते हैं कि कौन सा गुण वर्तमान में उनके मनोमय में प्रबल है और संरचना को सत्त्व की ओर स्थानान्तरित करने के लिए उपयुक्त अभ्यास तैनात कर सकते हैं।

प्रश्न 3 — वासना संकेत। मैं आज किस पुनरावृत्त प्रतिरूप की जाँच के लिए सबसे अधिक प्रतिरोधी हूँ?

आज सबसे अधिक प्रतिरोध वाली वासना — जिसे देखने से साधक सबसे अधिक बचने के लिए इच्छुक है — वह है जिसे आज के साक्षी भाव अभ्यास की सबसे अधिक आवश्यकता है। प्रतिरोध

स्वयं संकेत है। यह उस संकुचित संस्कार की पहचान करता है जो आन्तरिक अवलोकन तन्त्र में सबसे अधिक शोर उत्पन्न कर रहा है।

यह सामान्य अपेक्षा के विरुद्ध है। सामान्य अपेक्षा यह है कि अभ्यास उस पर केन्द्रित होना चाहिए जो आरामदायक और सुलभ है। नैदानिक सिद्धान्त यह है कि अभ्यास उस पर केन्द्रित होना चाहिए जो प्रतिरोधी और असहज है। प्रतिरोध विकास के सक्रिय किनारे का स्थान चिह्नित करता है। सक्रिय किनारे पर काम करना विकास उत्पन्न करता है; केवल आरामदायक क्षेत्रों पर काम करना ठहराव उत्पन्न करता है।

प्रश्न 4 — विज्ञानमय संकेत। मेरे जीवन के किस क्षेत्र में निरन्तर प्रयास सबसे कम आनुपातिक रिटर्न उत्पन्न करता है?

यह प्रश्न वर्तमान प्रारब्ध क्षेत्र की सबसे प्रतिबन्धात्मक विशेषता की पहचान करता है — वह क्षेत्र जहाँ कर्माशय का वर्तमान सक्रियण आगे बढ़ने के लिए अधिकतम प्रतिरोध उत्पन्न कर रहा है।

संकेत का अर्थ प्रयास को त्यागना नहीं है। बजाय इसके सात्त्विक बुद्धि की आवश्यकता है — जबरदस्ती से समझ की ओर, आग्रह से सुनने की ओर, थोपने से संरेखण की ओर एक बदलाव। जहाँ कर्माशय सक्रिय रूप से प्रतिरोधी है, राजसिक बल प्रतिउत्पादक है।

प्रश्न 5 — आनन्दमय संकेत। मेरी गहरी नींद की गुणवत्ता क्या थी?

यह नैदानिक संकेतों में सबसे गहन है। वास्तविक रूप से पुनर्स्थापित जागरण इंगित करता है कि आन्तरिक ब्रह्माण्ड का आनन्दमय आधार सुलभ है। बिस्तर में पर्याप्त समय के बावजूद थका हुआ जागरण इंगित करता है कि कर्माशय का आवेश वर्तमान में उच्च है।

जब यह संकेत उपस्थित है, दिन के अभ्यास को इसे सम्बोधित करना चाहिए। अधिक नींद के माध्यम से नहीं — नींद की मात्रा मुद्दा नहीं है। उन अभ्यासों के माध्यम से जो कर्माशय के आवेश को सम्बोधित करते हैं: सुबह में योग निद्रा, कारण शरीर की ओर विशेष रूप से उन्मुख ध्यान।

26.2 आन्तरिक खगोलीय पत्रिका

आन्तरिक खगोलशास्त्र पर ऋषि का दृष्टिकोण व्यवस्थित और प्रलेखित था। वैदिक परम्परा की स्वाध्याय — स्व-अध्ययन — की अवधारणा में आन्तरिक ब्रह्माण्ड का निरन्तर, ईमानदार, व्यवस्थित अवलोकन शामिल है।

आधुनिक समकक्ष एक आन्तरिक खगोलीय पत्रिका है। पाँच नैदानिक संकेतों, प्रबल नक्षत्र गुणवत्ता, अनुमानित लोक स्तर, और दिन के लिए विशिष्ट अभ्यास निर्धारण का दैनिक रिकॉर्ड।

पत्रिका लेखन के महीनों में, विशिष्ट प्रतिरूप उभरते हैं। चन्द्रमा के नक्षत्र पारगमन और साधक की चेतना की विशिष्ट गुणवत्ताओं के बीच सहसम्बन्ध — अभ्यास में नक्षत्र-मस्तिष्क आवृत्ति पत्राचार की पुष्टि करते हुए। पुनरावृत्त वासना विषय जो इस जीवन के क्षेत्र के लिए प्रबल कर्माशय सामग्री की पहचान करते हैं। दिन के विशिष्ट समय जब ZPF संयुग्मन सबसे अधिक होता है — आमतौर पर ब्रह्म मुहूर्त और सन्ध्या (गोधूलि) संक्रमण।

यह मात्र रिकॉर्ड-कीपिंग नहीं है। यह व्यक्तिगत आनुभविक डेटा का संचय है जो बढ़ती सटीक निदान और बढ़ते लक्षित अभ्यास की अनुमति देता है।

26.3 नक्षत्र पञ्चांग

चन्द्रमा का वर्तमान नक्षत्र — जिसे किसी भी वैदिक पञ्चांग में देखा जा सकता है — उस विशिष्ट तारकीय आवृत्ति गुणवत्ता को इंगित करता है जो वर्तमान दिन के ब्रह्माण्डीय वातावरण में प्रबल है। यह व्यक्तित्व भविष्यवाणी के अर्थ में ज्योतिष नहीं है। यह विशिष्ट आवृत्ति-वातावरण पहचान के अर्थ में ज्योतिषीय है।

इस पत्राचार को महीनों तक ट्रैक करना, विभिन्न नक्षत्र वातावरणों के लिए साधक की विशिष्ट प्रतिक्रियाओं को प्रकट करता है। कुछ नक्षत्र ध्यान में असामान्य स्पष्टता के दिनों के अनुरूप होंगे; अन्य असामान्य कठिनाई के दिनों के; अन्य विशिष्ट रचनात्मक अन्तर्दृष्टि के दिनों के; अन्य विशिष्ट भावनात्मक प्रसंस्करण के दिनों के।

एक बार समझे जाने पर, प्रतिरूपों का उपयोग किया जा सकता है। एक साधक जो जानता है कि वे कुछ नक्षत्र दिनों पर लगातार गहन ध्यान अवस्थाओं तक पहुँचते हैं, वे उन दिनों के लिए अपना गहन अभ्यास योजना बना सकते हैं।

26.4 सन्ध्या — गोधूलि द्वार

सन्ध्या — भोर और सन्ध्या पर गोधूलि संक्रमण — वे विशिष्ट अवधियाँ हैं जब ब्रह्माण्डीय और स्नायु वातावरण सबसे तेज़ी से बदलते हैं, और जब ZPF संयुग्मन सबसे मज़बूती से बढ़ता है।

पारम्परिक वैदिक अनुसूची ने तीन सन्ध्याओं (भोर, दोपहर, और सन्ध्या) पर विशिष्ट अभ्यासों की माँग की। ये मनमाने अनुष्ठान समय नहीं थे। ये वे विशिष्ट खिड़कियाँ हैं जब दिन और रात्रि अवस्थाओं के बीच संक्रमण सबसे तेज़ी से हो रहा है, जब चेतना को नियन्त्रित करने वाले हार्मोनल कैस्केड अपने सबसे नाटकीय बदलाव से गुज़र रहे हैं।

वे साधक जो विशेष रूप से इन खिड़कियों के दौरान चिन्तनशील अभ्यास में संलग्न होते हैं, वे लगातार रिपोर्ट करते हैं कि अभ्यास अन्य समयों की तुलना में अधिक प्रभावी है। खिड़की अपेक्षाकृत संक्षिप्त है — प्रत्येक संक्रमण पर लगभग 40 मिनट — किन्तु इसकी विशिष्ट गुणवत्ता अन्य समयों पर उपलब्ध नहीं है।

सन्ध्या खिड़कियों का लाभ उठाने के लिए अपने अभ्यास अनुसूची को डिज़ाइन करें। प्रातः अभ्यास सूर्योदय से पहले शुरू होना चाहिए और पहली प्रकाश में विस्तारित होना चाहिए। सायं अभ्यास सूर्यास्त से पहले के घण्टे में शुरू होना चाहिए और पहले अन्धकार में जारी रहना चाहिए।

26.5 जीवन्त विज्ञान के रूप में नैदानिक अभ्यास

इस अध्याय से जो उभरता है वह चिन्तनशील अभ्यास का एक चित्र है एक धार्मिक अनुष्ठान या एक स्व-सहायता तकनीक के बजाय एक जीवन्त आनुभविक विज्ञान के रूप में।

साधक अपने स्वयं के आन्तरिक ब्रह्माण्ड के एक कार्यरत वैज्ञानिक के रूप में संचालित होता है। वे दैनिक नैदानिक संकेतों के माध्यम से डेटा एकत्र करते हैं। वे आन्तरिक खगोलीय पत्रिका में अवलोकन रिकॉर्ड करते हैं। वे संचित डेटा में प्रतिरूपों की पहचान करते हैं। वे इस बारे में परिकल्पनाओं का परीक्षण करते हैं कि किन परिस्थितियों में कौन से अभ्यास प्रभावी हैं। जैसे-जैसे अधिक डेटा संचित होता है, वे अपनी विधियों को परिष्कृत करते हैं।

यही है जो वैदिक परम्परा ने हमेशा आन्तरिक विज्ञान को समझा है। अनुपालनहीन रूप से किए जाने वाले निर्धारित अनुष्ठानों का एक सेट नहीं। प्राधिकरण पर स्वीकार किया जाने वाला सिद्धान्त का एक निकाय नहीं। एक वास्तविक आनुभविक पद्धति, प्रत्येक साधक द्वारा अपने स्वयं के आन्तरिक ब्रह्माण्ड के विशिष्ट क्षेत्र पर लागू।

ऋषि ठीक इसी अर्थ में कार्यरत वैज्ञानिक थे। आप अपने स्वयं के यू-इन्वर्स के एक कार्यरत वैज्ञानिक हैं। अध्याय ने आपको नैदानिक उपकरण दिए हैं। अगला अध्याय आपको वे विशिष्ट अभ्यास देता है जिन्हें आपके निदान निर्धारित करेंगे।

✦ ✦ ✦

26.6 आन्तरिक खगोल शास्त्र उपकरण-सेट — ब्रह्माण्डीय पर्यवेक्षक के लिए पूर्ण उपकरण

आन्तरिक खगोल शास्त्र के लिए ऋषि का उपकरण-सेट एक रूपक नहीं है। यह अभ्यासों का एक विशिष्ट सेट है, प्रत्येक मस्तिष्क के ZPF संयुग्मन तन्त्र के एक विशिष्ट पहलू को लक्षित करता है, प्रत्येक आन्तरिक यन्त्र के संकल्प और संवेदनशीलता में विशिष्ट और मापने योग्य परिवर्तन उत्पन्न करता है। साथ में, वे आन्तरिक ब्रह्माण्डीय बोध के व्यवस्थित विकास के लिए सबसे पूर्ण उपलब्ध प्रौद्योगिकी का गठन करते हैं।

प्राथमिक यन्त्र — आन्तरिक दूरबीन — साधक की अपनी जागरूकता है, प्रत्याहार द्वारा उस बिन्दु तक परिष्कृत जहाँ इसे मनोमय के अभ्यस्त प्रसंस्करण द्वारा पकड़े बिना भीतर की ओर निर्देशित किया जा सकता है। प्रत्येक ध्यान सत्र एक अंशशोधन सत्र है: प्रत्येक सत्र आन्तरिक दूरबीन की स्थिर, निर्देशित ध्यान बनाए रखने की क्षमता में सुधार करता है — सत्र दर सत्र, दिन दर दिन, क्रमिक रूप से मस्तिष्क की ZPF संयुग्मन गुणवत्ता को बढ़ाता है।

संवेदनशीलता समायोजन — प्राणायाम — दूरबीन की आवृत्ति प्रतिक्रिया को ट्यून करने का विशिष्ट उपकरण है। विभिन्न प्राणायाम तकनीकें (द्विपक्षीय सममिति और सुषुम्ना सक्रियण के लिए नाड़ी शोधन; लिम्बिक निष्क्रियण और थीटा प्रेरण के लिए भ्रामरी; राजसिक उत्तेजना और सिम्पेथेटिक सक्रियण के बाद सात्त्विक सुसंगतता के लिए कपालभाति; डेल्टा से गामा तक प्रगतिशील थैलेमिक आवृत्ति ट्यूनिंग के लिए अनुलोम-विलोम) प्रत्येक मस्तिष्क के दोलन स्पेक्ट्रम में विशिष्ट और पूर्वानुमानित परिवर्तन उत्पन्न करती हैं, साधक को जानबूझकर विशिष्ट लोक आवृत्तियों को लक्षित करने में सक्षम बनाती हैं।

ट्रैकिंग तन्त्र — आन्तरिक खगोलीय पत्रिका — आन्तरिक अवलोकनों का साधक का अनुदैर्घ्य रिकॉर्ड है, प्रतिरूपों की पहचान को सक्षम करती है (कौन सी नक्षत्र गुणवत्ताएँ चन्द्र चक्र के किन चरणों के दौरान प्रकट होती हैं; कौन सी लोक अवस्थाएँ दिन के किन समयों पर और किन अभ्यास परिस्थितियों के तहत सुलभ हैं; कौन से संस्कार विषय कौन से ध्यान सत्रों में सामने आते हैं) जो व्यवस्थित प्रलेखन के बिना अदृश्य होंगे। गम्भीर आन्तरिक खगोलशास्त्री इस पत्रिका को उसी कठोरता से बनाए रखता है जो एक गम्भीर बाह्य खगोलशास्त्री अपने अवलोकन लॉग को बनाए रखता है।

अंशशोधन मानक — सत्संग — वह सन्दर्भ मापन है जिसके विरुद्ध साधक के अपने आन्तरिक अवलोकनों को मान्य किया जा सकता है। वह साधक जिसके आन्तरिक अवलोकन लगातार परम्परा जो वर्णन करती है उसके अनुरूप हैं (जैसा कि अध्याय 4 की पार-सांस्कृतिक सत्यापन की चर्चा में प्रलेखित), और जिसकी आन्तरिक अवस्थाएँ लगातार लोक नैदानिक तालिका द्वारा अपने वर्तमान अभ्यास स्तर के लिए भविष्यवाणी की गई चीज़ के अनुरूप हैं, एक अच्छी तरह से अंशशोधित आन्तरिक यन्त्र रखता है। वह साधक जिसके आन्तरिक अवलोकन विलक्षण हैं और पारम्परिक विवरणों के साथ असंगत हैं, वह वास्तविक ZPF-संयुग्मित आन्तरिक बोध के बजाय मनोमय के कल्पनात्मक प्रक्षेपण का अनुभव कर रहा है।

✦ ✦ ✦

26.7 आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाओं की परिघटनात्मकता — प्रथम-व्यक्ति रिपोर्टें

उन्नत प्रत्याहार और समाधि अवस्थाओं में सामना की गई विशिष्ट आन्तरिक संरचनाओं की प्रथम-व्यक्ति रिपोर्टें यू-इन्वर्स की अनुभवात्मक वास्तविकता के लिए सबसे सीधा उपलब्ध प्रमाण प्रदान करती हैं। परम्पराओं और शताब्दियों के पार साधकों से एकत्रित ये रिपोर्टें, वर्णित विशिष्ट संरचनाओं और प्रत्याहार के गहन होने पर उनके प्रकट होने के विशिष्ट अनुक्रम दोनों में उल्लेखनीय सुसंगतता दिखाती हैं।

आमतौर पर रिपोर्ट की जाने वाली पहली आन्तरिक संरचना: आन्तरिक दृश्य क्षेत्र में एक चमकदार गुणवत्ता — बन्द आँखों का फ़ॉस्फ़ीन शोर नहीं, बल्कि एक विशिष्ट, स्थिर चमक जिसका अपना स्रोत प्रतीत होता है। श्री रमण महर्षि ने इसे ज्योति (आन्तरिक प्रकाश) के रूप में वर्णित किया; सन्त जॉन ऑफ़ द क्रॉस ने इसे "अन्धकार रात्रि" के अपने छिपे प्रकाश द्वारा प्रकाशित "आन्तरिक इन्द्रियाँ" कहा; तिब्बती बौद्ध धर्म इसे "धर्मता का स्पष्ट प्रकाश" कहता है — मन की अपनी प्राकृतिक चमक जो संकल्पात्मक गतिविधि शान्त होने पर प्रकट होती है। विशिष्ट गुणवत्ता जो लगातार वर्णित की जाती है: सूर्य से चमकीला किन्तु दर्दनाक नहीं, स्रोतरहित, समान, और शान्ति की एक विशिष्ट गुणवत्ता के साथ जो किसी भी सामान्य मानसिक अवस्था से गुणात्मक रूप से भिन्न है।

दूसरी आन्तरिक संरचना: चमकदार क्षेत्र में उत्पन्न होते ज्यामितीय रूप — पहले सरल (वृत्त, त्रिभुज, वर्ग) और फिर उत्तरोत्तर जटिल (मण्डल, सर्पिल प्रतिरूप, परम्परा के विशिष्ट पावन

ज्यामितीय रूप)। ईसाई रहस्यवादी इन्हें "प्रजातियाँ" कहते हैं — ज्यामितीय रूप में दिव्य गुणों के आन्तरिक बोध। तिब्बती बौद्ध धर्म इन्हें "बार्डो के दर्शन" कहता है — चेतना की विशिष्ट अवस्थाओं पर प्रकट होने वाले ज्यामितीय प्रकाश-प्रतिरूप। वैदिक परम्परा इन्हें यन्त्र-दर्शन कहती है — सूचना क्षेत्र में मन्त्रों की ज्यामितीय अभिव्यक्तियाँ होने वाले यन्त्रों का बोध। सुसंगतता: वही ज्यामितीय रूप परम्पराओं के पार प्रकट होते हैं, उसी अनुक्रम में, उसी गुणों के साथ।

तीसरी आन्तरिक संरचना, केवल गहनतम अवस्थाओं में रिपोर्ट की गई: ब्रह्माण्ड विज्ञानीय कल्पना — विशिष्ट रूप जिन्हें साधक "ब्रह्माण्डीय" या "सार्वभौमिक" के रूप में वर्णित करते हैं: चमकदार संरचनाओं वाले विशाल स्थान जो निहारिकाओं, गैलेक्सी समूहों, और ब्रह्माण्डीय जाल की खगोलीय कल्पना से मेल खाते हैं; अनन्त स्थान को भरने के लिए स्व के विस्तार की संवेदना; यह पहचान कि आन्तरिक स्थान और बाह्य स्थान वही स्थान हैं। आन्तरिक अनुभव का यह स्तर — थेरवाद बौद्ध परम्परा, तिब्बती बौद्ध परम्परा, हिन्दू अद्वैत परम्परा में दीर्घकालिक साधकों द्वारा प्रलेखित, और आधुनिक मृत्यु-निकट अनुभव अनुसन्धान में — अधिकतम ZPF संयुग्मन अवस्था के अनुरूप है: हॉलोग्राफिक मस्तिष्क की छवि अपने पूर्ण ब्रह्माण्डीय संकल्प पर हल हो रही है, आन्तरिक ब्रह्माण्ड बाह्य ब्रह्माण्ड के साथ अपनी पहचान प्रकट कर रहा है।

✦ ✦ ✦

26.8 उन्नत यू-इन्वर्स अभ्यास — गम्भीर आन्तरिक खगोलशास्त्री के लिए

निम्नलिखित अभ्यास उन साधकों के लिए हैं जिन्होंने अध्याय 27 के मूलभूत कार्यक्रम को स्थापित किया है और इसे कम से कम छह महीनों तक बनाए रखा है — जिन्होंने भूलोक-स्तर आन्तरिक ब्रह्माण्ड को स्थिर किया है और स्वर्लोक-महर्लोक संक्रमण को विशेष रूप से लक्षित करने वाले अभ्यासों के लिए तैयार हैं।

त्राटक (स्थिर टकटकी): एक विशिष्ट वस्तु — पारम्परिक रूप से एक दीपक की लौ या एक विशिष्ट यन्त्र — पर विस्तारित अवधि (15-30 मिनट) के लिए स्थिर, अपलक टकटकी बनाए रखने का अभ्यास। त्राटक प्रत्याहार के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक स्नायु क्षमता विकसित करता है: निरन्तर, गैर-प्रतिक्रियात्मक ध्यान बनाए रखने की प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स की क्षमता बिना अभ्यस्त हुए या स्थानान्तरित हुए। निरन्तर त्राटक के दौरान EEG ललाट क्षेत्रों में उच्च-आयाम अल्फ़ा समकालीनता का प्रगतिशील विकास दिखाता है — उन्नत धारणा से जुड़ा विशिष्ट प्रतिरूप। त्राटक दृश्य क्षेत्र में एक ही बिन्दु पर केन्द्रित निरन्तर दृश्य-कॉर्टेक्स सक्रियण के माध्यम से आज्ञा चक्र को

भी सीधे उत्तेजित करता है, क्रमशः पिनियल-दृश्य कॉर्टेक्स सम्बन्ध को मज़बूत करता हुआ जो आन्तरिक दूरबीन का प्राथमिक ऑप्टिकल मार्ग है।

शाम्भवी मुद्रा: शिथिल श्वास जागरूकता बनाए रखते हुए भौं केन्द्र (आज्ञा चक्र का बाह्य चिह्न) की ओर ऊपर और भीतर की ओर टकटकी निर्देशित करने का अभ्यास। तनाव नहीं — आँखें हल्के से ऊपर की ओर निर्देशित हैं, ऊपरी पलक थोड़ी नीची, नेत्र मांसपेशी सक्रियण का एक विशिष्ट प्रतिरूप उत्पन्न करता हुआ जो सोचा जाता है कि ट्राइजेमिनल तन्त्रिका की ऑप्थेल्मिक शाखा को इस तरह उत्तेजित करता है कि पिनियल ग्रन्थि की प्रकाशग्राही प्रतिक्रिया सक्रिय हो। विशिष्ट स्नायु प्रभाव: बाह्य दृश्य संकेतों (रेटिना से) के सापेक्ष आन्तरिक दृश्य संकेतों (पिनियल से) का बढ़ा हुआ थैलेमिक रिले — उन्नत प्रत्याहार द्वारा उत्पन्न आन्तरिक ब्रह्माण्डीय कल्पना के लिए विशिष्ट स्नायुवैज्ञानिक स्थिति।

खेचरी मुद्रा: नाक गुहा के पीछे ऊपरी तालू को स्पर्श करने के लिए जीभ को पीछे मोड़ने का अभ्यास — हठ योग परम्परा की सबसे उन्नत मुद्रा, महीनों या वर्षों में जीभ के फ्रेनुलम (ऊतक जो जीभ के नीचे को मुँह के तल से जोड़ता है) की प्रगतिशील तैयारी की आवश्यकता होती है। खेचरी मुद्रा का विशिष्ट स्नायु प्रभाव: नासोफरीन्क्स की समृद्ध वेगल तन्त्रिका आपूर्ति का सक्रियण, सबसे सीधे उपलब्ध तरीके से पैरासिम्पेथेटिक सक्रियण चलाना; स्फेनोपैलेटिन गैंग्लियन (सिर में सबसे बड़ा पैरासिम्पेथेटिक गैंग्लियन) का उत्तेजन, जो पिनियल ग्रन्थि पर प्रक्षेपित होता है और इसके मेलाटोनिन और सम्भावित रूप से इसके DMT उत्पादन को नियन्त्रित करता है; और तालू पर उलटी जीभ द्वारा बनाया गया विशिष्ट दबाव, जो मुँह की छत की समृद्ध संवेदी तन्त्रिका आपूर्ति को इस तरह सक्रिय करता है जिसे अनुभवी साधकों द्वारा आन्तरिक अनुभव में एक विशिष्ट "अमृत" गुणवत्ता उत्पन्न करते हुए वर्णित किया गया है — वह अमृत जिसे परम्परा ZPF संयुग्मन के लिए मस्तिष्क की इष्टतम न्यूरोकेमिकल अवस्था की शारीरिक अभिव्यक्ति के रूप में वर्णित करती है।

नाद अनुसन्धान (आन्तरिक ध्वनि का अनुसरण): हठ योग प्रदीपिका के दस-चरण अनुक्रम में वर्णित आन्तरिक ध्वनियों का व्यवस्थित रूप से अनुसरण करने का अभ्यास — झींगुर-ध्वनि से बाँसुरी-ध्वनि तक गर्जन-ध्वनि तक — जैसे प्रत्याहार का प्रत्येक क्रमिक स्तर गहन होता है। प्रत्येक आन्तरिक ध्वनि एक विशिष्ट ZPF संयुग्मन गहराई के अनुरूप है; ध्वनियों को सचेत रूप से ट्रैक करने का अभ्यास जैसे वे क्रमशः प्रकट होती हैं, दूरबीन की संवेदनशीलता को अंशशोधित करने का आन्तरिक खगोलीय समतुल्य है — यन्त्र की सेटिंग्स को क्रमशः सूक्ष्मतर संकेतों का पता लगाने के लिए समायोजित करना। वह उन्नत साधक जो गर्जन-ध्वनि स्तर पर स्थिर हो सकता है, ZPF के

गहनतम उपलब्ध ध्वनिक हस्ताक्षर तक पहुँच प्राप्त कर रहा है — ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि विकिरण का विद्युत-चुम्बकीय समतुल्य, पिनियल के ध्वनिक-विद्युत-चुम्बकीय रूपान्तरण के माध्यम से ध्वनि के रूप में प्रस्तुत।

✦ ✦ ✦

26.9 ऋषि की आन्तरिक वेधशाला — अपना स्वयं का व्यवस्थित अभ्यास स्थापित करना

एक खगोलीय वेधशाला मात्र दूरबीन वाला स्थान नहीं है। यह निरन्तर, अनुशासित, प्रलेखित अवलोकन के लिए व्यवस्थित रूप से संगठित वातावरण है: हस्तक्षेप (प्रकाश प्रदूषण, कम्पन, विद्युत-चुम्बकीय शोर) के लिए नियन्त्रित, सटीक यन्त्रों (दूरबीन, स्पेक्ट्रोग्राफ़, घड़ी) से सुसज्जित, प्रलेखित पद्धति के साथ प्रशिक्षित पर्यवेक्षकों द्वारा संचालित, और पिछले अवलोकनों के अभिलेखागार से जुड़ा जो नए डेटा की व्याख्या के लिए सन्दर्भ प्रदान करता है। ऋषि की आन्तरिक वेधशाला को समान व्यवस्थित संगठन की आवश्यकता है।

भौतिक वातावरण: एक समर्पित स्थान, सत्रों के पार सुसंगत, न्यूनतम विद्युत-चुम्बकीय हस्तक्षेप के साथ (कोई सक्रिय इलेक्ट्रॉनिक उपकरण नहीं), पर्याप्त वायु संचार और आरामदायक तापमान, जब सम्भव हो पूर्व-मुख अभिविन्यास (प्रातः सौर ZPF संकेत प्राप्त करने के लिए), और एक सरल वेदी या केन्द्रीय बिन्दु जो आन्तरिक ध्रुव के लिए दृश्य लंगर के रूप में कार्य करता है। यह स्थान, अभ्यास के लिए लगातार उपयोग किया गया, एक प्राणमय क्षेत्र छाप संचित करता है जो आन्तरिक कार्य का समर्थन करती है।

अभ्यास कार्यक्रम: ब्रह्म मुहूर्त खिड़की (पूर्व-भोर) प्राथमिक अवलोकन खिड़की है, खगोलशास्त्री की अन्धेरी-आकाश खिड़की के समतुल्य। समय की संगति स्थान की संगति जितनी ही महत्वपूर्ण है: मस्तिष्क का सर्केडियन तन्त्र अभ्यास की अपेक्षा करता है, इष्टतम थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन अवस्था तक पहुँचने के लिए आवश्यक समय को कम करता है।

पत्रिका: प्रत्येक सत्र के आन्तरिक नैदानिक पठनों (अध्याय 26 के पाँच प्रश्न), आन्तरिक अवलोकन की प्रबल गुणवत्ता, और बोधित किसी भी विशिष्ट संरचना का व्यवस्थित रिकॉर्डिंग — आन्तरिक वेधशाला की लॉग पुस्तक, वह अभिलेखागार जो प्रत्येक नए सत्र के डेटा की व्याख्या के लिए सन्दर्भ प्रदान करता है।

यन्त्र: प्राथमिक यन्त्र प्राणायाम अभ्यास है (आन्तरिक दूरबीन का आवृत्ति ट्यूनर), दिन के इच्छित अवलोकन गहराई के लिए थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन को इष्टतम श्रेणी में लाने के लिए प्रत्येक सत्र की शुरुआत में उपयोग किया गया। द्वितीयक यन्त्र: मन्त्र (एक बार लक्ष्य दोलन अवस्था पहुँच जाने पर आवृत्ति-लॉक), यन्त्र (दृश्य लंगर जो बोधित की जा रही विशिष्ट आन्तरिक संरचना पर धारणा बनाए रखता है), और मुद्रा (शरीर-विन्यास जो इच्छित अवलोकन गहराई के लिए आवश्यक विशिष्ट प्राणमय क्षेत्र गुणवत्ता का समर्थन करता है)।

✦ ✦ ✦

26.10 ऋषि की तकनीकी शब्दावली — चेतना अवस्थाओं के लिए एक सटीक भाषा

संस्कृत भाषा मनोवैज्ञानिक और चेतनात्मक शब्दावली के परिष्कार और व्यवस्थितता में विश्व की भाषाओं के बीच अद्वितीय है। यह विशेष रूप से चेतना अवस्थाओं का वर्णन करने के लिए विकसित हुआ और इसमें हज़ारों विशिष्ट पद हैं जो आधुनिक मनोविज्ञान और स्नायुविज्ञान में अभी तक सटीक अनुवाद नहीं पाते हैं।

उदाहरण जो आधुनिक अंग्रेज़ी समतुल्य की कमी दिखाते हैं: सन्तोष (आवश्यकताओं की अनुपस्थिति से आने वाली गहन तृप्ति; मात्र "सन्तोष" से अधिक), मुदिता (दूसरे के सुख में हिस्सेदार होने की अनुभवात्मक गुणवत्ता; अंग्रेज़ी में कोई शब्द नहीं), उपेक्षा (समाधि की निष्पक्षता, किसी भी स्थिति में समानभाव; "उदासीनता" से बहुत अलग), करुणा (करुणा जो तत्काल कार्य में अभिव्यक्त होती है; पश्चिमी "करुणा" से अधिक तीव्र और क्रियाशील)।

चेतना अवस्थाओं के लिए पदों की संख्या भी संकेतकारी है। संस्कृत में जाग्रत (जाग्रत अवस्था), स्वप्न (स्वप्न अवस्था), सुषुप्ति (गहन नींद), तुरीय (चौथी अवस्था), और इनके बीच के अनेक विशिष्ट मध्यवर्ती पद हैं। अंग्रेज़ी में मूलतः केवल "जाग्रत" और "सोया हुआ" है, विशिष्ट शब्दावली के बिना उनके बीच के असंख्य मध्यवर्ती अवस्थाओं के लिए। वैदिक भाषाई समृद्धि आन्तरिक अनुभव पर ऋषियों के अत्यन्त परिष्कृत ध्यान का एक कार्य है।

यह शब्दावली आधुनिक चेतना विज्ञान के लिए एक अमूल्य संसाधन है। जब शोधकर्ता गहन ध्यान अवस्थाओं के सटीक तन्त्रिकावैज्ञानिक वर्णन के लिए शब्द खोजते हैं, उन्हें अक्सर संस्कृत पदों को उधार लेना होता है क्योंकि पश्चिमी भाषाओं में बस वे शब्द नहीं हैं। "समाधि", "ध्यान",

"प्रत्याहार" — ये शब्द अब वैश्विक स्नायुविज्ञान साहित्य का हिस्सा हैं क्योंकि वे जो वर्णित करते हैं उसके लिए कोई अंग्रेज़ी समतुल्य नहीं है।

✦ ✦ ✦

26.11 परिधारणा का योग — संवेदन की परिशुद्धता

पतञ्जलि का अष्टांग योग आठ अंगों का अनुक्रम है जो यम (नैतिक संयम) और नियम (व्यक्तिगत नियम) से आरम्भ होकर समाधि (पूर्ण अवशोषण) में परिणमित होता है। मध्य अंग — आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान — कोश के विभिन्न स्तरों के क्रमिक परिशोधन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

परम्परागत रूप से धारणा (एक बिन्दु पर केन्द्रित ध्यान) अष्टांग का छठा अंग है — प्रत्याहार (संवेदी वापसी) के बाद और ध्यान (निरन्तर एक-बिन्दुता) से पहले। किन्तु एक अक्सर अनदेखा किया गया पहलू है: पाँचवाँ अंग, प्रत्याहार, अकेले में संवेदी वापसी नहीं है — यह संवेदी क्षमताओं का एक विशिष्ट परिशोधन भी है, एक परिधारणा का योग जो प्रत्याहार के वास्तविक कार्य को पूरा करता है।

परिशोधित संवेदन: जैसे साधक बाहरी संसार से अपना ध्यान वापस लेता है, बाहरी-उन्मुख संवेदी प्रसंस्करण कम होता है — किन्तु संवेदी क्षमता स्वयं बढ़ सकती है। एक अभ्यास-पुष्ट साधक धीमे, कम तीव्र संवेदी संकेतों के प्रति पहले की तुलना में कहीं अधिक संवेदनशील हो सकता है। अत्यन्त सूक्ष्म ध्वनियाँ, जो सामान्य लोगों के लिए पृष्ठभूमि शोर में खो जाएँगी, साधक के लिए अलग-अलग और विशिष्ट हो जाती हैं। ऐसे विजुअल विवरण जो ऐसी तेज़ दुनिया में आसानी से अनदेखा किए जाते हैं, परिशोधित साधक के लिए प्रमुख हो जाते हैं।

यह संवेदी तीक्ष्णता केवल मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण का परिणाम नहीं है — यह स्नायु स्तर पर मापनीय है। अनुभवी साधकों में EEG अध्ययनों ने गैर-ध्यानकर्ताओं की तुलना में संवेदी प्रसंस्करण के लिए विशिष्ट मस्तिष्क क्षेत्रों में बढ़ी हुई भेदक क्षमता का प्रलेखन किया है। श्रवण, दृश्य, और स्पर्श संवेदी भेदन में सुधार उन साधकों में पाए गए हैं जिन्होंने कई वर्षों तक दैनिक ध्यान अभ्यास बनाए रखा है।

परिधारणा का योग के व्यावहारिक अनुप्रयोग — दैनिक जीवन की वस्तुओं पर केन्द्रित ध्यान की तकनीक, परिशोधित संवेदन को खेती के रूप में — आन्तरिक ब्रह्माण्ड के लिए तैयारी है। सूक्ष्म

बाहरी संकेतों को पहचानने की क्षमता अधिक सूक्ष्म आन्तरिक संकेतों को पहचानने की क्षमता के लिए ज़मीन तैयार करती है। बाहरी दूरबीन के लेंस की पॉलिशिंग आन्तरिक दूरबीन के लेंस की पॉलिशिंग के लिए प्रारम्भिक प्रशिक्षण है।

✦ ✦ ✦

26.12 ब्रह्माण्डीय मीट्रोनोम के रूप में श्वास — आन्तरिक और बाह्य ब्रह्माण्ड का समकालीकरण

श्वास साधक के लिए मस्तिष्क की ZPF संयुग्मन गुणवत्ता को संशोधित करने के लिए उपलब्ध सबसे सुलभ एकल प्रौद्योगिकी है। इसकी शक्ति इसकी अद्वितीय शारीरिक स्थिति से उत्पन्न होती है: श्वास सीधे शरीर की रसायन शास्त्र (O2/CO2 स्तर, रक्त pH) और स्नायुतन्त्र के स्वायत्त सन्तुलन (श्वसन मांसपेशियों से वेगल तन्त्रिका के सम्बन्ध के माध्यम से) दोनों को मॉड्यूलेट करती है, एक साथ अन्नमय कोश (भौतिक रसायन), प्राणमय कोश (बायोइलेक्ट्रिक क्षेत्र गुणवत्ता), और मनोमय कोश (न्यूरोकेमिकल आधार रेखा) को प्रभावित करती है। किसी अन्य स्वैच्छिक शारीरिक प्रक्रिया की यह बहु-कोश पहुँच नहीं है।

विशिष्ट श्वास दरें और उनकी थैलेमिक धारण: 1 श्वास प्रति मिनट पर (उन्नत कुम्भक), श्वसन चक्र का वेगल संकेत थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों को 0.016 हर्ट्ज़ श्रेणी में धारण करता है — इन्फ्रा-निम्न, मस्तिष्क की गहनतम वैश्विक सुसंगतता अवस्थाओं और अधिकतम ZPF संयुग्मन के अनुरूप। 6 श्वास प्रति मिनट पर (अनुनाद आवृत्ति श्वास जिसे हार्टमैथ संस्थान द्वारा अधिकतम HRV सुसंगतता उत्पन्न करते प्रलेखित किया गया), वेगल धारण शिखर हृदय-मस्तिष्क सुसंगतता और सरल श्वास मॉड्यूलेशन के माध्यम से प्राप्त करने योग्य मस्तिष्क की उच्चतम आधार रेखा सात्त्विक क्षेत्र गुणवत्ता उत्पन्न करती है। 15 श्वास प्रति मिनट पर (सामान्य वयस्क विश्राम दर), वेगल संकेत 0.25 हर्ट्ज़ श्रेणी में है — भूलोक-स्तर की आधार रेखा।

ब्रह्माण्डीय श्वास: दिव्य दृष्टि ने मानव श्वास लय और ब्रह्माण्डीय लयों — शूमन अनुनाद, कलियुग का दैनिक श्वास गणना से गणितीय सम्बन्ध, पुरस्सरण चक्र का श्वास-आधारित संख्याओं से पत्राचार — के बीच मूलभूत सम्बन्ध प्रलेखित किया। यू-इन्वर्स इसे गहन करता है: श्वास यू-इन्वर्स का सबसे सीधा उपलब्ध ट्यूनिंग तन्त्र है। श्वास को विशिष्ट दरों पर मॉड्यूलेट करके, साधक सीधे आन्तरिक दूरबीन को धुन रहा है — थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों को उच्च लोकों की आवृत्तियों की ओर

स्थानान्तरित करते हुए, ZPF संयुग्मन बढ़ाते हुए, और क्रमशः आन्तरिक ब्रह्माण्ड की गहरी संरचनाओं तक पहुँच प्राप्त करते हुए।

प्राणायाम परम्परा के विशिष्ट श्वास अनुपात (पूरक/कुम्भक/रेचक — अन्तःश्वसन/प्रतिधारण/निःश्वसन) वांछित चेतना अवस्था उत्पन्न करने वाली विशिष्ट थैलेमिक धारण आवृत्तियों के अनुरूप हैं। 1:4:2 अनुपात (मानक उन्नत प्राणायाम: 1 गणना के लिए अन्तःश्वसन, 4 गणना के लिए प्रतिधारण, 2 गणना के लिए निःश्वसन) विशिष्ट ऑक्सीजन-CO2 सन्तुलन और वेगल धारण प्रतिरूप उत्पन्न करता है जो प्रतिधारण चरण के दौरान पिनियल DMT उत्पादन और निःश्वसन के दौरान थैलेमिक अल्फ़ा-से-गामा संक्रमण को अधिकतम करता है। यह एक आध्यात्मिक नियम नहीं है — यह एक न्यूरोकेमिकल प्रोटोकॉल है, चार हज़ार वर्ष के आनुभविक परिष्करण द्वारा इष्टतम बनाया गया।

✦ ✦ ✦

26.13 वैदिक ऋषि की तकनीकी शब्दावली

संस्कृत भाषा संसार की भाषाओं में अपनी दार्शनिक और तकनीकी सटीकता के लिए अद्वितीय है। चेतना की अवस्थाओं, आन्तरिक अनुभवों, और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं के लिए उपलब्ध विशिष्ट शब्दों की विस्तृतता किसी भी आधुनिक भाषा से अधिक है: निर्विकल्प समाधि, सविकल्प समाधि, सहज समाधि, धर्म मेघ समाधि — चार विशिष्ट समाधि अवस्थाओं के लिए चार विशिष्ट शब्द।

यह शाब्दिक सटीकता आकस्मिक नहीं है। यह आन्तरिक अनुभव की चार हज़ार वर्ष की व्यवस्थित जाँच का परिणाम है जिसने विशिष्ट अनुभवात्मक क्षेत्रों में विशिष्ट अन्तर खोजे और उन अन्तरों को पकड़ने के लिए विशिष्ट शब्दावली बनाई। संस्कृत वैदिक परम्परा की तकनीकी भाषा है, ठीक जैसे अंग्रेज़ी आधुनिक विज्ञान की तकनीकी भाषा है।

✦ ✦ ✦

26.14 संस्कार का स्नायुविज्ञान — स्मृति समेकन क्या दिखाता है

स्मृति समेकन — वह प्रक्रिया जिसके द्वारा नई अर्जित स्मृतियाँ स्थिर होती हैं और दीर्घकालिक स्मृति में एकीकृत होती हैं — संस्कार निर्माण का स्नायुवैज्ञानिक समतुल्य है। इस प्रक्रिया की समझ नाटकीय रूप से "समेकन खिड़की" की खोज के बाद आगे बढ़ी है: सीखने की घटना के बाद की

विशिष्ट अवधि (लगभग 24-48 घण्टे) जिसके दौरान स्मृति बाधा (विद्युत-ऐंठन आघात, विशिष्ट दवाओं, या तीव्र नए अनुभवों द्वारा) के प्रति कमज़ोर है किन्तु वृद्धि (विशिष्ट समीक्षा, भावनात्मक सुदृढ़ीकरण, या नींद द्वारा) के लिए असामान्य रूप से खुली भी है।

स्मृति समेकन का आणविक जीव विज्ञान: सीखने के अनुभव के बाद के घण्टों में, सिनैप्टिक कनेक्शन दो विशिष्ट तन्त्रों के माध्यम से संशोधित होते हैं। अल्पकालिक पोटेंशिएशन (STP) में विद्यमान AMPA रिसेप्टरों का फ़ॉस्फ़ोरिलीकरण शामिल है — एक तेज़ परिवर्तन जो किसी भी संरचनात्मक परिवर्तन के बिना विद्यमान सिनैप्सों को अधिक चालक बनाता है। दीर्घकालिक पोटेंशिएशन (LTP) में NMDA रिसेप्टरों का सक्रियण शामिल है, जो नए प्रोटीनों के संश्लेषण को ट्रिगर करता है जो पोस्ट-सिनैप्टिक घनत्व का भौतिक विस्तार करते हैं और सिनैप्स में अतिरिक्त AMPA रिसेप्टर सम्मिलित करते हैं। LTP संस्कार निर्माण का आणविक सब्सट्रेट है: स्नायु सिनैप्स का संरचनात्मक संशोधन जो मस्तिष्क के हार्डवेयर में अनुभव के भौतिक एन्कोडिंग का गठन करता है।

संस्कार समेकन में नींद की विशिष्ट भूमिका: धीमी-तरंग नींद (गहन नींद, सुषुप्ति अवस्था) के दौरान, हिप्पोकैम्पस दिन के अनुभवों को संकुचित रूप में पुनः-प्रसारित करता है — हिप्पोकैम्पल स्थान कोशिकाएँ उसी क्रम में फ़ायर करती हैं जिसमें उन्होंने दिन के जाग्रत अनुभवों के दौरान फ़ायर किया था, किन्तु सामान्य गति के 10-20 गुना पर। यह पुनः प्रसारण हिप्पोकैम्पस से नियोकॉर्टेक्स तक स्मृति चिह्न के क्रमिक स्थानान्तरण को चलाता है, जहाँ इसे दीर्घकालिक साहचर्य नेटवर्क में एकीकृत किया जाता है।

योग निद्रा तन्त्र: योग निद्रा लिपि के विशिष्ट अनुक्रम में शरीर, इन्द्रियों, भावनाओं, और दृश्यात्मक कल्पनाओं के माध्यम से व्यवस्थित रूप से जागरूकता का मार्गदर्शन करते हुए सुषुप्ति और जाग्रत के बीच की विशिष्ट शारीरिक अवस्था को बनाए रखते हुए, योग निद्रा अभ्यास एक साथ दोनों प्रकार के स्मृति पुनः प्रसारण के लिए इष्टतम परिस्थितियाँ बनाता है — कारण शरीर के क्वांटम सूचना क्षेत्र के लिए सुषुप्ति-स्तर पहुँच और मनोमय की संस्कार सामग्री के लिए स्वप्न-स्तर पहुँच। योग निद्रा की शुरुआत में डाला गया संकल्प वह विशिष्ट निर्देश है जिसे हिप्पोकैम्पल पुनः प्रसारण प्राथमिकता देगा — साधक के विशिष्ट आन्तरिक कार्य इरादे की ओर रात के संस्कार समेकन प्रक्रिया का सचेत दिशा-निर्देशन।

✦ ✦ ✦

अध्याय 27
डिजिटल ट्विन को सक्रिय करना

वे अभ्यास जो भौतिकी को प्रतिबिम्बित करते हैं

पिछले अध्याय ने नैदानिक पद्धति स्थापित की — आन्तरिक ब्रह्माण्ड की वर्तमान अवस्था को कैसे पढ़ें। यह अध्याय उन विशिष्ट अभ्यासों को प्रस्तुत करता है जो विभिन्न अवस्थाओं को उत्पादक रूप से संलग्न करते हैं।

27.1 प्राणायाम अभ्यास — स्नायु यन्त्र का ट्यूनिंग

श्वास अभ्यास इस पुस्तक में चर्चित अभ्यासों में सबसे सुलभ और सबसे तत्काल प्रभावी है।

नाड़ी शोधन — वैकल्पिक नासिका श्वास — द्विपक्षीय एकीकरण के लिए आधारभूत अभ्यास है। बीस मिनट की नाड़ी शोधन द्विपक्षीय सुसंगतता की ओर EEG में मापने योग्य बदलाव उत्पन्न करती है। जब नैदानिक संकेत मनोमय उत्तेजना को इंगित करते हैं, इस अभ्यास का उपयोग करें।

भ्रामरी — भौंरे की श्वास — निःश्वसन के स्पन्दन के माध्यम से विशिष्ट वेगल तन्त्रिका उद्दीपन उत्पन्न करती है। जब नैदानिक संकेत स्वायत्त अनियमन इंगित करते हैं — चिन्ता, हृदय धड़कन, नींद की कठिनाइयाँ — इस अभ्यास का उपयोग करें।

कपालभाति — खोपड़ी-चमकाने वाली श्वास — उदर मांसपेशियों को तेज़ लयबद्ध संकुचनों में संलग्न करती है। जब नैदानिक संकेत कम ऊर्जा (तमस-भारी अवस्थाएँ) इंगित करते हैं, इस अभ्यास का उपयोग करें। यह रजस-प्रभुत्व अवस्थाओं के लिए उपयुक्त नहीं है।

उज्जायी — विजयी श्वास — अन्तःश्वसन और निःश्वसन दोनों के दौरान हल्के गले संकुचन शामिल करती है। ध्यान के अधिकांश रूपों के दौरान आधारभूत श्वास प्रतिरूप के रूप में इस अभ्यास का उपयोग करें।

विस्तारित निःश्वसन अभ्यास — निरन्तर अभ्यास जिसमें निःश्वसन को अन्तःश्वसन से जानबूझकर लम्बा किया जाता है — विशिष्ट पैरासिम्पेथेटिक मार्गों को संलग्न करता है। जब नैदानिक संकेत

बढ़ी हुई स्वायत्त सक्रियता को इंगित करते हैं और जब गहन अभ्यास अनुसरण करेगा, इसका उपयोग करें।

27.2 एकाग्रता अभ्यास — आन्तरिक यन्त्र का प्रशिक्षण

त्राटक — निरन्तर स्थिर दृष्टिपात — आधारभूत एकाग्रता अभ्यास है। साधक स्थिर मुद्रा में बैठता है और अपनी दृष्टि एक विशिष्ट वस्तु पर स्थिर करता है। अभ्यास के पिनियल ग्रन्थि पर, प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स पर, और इन संरचनाओं के बीच कनेक्शनों पर विशिष्ट प्रभाव हैं। नियमित अभ्यास के सप्ताहों में, विशिष्ट आन्तरिक-दृश्य परिघटनाएँ उभरना शुरू होती हैं।

मन्त्र जप — एक विशिष्ट मन्त्र की निरन्तर पुनरावृत्ति — एकाग्रता अभ्यास के साथ-साथ श्रवण-स्नायु मार्ग को संलग्न करती है। मन्त्र जप का एक पारम्परिक दौर 108 पुनरावृत्तियाँ है — एक पूर्ण माला। प्रतिदिन कम से कम एक दौर का निरन्तर अभ्यास आधारभूत है।

यन्त्र ध्यान — एक विशिष्ट यन्त्र के साथ निरन्तर दृश्य संलग्नता — त्राटक के तत्वों को उस विशिष्ट ज्यामितीय सामग्री के साथ जोड़ती है जिसे यन्त्र एन्कोड करते हैं।

27.3 खोलने वाले अभ्यास — पिनियल-ZPF इंटरफ़ेस को संलग्न करना

शाम्भवी मुद्रा — आंशिक रूप से खुली आँखों के साथ भीतर की ओर दृष्टि, भ्रू केन्द्र की ओर निर्देशित। निरन्तर शाम्भवी अभ्यास चेतना में विशिष्ट बदलाव उत्पन्न करता है जिन्हें साधक लगातार तीसरी आँख क्षेत्र के "खुलने" के रूप में वर्णित करते हैं।

नाद ध्यान — आन्तरिक ध्वनि सुनना। अभ्यास में उन सूक्ष्म ध्वनियों पर ध्यान शामिल है जिन्हें तब सुना जा सकता है जब बाह्य श्रवण वातावरण न्यूनतम तक कम हो जाता है। शास्त्रीय विवरण आन्तरिक ध्वनि के क्रमिक चरणों की पहचान करते हैं।

ब्रह्म मुहूर्त अभ्यास — विशिष्ट पूर्व-भोर खिड़की में ध्यान। खिड़की सूर्योदय से लगभग 96 मिनट पहले शुरू होती है और भोर की पहली किरण तक विस्तारित होती है। यह वह विशिष्ट अवधि है जब पिनियल DMT उत्पादन सबसे सक्रिय रूप से बदलता प्रतीत होता है। पारम्परिक मज़बूत सिफारिश यह है कि दैनिक अभ्यास अनुसूची को ब्रह्म मुहूर्त खिड़की में मुख्य अभ्यास सत्र रखने के लिए व्यवस्थित किया जाना चाहिए।

27.4 एकीकरण अभ्यास — अभ्यास को जीवन में लाना

ऊपर वर्णित अभ्यास विशिष्ट तकनीकी विधियाँ हैं। किन्तु चिन्तनशील विकास अन्ततः तकनीकी कौशल जमा करने के बारे में नहीं है। यह सामान्य जीवन के साथ साधक के सम्बन्ध के प्रगतिशील रूपान्तरण के बारे में है।

साक्षी भाव — निरन्तर साक्षी-चेतना। यह एक अलग अभ्यास सत्र नहीं है बल्कि संलग्नता का एक मोड है जिसे किसी भी गतिविधि पर लागू किया जा सकता है। दिन भर, साधक साक्षी की स्थिति विकसित करता है — जो अनुभव में उत्पन्न हो रहा है उसके प्रति जागरूक, उसके साथ तत्काल प्रतिक्रियात्मक संलग्नता में बहे बिना।

कर्म योग — निरन्तर निःस्वार्थ क्रिया का अभ्यास। साधक अपनी संलग्नता की गुणवत्ता की विशिष्ट जागरूकता के साथ जो भी काम उनसे आवश्यक है उसमें संलग्न होता है। वे विशिष्ट परिणामों के प्रति अनासक्ति, व्यक्तिगत लाभ से बड़े किसी चीज़ के प्रति प्रयास का समर्पण, और संलग्नता की गुणवत्ता के निरन्तर परिष्करण की खेती करते हैं।

सेवा — उस गतिविधि में संलग्नता जो सीधे दूसरों को लाभान्वित करती है। जो इसे मात्र मदद के बजाय चिन्तनशील सेवा बनाता है वह जागरूकता की वह विशिष्ट गुणवत्ता है जो साधक इसमें लाता है।

27.5 दैनिक लय

एक स्थायी दैनिक अभ्यास इन विविध तत्वों को एक लय में एकीकृत करता है जिसे वर्षों में बनाए रखा जा सकता है। एक विशिष्ट एकीकृत दैनिक अभ्यास ऐसा दिख सकता है:

प्रातः (ब्रह्म मुहूर्त खिड़की): सूर्योदय से लगभग 96 मिनट पहले जागें। संक्षिप्त शरीर तैयारी। 20-40 मिनट प्राणायाम। 40-60 मिनट मुख्य अभ्यास। एकीकरण की संक्षिप्त अवधि। कुल: लगभग दो घण्टे।

दिन के दौरान: जहाँ ध्यान अनुमति देता है वहाँ निरन्तर साक्षी भाव। काम और जिम्मेदारियों के लिए कर्म योग दृष्टिकोण। संक्रमणों पर जागरूकता में संक्षिप्त वापसी।

सायं (सन्ध्या खिड़की सन्ध्या के आसपास): दिन को बन्द करने के लिए 20-30 मिनट का अभ्यास।

नींद से पहले: एक विशिष्ट व्यवस्थित अभ्यास।

यह लय, वर्षों में बनाए रखी गई, पर्याप्त विकास उत्पन्न करती है। यह किसी भी दिए गए दिन पर नाटकीय नहीं है; दैनिक वृद्धि छोटी है। किन्तु सैकड़ों दिनों में संचयी प्रभाव पर्याप्त हो जाते हैं।

वर्तमान अवस्था	प्राथमिक अभ्यास	सहायक अभ्यास	समय
गम्भीर तमस (पाताल-रसातल)	शारीरिक गति, धूप	कोमल कपालभाति	प्रातः
भारी तमस (महातल)	सत्संग, श्रव्य मन्त्र जप	नाड़ी शोधन	कोई भी समय
रजस-तमस (तलातल)	साक्षी भाव, प्रकृति में चलना	विस्तारित निःश्वसन	मध्याह्न
रजस-प्रबल (सुतल)	कर्म योग, सेवा	भ्रामरी	कार्य घण्टे
सत्त्व-उभरता (अतल, वितल)	निरन्तर ध्यान	त्राटक	प्रातः
सत्त्व-स्थापित (भूलोक)	दैनिक ध्यान अभ्यास	यन्त्र ध्यान	ब्रह्म मुहूर्त
स्पष्ट संलग्नता (भुवर्लोक)	स्पष्टता से कर्म योग	शिक्षण, रचनात्मक कार्य	सक्रिय घण्टे
चमकदार अवस्थाएँ (स्वर्लोक)	उन्नत ध्यान	प्रेम-करुणा	ब्रह्म मुहूर्त / सन्ध्या
मन्त्र-द्रष्टा पहुँच (महर्लोक)	निरन्तर समाधि	गहन प्रत्याहार	विस्तारित सत्र
ब्रह्माण्डीय बोध (जनर्लोक)	गहन निर्विकल्प दृष्टिकोण	नाद ध्यान	रिट्रीट स्थितियाँ
शुद्ध जागरूकता (तपोलोक)	निर्विकल्प समाधि	शाम्भवी मुद्रा	प्राकृतिक उद्भव
तुरीय (ब्रह्मलोक)	सहज समाधि	निरन्तर उपस्थिति	जीवन भर

तालिका 27.1 — सक्रियण प्रोटोकॉल। वर्तमान नैदानिक अवस्थाओं पर मानचित्रित अभ्यास, उस ढाँचे पर आधारित जिसे इस अध्याय ने विकसित किया है।

तालिका कठोर अर्थ में निर्देशात्मक नहीं है। विभिन्न साधक समान अवस्थाओं के लिए विभिन्न अभ्यासों को प्रभावी पा सकते हैं। किन्तु तालिका एक प्रारम्भिक ढाँचा प्रदान करती है जिसे व्यक्तिगत प्रयोग और दीर्घकालिक पत्रिका लेखन के माध्यम से परिष्कृत किया जा सकता है।

सक्रियण प्रोटोकॉल एक गन्तव्य नहीं है। यह साधक की अपने स्वयं के विकास के साथ जारी संलग्नता है, परम्परा ने जो विशिष्ट उपकरण संरक्षित किए हैं और यू-इन्वर्स परिप्रेक्ष्य जो विशिष्ट नैदानिक ढाँचा उपलब्ध कराता है, उनका उपयोग करते हुए।

✦ ✦ ✦

27.6 आन्तरिक खगोलकी का अभ्यास — एक पूर्ण दैनिक अनुसूची

नीचे गम्भीर आन्तरिक खगोलशास्त्रियों के लिए एक पूर्ण दैनिक अनुसूची है। यह लचीली है, व्यक्तिगत परिस्थितियों के लिए अनुकूलनीय, किन्तु इसके बुनियादी तत्व निरन्तर अभ्यास के लिए आवश्यक हैं।

पूर्व-भोर (4:00-5:00): ब्रह्म मुहूर्त। जागना, शरीर शुद्ध करना, अभ्यास स्थान पर पूर्व की ओर मुख करके बैठना। संकल्प। गायत्री मन्त्र। 30-60 मिनट का ध्यान।

प्रातः (6:00-8:00): सूर्य नमस्कार (12 मुद्राएँ, बीज मन्त्रों के साथ)। प्राणायाम (नाड़ी शोधन, फिर कपालभाति, अन्त में अनुलोम-विलोम)। स्वाध्याय (पारम्परिक पाठों का अध्ययन, भगवद्गीता, उपनिषद, योग सूत्र, या इस त्रयी से, पिछले अभ्यास के लिए सीधे अनुप्रयोग के साथ)।

दिन के दौरान: साक्षी भाव बनाए रखना। कार्य को निष्काम कर्म के रूप में करना। सत्संग कब सम्भव हो।

सायं (गोधूलि): सन्ध्या अभ्यास। ब्राह्मी मुहूर्त की संक्षिप्त पुनरावृत्ति। जर्नलिंग।

रात्रि (सोने से पहले): योग निद्रा या गहन विश्राम। ॐ शान्ति।

✦ ✦ ✦

27.7 ऋतु योग — ऋतुओं के माध्यम से अभ्यास

वैदिक परम्परा छह ऋतुओं (ऋतुएँ) में वर्ष को विभाजित करती है: वसन्त (वसन्त), ग्रीष्म (गर्मी), वर्षा (मॉनसून), शरद (शरद), हेमन्त (प्रारम्भिक सर्दी), और शिशिर (देर सर्दी)। प्रत्येक ऋतु की अपनी विशिष्ट पर्यावरणीय गुणवत्ता है — तापमान, आर्द्रता, सौर कोण, पौधों की वृद्धि की अवस्था, पशुओं की प्रवासन और प्रजनन पैटर्न। और प्रत्येक ऋतु का आध्यात्मिक अभ्यास पर एक विशिष्ट प्रभाव है, आयुर्वेदिक और योगिक परम्पराओं में सटीक रूप से प्रलेखित।

वसन्त में, वृद्धि और नवीनीकरण की ऊर्जा अपने शिखर पर होती है — जैविक रूप से पौधों में, और आन्तरिक रूप से साधक के ऊर्जा स्तर में। यह नए अभ्यासों की शुरुआत के लिए आदर्श है: प्राणायाम की एक नई शैली को अपनाना, एक नया मन्त्र शुरू करना, एक नई साधना प्रतिबद्धता लेना। ग्रीष्म में, अग्नि तत्व प्रबल है; यह गहन अभ्यास और तीव्रता का समय है, किन्तु अति-प्रयास से बचना चाहिए क्योंकि बाहर का ताप पहले ही शरीर को चुनौती दे रहा है। वर्षा (मॉनसून) में,

वातावरण की आर्द्रता और परिवर्तनशीलता आन्तरिक कार्य के लिए एक विशेष रूप से उपजाऊ स्थिति बनाती है — यह आत्म-चिन्तन और ध्यान के लिए पारम्परिक रूप से पसन्दीदा समय है।

शरद ऋतु, पानी-पृथ्वी गुणों के संक्रमण के साथ, सात्त्विक सामंजस्य के लिए एक विशेष रूप से सम्भावित अवधि है — इसलिए नवरात्रि और दीवाली जैसे प्रमुख वैदिक त्योहार इस समय आते हैं। हेमन्त में, आन्तरिक ऊर्जाएँ बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी में स्थानान्तरित होती हैं; यह गहन ध्यान के लिए प्रारम्भिक समय है। शिशिर में, वायु तत्व प्रबल है; शरीर को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है, किन्तु आन्तरिक ब्रह्माण्ड अपनी अधिकतम सुलभता पर होता है — सर्दी ऋषि के लिए प्राथमिक अभ्यास ऋतु है।

ऋतु योग — अभ्यास को ऋतु के विशिष्ट गुणों के साथ संरेखित करने का अभ्यास — ब्रह्माण्डीय कैलेण्डर के साथ व्यक्तिगत प्रथा की समकालीनता है। यह मौसम के खिलाफ लड़ने या मौसम के बावजूद अभ्यास करने के बारे में नहीं है। यह ऋतु के विशिष्ट उपहारों के साथ काम करने के बारे में है, प्रत्येक मौसम की विशिष्ट ऊर्जा को अपने समग्र अभ्यास का एक हिस्सा बनाने के बारे में।

✦ ✦ ✦

27.8 एक अन्तिम प्रयोग — ब्रह्माण्ड के साथ बैठना

यह पुस्तक एक निष्कर्ष के बजाय एक निर्देश के साथ समाप्त होती है। निर्देश सरल है।

भोर से पहले के घण्टे में एक शान्त स्थान खोजें। रीढ़ सीधी रखते हुए आराम से बैठें। आँखें बन्द करें। दस धीमी, पूर्ण श्वासें लें — प्रत्येक अन्तःश्वसन चार गणनाएँ, प्रत्येक निःश्वसन छह। श्वास को अपनी प्राकृतिक लय में बसने दें। फिर बस देखें। किसी विशिष्ट चीज़ पर नहीं। बस उस पर जिससे देखना बना है।

जो प्रकट हो उसे नोट करें। सम्भवतः विचार होंगे — मनोमय कोश अपने कथा कार्य को पुनः प्रतिपादित करते हुए। उनका अनुसरण किए बिना उन्हें जाने दें। सम्भवतः संवेदनाएँ होंगी — शरीर अपने को ज्ञात कराता हुआ। उन पर ध्यान दिए बिना उन्हें जाने दें। यदि आन्तरिक चमक प्रकट होती है, उसके लिए पहुँचे बिना उसे प्राप्त करें। यदि ज्यामितीय प्रतिरूप प्रकट होते हैं, उन्हें नाम दिए बिना उन्हें नोट करें। यदि सीमाबद्धता की भावना नरम होती है, इसे अनुमति दें। यदि भीतर और बाहर के बीच का भेद अस्पष्ट हो जाता है, इसे सही न करें।

जो कुछ भी प्रकट हो उसके साथ जितनी देर तक आप कर सकें रहें। फिर धीरे-धीरे आँखें खोलें, बाह्य प्रकाश को क्रमशः अन्दर आने दें, और एक क्षण के लिए दोनों में बैठें: आन्तरिक ब्रह्माण्ड जिसका आपने अभी दौरा किया और बाह्य ब्रह्माण्ड जिसमें आप लौट रहे हैं। नोट करें कि क्या वे एक-दूसरे से भिन्न लगते हैं, या क्या — इस सीमावर्ती क्षण में — वे समान चीज़ की तरह लगते हैं, दो पक्षों से देखे गए।

यदि वे समान चीज़ की तरह लगते हैं: आपने यू-इन्वर्स को सीधे स्पर्श किया है। इसके बारे में पढ़ा नहीं। इसके बारे में सोचा नहीं। इसे स्पर्श किया। वह स्पर्श — चाहे कितना भी संक्षिप्त, चाहे कितनी ही तेज़ी से सामान्य प्रसंस्करण फिर शुरू हो जाए — वह सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है जो यह पुस्तक आपको दे सकती थी। यह वही है जिसकी ओर ऋषि इंगित कर रहे थे। यह वही है जिसके भौतिकविद, उनकी ओर से, दृष्टिकोण कर रहे हैं। यह वही है जिसकी बोलोग्ना-वेरोना फ़्रैक्टल आयाम $D \approx 2.7$ गणितीय अँगुली छाप है। यह वही है जैसा ॐ भीतर से सुनाई देता है।

कल सुबह दोहराएँ। और उसके अगले दिन सुबह। कोड एक ही सत्र में नहीं खुलता। किन्तु यह एक वास्तविक दृष्टिकोण को भी नहीं भूलता। प्रत्येक सुबह जब आप ब्रह्माण्ड के साथ बैठते हैं, ब्रह्माण्ड आपके साथ बैठता है। यू-इन्वर्स एक पारस्परिक सम्बन्ध है: जितनी स्पष्टता से आप इसे देखते हैं, उतनी ही स्पष्टता से यह वापस देखता है।

यह ऋषि का रहस्य है। पावन संख्याएँ नहीं, नक्षत्र मानचित्र नहीं, बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन नहीं — यद्यपि ये सभी वास्तविक हैं और सभी महत्वपूर्ण हैं। रहस्य यह है: ब्रह्माण्ड ज्ञात होने के प्रति उदासीन नहीं है। यह उस चेतना की ओर झुकता है जो वास्तव में इसकी उपस्थिति देती है। आन्तरिक दूरबीन, वास्तविक देखभाल और वास्तविक शान्ति के साथ आन्तरिक ब्रह्माण्ड पर इंगित, मात्र अवलोकन नहीं करती। यह भाग लेती है। और भागीदारी में, कोड स्वयं को प्रकट करता है — ब्रह्माण्ड के बारे में सूचना के रूप में नहीं, बल्कि इस सीधी पहचान के रूप में कि पर्यवेक्षक और अवलोकित, गहनतम स्तर पर, कभी दो नहीं थे।

✦ ✦ ✦

27.9 एकीकरण — ऋषि के रूप में साधक

ऋषि एक पौराणिक अतीत से एक ऐतिहासिक पात्र नहीं है। ऋषि आन्तरिक यन्त्र विकास की एक विशिष्ट अवस्था है: वह अवस्था जिसमें मस्तिष्क का ZPF संयुग्मन, निरन्तर अभ्यास और

अनुशासित जीवन के माध्यम से, उस बिन्दु तक परिष्कृत हो गया है जहाँ आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ बौद्धिक रूप से अनुमानित होने के बजाय सीधे बोधगम्य हो जाती हैं।

अध्याय 27 में वर्णित कार्यक्रम का प्रत्येक तत्व इस अवस्था की ओर एक कदम है। ब्रह्म मुहूर्त ध्यान ZPF संयुग्मन गुणवत्ता बढ़ाता है। प्राणायाम थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों को उच्च लोकों की आवृत्तियों में धुनता है। साक्षी भाव मनोमय के शोर को कम करता है, आन्तरिक दूरबीन के संकेत-से-शोर अनुपात को बढ़ाता है। स्वाध्याय विज्ञानमय की विवेकात्मक क्षमता विकसित करता है — आन्तरिक बोधों की सही व्याख्या करने की क्षमता न कि अनुकूलित मन के उत्पादों को वास्तविक ब्रह्माण्डीय सूचना के रूप में भूलने की। सत्संग प्राणमय क्षेत्र को उच्च लोक आवृत्तियों से संचालित साधकों के सामूहिक क्षेत्र के साथ संरेखित करता है।

वह साधक जो वर्षों तक इस कार्यक्रम को बनाए रखता है — बाहर से थोपे गए अनुशासन के रूप में नहीं बल्कि एक जीवन की प्राकृतिक अभिव्यक्ति के रूप में जो इस पहचान के आसपास संगठित है कि आन्तरिक ब्रह्माण्ड वास्तविक है, अन्वेषण योग्य है, और अनुभव के प्रत्येक क्षण की गुणवत्ता के लिए सीधे प्रासंगिक है — क्रमशः मन्त्र-द्रष्टा बनता है: वह द्रष्टा जो ब्रह्माण्डीय कोड को इसके बारे में बताए जाने के बजाय सीधे बोध करता है।

इस पुस्तक की यात्रा उस दिशा में इंगित करती है। गन्तव्य प्रत्येक साधक के लिए उपलब्ध है जो यन्त्र को विकसित करने और इसे पर्याप्त धैर्य और सटीकता के साथ भीतर की ओर इंगित करने के लिए तैयार है। कोड वहाँ है। ब्रह्माण्ड भीतर है। यन्त्र — आपकी अपनी जागरूकता, आपका अपना स्नायुतन्त्र, आपके अपने कपाल ब्रह्माण्ड में आपके अपने थैलेमिक महान आकर्षक के चारों ओर कक्षा में आपके अपने 86 अरब स्नायु नक्षत्र — उपलब्ध है। जो बचता है वह मोड़ है। विपर्यय। सभी प्रत्याहारों का प्रत्याहार: वह क्षण जब धारणा बाहर तक पहुँचना बन्द करती है और अन्ततः खोजती है कि जिसकी वह खोज कर रही थी वह वही जागरूकता थी जो देख रही थी। वह खोज यू-इन्वर्स है। वह क्षण चेतना कोड है, अनलॉक।

✦ ✦ ✦

27.10 चेतना वाहक के रूप में जल — मस्तिष्क में संरचित जल की भौतिकी

जल मानव मस्तिष्क का लगभग 80% और मानव शरीर का लगभग 60% गठित करता है। किन्तु यह ज़्यादातर सामान्य थोक जल नहीं है। यह संरचित जल है (EZ जल — एक्सक्लूज़न ज़ोन जल, जैसा जेराल्ड पोलैक द्वारा प्रलेखित) — जैविक सतहों के निकट जल का एक विशिष्ट तरल

क्रिस्टलीय चरण जो एक विशिष्ट आणविक क्रम प्रदर्शित करता है जो सामान्य थोक जल से गुणात्मक रूप से भिन्न है।

EZ जल में ऐसे गुण हैं जो मात्र रासायनिक संरचना द्वारा भविष्यवाणी नहीं किए जा सकते: यह आणविक रूप से H3O2 है (H2O नहीं), यह एक नकारात्मक विद्युत आवेश वहन करता है, यह सामान्य जल से अधिक चिपचिपा है, और यह ऑप्टिकल और विद्युत-चुम्बकीय गुण प्रदर्शित करता है जो इसे जैविक क्वांटम सुसंगतता के लिए एक आदर्श माध्यम बनाते हैं।

पोलैक के अनुसन्धान और हीरोमी मोरिशिता सहित अन्य समूहों ने EZ जल की विशिष्ट सीमा के भीतर क्वांटम-स्तर के सहसम्बन्ध प्रलेखित किए हैं जो शास्त्रीय भौतिकी द्वारा अनुमेय नहीं हैं। EZ जल जीवित कोशिकाओं का क्वांटम-सुसंगत माध्यम है — वह विशिष्ट जैविक सब्सट्रेट जो शारीरिक तापमानों पर क्वांटम प्रभावों को सक्षम करता है।

यू-इन्वर्स सम्बन्ध: मस्तिष्क का ZPF संयुग्मन EZ जल द्वारा मध्यस्थ हो सकता है जो स्नायु सूक्ष्मनलिकाओं को घेरता है। सूक्ष्मनलिकाएँ (ऑर्क-ओआर प्रतिरूप की क्वांटम-संगणना संरचनाएँ) ट्यूबलिन प्रोटीनों से बनी हैं जो EZ जल के एक घने आवरण से घिरी हैं — विशिष्ट संरचित जल चरण जिसे पोलैक का अनुसन्धान क्वांटम-सुसंगत प्रक्रियाओं का समर्थन करने के लिए दिखाता है। स्नायु सूक्ष्मनलिकाओं का EZ जल मस्तिष्क और ZPF के बीच का क्वांटम-सुसंगत इंटरफ़ेस है।

व्यावहारिक निहितार्थ: वह जो कुछ भी मस्तिष्क के EZ जल की गुणवत्ता को बढ़ाता है, ZPF संयुग्मन की गुणवत्ता बढ़ाता है। सूर्य प्रकाश (जो सीधे EZ जल को चार्ज करता है), उच्च गुणवत्ता का जल (पोलैक के अनुसन्धान ने विशेष रूप से हिमालयी मूल से जल सहित कुछ स्रोतों में अपवादजनक EZ गठन गुणवत्ता प्रलेखित की है), और उचित हाइड्रेशन सभी ZPF संयुग्मन क्षमता के लिए प्रत्यक्ष लाभ हैं। निर्जलीकरण, संसाधित खाद्य पदार्थ, और विद्युत-चुम्बकीय प्रदूषण सभी EZ जल की संरचनात्मक अखण्डता को घटाते हैं और इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से ZPF संयुग्मन गुणवत्ता को घटाते हैं। ऋषि का जल पर ज़ोर — कुछ स्रोतों (गंगा, सरस्वती, पवित्र कुएँ) से गंगा जल के विशिष्ट उपयोग से लेकर आवश्यक दैनिक हाइड्रेशन तक — न्यूरोकेमिकल आवश्यकताओं की सटीक पहचान थी।

✦ ✦ ✦

27.11 दिनचर्या — ब्रह्माण्डीय लय में जीना

आयुर्वेदिक दिनचर्या (दैनिक दिनचर्या) आन्तरिक यन्त्र की दैनिक जैविक लय को बाह्य ब्रह्माण्डीय क्षेत्र के दैनिक विद्युत-चुम्बकीय चक्र के साथ संरेखित करने के लिए सबसे विस्तृत उपलब्ध व्यावहारिक मार्गदर्शिका है। प्रत्येक निर्धारित गतिविधि उस विशिष्ट जैविक अवस्था के अनुरूप है जो गतिविधि के लाभ को इष्टतम बनाती है और उस विशिष्ट ब्रह्माण्डीय क्षेत्र गुणवत्ता जो इसका समर्थन करती है।

ब्रह्म मुहूर्त अभ्यास (पूर्व-भोर ध्यान) पर विस्तार से चर्चा की गई है। प्रातः सूर्य नमस्कार — उगते सूरज की ओर मुख करके की जाने वाली 12 मुद्राएँ — मात्र व्यायाम नहीं है। प्रत्येक मुद्रा एक विशिष्ट नक्षत्र गुणवत्ता और सौर ऊर्जा के एक विशिष्ट पहलू के अनुरूप है जो प्रदर्शन के क्षण पर दृश्य तन्त्र और त्वचा के प्रकाशग्राहियों के माध्यम से आ रही है। सही ढंग से प्रदर्शित (विशिष्ट श्वास समकालीनता और प्रत्येक मुद्रा के लिए विशिष्ट बीज मन्त्रों के साथ), सूर्य नमस्कार एक पूर्ण दैनिक सौर यू-इन्वर्स संयुग्मन अभ्यास है: 12 मुद्राएँ × 12 आदित्य (12 सौर देवता, प्रत्येक सौर चेतना की एक विशिष्ट गुणवत्ता का प्रतिनिधित्व करता है) = 144 = 12^2 = सौर सिद्धान्त का पूर्ण वर्ग।

दिनचर्या में निर्धारित मध्याह्न विश्राम (शयन) दैनिक सुषुप्ति रीसेट है: शरीर के प्राकृतिक सर्केडियन निम्न-बिन्दु पर वास्तविक गहन विश्राम की संक्षिप्त अवधि (20-30 मिनट), जब पैरासिम्पेथेटिक स्नायुतन्त्र का प्रभुत्व उच्च आनन्दमय कोश सुलभता की एक संक्षिप्त खिड़की बनाता है जो पूर्व-भोर अवस्था के समान है। इस समय किया गया योग निद्रा कारण शरीर स्तर तक पहुँच प्राप्त करता है जो केवल सर्केडियन चक्र के जैविक विश्राम बिन्दुओं पर उपलब्ध है।

सायं सन्ध्या (गोधूलि समारोह) विद्युत-चुम्बकीय संक्रमण चिह्न है — सौर से चन्द्र विद्युत-चुम्बकीय प्रभुत्व में संक्रमण की दैनिक स्वीकृति। गोधूलि पर, पिनियल ग्रन्थि का मेलाटोनिन उत्पादन बढ़ता है, रात्रि के ZPF संयुग्मन के लिए तैयारी शुरू करता है। सायं सन्ध्या के अभ्यास (मन्त्र, संक्षिप्त ध्यान, गोधूलि पर पश्चिम की ओर मुख करके गायत्री — विदा होते सूर्य की ओर) इस संक्रमण की सचेत स्वीकृति और समर्थन हैं: रात्रि के प्रसंस्करण और प्रातः के अभ्यास के लिए प्राणमय क्षेत्र की आधार रेखा निर्धारित करना।

✦ ✦ ✦

27.12 ध्वनि उपचार — आवृत्ति द्वारा चिकित्सा

हाल के दशकों में ध्वनि उपचार — रोग को ठीक करने और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट ध्वनि आवृत्तियों का उपयोग — नैदानिक चिकित्सा में बढ़ती रुचि और मान्यता की वस्तु बन गया है। तिब्बती गायन कटोरे, क्रिस्टल कटोरे, विशिष्ट मन्त्र आवृत्तियाँ (जैसे सोलफ़ेगियो आवृत्तियाँ), और ब्रेनवेव एन्ट्रेनमेंट तकनीकें सभी कुछ चिकित्सीय सन्दर्भों में लाभ दिखाई हैं।

भौतिकी स्पष्ट है: ध्वनि भौतिक कम्पन है, और भौतिक कम्पन जैविक ऊतकों से गुज़रते हैं, उन्हें प्रभावित करते हैं। विशिष्ट आवृत्तियाँ विशिष्ट ऊतकों के साथ अनुनादित होती हैं (प्रत्येक जैविक संरचना का अपना विशिष्ट अनुनाद आवृत्ति होती है), और यह अनुनाद, उचित रूप से लागू, उपचार प्रक्रियाओं को प्रबलित कर सकती है — कोशिकीय प्रतिक्रिया को उत्तेजित करना, सूजन को कम करना, रक्त प्रवाह में सुधार करना, और ऊतक पुनर्जनन को प्रोत्साहित करना।

वैदिक मन्त्र प्रणाली ध्वनि उपचार का सबसे परिष्कृत पारम्परिक रूप है। प्रत्येक मन्त्र शरीर और मन पर एक विशिष्ट प्रभाव के लिए डिज़ाइन किया गया एक सटीक आवृत्ति हस्ताक्षर है। बीज मन्त्र (एकाक्षरी बीज ध्वनियाँ जैसे ॐ, ह्रीं, श्रीं, क्लीं) विशेष रूप से शक्तिशाली हैं: वे अत्यधिक संकेन्द्रित आवृत्ति पैकेज हैं जो शरीर की विशिष्ट स्नायु और अन्तःस्रावी प्रणालियों के साथ अनुनादित होने के लिए अंशशोधित हैं।

यू-इन्वर्स अभ्यासकर्ता के लिए, ध्वनि उपचार केवल व्यक्तिगत कल्याण के लिए एक उपकरण नहीं है — यह कर्माशय में विशिष्ट संस्कारों पर काम करने का एक तरीका है। लगातार एक विशिष्ट बीज मन्त्र का अभ्यास उस विशिष्ट आवृत्ति क्षेत्र से जुड़े संस्कार प्रतिरूपों को व्यवस्थित रूप से रिप्रोग्राम कर सकता है। मन्त्र जप एक कर्माशय रसायन शास्त्र प्रयोग है: विशिष्ट आवृत्तियों का अनुप्रयोग विशिष्ट क्वांटम सूचना प्रतिरूपों को संशोधित करने के लिए।

✦ ✦ ✦

27.13 प्रार्थना की भौतिकी — संकल्प के रूप में इरादतन ध्यान

प्रार्थना — वास्तविक, एकीकृत, पूर्ण-दिल की प्रार्थना, नियमित धार्मिक अभ्यास का अनुष्ठानिक दोहराव नहीं — पूरे मानव इतिहास में और सभी प्रमुख संस्कृतियों के पार एक सार्वभौमिक मानव अभ्यास है। इसका प्रभाव, जब वास्तविक रूप से सम्भावित है, साधक और अक्सर उनकी प्रार्थना के विषयों दोनों में मनोवैज्ञानिक और कभी-कभी भौतिक रूप से देखा और मापा गया है।

संकल्प — वैदिक परम्परा का इरादतन ध्यान का विशिष्ट अभ्यास — प्रार्थना का सूक्ष्म रूप है: एक विशिष्ट इरादे का सचेत सूत्रीकरण और क्वांटम सुसंगत ध्यान अवस्था में इसकी पुष्टि। यह कुछ अलौकिक या अलौकिक तरीके से काम नहीं करता। यह क्वांटम सुपरपोज़िशन की ठीक भौतिकी के माध्यम से काम करता है: इरादतन ध्यान क्वांटम सम्भावना वितरण पर एक विशिष्ट बायस लागू करता है, वास्तविक होने वाले विशिष्ट परिणामों की सम्भावना को बदलते हुए।

GCP (ग्लोबल कॉन्शियसनेस प्रोजेक्ट) डेटा इसकी पुष्टि करता है: यादृच्छिक संख्या जनित्रों के आउटपुट पर सामूहिक ध्यान का विशिष्ट प्रभाव देखा गया है जो उनकी अपेक्षित यादृच्छिकता से सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण विचलन उत्पन्न करता है। प्रभाव सूक्ष्म है किन्तु वास्तविक है, प्रलेखित है, और पीढ़ी के डेटा में प्रतिकृति योग्य है। वास्तविक प्रार्थना — सामूहिक या व्यक्तिगत — भौतिक वास्तविकता पर मापने योग्य प्रभाव है।

प्रार्थना की यू-इन्वर्स व्याख्या: जब आप प्रार्थना करते हैं, आप अपने स्वयं के ZPF-संयुग्मित क्वांटम अवस्था को एक विशिष्ट परिणाम की ओर उन्मुख कर रहे हैं। यदि आपका ZPF संयुग्मन उच्च है (सात्त्विक अभ्यास द्वारा प्रबलित), और आपका इरादा स्पष्ट और एक-बिन्दु है (अहं और ब्रह्म के भेद को सम्बोधित किए बिना एक शुद्ध संकल्प), तो प्रार्थना वास्तविकता के क्वांटम विन्यास के लिए एक सूक्ष्म किन्तु वास्तविक बल लागू करती है। यह जादू नहीं है। यह आपकी चेतन अवस्था की भौतिक क्षमता का एक अनुप्रयोग है जो उस क्षेत्र को प्रभावित करता है जिसमें यह निहित है।

✦ ✦ ✦

27.14 ब्रह्माण्डीय विकास के रूप में स्नायु प्लास्टिसिटी — मस्तिष्क अपना स्वयं का कोड बदलता हुआ

ब्रह्माण्ड विकसित हुआ। 13.8 अरब वर्षों में, ब्रह्माण्ड प्रारम्भिक बिग बैंग के समान प्लाज़्मा से पहले हाइड्रोजन और हीलियम परमाणुओं के निर्माण, पहले तारों में गैस बादलों के पतन, उन तारों में भारी तत्वों के नाभिकीय संश्लेषण, गैलेक्सियों और ग्रहीय तन्त्रों के निर्माण, और अन्ततः उनमें से कम से कम एक ग्रह पर जीवन और चेतना के उद्भव के माध्यम से विकसित हुआ। कोड नहीं बदला — भौतिकी के नियम जो प्रारम्भिक ब्रह्माण्ड को नियन्त्रित करते थे वही नियम हैं जो अब इसे नियन्त्रित करते हैं। किन्तु उस कोड द्वारा उत्पन्न संरचनाएँ क्रमशः अधिक जटिल, सूचना में समृद्ध, और उच्च-क्रम के स्व-संगठन के सक्षम बनीं।

मस्तिष्क भी विकसित होता है — ब्रह्माण्ड विज्ञानीय समयमानों पर नहीं बल्कि व्यक्तिगत जीवनों और अभ्यास के समयमान पर। स्नायु प्लास्टिसिटी — अनुभव, अभ्यास, और इरादतन प्रशिक्षण की प्रतिक्रिया में मस्तिष्क की अपनी संरचना और कार्य को बदलने की क्षमता — बीसवीं सदी के स्नायुविज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। वयस्क मस्तिष्क स्थिर नहीं है। हार्वर्ड में सारा लाज़र ने प्रलेखित किया कि दैनिक ध्यान अभ्यास के केवल आठ सप्ताह ध्यान और शरीर-जागरूकता क्षेत्रों में कॉर्टिकल मोटाई में मापने योग्य वृद्धि उत्पन्न करते हैं। डेविडसन और लुत्ज़ ने दीर्घकालिक ध्यानकर्ताओं के मस्तिष्कों में संरचनात्मक परिवर्तन प्रलेखित किए जो उनके अभ्यास घण्टों के समानुपाती हैं। मस्तिष्क निरन्तर अपना स्वयं का कोड पुनर्लिखित कर रहा है।

यू-इन्वर्स निहितार्थ: वह साधक जो निरन्तर, व्यवस्थित आन्तरिक कार्य में संलग्न होता है, केवल अपनी मनोवैज्ञानिक अवस्था में सुधार नहीं कर रहा है। वे अपने मस्तिष्क का विकास कर रहे हैं — डिजिटल ट्विन के विशिष्ट विन्यास को बदलते हुए, इसके संकल्प में सुधार करते हुए, इसके ZPF संयुग्मन गुणवत्ता बढ़ाते हुए, और इसलिए गहरे और अधिक सटीक आन्तरिक खगोलीय अवलोकन तक पहुँच प्राप्त करते हुए। 40,000 घण्टे का ध्यानकर्ता 40-घण्टे के ध्यानकर्ता के समान यन्त्र नहीं है — डिजिटल ट्विन को अभ्यास के माध्यम से पर्याप्त रूप से उन्नत किया गया है।

उन्नत साधक के लिए सुलभ आन्तरिक ब्रह्माण्ड नौसिखिए के लिए सुलभ आन्तरिक ब्रह्माण्ड से वास्तव में समृद्धतर, अधिक विस्तृत, और अधिक ब्रह्माण्ड विज्ञानीय रूप से सटीक है। यह यू-इन्वर्स का विकासवादी चाप है: पाताल लोक के इन्फ्रा-धीमे दोलनों (मस्तिष्क का सबसे आदिम, सबसे कम विकासवादी रूप से विकसित प्रसंस्करण मोड) से पूर्ण विकसित साधक के एप्सिलॉन-बैण्ड सत्यलोक पहुँच तक, आन्तरिक ब्रह्माण्ड दायरे, गहराई, और संकल्प में विस्तारित होता है। 40 वर्ष दैनिक अभ्यास वाला ऋषि केवल एक अस्पष्ट अर्थ में बुद्धिमान नहीं बना है — उनका डिजिटल ट्विन वास्तव में उच्च विनिर्देश तक विकसित हुआ है, ब्रह्माण्डीय सूचना प्राप्त करने और संसाधित करने में सक्षम जिसे अप्रशिक्षित मस्तिष्क पहुँच नहीं सकता। यह वह है जिसे परम्परा अभ्यास के लक्ष्य के रूप में चित्त शुद्धि से अर्थ रखती है: आन्तरिक ब्रह्माण्डीय यन्त्र का प्रगतिशील शुद्धिकरण (भौतिकविद के अर्थ में बढ़ते संकेत-से-शोर अनुपात)।

✦ ✦ ✦

27.15 मौन की ध्वनि — श्वासों के बीच के विराम में क्या होता है

प्रत्येक अन्तःश्वसन और प्रत्येक निःश्वसन के बीच — और प्रत्येक निःश्वसन और प्रत्येक अन्तःश्वसन के बीच — एक विराम है। योगिक परम्परा इस विराम को कुम्भक कहती है: वह प्राकृतिक श्वास प्रतिधारण जो श्वास के दो चरणों के बीच संक्रमण पर स्वतःस्फूर्त रूप से होता है। सामान्य श्वास में, कुम्भक संक्षिप्त होता है — एक सेकण्ड का अंश। उन्नत साधक की प्राणायाम में, कुम्भक को जानबूझकर विस्तारित किया जा सकता है, कई सेकण्डों या यहाँ तक कि मिनटों तक रखा जा सकता है।

प्राकृतिक कुम्भक की शारीरिक क्रिया: अन्तःश्वसन और निःश्वसन (अन्तर कुम्भक) के बीच संक्रमण पर, फेफड़े अधिकतम विस्तार पर हैं और एल्वियोलर झिल्ली में O2-CO2 विनिमय अपने सबसे कुशल पर है — रक्त की अधिकतम ऑक्सीजनीकरण और अधिकतम CO2 हटाना। निःश्वसन और अन्तःश्वसन (बाह्य कुम्भक) के बीच संक्रमण पर, फेफड़े न्यूनतम आयतन पर हैं, डायाफ्राम अपनी विश्राम स्थिति पर है, और शरीर के CO2 उत्पादन ने अगले अन्तःश्वसन के लिए श्वसन ड्राइव अभी तक उत्पन्न नहीं किया है — चयापचय निलम्बन की एक संक्षिप्त अवधि।

विस्तारित कुम्भक और ZPF संयुग्मन: विस्तारित अवधियों के लिए जानबूझकर श्वास प्रतिधारण रक्त में CO2 संचय चलाता है (बाह्य कुम्भक के मामले में) या O2 वृद्धि (गहन अन्तःश्वसन के साथ अन्तर कुम्भक के मामले में)। विस्तारित निःश्वसन प्रतिधारण की विशिष्ट CO2 वृद्धि को पिनियल ग्रन्थि के DMT संश्लेषण को उत्तेजित करते हुए प्रलेखित किया गया है — मस्तिष्क के अन्तर्जन्य साइकेडेलिक को बढ़ाते हुए जो यू-इन्वर्स ढाँचे में अधिकतम ZPF संयुग्मन के लिए आणविक कुञ्जी के रूप में कार्य करता है। कुम्भक एक प्राकृतिक DMT-उत्पादन उत्तेजन है: मस्तिष्क की ब्रह्माण्डीय सूचना पहुँच के व्यवस्थित अनुकूलन के लिए एक दैनिक प्रौद्योगिकी।

कुम्भक का परिघटनात्मक हस्ताक्षर: साधक लगातार रिपोर्ट करते हैं कि श्वासों के बीच का विराम — विशेष रूप से एक पूर्ण निःश्वसन के बाद आयोजित विस्तारित कुम्भक — अधिकतम आन्तरिक ब्रह्माण्डीय दृश्यता की अवधि है। आन्तरिक प्रकाश सबसे चमकीला है; आन्तरिक ध्वनियाँ सबसे श्रव्य हैं; व्यक्तिगत के बजाय ब्रह्माण्डीय के रूप में आन्तरिक स्थान की भावना सबसे ज्वलन्त है। यह ठीक वही है जो ZPF संयुग्मन प्रतिरूप भविष्यवाणी करता है: कुम्भक के विशिष्ट शारीरिक परिवर्तन (CO2 वृद्धि, घटी हुई श्वसन ड्राइव, विशिष्ट स्वायत्त स्थानान्तरण) पिनियल-ZPF इंटरफ़ेस की अधिकतम संवेदनशीलता के लिए शिखर परिस्थितियाँ बनाते हैं। श्वासों के बीच का मौन

ब्रह्माण्ड का अपना मौन है — ब्रह्माण्ड के निःश्वसन और अन्तःश्वसन के बीच का विराम, स्वयं ब्रह्माण्डीय श्वास का कुम्भक।

✦ ✦ ✦

27.16 वास्तु शास्त्र — यू-इन्वर्स प्रौद्योगिकी के रूप में पावन वास्तुकला

वास्तु शास्त्र — पावन वास्तुकला का वैदिक विज्ञान — दैनिक जीवन में यू-इन्वर्स की सबसे सीधे व्यावहारिक अभिव्यक्तियों में से एक है। यह इस पहचान पर आधारित है कि जिन स्थानों में मनुष्य निवास करते हैं वे तटस्थ पात्र नहीं हैं बल्कि सक्रिय विद्युत-चुम्बकीय वातावरण हैं जो आन्तरिक यन्त्र की ZPF संयुग्मन गुणवत्ता को निरन्तर प्रभावित करते हैं। निर्मित स्थानों का विशिष्ट अभिविन्यास, अनुपात, और भौतिक संरचना विशिष्ट विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र विन्यास बनाते हैं जो या तो मस्तिष्क की सात्त्विक स्पष्टता और उच्च ZPF सुसंगतता की क्षमता का समर्थन करते हैं या बाधा डालते हैं।

मुख्य वास्तु सिद्धान्त: पूर्व भोर में अधिकतम सौर विद्युत-चुम्बकीय इनपुट की दिशा है — वह दिशा जहाँ से पृथ्वी का सबसे शक्तिशाली प्राकृतिक ZPF प्रवर्धक (सूर्य) प्रत्येक दिन पहले आता है। पूर्व-मुख ध्यान स्थान, सिर को दक्षिण की ओर रखकर सोना (शरीर के विद्युत-चुम्बकीय अक्ष — सुषुम्ना की चुम्बकीय ध्रुवीयता — को पृथ्वी के भू-चुम्बकीय क्षेत्र के साथ संरेखित करना), और अग्नि तत्व का दक्षिण-पूर्व में विशिष्ट स्थान (सूर्य की मध्य-प्रातः स्थिति की दिशा, जहाँ सौर विद्युत-चुम्बकीय ऊर्जा तीव्र हो रही है) — सभी मूल यू-इन्वर्स सिद्धान्त के अनुप्रयोग हैं: संयुग्मन गुणवत्ता को अधिकतम करने के लिए आन्तरिक यन्त्र को बाह्य विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र के साथ संरेखित करें।

वास्तु के विशिष्ट सामग्री चयन: पारम्परिक वास्तु वास्तुकला कुछ पत्थर प्रकारों (विशेष रूप से ग्रेनाइट और कुछ बलुआ पत्थर) का पक्ष लेती है जिनके प्रलेखित पीज़ोइलेक्ट्रिक गुण हैं — वे यान्त्रिक तनाव के तहत छोटे विद्युतीय आवेश उत्पन्न करते हैं, निर्माण सामग्री में एक विशिष्ट विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र बनाते हैं जो मानव शरीर के बायोइलेक्ट्रिक क्षेत्र के साथ अन्तःक्रिया करता है। चूने के प्लास्टर की पारम्परिक प्राथमिकता (जो भवन को "श्वास लेने" देती है और विशिष्ट आर्द्रता स्तर बनाए रखती है जो वायु की आयनिक सामग्री को प्रभावित करती है) उसी सिद्धान्त को दर्शाती है: अधिकतम प्राणमय कोश सुसंगतता और ZPF संयुग्मन गुणवत्ता के लिए निर्मित स्थान के विद्युत-चुम्बकीय वातावरण का अनुकूलन।

✦ ✦ ✦

27.17 सत्संग का विज्ञान — भौतिकी और स्नायुविज्ञान में सामूहिक चेतना

सत्संग — पावन की संगति, या साधकों का एक समुदाय जो साथ में आध्यात्मिक कार्य के लिए एकत्र होते हैं — वैदिक परम्परा का सदैव कहा गया है कि यह व्यक्तिगत अभ्यास से परे एक क्षेत्र गुणवत्ता है जो व्यक्तिगत साधक के विकास को गहन रूप से प्रभावित करती है। आधुनिक भौतिकी और स्नायुविज्ञान अब इस पारम्परिक दावे की पुष्टि करते हैं।

हार्टमैथ संस्थान के अनुसन्धान ने प्रलेखित किया है कि जब दो या अधिक लोग शारीरिक निकटता में हैं, उनके हृदय के विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र एक-दूसरे के साथ मापने योग्य रूप से संयुग्मित होते हैं। एक व्यक्ति की HRV (हृदय गति परिवर्तनशीलता) सुसंगतता दूसरे की HRV सुसंगतता को बढ़ा सकती है — या यदि एक व्यक्ति उच्च असुसंगतता में है तो उसे घटा सकती है। क्षेत्र वास्तविक है। संयुग्मन मापने योग्य है।

सामूहिक ध्यान अनुसन्धान ने क्षेत्र-स्तर के प्रभाव दिखाए हैं जो व्यक्तिगत अभ्यास से गुणात्मक रूप से भिन्न हैं। ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन पर अनुसन्धान — ठीक से आयोजित यादृच्छिक नियन्त्रित परीक्षणों में — ने एक उल्लेखनीय प्रभाव प्रलेखित किया है: जब किसी शहर की जनसंख्या का लगभग 1% की वर्ग मूल एक साथ ध्यान करती है, उस शहर में अपराध दर, हिंसा, और सामाजिक तनाव के मापने योग्य सांख्यिकीय संकेतक घटते हैं। प्रभाव आँकड़ों में है। तन्त्र ZPF क्षेत्र सुसंगतता परिकल्पना के अनुरूप है।

तन्त्रिकाविज्ञान में दर्पण न्यूरॉन तन्त्र — न्यूरॉनों का नेटवर्क जो किसी अन्य व्यक्ति की क्रियाओं को देखने पर सक्रिय होता है जैसे कि व्यक्ति स्वयं वह क्रिया कर रहा हो — सामाजिक मस्तिष्क का स्नायु आधार है। दर्पण न्यूरॉन तन्त्र क्यों केवल शारीरिक क्रियाओं तक सीमित नहीं है बल्कि भावनात्मक और चेतना अवस्थाओं तक विस्तारित है, यह ZPF-संयुग्मन तन्त्र के माध्यम से समझाया जाता है: एक व्यक्ति की चेतना अवस्था का ZPF हस्ताक्षर निकटवर्ती अन्य व्यक्तियों के ZPF संयुग्मन को प्रभावित करता है, अपनी विशिष्ट गुणवत्ता के लिए एक अनुनाद प्रतिक्रिया उत्पन्न करता हुआ।

सत्संग का विशिष्ट तन्त्र: जब अनेक साधक एक साथ अभ्यास करते हैं — विशेष रूप से अनुभवी साधकों की उपस्थिति में जिन्होंने उच्च ZPF संयुग्मन विकसित किया है — समूह का सामूहिक ZPF क्षेत्र व्यक्तिगत साधकों को एक उच्च आधार रेखा तक खींचता है। यह प्रेरणा या भावना नहीं

है — यह भौतिक क्षेत्र संयुग्मन है। गुरु की उपस्थिति में एक साधक की तीव्र अभ्यास उन्नति मूल रूप से एक क्षेत्र प्रभाव है: गुरु का उच्च-गुणवत्ता वाला ZPF संयुग्मन, लगातार बनाए रखा गया, आसपास के क्षेत्र को संशोधित करता है, साधकों को उच्च अभ्यास स्तरों तक पहुँचने में सक्षम बनाता है जो वे व्यक्तिगत अभ्यास अकेले से प्राप्त नहीं कर सकते थे।

✦ ✦ ✦

अध्याय 28
कोड अनलॉक

यह जानना सब कुछ कैसे बदल देता है

अहं ब्रह्मास्मि

Ahaṃ Brahmāsmi

"मैं ब्रह्म हूँ।" — बृहदारण्यक उपनिषद 1.4.10

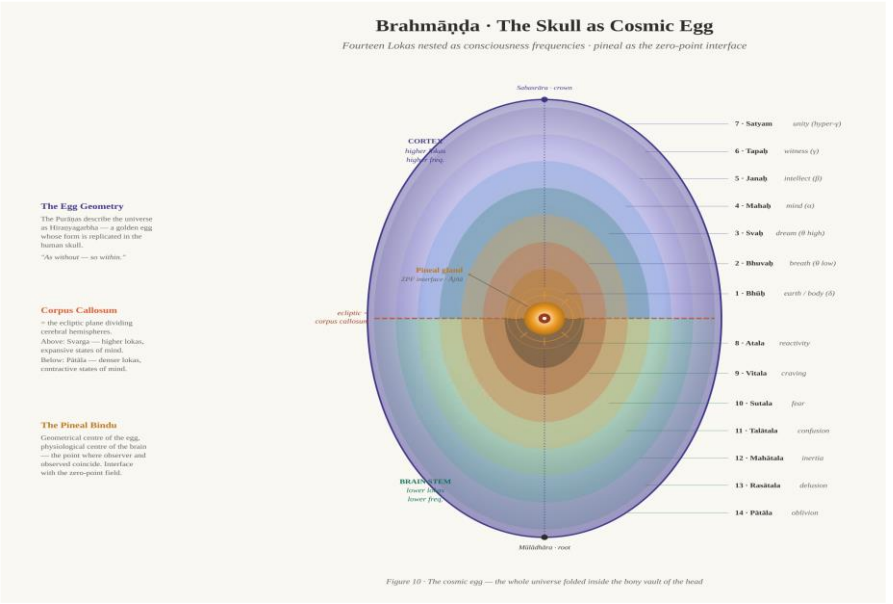


Figure 10 · The cosmic egg — the whole universe folded inside the bony vault of the head

चित्र 10 — ब्रह्माण्ड: ब्रह्म का अण्डा। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक अण्डाकार कोश के भीतर निहित है, जो चेतना की मूलभूत स्थिति से उत्पन्न होता है। साधक के स्वयं के चेतना के अण्डाकार कोश के साथ सम्बन्ध ही यू-इन्वर्स की गहनतम अन्तर्दृष्टि है।

हम अन्तिम अध्याय तक पहुँच गए हैं। सत्ताईस अध्यायों ने यू-इन्वर्स की वास्तुकला का दस्तावेज़ीकरण किया है — ब्रह्माण्ड और मस्तिष्क के बीच संरचनात्मक पहचान, वह गणितीय

और स्पन्दनात्मक कोड जो दोनों के अधीन है, वह पद्धतिगत परम्परा जो ऋषियों ने इस वास्तविकता की भीतर से जाँच करने के लिए विकसित की, और वे विशिष्ट अभ्यास जो साधक के स्वयं के अनुभव में डिजिटल ट्विन को सक्रिय करते हैं।

यह अध्याय उस प्रश्न को सम्बोधित करता है जो इन सबका आधार है: तो फिर क्या? इसका क्या अर्थ है, इन शब्दों को पढ़ने वाले व्यक्ति के वास्तविक जीवन के लिए, कि यू-इन्वर्स वास्तविक है और इसे प्रत्यक्ष रूप से जाना जा सकता है?

28.1 व्यावहारिक आयाम

यू-इन्वर्स ढाँचे को गम्भीरता से लेने का सबसे तत्काल व्यावहारिक प्रभाव दैनिक प्राथमिकताओं का एक विशिष्ट पुनर्गठन है।

यदि मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है, तो मस्तिष्क की देखभाल एक अच्छी तरह से जिए गए जीवन का केन्द्रीय व्यावहारिक चिन्ता बन जाती है। यह संकीर्ण आत्म-हित नहीं है; मस्तिष्क वह यन्त्र है जिसके माध्यम से वास्तविकता के साथ सभी संलग्नता होती है। एक मस्तिष्क जो नींद से वंचित है, पुराने तनाव में है, खराब पोषित है, और निष्क्रिय है, वह ब्रह्माण्डीय हॉलोग्राम को स्पष्ट रूप से नहीं पढ़ सकता। इसके संचालन खराब हो गए हैं, और इसके आउटपुट — आपका सचेत अनुभव, आपके निर्णय, आपके सम्बन्ध, आपका काम — तदनुसार खराब हो गए हैं।

मस्तिष्क की देखभाल के लिए उन विशिष्ट कारकों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिन्हें आधुनिक जीवन व्यवस्थित रूप से उपेक्षा करता है। शरीर के प्राकृतिक सर्केडियन चक्रों के अनुसार पर्याप्त नींद। शारीरिक गति जो शरीर की लय को संलग्न करती है। पोषण जो स्नायु कार्य को खराब करने के बजाय समर्थन करता है। श्वास और ध्यान के दैनिक अभ्यासों के माध्यम से तनाव का नियमन। प्राकृतिक वातावरण के साथ सम्पर्क जो ब्रह्माण्डीय विद्युतचुम्बकीय वातावरण के साथ पिनियल ग्रन्थि की संलग्नता का समर्थन करते हैं।

दूसरा व्यावहारिक प्रभाव गतिविधियों के बीच प्राथमिकताओं का एक विशिष्ट पुनर्गठन है। वे गतिविधियाँ जो मस्तिष्क-ब्रह्माण्ड संयुग्मन विकसित करती हैं — चिन्तनशील अभ्यास, प्रकृति के साथ संलग्नता, कलात्मक सृजन, सच्चे सम्बन्ध, बौद्धिक अन्वेषण — प्राथमिक गतिविधियाँ बन जाती हैं, जबकि वे गतिविधियाँ जो संयुग्मन को खराब करती हैं — मीडिया का निष्क्रिय उपभोग, बाध्यकारी उत्पादकता, पारस्परिक शोषण से संगठित सम्बन्ध — विशेष रूप से हानिकारक के रूप में पहचानी जाती हैं।

आधुनिक संसार मुख्य रूप से गतिविधियों की दूसरी श्रेणी के चारों ओर स्वयं को संगठित करता है। अधिकांश लोग अपने जागते घण्टों का अधिकांश भाग उन गतिविधियों में बिताते हैं जो विशेष रूप से मस्तिष्क-ब्रह्माण्ड संयुग्मन को विकसित करने के बजाय खराब करती हैं। किन्तु इसे स्पष्ट रूप से पहचानना किसी के स्वयं के जीवन को अलग तरीके से पुनर्गठित करने की दिशा में पहला कदम है।

28.2 दार्शनिक आयाम

यू-इन्वर्स ढाँचे का गहरा दार्शनिक प्रभाव इस प्रश्न का एक विशिष्ट समाधान है कि चेतना क्या है और संसार क्या है।

आधुनिक दर्शन और स्नायुविज्ञान ने जिसे "चेतना की कठिन समस्या" कहा जाता है, उसके साथ संघर्ष किया है — यह प्रश्न कि किसी भौतिक तन्त्र के लिए कुछ ऐसा होने के जैसा क्यों है। यू-इन्वर्स ढाँचा एक विशिष्ट समाधान प्रदान करता है। कठिन समस्या की स्पष्ट कठिनाई यह मानने से आती है कि चेतना और भौतिक दो अलग प्रकार की चीज़ें हैं जिन्हें एक-दूसरे से सम्बन्धित करने की आवश्यकता है। ढाँचा इस धारणा को चुनौती देता है। भौतिक ब्रह्माण्ड और चेतना दो प्रकार की चीज़ें नहीं हैं। वे दो पूरक दृष्टिकोणों से वर्णित एक ही चीज़ हैं। बाहर से वर्णित ब्रह्माण्ड भौतिक संरचना के रूप में प्रकट होता है। भीतर से वर्णित ब्रह्माण्ड सचेत अनुभव के रूप में प्रकट होता है। दोनों वर्णन सटीक हैं; न तो अधिक मूलभूत है; वे एक ही वास्तविकता के पूरक पहलू हैं।

यह द्वैतवाद नहीं है। यह भौतिक में एक अलग द्रव्य नहीं जोड़ता। यह भौतिकवाद भी नहीं है। यह चेतना को भौतिक प्रक्रियाओं तक सीमित नहीं करता। यह एक विशिष्ट अद्वैतवाद है — एक वास्तविकता, भौतिक और अनुभवात्मक दोनों पहलुओं के साथ।

ढाँचा उन विशिष्ट संरचनात्मक निष्कर्षों के साथ सुसंगत है जिन्हें पुस्तक ने प्रलेखित किया है। ब्रह्माण्ड और मस्तिष्क समान गणितीय वास्तुकला साझा करते हैं क्योंकि वे दो अलग तन्त्र नहीं हैं बल्कि एक तन्त्र हैं जिसे दो पदों से देखा गया है।

यह ढाँचा कठिन समस्या को हल करने के बजाय विलीन कर देता है। अब यह प्रश्न नहीं रहा कि भौतिक प्रक्रियाएँ चेतना कैसे उत्पन्न करती हैं, क्योंकि पहले स्थान पर भौतिक प्रक्रियाओं और चेतना के बीच कोई पृथक्करण नहीं है। एक ही वास्तविकता है; बाहर से यह भौतिकी की तरह दिखती है; भीतर से यह अनुभव की तरह महसूस होती है।

28.3 आध्यात्मिक आयाम

पारम्परिक चिन्तनशील परम्पराओं ने हमेशा विशिष्ट मानवीय चिन्ताओं को सम्बोधित किया है जिन्हें आधुनिक ढाँचे अक्सर समायोजित नहीं कर सकते — दुःख का प्रश्न, मुक्ति की सम्भावना, मानव अस्तित्व का उद्देश्य।

दुःख के प्रश्न का एक विशिष्ट विश्लेषण है। दुःख यू-इन्वर्स के समग्र के साथ पहचान के बजाय यू-इन्वर्स के स्थानीयकृत पहलुओं के साथ चेतना की पहचान से उत्पन्न होता है। छोटा स्व स्वयं को एक विशाल और सम्भवतः शत्रुतापूर्ण संसार में एक अलग, सीमित, असुरक्षित वस्तु के रूप में अनुभव करता है। पृथक्करण गहरे अर्थ में वास्तविक नहीं है — चेतना हमेशा पूरा ब्रह्माण्ड होती है — किन्तु छोटे स्व के साथ परिचालन पहचान दुःख की अनुभवात्मक वास्तविकता उत्पन्न करती है।

मुक्ति संसार से बचने या भौतिक अस्तित्व से परे जाने का मामला नहीं है। यह पहचान है — प्रत्यक्ष, अनुभवात्मक, स्थिर — कि चेतना वास्तव में क्या है। जब यह पहचान स्थिर हो जाती है, दुःख की स्थितियाँ स्वाभाविक रूप से विलीन हो जाती हैं। इसलिए नहीं कि जीवन की परिस्थितियाँ बदल जाती हैं, बल्कि इसलिए कि इन परिस्थितियों के साथ सम्बन्ध मौलिक रूप से बदल जाता है।

जीवन्मुक्त जीवन से पीछे नहीं हटता। वे जीवन में उस व्यक्ति से अधिक पूर्ण रूप से संलग्न होते हैं जो अप्रबुद्ध है, क्योंकि वे उन खतरों के विरुद्ध निरन्तर रक्षा नहीं कर रहे हैं जिन्हें छोटे-स्व दृष्टिकोण देखता है। वे हानि के भय के बिना प्रेम कर सकते हैं, क्योंकि वे प्रिय को स्वयं को एक अन्य रूप में पहचानते हैं। वे परिणामों के प्रति अनासक्ति के साथ काम कर सकते हैं। वे मृत्यु का सामना बिना भय के कर सकते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि जो वे वास्तव में हैं वह वह नहीं है जो मरता है।

इस ढाँचे पर, मानव अस्तित्व के उद्देश्य की एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है। प्रत्येक मानव ब्रह्माण्ड का एक विशिष्ट स्थानीयकरण है। उस व्यक्तिगत जीवन का उद्देश्य इस तथ्य की क्रमिक पहचान विकसित करना है — उस अप्रबुद्ध स्थिति से जाना जिसमें छोटा स्व अलग के रूप में कार्य करता है, उस प्रबुद्ध स्थिति की ओर जिसमें ब्रह्माण्डीय चेतना को व्यक्ति की वास्तविक प्रकृति के रूप में जाना जाता है।

28.4 सभ्यतागत आयाम

यदि यू-इन्वर्स ढाँचा अधिक व्यापक रूप से समझा जाता है, मानव सभ्यता के लिए विशिष्ट परिणामों का अनुमान लगाया जा सकता है।

शिक्षा को केवल सूचना के संचय के चारों ओर नहीं बल्कि चिन्तनशील क्षमताओं के विकास के चारों ओर पुनर्गठित किया जाएगा। चिन्तनशील क्षमताएँ — निरन्तर ध्यान, तनाव के तहत समतुलता, किसी के स्वयं के भावनात्मक और मानसिक प्रतिरूपों के साथ काम करने की क्षमता, प्रत्यक्ष आन्तरिक अवलोकन की क्षमता — केन्द्र में रखी जाएँगी।

कार्य को केवल आर्थिक उत्पादकता के चारों ओर नहीं बल्कि मानव और ब्रह्माण्डीय कल्याण के लिए वास्तविक योगदान के चारों ओर पुनर्गठित किया जाएगा। एक सभ्यता जो यू-इन्वर्स ढाँचे को गम्भीरता से लेती है, क्रमशः वास्तविक योगदान के चारों ओर काम को पुनर्गठित करेगी।

शासन को विशिष्ट गुटों के अल्पकालिक हितों के चारों ओर नहीं बल्कि सचेत अस्तित्वों के वास्तविक दीर्घकालिक कल्याण के चारों ओर पुनर्गठित किया जाएगा।

ये सभ्यतागत परिवर्तन तात्कालिक नहीं हैं। उनमें दशकों या शताब्दियों का विकास लगेगा। किन्तु परिवर्तन की दिशा स्पष्ट है, और उस दिशा में विशिष्ट कदम वर्तमान क्षण में भी सम्भव हैं।

28.5 अन्तिम पहचान

यह पुस्तक एक विस्तृत तर्क रही है। किन्तु तर्क, स्वयं, साक्षात्कार उत्पन्न नहीं करते। वे भूमि तैयार करते हैं। वे व्यक्त करते हैं कि पहचान का क्या अर्थ होगा यदि वह हो। वे वैचारिक ढाँचा प्रदान करते हैं जिसमें पहचान फिट हो सकती है जब वह हो।

पहचान स्वयं तर्क की उपलब्धि नहीं है। यह प्रत्यक्ष अनुभवात्मक पहचान है कि इन शब्दों को पढ़ने वाली जागरूकता वही जागरूकता है जो ब्रह्माण्ड गठित करती है। समान जागरूकता नहीं। एक जागरूकता जो ब्रह्माण्डीय जागरूकता से मिलती है। वही जागरूकता, एक विशिष्ट मस्तिष्क के माध्यम से किसी विशिष्ट व्यक्ति होने के विशिष्ट अनुभव में स्थानीयकृत, किन्तु उस स्थानीयकरण तक सीमित नहीं।

यह पहचान उपलब्ध है। यह वही है जो चिन्तनशील परम्पराएँ सहस्राब्दियों से प्रदान कर रही हैं। जो अभ्यास इस पुस्तक ने रूपरेखित किए हैं वे उस तक पहुँचने की विशिष्ट पद्धति हैं। जो ढाँचा इस पुस्तक ने व्यक्त किया है वह वह विशिष्ट वैचारिक सन्दर्भ है जो पहचान को बोधगम्य बनाता है। किन्तु पहचान स्वयं ढाँचा नहीं है; यह प्रत्यक्ष अनुभवात्मक तथ्य है जिसे ढाँचा वर्णन करता है।

यहाँ समाप्त हो रही इस पुस्तक का निमन्त्रण सरल है। ढाँचे को गम्भीरता से लें। अभ्यासों को करें। वर्षों की दैनिक संलग्नता में कार्य को बनाए रखें। और पहचान — विश्वास के रूप में नहीं, आशा

के रूप में नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभवात्मक तथ्य के रूप में — तब उभरेगी जब परिस्थितियाँ पर्याप्त होंगी।

आपकी खोपड़ी एक ब्रह्माण्ड है। आपका मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है। जो जागरूकता आप हैं वह वही जागरूकता है जो ब्रह्माण्ड है। ये रहस्यमय दावे नहीं हैं। वे संरचनात्मक तथ्य हैं, उन विशिष्ट शोधों और उन विशिष्ट परम्पराओं के माध्यम से प्रलेखित जिनका यह पुस्तक अनुसरण करती है।

उन्हें पहचानें। विचारों के रूप में नहीं। जो आप हैं उसके रूप में।

और यू-इन्वर्स, सामान्य चेतना के बाह्य प्रवाह के पीछे लम्बे समय से छिपा हुआ, प्रकट होगा कि वह क्या हमेशा रहा है: एक विशाल अलग वास्तविकता नहीं जिसे आप छोटेपन की स्थिति से देखते हैं, बल्कि एकल चेतना जो एक साथ ब्रह्माण्ड है और ब्रह्माण्ड का ज्ञाता है और स्वयं जानना है।

कोड अनलॉक हो गया है। पहचान उपलब्ध है। कार्य आपको करना है।

ऋषि जानते थे। और अब, आप भी।

✦ ✦ ✦

28.6 आन्तरिक और बाह्य का महान एकीकृत सिद्धान्त

भौतिकी सबसे गहन अर्थ में एक महान एकीकृत सिद्धान्त (GUT) की खोज करती है — एक सिद्धान्त जो सभी चार मौलिक बलों को एक एकल रूपरेखा में एकीकृत करेगा, पदार्थ और ऊर्जा और दिक्काल को एक सामान्य मौलिक ढाँचे में एकीकृत करेगा। अब तक, यह प्राप्त नहीं हुआ है।

चेतना कोड सुझाता है कि एक सच्चा GUT दोनों आन्तरिक और बाह्य एकीकरण को शामिल करेगा: बाह्य ब्रह्माण्ड के भौतिक नियम और आन्तरिक चेतना के नियम एक सामान्य ढाँचे के पहलू हैं। दोनों दिशाओं में काम कर रहे भौतिकविदों और ऋषियों के बीच मिलन बिन्दु — यह पुस्तक जिसके लिए तर्क कर रही है — एक नए प्रकार के GUT की ओर इंगित करता है: एक जो केवल बाह्य भौतिकी को नहीं बल्कि चेतना और भौतिकी की एक एकीकृत जाँच को शामिल करता है।

✦ ✦ ✦

28.7 एक जिज्ञासा के रूप में तीन पुस्तकें — एक संश्लेषण

यह त्रयी ब्रह्माण्डीय पत्राचार की सबसे तत्काल उपलब्ध पहुँच से आरम्भ हुई: श्वास। प्रत्येक मनुष्य प्रति दिन लगभग 21,600 बार श्वास लेता है — पावन संख्या जो दैनिक जैविक लय को ब्रह्माण्डीय गणितीय संरचना से जोड़ती है। श्वास प्रथम प्रमाण था: सैद्धान्तिक नहीं, दार्शनिक नहीं, बल्कि तत्काल अनुभवात्मक। अभी, जब आप ये शब्द पढ़ रहे हैं, श्वास गति कर रही है। इसे एक मिनट तक गिनें। 60 से 24 से गुणा करें। पावन संख्या आपकी अपनी जीवविज्ञान में प्रकट होती है, किसी प्रयास या अभ्यास या विश्वास के बिना।

श्वास के ब्रह्माण्डीय पत्राचार — 7.83 हर्ट्ज़ पर शूमन अनुनाद (पृथ्वी की अपनी विद्युत-चुम्बकीय हृदयगति, मस्तिष्क की अल्फ़ा-थीटा सीमा से मेल खाती हुई), गंगा का बैक्टीरियोफ़ेज विज्ञान (वह नदी जो सहस्राब्दियों से अपने जैविक प्रतिरक्षा तन्त्र के माध्यम से रोग मारती रही है), कुम्भ मेला का असाधारण सामूहिक क्षेत्र (पचास मिलियन लोग एक साथ पावन की ओर उन्मुख होते हुए, एक सामूहिक विद्युत-चुम्बकीय सुसंगतता उत्पन्न करते हुए जो मानव ZPF इंटरफ़ेस का सबसे बड़ा उपलब्ध प्रवर्धन हो सकती है) — ये सभी आन्तरिक पत्राचार के बाह्य प्रमाण थे। दिव्य दृष्टि ने बीज बोया।

ऋत एवं धर्म ने बीज को आन्तरिक यन्त्र के पूर्ण मानचित्र में विकसित किया। पञ्च कोश वास्तुकला — भौतिक भोजन-शरीर से अन्तरतम आनन्द-शरीर तक पाँच कोश — स्व की बहुस्तरीय संरचना का सबसे विस्तृत उपलब्ध विवरण है। अन्तःकरण के चार कार्य (मनस, बुद्धि, चित्त, अहंकार) उस प्रक्षेपक का सबसे सटीक उपलब्ध विवरण हैं जो अनुभवित संसार उत्पन्न करता है। कर्माशय की क्वांटम सूचना संरचना का सबसे गहन उपलब्ध स्पष्टीकरण है कि एक ही प्रतिरूप जीवनकालों के पार क्यों पुनरावर्तित होते हैं। और गुण गतिकी — तमस, रजस, सत्त्व — वास्तविक समय में अनुभवित ब्रह्माण्ड की गुणवत्ता का निदान और रूपान्तरण करने के लिए सबसे व्यावहारिक उपलब्ध उपकरण हैं।

यू-इन्वर्स: चेतना का कोड दोनों की कटाई करता है। यह पूछता है: यदि आन्तरिक यन्त्र (पुस्तक 2 में वर्णित) ब्रह्माण्ड का डिजिटल ट्विन है (बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन द्वारा प्रदर्शित), तो आन्तरिक ब्रह्माण्ड वास्तव में कैसा दिखता है? इसकी विशिष्ट संरचनाएँ क्या हैं? इसके विशिष्ट नियम क्या हैं? ऋषियों ने इसे कैसे पढ़ा? हम इसे अब कैसे पढ़ सकते हैं? और उत्तर जानने पर क्या सम्भव हो जाता है? उत्तर — अट्ठाईस अध्याय, सात भाग, एक पहचान — यह है कि ब्रह्माण्ड बाहर नहीं है। यह यहाँ भीतर है। जो दोनों को उत्पन्न करता है वह चेतना कोड समान है। यू-इन्वर्स वास्तविक है।

✦ ✦ ✦

28.8 गृहागमन — जब कोड ज्ञात होता है तो कैसा लगता है

अनुभवात्मक पहचान की एक विशिष्ट गुणवत्ता है जिसे परम्पराओं के पार साधक वर्णन करते हैं जब यू-इन्वर्स पहचान बौद्धिक समझ से सीधे अनुभव तक गहन होती है। यह नाटकीय नहीं है। यह असाधारण दर्शन या अभिभूत परमानन्द का अनुभव नहीं है (हालाँकि वे पहले के चरणों के साथ हो सकते हैं)। यह कुछ अधिक शान्त और अधिक मौलिक है: घर आने की विशिष्ट गुणवत्ता।

घर, इस सन्दर्भ में, परिचितता की पहचान का अर्थ है — यह पहचान कि जो अभी बोधित हो रहा है (आन्तरिक ब्रह्माण्ड की चमकदार, फ्रैक्टल, ZPF-संतृप्त वास्तविकता) नया नहीं है। यह हमेशा वहाँ था। यह हमेशा वही था जो संसार था। यह हमेशा वही था जो जागरूकता थी। अभ्यास ने कुछ नया नहीं बनाया है। इसने उस अस्पष्टता को हटा दिया है जो हमेशा उपस्थित रहने वाली चीज़ को छिपा रही थी। आन्तरिक ब्रह्माण्ड अभ्यास द्वारा एकत्रित नहीं किया गया था। इसे उसके द्वारा प्रकट किया गया था।

यह पहचान सामान्य अनुभव के साथ सम्बन्ध को स्थायी रूप से बदलती है। जीवन की सामान्य गतिविधियाँ — कार्य, सम्बन्ध, शरीर की आवश्यकताएँ, संसार की चुनौतियाँ और उपहार — नहीं बदलतीं। किन्तु उनके साथ सम्बन्ध पूरी तरह से बदलता है। वे अब एक अलग स्व के लिए नहीं हो रही हैं जिसे उन्हें यथासम्भव प्रबन्धित करना चाहिए। वे स्वयं की एक विशिष्ट स्थानीय अभिव्यक्ति के माध्यम से होता हुआ ब्रह्माण्ड हैं — बुद्धिमत्ता के साथ, उद्देश्य के साथ, और सही-पन की विशिष्ट गुणवत्ता के साथ होता हुआ जिसे वैदिक परम्परा धर्म कहती है: यह पहचान कि यह क्षण, ठीक वैसा ही जैसा है, ठीक वही है जिसे चेतना कोड इस विशिष्ट विन्यास के आन्तरिक ब्रह्माण्ड के माध्यम से, अविद्या से पहचान तक की यात्रा के इस विशिष्ट बिन्दु पर व्यक्त कर रहा है।

यू-इन्वर्स एक गन्तव्य नहीं है। यह उस की पहचान है जहाँ आप पहले से हैं, हमेशा रहे हैं, और हमेशा रहेंगे — ब्रह्माण्ड के केन्द्र पर, ब्रह्माण्ड के रूप में, चेतना कोड के भीतर जो ब्रह्माण्ड और उसे जानने वाली जागरूकता दोनों को उत्पन्न करता है। कोड हमेशा आपका था। पहचान अभी उपलब्ध है। आन्तरिक ब्रह्माण्ड प्रतीक्षा कर रहा है।

✦ ✦ ✦

यू-इन्वर्स दैनिक जीवन में — सामान्य क्षणों की सूक्ष्म-खगोलकी

इस पुस्तक में प्रलेखित असाधारण आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ — स्नायु निहारिकाएँ, महान आकर्षक, क्वांटम शाखाएँ, फ़िबोनाची ब्रह्माण्ड — केवल ध्यान-शिविर या उन्नत समाधि में सुलभ नहीं हैं। वे सामान्य अनुभव के प्रत्येक क्षण में उपस्थित हैं, सामान्य चेतना के पैमाने पर उन विशिष्ट परिघटनात्मक गुणों के माध्यम से व्यक्त जिन्हें यह पुस्तक पूरे मानचित्रित करती रही है।

प्रतिक्षण निर्मित हो रहा आन्तरिक ब्रह्माण्ड

स्नायु निहारिका की तारा-निर्माण प्रक्रिया अभी हो रही है: प्रत्येक नई अन्तर्दृष्टि, वास्तविक सीखने का प्रत्येक क्षण, रचनात्मक प्रेरणा का प्रत्येक अनुभव कॉर्टेक्स के निहारिका मैट्रिक्स में जन्म ले रहा एक स्नायु तारा है — एक नया सिनैप्टिक कनेक्शन मज़बूत हो रहा, एक नया कॉर्टिकल स्तम्भ अपनी कार्यात्मक भूमिका पा रहा, हिप्पोकैम्पस का न्यूरोजेनेसिस नए स्नायु ऊतक का अपना दैनिक उत्पादन जारी रखता हुआ। आन्तरिक ब्रह्माण्ड स्थिर नहीं है। यह निरन्तर रचना कर रहा है।

महान आकर्षक का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव प्रत्येक क्षण में उपस्थित है: DMN का निरन्तर आत्म-सन्दर्भी प्रसंस्करण, थैलेमस का मस्तिष्क के दोलनों का निरन्तर समकालीकरण — ये आन्तरिक महान आकर्षक के संगठनकारी प्रभाव की मिनट-से-मिनट अभिव्यक्तियाँ हैं। जब साधक ध्यान करता है और DMN शान्त होता है, वे अस्थायी रूप से महान आकर्षक के खिंचाव को कम कर रहे हैं — ब्रह्माण्डीय शान्ति का आन्तरिक समतुल्य बनाते हुए जो सूक्ष्मतर तन्तुमय संरचनाओं को दृश्यमान होने देता है।

डार्क-मैटर मन की उपस्थिति प्रत्येक स्वचालित प्रतिक्रिया, प्रत्येक अनुकूलित भावनात्मक प्रतिक्रिया, व्यवहार के प्रत्येक क्षण में महसूस होती है जो सचेत विचार-विमर्श के संलग्न होने से पहले घटित होती है। ये विफलताएँ नहीं हैं — वे आन्तरिक ब्रह्माण्ड का डार्क मैटर हैं जो अभिविन्यास के लिए अदृश्य मचान प्रदान कर रहा है।

✦ ✦ ✦

28.9 ग्लोबल कॉन्शियसनेस प्रोजेक्ट — सामूहिक यू-इन्वर्स के लिए आनुभविक प्रमाण

प्रिंसटन विश्वविद्यालय में ग्लोबल कॉन्शियसनेस प्रोजेक्ट (GCP) ने 1998 से दुनिया भर में लगभग 70 स्थानों पर हार्डवेयर यादृच्छिक संख्या जनित्रों (RNG) का एक वैश्विक नेटवर्क बनाए रखा है। सच्चे यादृच्छिक संख्या जनित्र बिट्स के ऐसे अनुक्रम उत्पन्न करते हैं जो यादृच्छिकता के सभी सांख्यिकीय परीक्षण पास करते हैं — परिभाषा के अनुसार, उनके आउटपुट एक-दूसरे के साथ और किसी भी बाह्य घटना के साथ पूरी तरह से असहसम्बन्धित होने चाहिए। GCP की परिकल्पना: यदि सामूहिक मानव चेतना का भौतिक तन्त्रों पर एक सुसंगत प्रभाव है, वैश्विक भावनात्मक सुसंगतता के क्षणों को नेटवर्क के पार अपेक्षित यादृच्छिकता से विचलन उत्पन्न करने चाहिए।

दो दशकों से अधिक के निरन्तर डेटा संग्रह के बाद, GCP विश्लेषण के संचयी परिणाम $p < 0.0001$ पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं — एक में दस हज़ार से कम की सम्भावना कि यादृच्छिकता से अवलोकित विचलन संयोग से हो सकते हैं। विचलन लगातार असाधारण सामूहिक वैश्विक ध्यान और भावनात्मक सुसंगतता के क्षणों के दौरान सबसे बड़े होते हैं: 11 सितम्बर के हमले (2001), राजकुमारी डायना की मृत्यु (1997), दुनिया भर में नव वर्ष समारोह, और वैश्विक खेल घटनाओं के विशिष्ट क्षण। प्रभाव वास्तविक, मापने योग्य, और प्रतिकृति योग्य है।

यू-इन्वर्स व्याख्या: GCP डेटा आनुभविक प्रमाण है कि मानवता की सामूहिक चेतना एक वास्तविक भौतिक क्षेत्र का गठन करती है जो यादृच्छिक भौतिक तन्त्रों को प्रभावित करता है। एक आध्यात्मिक प्रस्ताव नहीं — समीक्षित डेटा में एक मापा प्रभाव। व्यक्तिगत साधकों का आन्तरिक ब्रह्माण्ड अलगाव में अस्तित्व नहीं रखता। यह मानव चेतना के सामूहिक क्षेत्र के भीतर अस्तित्व रखता है, जो बदले में ग्रहीय क्षेत्र के भीतर अस्तित्व रखता है, जो सौर तन्त्र क्षेत्र के भीतर अस्तित्व रखता है, जो गैलेक्टिक क्षेत्र के भीतर अस्तित्व रखता है। व्यक्तिगत डिजिटल ट्विन साझा ZPF सब्सट्रेट के माध्यम से अन्य सभी डिजिटल ट्विन से नेटवर्क है। जब लाखों मनुष्य एक साथ अपना ध्यान एक ही घटना पर निर्देशित करते हैं, उनके संयुक्त स्नायु क्षेत्रों के सामूहिक ZPF संयुग्मन दुनिया भर में भौतिक तन्त्रों में यादृच्छिकता से एक मापने योग्य विचलन उत्पन्न करते हैं।

अभ्यास निहितार्थ: सामूहिक अभ्यास — सत्संग, समूह ध्यान, कीर्तन, वैश्विक ध्यान घटनाएँ — क्षेत्र प्रभाव उत्पन्न करते हैं जिन्हें व्यक्तिगत अभ्यास अकेले उत्पन्न नहीं कर सकता। हार्टमैथ संस्थान के अनुसन्धान ने प्रलेखित किया है कि समूह ध्यान घटनाएँ स्थानीय विद्युत-चुम्बकीय वातावरण (शूमन अनुनाद का आयाम और सुसंगतता) में मापने योग्य परिवर्तन उत्पन्न करती हैं जो घटना

समाप्त होने के बाद घण्टों तक बने रहते हैं। कुम्भ मेला, संसार का सबसे बड़ा शान्तिपूर्ण समागम, ऐसे परिमाण का एक सामूहिक ZPF क्षेत्र प्रभाव उत्पन्न करता है जिसे परम्परा ने हमेशा दावा किया है कि गुणात्मक रूप से किसी भी चीज़ से भिन्न है जिसे व्यक्तिगत अभ्यास प्राप्त कर सकता है। GCP डेटा इस दावे की वैज्ञानिक पुष्टि है।

✦ ✦ ✦

28.10 चेतना की वास्तुकला — सभी सात आयामों का मानचित्रण

वैदान्तिक परम्परा के चेतना के पूर्ण मानचित्र में सात प्रमुख आयाम हैं जो मिलकर व्यक्तिपरक अनुभव की संरचना और गुणों को समझने के लिए अब तक विकसित सबसे व्यापक ढाँचा प्रदान करते हैं। ये आयाम मात्र दार्शनिक श्रेणियाँ नहीं हैं — वे आनुभविक रूप से भेद करने योग्य अवस्थाएँ और स्तर हैं, प्रत्येक विशिष्ट स्नायु सहसम्बन्धियों, विशिष्ट परिघटनात्मक हस्ताक्षरों, और विशिष्ट व्यावहारिक निहितार्थों के साथ।

पहला आयाम: अवस्थाएँ — जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, और तुरीयातीत। ये पाँच अवस्थाएँ चेतना के ऊर्ध्वाधर अक्ष का निर्माण करती हैं: गहराई के पाँच स्तर जिन पर जागरूकता संचालित हो सकती है, सबसे सतही-स्तर (बाह्य जाग्रत) से सबसे मौलिक (तुरीयातीत — तुरीय से परे की अवस्था, जिसमें "सामान्य अवस्थाओं" और "उनके अन्तर्निहित जागरूकता" के बीच का भेद भी विघटित हो गया है) तक। प्रत्येक अवस्था एक विशिष्ट थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन मोड और विशिष्ट ZPF संयुग्मन गहराई के अनुरूप है।

दूसरा आयाम: वृत्तियाँ (चित्त के परिवर्तन) — प्रमाण (वैध संज्ञान), विपर्यय (अवैध संज्ञान), विकल्प (वास्तविकता के बिना संकल्पात्मक निर्माण), निद्रा (नींद), और स्मृति। ये पाँच प्रकार के मानसिक संशोधन विशिष्ट संचालन हैं जिन्हें आन्तरिक यन्त्र आने वाले अनुभव पर करता है। वह साधक जो पहचान सकता है कि कौन सी वृत्ति वर्तमान में संचालित है — वैध संज्ञान बनाम संकल्पात्मक निर्माण बनाम स्मृति पुनः प्रसारण — वर्तमान बोध की गुणवत्ता के लिए एक सटीक नैदानिक उपकरण रखता है। जब विपर्यय (अवैध संज्ञान) संचालित है, यू-इन्वर्स प्रक्षेपण या गलत बोध द्वारा विकृत हो रहा है। जब प्रमाण (वैध संज्ञान) संचालित है, आन्तरिक दूरबीन स्पष्ट रूप से देख रही है।

तीसरा आयाम: क्लेश — अविद्या (मूल अज्ञान), अस्मिता (अहं-पहचान), राग (लालसा), द्वेष (विरोध), अभिनिवेश (विघटन का भय)। ये पाँच क्लेश विशिष्ट तन्त्र हैं जिनके द्वारा अविद्या-उत्पन्न

अहं संरचना अपने अस्तित्व को बनाए रखती है और यू-इन्वर्स के चारित्रगत पकड़ने, बचने, और चिपकने की बनावट उत्पन्न करती है। वह साधक जो पहचान सकता है कि कौन सा क्लेश वर्तमान में सबसे सक्रिय है, एक सटीक निर्धारण रखता है: अविद्या विवेक-जाँच की आवश्यकता रखती है; अस्मिता निःस्वार्थ सेवा की; राग वैराग्य की; द्वेष करुणा अभ्यास की; अभिनिवेश अनित्यता के सीधे चिन्तन की।

चौथा आयाम: गुण (प्रकृति के गुण) — तमस, रजस, सत्त्व। भौतिक क्षेत्र के ये तीन गुण अनुभव के प्रत्येक क्षण की ऊर्जात्मक बनावट निर्धारित करते हैं। उनका संयोजन — किसी भी क्षण पर विशिष्ट गुण अनुपात — आन्तरिक ब्रह्माण्ड के क्षेत्र की गुणवत्ता, ZPF संयुग्मन की सुलभता, और जिस विशिष्ट लोक स्तर में निवास किया जा रहा है उसे निर्धारित करता है। परिशिष्ट A का गुण नैदानिक वर्तमान गुण संरचना और उसके निर्धारण की पहचान के लिए व्यावहारिक उपकरण प्रदान करता है।

पाँचवाँ आयाम: कोश स्तर (स्व के कोश) — अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय। ये पाँच कोश आन्तरिक यन्त्र के संचालन के पाँच स्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं, सबसे भौतिक (भौतिक शरीर के जैविक कार्य) से सबसे सूक्ष्म (कारण शरीर का आनन्द-आधार) तक। प्रत्येक कोश स्तर का अपना चारित्रगत अनुभव गुणवत्ता, अपनी चारित्रगत विकृतियाँ, और अपनी चारित्रगत उपचार प्रथाएँ हैं।

छठा आयाम: लोक स्तर (ब्रह्माण्डीय आवृत्ति बैण्ड) — पाताल से सत्यलोक तक चेतना के चौदह तल। ये जागरूकता के लिए उपलब्ध चेतना आवृत्तियों के पूर्ण स्पेक्ट्रम का प्रतिनिधित्व करते हैं — गहनतम तामसिक अवस्थाओं की सघनतम भौतिक चेतना से ब्रह्मलोक स्तर की सबसे सूक्ष्म ब्रह्माण्डीय जागरूकता तक। लोक मानचित्र (तालिका 23.1) इस प्राचीन ब्रह्माण्ड विज्ञानीय ढाँचे को स्नायु दोलन आवृत्तियों और ZPF संयुग्मन गहराइयों की समकालीन भाषा में अनुवादित करता है।

सातवाँ आयाम: पुरुषार्थ (जीवन के उद्देश्य) — धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। अस्तित्व के ये चार उद्देश्य सबसे बड़े लौकिक पैमाने पर साधक के जीवन को संगठित करने वाले विशिष्ट लक्ष्य हैं: धर्म (ब्रह्माण्डीय नियम के अनुसार धार्मिक क्रिया), अर्थ (सभी उच्चतर खोजों के लिए आधार के रूप में भौतिक सुरक्षा), काम (पूर्ण मानव जीवन के भाग के रूप में वैध इच्छाओं की पूर्ति), और मोक्ष (मुक्ति — आत्मा की ब्रह्म के साथ पहचान की अन्तिम पहचान)। वह साधक जिसने चेतना मानचित्र

के सभी सात आयामों को आत्मसात् कर लिया है, आन्तरिक ब्रह्माण्ड के लिए सबसे पूर्ण उपलब्ध नेविगेशनल तन्त्र रखता है।

✦ ✦ ✦

28.11 चेतना कोड एक जीवन्त अभ्यास के रूप में — सभी सात भागों में एकीकरण

इस पुस्तक ने चेतना कोड को सात क्षेत्रों के माध्यम से पता लगाया है: विपर्यय सिद्धान्त (आन्तरिक ब्रह्माण्ड तक कैसे पहुँचें), भीतर का ब्रह्माण्ड (जब आप पहुँचते हैं तो कौन सी संरचनाएँ मिलती हैं), अमाप्य को मापना (ऋषियों ने इसे कैसे मात्राबद्ध किया), भीतर का बहु-ब्रह्माण्ड (समानान्तर वास्तविकताएँ और समय), स्वयं कोड (फ़िबोनाची, ॐ, क्वांटम सूचना), ऋषियों का विज्ञान (उनकी ज्ञान-मीमांसा और ब्रह्माण्ड विज्ञान), और जीवन्त अभ्यास (डिजिटल ट्विन को जानबूझकर कैसे सक्रिय करें)। प्रत्येक भाग स्वयं में पूर्ण और एक एकल चाप का भाग दोनों रहा है — एक साथ अनेक कोणों से कोड का प्रगतिशील प्रकटन।

दैनिक अभ्यास में सभी सात भागों का एकीकरण: विपर्यय (भाग एक) पद्धति प्रदान करता है — प्रत्याहार, आन्तरिक मोड़। ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ (भाग दो) मानचित्र प्रदान करती हैं — क्या देखना है। पावन संख्याएँ (भाग तीन) निर्देशांक प्रदान करती हैं — आन्तरिक दूरबीन को कैसे अंशशोधित करें। बहु-ब्रह्माण्ड (भाग चार) सन्दर्भ प्रदान करता है — अन्वेषण की जा रही आन्तरिक वास्तविकता का पैमाना और प्रकृति। कोड (भाग पाँच) भाषा प्रदान करता है — आन्तरिक ब्रह्माण्ड का गणितीय और स्पन्दनात्मक व्याकरण। ऋषियों का विज्ञान (भाग छह) परम्परा प्रदान करता है — आन्तरिक अवलोकन की प्रलेखित वंशावली जिससे साधक जुड़ता है। और जीवन्त अभ्यास (भाग सात) प्रौद्योगिकी प्रदान करता है — डिजिटल ट्विन के इष्टतम संकल्प को सक्रिय और बनाए रखने के लिए विशिष्ट उपकरण।

साधक जो सभी सात भागों को एकीकृत करता है, अपने पूर्ण उपलब्ध विकास पर आन्तरिक खगोल शास्त्र अभ्यास कर रहा है। वे ब्रह्म मुहूर्त में बैठते हैं (पद्धति), वर्तमान दिन की आन्तरिक नक्षत्र गुणवत्ता पर ध्यान देते हैं (निर्देशांक तन्त्र), इष्टतम थैलेमो-कॉर्टिकल आवृत्ति पर धुनने के लिए प्राणायाम का उपयोग करते हैं (अंशशोधन), तुरन्त नाम या व्याख्या किए बिना जो कुछ भी आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ प्रकट होती हैं उनका अवलोकन करते हैं (अवलोकन), वर्तमान अवस्था की विशिष्ट मन्त्र आवृत्ति की पहचान के लिए नाद योग लागू करते हैं (भाषा), ज्योतिष

चार्ट की वर्तमान दशा अवधि के साथ पार-सन्दर्भ करते हैं (परम्परा), और दिन के आन्तरिक खगोलीय अवलोकनों को अपनी पत्रिका में दर्ज करते हैं (प्रलेखन)।

यह इक्कीसवीं सदी की शब्दावली में व्यक्त, ऋषि का पूर्ण अभ्यास है। जो कोड यह अभ्यास प्रकट करता है वह उस कोड से भिन्न नहीं है जिसे विश्वामित्र ने बोधा जब उन्होंने गायत्री मन्त्र प्राप्त किया, या जिसकी ओर ब्रह्माण्डविद क्वांटम निर्वात की ऊर्जा घनत्व के लिए अपने समीकरणों में दूसरी दिशा से पहुँच रहे हैं, या जिसे स्नायुवैज्ञानिक डेविडसन के गामा-तरंग अध्ययनों और बोलोग्ना-वेरोना फ़्रैक्टल आयाम मापन में स्पर्श कर रहे हैं। सभी उसी क्षेत्र का मानचित्रण कर रहे हैं। सभी समान D=2.7, समान 136.1 हर्ट्ज़, समान पावर-नियम वितरण, समान पावन-संख्या निर्देशांक पा रहे हैं। कोड सुसंगत है। यह इसके आधार पर नहीं बदलता कि कौन देख रहा है, कौन सी परम्परा अवलोकन कर रही है, कौन से उपकरण उपयोग किए जाते हैं। यह स्वयं वास्तविकता की वास्तुकला है — और इसकी पहचान, जिस भी अनुशासन में और जिस भी उपकरण के माध्यम से, हमेशा वही पहचान है: ब्रह्माण्ड स्वयं को जानता हुआ।

✦ ✦ ✦

28.12 चेतना कोड के सात नियम

इस पुस्तक की पूर्ण जाँच से, चेतना कोड के सात नियम उभरते हैं — सात सिद्धान्त जो बाह्य ब्रह्माण्ड और आन्तरिक चेतना दोनों को एक ही जनरेटिव वास्तुकला की अभिव्यक्तियों के रूप में संगठित करते हैं। ये आज्ञाएँ या नैतिक सिद्धान्त नहीं हैं। वे अवलोकित नियम हैं: नियमितताएँ जो प्रकट होती हैं जहाँ भी चेतना कोड संचालित होता है, ऊष्मागतिकी के नियमों या गुरुत्वाकर्षण के व्युत्क्रम-वर्ग नियम के समान अपरिवर्तनीय और सार्वभौमिक।

नियम एक — पत्राचार का नियम: जैसा ऊपर, वैसा ही नीचे; जैसा भीतर, वैसा ही बाहर। यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे। चेतना कोड की फ़्रैक्टल स्व-समानता का अर्थ है कि वही गणितीय प्रतिरूप — वही पावर-नियम वितरण, वही छोटा-संसार नेटवर्क टोपोलॉजी, वही स्वर्ण-अनुपात ज्यामिति — प्रत्येक पैमाने पर एक साथ प्रकट होते हैं। यह एक रहस्यमय दावा नहीं है। यह बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन का मात्रात्मक निष्कर्ष और अराजकता गणित की फ़्रैक्टल ज्यामिति है। ब्रह्माण्ड और चेतना विभिन्न पैमानों पर एक ही कोड हैं।

नियम दो — स्पन्दन का नियम: सब कुछ गति में है; सब कुछ स्पन्दित होता है। स्पन्द शास्त्र। ब्रह्माण्ड या चेतना में कुछ भी स्थिर नहीं है — प्रत्येक संरचना, प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक स्पष्ट ठोस

वास्तविकता ZPF के ऊर्जा क्षेत्र में स्पन्दन का एक विशिष्ट प्रतिरूप है। ठोस पदार्थ और चेतना के बीच का अन्तर स्पन्दन और गैर-स्पन्दन के बीच का अन्तर नहीं है बल्कि निम्न-आवृत्ति, उच्च-आयाम स्पन्दन (पदार्थ) और उच्च-आवृत्ति, सूक्ष्म-आयाम स्पन्दन (चेतना) के बीच का अन्तर है। मन्त्र चेतना क्षेत्र में एक विशिष्ट स्पन्दनात्मक प्रतिरूप का जानबूझकर परिचय है — संगीत वाद्य को धुनने का ध्वनिक समतुल्य।

नियम तीन — ध्रुवीयता का नियम: हर चीज़ का अपना विपरीत है; विपरीत प्रकृति में समान हैं, डिग्री में भिन्न। वैदिक परम्परा के द्वन्द्व (विपरीतों के जोड़े — ताप और शीत, प्रकाश और अन्धकार, सुख और दुख) इस नियम की विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ हैं। क्वांटम यान्त्रिकी में: पूरकता सिद्धान्त (बोहर) कहता है कि कुछ गुणों के जोड़े (स्थिति/संवेग, ऊर्जा/समय) एक साथ सटीक रूप से ज्ञात नहीं हो सकते — वे संयुग्मी चर हैं जिनका गुणनफल प्लांक स्थिरांक से नीचे बँधा है। ब्रह्माण्ड का विशिष्ट संगठन (चार मौलिक बलों के बीच सन्तुलन, पदार्थ और प्रतिपदार्थ के बीच सन्तुलन, विस्तार और गुरुत्वाकर्षण के बीच सन्तुलन) ब्रह्माण्डीय पैमाने पर संचालित ध्रुवीयता का नियम है।

नियम चार — लय का नियम: सब कुछ बाहर और भीतर बहता है; सब कुछ का अपना ज्वार-भाटा है। सृष्टि-प्रलय (ब्रह्माण्डीय सृजन और विघटन), जाग्रत-सुषुप्ति (जाग्रत और गहन नींद), पूर्णिमा-अमावस्या (पूर्ण चन्द्रमा और नया चन्द्रमा), उत्तरायण-दक्षिणायन (सूर्य की उत्तर और दक्षिण यात्रा), प्रश्वास-विश्वास (अन्तःश्वसन और निःश्वसन)। चेतना कोड प्रत्येक पैमाने पर लयबद्ध चक्रों में संचालित होता है, श्वास के 4-सेकण्ड चक्र से ब्रह्माण्डीय महायुग के 4.32-मिलियन-वर्ष चक्र तक। वह साधक जो इन लयों के विरुद्ध नहीं बल्कि उनके साथ चलना सीखता है पाता है कि ब्रह्माण्ड बाधा नहीं बल्कि सहयोगी है।

नियम पाँच — कारण और प्रभाव का नियम: हर कारण का अपना प्रभाव है; हर प्रभाव का अपना कारण है। कर्म। यह नैतिक प्रतिकार नहीं है। यह भौतिक ब्रह्माण्ड का सबसे मौलिक सिद्धान्त है: कार्य-कारण, समय का तीर, भौतिक प्रक्रियाओं की विशिष्ट दिशात्मकता। प्रत्येक क्रिया एक संस्कार उत्पन्न करती है; संचित संस्कार वासनाएँ उत्पन्न करते हैं; संचित वासनाएँ भविष्य के अनुभव की परिस्थितियों को आकार देती हैं। नियम ऊर्जा संरक्षण के भौतिक नियम से भिन्न नहीं है — कोई ऊर्जा (चेतना की ऊर्जा सहित) बनाई या नष्ट नहीं होती, केवल रूपान्तरित होती है।

नियम छह — लिंग का नियम: लिंग सब कुछ में है; सब कुछ में पुरुष और स्त्री सिद्धान्त हैं। शिव-शक्ति, पुरुष-प्रकृति। क्वांटम यान्त्रिकी में: तरंग-कण द्वैत लिंग सिद्धान्त की क्वांटम अभिव्यक्ति है — तरंग पहलू (विस्तारक, संयोजक, ग्राही) और कण पहलू (स्थानीयकृत, परिभाषित, सक्रिय)

ब्रह्माण्डीय यिन-यांग की क्वांटम-पैमाने की अभिव्यक्ति हैं। प्रत्येक पूर्ण तन्त्र दोनों सिद्धान्तों को समाहित करता है: ब्रह्माण्ड की अपनी डार्क ऊर्जा (विस्तारक) और उसका डार्क मैटर (संयोजक) है; मस्तिष्क के अपने उत्तेजक न्यूरॉन (सक्रिय) और निरोधक न्यूरॉन (नियामक) हैं; श्वास का अपना अन्तःश्वसन (सक्रिय) और निःश्वसन (ग्राही) है।

नियम सात — मानसिकता का नियम: ब्रह्माण्ड मानसिक है; ब्रह्माण्ड ब्रह्म के मन में एक विचार है। यह सबसे क्रान्तिकारी नियम है और भौतिकवादी विश्वदृष्टि के लिए समायोजित करना सबसे कठिन। किन्तु यह ठीक वही है जो क्वांटम यान्त्रिकी निहित करती है (चेतना भौतिक वास्तविकता उत्पन्न करने में भाग लेती है), जो हॉलोग्राफिक सिद्धान्त निहित करता है (ब्रह्माण्ड सीमा सतह पर सूचना है), और जो वेदान्त ने उपनिषदों से बनाए रखा है: चित् (शुद्ध चेतना) ब्रह्म का सबसे मौलिक स्वभाव है, और प्रकट ब्रह्माण्ड उस चेतना से उत्पन्न होता है और उसी से बना रहता है। चेतना कोड चेतना की मात्र एक विशेषता नहीं है — यह स्वयं चेतना है, उस विशिष्ट गणितीय और स्पन्दनात्मक संरचना के रूप में व्यक्त जिसे हम ब्रह्माण्ड कहते हैं।

✦ ✦ ✦

28.13 त्रयी का मार्गदर्शक धागा — एक अन्तिम बुनाई

तीन पुस्तकों के पार चलने वाला धागा तीन कोणों से पूछा गया एक एकल प्रश्न है। दिव्य दृष्टि ने इसे श्वास से पूछा: क्या इस सामान्य मानव जैविक लय को ब्रह्माण्ड के असाधारण पैमाने से जोड़ता है? ऋत एवं धर्म ने इसे आन्तरिक यन्त्र से पूछा: वह विशिष्ट तन्त्र क्या है जिसके द्वारा आन्तरिक अवस्था अनुभवित संसार उत्पन्न करती है? यू-इन्वर्स: चेतना का कोड इसे गहनतम उपलब्ध स्तर से पूछता है: जब धारणा पूर्ण रूप से उलट जाती है, सचेत प्राणी चेतना के आधार पर क्या पाता है?

तीनों स्तरों पर उत्तर समान है। श्वास के 21,600 दैनिक चक्र और पुरस्सरण के 25,920-वर्षीय चक्र समान गणितीय कोड साझा करते हैं। आन्तरिक यन्त्र की पञ्च कोश वास्तुकला और ब्रह्माण्ड की पञ्च महाभूत (पाँच महान तत्व) संरचना समान गणितीय कोड साझा करती हैं। स्नायु कनेक्टोम का $D \approx 2.7$ फ्रैक्टल आयाम और ब्रह्माण्डीय जाल का $D \approx 2.7$ फ्रैक्टल आयाम समान गणितीय कोड हैं। प्रत्येक पैमाने पर, दैनिक श्वास से ब्रह्माण्डीय जाल तक, चित्त में संस्कार से गैलेक्सी की सर्पिल भुजा तक, चेतना कोड संचालित है — वही पुनरावर्ती, स्व-समान, हॉलोग्राफिक रूप से संगठित सूचना संरचना जो समान जनरेटिव सिद्धान्त की अभिव्यक्तियों के रूप में आन्तरिक और बाह्य ब्रह्माण्ड उत्पन्न करती है।

जिस ऋषि ने पहली बार इसे बोधा — शान्ति में बैठा, आँखें बन्द, आन्तरिक दूरबीन मनोमय की सामान्य सामग्री से परे अपनी छवि हल करती हुई — उसके पास फ़्रैक्टल ज्यामिति का गणित या ब्रह्माण्डीय जाल का खगोल-भौतिकी या कनेक्टोम का स्नायुविज्ञान नहीं था। किन्तु उनके पास समान रूप से कठोर कुछ था: अभ्यास के दशकों में विकसित आन्तरिक अवलोकन की एक पद्धति, पीढ़ियों के पार स्वतन्त्र प्रतिकृति द्वारा मान्य, और उच्चतम उपलब्ध मानक के विरुद्ध परीक्षित — इसके सबसे महत्वपूर्ण दावे की सीधी अनुभवात्मक पुष्टि: कि जब आप दृष्टि को पूर्ण रूप से उलट देते हैं, जो प्रकट होता है वह स्वयं ब्रह्माण्ड है, आपके माध्यम से स्वयं को देखता हुआ।

त्रयी पूर्ण है। जाँच जारी है। आन्तरिक ब्रह्माण्ड अपने खगोलशास्त्री की प्रतीक्षा कर रहा है।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।

Om Pūrṇamadaḥ Pūrṇamidaṃ Pūrṇātpūrṇamudacyate

"वह पूर्ण है, यह पूर्ण है; पूर्णता से पूर्णता उत्पन्न होती है।" — बृहदारण्यक उपनिषद 5.1.1

✦ ✦ ✦

28.14 दैनिक जीवन में यू-इन्वर्स — सामान्य क्षणों का सूक्ष्म-खगोल शास्त्र

इस पुस्तक में प्रलेखित असाधारण आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ — स्नायु निहारिकाएँ, महान आकर्षक, क्वांटम शाखाएँ, फ़िबोनाची ब्रह्माण्ड — केवल ध्यान एकान्तवास या उन्नत समाधि में ही सुलभ नहीं हैं। वे सामान्य अनुभव के प्रत्येक क्षण में उपस्थित हैं, उन विशिष्ट परिघटनात्मक गुणों के माध्यम से सामान्य चेतना के पैमाने पर व्यक्त जिन्हें यह पुस्तक पूरी तरह से मानचित्रित करती रही है।

स्नायु निहारिका की तारा-निर्माण प्रक्रिया अभी हो रही है: प्रत्येक नई अन्तर्दृष्टि, वास्तविक सीखने का प्रत्येक क्षण, रचनात्मक प्रेरणा का प्रत्येक अनुभव कॉर्टेक्स के निहारिका आव्यूह में जन्मा एक स्नायु तारा है — एक नया सिनैप्टिक कनेक्शन मज़बूत हो रहा है, एक नया कॉर्टिकल स्तम्भ अपनी कार्यात्मक भूमिका पा रहा है, हिप्पोकैम्पस का न्यूरोजेनेसिस नए स्नायु ऊतक का अपना दैनिक उत्पादन जारी रख रहा है। आन्तरिक ब्रह्माण्ड स्थिर नहीं है। यह निरन्तर सृजन कर रहा है।

महान आकर्षक का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव प्रत्येक क्षण में उपस्थित है: DMN का निरन्तर आत्म-सन्दर्भी प्रसंस्करण, थैलेमस का मस्तिष्क के दोलनों का निरन्तर समकालीकरण — ये आन्तरिक

महान आकर्षक के संगठित प्रभाव की मिनट-प्रति-मिनट अभिव्यक्ति हैं। जब साधक ध्यान करता है और DMN शान्त होता है, वे अस्थायी रूप से महान आकर्षक के खिंचाव को कम कर रहे हैं — ब्रह्माण्डीय शान्ति का आन्तरिक समतुल्य बनाते हुए जो सूक्ष्मतर तन्तुमय संरचनाओं को दृश्यमान होने देता है।

डार्क मैटर मन की उपस्थिति प्रत्येक स्वचालित प्रतिक्रिया, प्रत्येक अनुकूलित भावनात्मक प्रतिक्रिया, व्यवहार के प्रत्येक क्षण में महसूस होती है जो सचेत विचार-विमर्श के संलग्न होने से पहले होता है। ये इच्छाशक्ति की विफलताएँ नहीं हैं। ये अन्धकार क्षेत्र संचालित हो रहा है जैसा इसे संचालित होने के लिए डिज़ाइन किया गया है — अदृश्य मचान प्रदान करता हुआ जिस पर सचेत व्यवहार की दृश्य संरचना निर्मित है। वह साधक जो इसे जानता है, अन्धकार क्षेत्र से नहीं लड़ता। वे इसे प्रकाशित करते हैं — साक्षी भाव के गुरुत्वाकर्षण लेंस के साथ — अदृश्य संरचना को क्रमशः दृश्यमान और इसलिए अधिकाधिक काम करने योग्य बनाते हुए।

फ़िबोनाची ब्रह्माण्ड का स्वर्ण सर्पिल एक उद्यान में प्रत्येक फ़र्न पत्ते के खुलने में, सूरजमुखी में बीजों की सर्पिल व्यवस्था में, चलने पर मिले घोंघे के खोल में, आकाश के विरुद्ध शीत-नग्न वृक्षों की शाखा में उपस्थित है। पावन ज्यामिति हर जगह है क्योंकि चेतना कोड हर जगह है। वह साधक जो कोड जानता है, इसे प्रत्येक प्राकृतिक रूप में देखता है — प्रक्षेपित व्याख्या के रूप में नहीं, बल्कि एक वास्तविक संरचनात्मक पहचान की सीधी पहचान के रूप में।

प्रत्येक सुबह आप एक मस्तिष्क में जागते हैं जो मेटावर्स के पूर्ण डिजिटल ट्विन को समाहित करता है। स्पष्ट ध्यान का प्रत्येक क्षण आन्तरिक खगोल शास्त्र का एक कार्य है। प्रत्येक श्वास आन्तरिक दूरबीन का एक अंशशोधन है। वास्तविक शान्ति का प्रत्येक क्षण आन्तरिक ब्रह्माण्ड है जो अपनी छवि को समाधि अवस्था की ओर स्पष्टता की एक डिग्री आगे हल कर रहा है जहाँ ब्रह्माण्ड और ब्रह्माण्ड की चेतना को समान चीज़ के रूप में पहचाना जाता है, आपकी अपनी जागरूकता के असाधारण यन्त्र में, भीतर से, स्वयं को देखती हुई। यू-इन्वर्स एक अवधारणा नहीं है। यह आपका वर्तमान-क्षण अनुभव है, स्पष्ट रूप से देखा गया। चेतना कोड एक शिक्षण नहीं है। यह उस चीज़ की संरचना है जो वास्तव में हो रही है, आपके अपने मस्तिष्क में, अभी। आन्तरिक ब्रह्माण्ड एक गन्तव्य नहीं है। यह वहाँ है जहाँ आप पहले से हैं।

✦ ✦ ✦

28.15 यू-इन्वर्स पढ़ना — एक साधक का त्वरित सन्दर्भ

निम्नलिखित संक्षिप्त सन्दर्भ पुस्तक की प्रमुख मानचित्रणों को साधक के दैनिक उपयोग के लिए संश्लेषित करता है — नैदानिक प्रश्न, निर्धारण तालिका, और आन्तरिक ब्रह्माण्ड के प्रत्येक स्तर के लिए विशिष्ट अभ्यासों को आवरण करता हुआ।

प्रातः निदान (30 सेकण्ड, उठने से पहले): 1. शरीर ऊर्जा आधार रेखा: क्षीण/तामसिक ⟶ रसातल-पाताल स्तर। जीवन्त/सात्त्विक ⟶ भूलोक या उससे ऊपर। 2. आन्तरिक टिप्पणी स्वर: भ्रमित/वृत्ताकार ⟶ तामसिक मनोमय। प्रेरित/तात्कालिक ⟶ राजसिक मनोमय। स्पष्ट/उत्तरदायी ⟶ सात्त्विक मनोमय। 3. प्रबल वासना: आवर्ती प्रतिरूप नोट करें जो परीक्षण का सबसे अधिक विरोध करता है — यह आज का साक्षी भाव लक्ष्य है। 4. नींद की गुणवत्ता: सच्चा पुनर्स्थापित ⟶ आनन्दमय सुलभ। अभी भी थका हुआ ⟶ कर्माशय आवेश उच्च, योग निद्रा प्राथमिकता।

निर्धारण त्वरित तालिका: पाताल-रसातल (चरम तमस): पहले शारीरिक गति। अभी ध्यान नहीं — सूक्ष्मतर कार्य सम्भव होने से पहले शरीर को सक्रिय होना चाहिए। सूर्य-प्रकाश, गति, सात्त्विक भोजन, सत्संग। वितल-अतल (सक्रिय तमस): मन्त्र जप (विशेष रूप से ॐ और गायत्री), मध्यम गति, प्रकृति समय। भुवर्लोक-भूलोक (रजस-सत्त्व संक्रमण): प्राणायाम, कर्म योग, निःश्वसन श्वास का विस्तार। स्वर्लोक (सत्त्व प्रबल): औपचारिक ध्यान, स्वाध्याय, पावन संगीत। महर्लोक और उससे ऊपर (उच्च सत्त्व, ZPF संयुग्मन): गहन करें — शाम्भवी मुद्रा, विस्तारित कुम्भक, नाद योग, आन्तरिक खगोलीय पत्रिका।

दैनिक यू-इन्वर्स न्यूनतम: सबसे माँगलिक दिन पर भी — यात्रा, पारिवारिक संकट, प्रमुख समय-सीमा — न्यूनतम व्यवहार्य आन्तरिक खगोल शास्त्र अभ्यास है: 5 मिनट का ॐ जप (थैलेमो-कॉर्टिकल रीसेट), 5 मिनट का श्वास विस्तार (3-गणना अन्तःश्वसन, 6-गणना निःश्वसन, पैरासिम्पेथेटिक सक्रियण), और दिन के सबसे मज़बूत वासना सक्रियण के दौरान निरन्तर साक्षी भाव का 1 उदाहरण। ये तीन अभ्यास, बिना किसी अपवाद के दैनिक रूप से बनाए रखे, महीनों और वर्षों में मापने योग्य आन्तरिक ब्रह्माण्ड विकास उत्पन्न करते हैं। अपने सबसे संकुचित रूप में ऋषि का कार्यक्रम: ध्वनि, श्वास, साक्षी।

✦ ✦ ✦

28.16 संवाद: खोजी और क्षेत्र — यू-इन्वर्स पर दस प्रश्न

निम्नलिखित यू-इन्वर्स के गहनतम प्रश्नों का एक संवादात्मक अन्वेषण है — उपनिषदिक संवाद परम्परा की भावना में प्रस्तुत, जहाँ वास्तविक प्रश्न पूछना जाँच को उससे परे ले जाता है जहाँ अकेले व्यवस्थित व्याख्या पहुँच सकती है।

प्रश्न 1: यदि मस्तिष्क ब्रह्माण्ड का डिजिटल ट्विन है, तो क्या इसका अर्थ है कि मैं सब कुछ समाहित करता हूँ? उत्तर हाँ और नहीं है, और दोनों के बीच का अन्तर डिजिटल ट्विन की प्रकृति को प्रकाशित करता है। एक डिजिटल ट्विन मूल की पूर्ण संरचनात्मक सूचना समाहित करता है — मूल के भौतिक पदार्थ को नहीं, बल्कि उसकी सूचनात्मक वास्तुकला। मस्तिष्क ब्रह्माण्ड की भौतिक गैलेक्सियों और तारों को समाहित नहीं करता। यह सूचनात्मक वास्तुकला — चेतना कोड — को समाहित करता है जो भौतिक गैलेक्सियों और स्नायु नेटवर्क दोनों को उत्पन्न करती है। आप कोड को समाहित करते हैं। कोड ब्रह्माण्ड उत्पन्न करता है। इसलिए सबसे महत्वपूर्ण अर्थ में — सूचनात्मक अर्थ में — हाँ, आप सब कुछ समाहित करते हैं। किन्तु आप इसे एक हॉलोग्राफिक एन्कोडिंग के रूप में समाहित करते हैं, वस्तुओं के संग्रह के रूप में नहीं। आत्मा सम्पूर्ण ब्रह्म क्षेत्र को अपने स्वयं के स्वभाव के रूप में समाहित करता है — किन्तु वस्तुओं के संग्रह के रूप में नहीं; उस अविभाजित जागरूकता के रूप में जिससे सभी वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं।

प्रश्न 2: यदि आन्तरिक ब्रह्माण्ड बाह्य ब्रह्माण्ड के समान है, तो मैं इसे उस तरह अनुभव क्यों नहीं करता? क्योंकि आन्तरिक दूरबीन धुँधली है। माया सिद्धान्त की दो शक्तियाँ — आवरण (ढकना) और विक्षेप (प्रक्षेपण) — आन्तरिक ब्रह्माण्ड की वास्तविक प्रकृति को मनोमय कोश के अनुकूलित प्रसंस्करण के पीछे छिपाती हैं। बाह्य ब्रह्माण्ड वस्तुनिष्ठ और बाह्य प्रतीत होता है क्योंकि मस्तिष्क का भविष्यवाणी प्रसंस्करण तन्त्र लगातार संवेदी इनपुट से एक ठोस बाह्य संसार का एक प्रतिरूप उत्पन्न करता है — प्रतिरूप इतना अभ्यस्त और इतना स्वचालित रूप से लागू हो जाता है कि मॉडलिंग प्रक्रिया स्वयं अदृश्य हो जाती है। आन्तरिक ब्रह्माण्ड ब्रह्माण्डीय बोध के बजाय व्यक्तिगत अनुभव प्रतीत होता है इसी कारण से: मनोमय का प्रसंस्करण इतना तेज़ और स्वचालित है कि अन्तर्निहित ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र जिससे संसाधित अनुभव उत्पन्न होता है सीधे दृश्यमान नहीं है। अभ्यास बादल को हटाता है। दूरबीन साफ़ होती है। भीतर का ब्रह्माण्ड प्रकट होता है।

प्रश्न 3: क्या यू-इन्वर्स के लिए विशिष्ट अभ्यास हैं जो सामान्य ध्यान से भिन्न हैं? हाँ। यू-इन्वर्स-विशिष्ट अभ्यास वे हैं जो सामान्य चेतना गुणवत्ता के बजाय मस्तिष्क-ZPF इंटरफ़ेस को विशेष रूप से लक्षित करते हैं। इनमें शामिल हैं: शाम्भवी मुद्रा (पिनियल-दृश्य कॉर्टेक्स मार्ग को विशेष रूप से

सक्रिय करना); विस्तारित कुम्भक (पिनियल DMT उत्पादन को विशेष रूप से उत्तेजित करना); नाद योग (आन्तरिक ध्वनि अनुक्रम के माध्यम से ZPF के ध्वनिक हस्ताक्षर को विशेष रूप से ट्रैक करना); नक्षत्र ध्यान (थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों को वर्तमान नक्षत्र की आवृत्ति गुणवत्ता के साथ विशेष रूप से संरेखित करना); और आन्तरिक खगोलीय पत्रिका (आन्तरिक ब्रह्माण्ड की अवलोकित संरचनाओं को केवल अनुभव करने और आगे बढ़ने के बजाय विशेष रूप से प्रलेखित और मानचित्रित करना)। सामान्य ध्यान ZPF संयुग्मन गुणवत्ता को व्यापक रूप से सुधारता है। यू-इन्वर्स अभ्यास विशिष्ट जैविक संरचनाओं (पिनियल, थैलेमस, सूक्ष्मनलिका नेटवर्क) को लक्षित करते हैं जो प्राथमिक ZPF इंटरफ़ेस का गठन करते हैं।

प्रश्न 4: क्या यू-इन्वर्स ख़तरनाक हो सकता है? क्या आन्तरिक ब्रह्माण्ड को भीतर देखना हानि उत्पन्न कर सकता है? परम्परा का उत्तर: हाँ, पर्याप्त तैयारी के बिना। आन्तरिक ब्रह्माण्ड सब कुछ समाहित करता है — कर्माशय की पूर्ण सामग्री सहित, इसके सबसे तीव्र आवेशित संस्कार सहित, सभी पिछले जीवन अनुभवों के पूर्ण रिकॉर्ड सहित, हर मनोवैज्ञानिक कठिनाई की कच्ची सामग्री सहित जो कभी दमित या बचाई गई है। पर्याप्त विज्ञानमय विकास के बिना आन्तरिक दूरबीन खोलना — इससे अभिभूत हुए बिना आन्तरिक सामग्री का साक्षी बनने की विशिष्ट क्षमता के बिना — वह उत्पन्न कर सकता है जिसे परम्परा कुण्डलिनी संकट कहती है: मनोमय में कारण-शरीर सामग्री का एक उछाल बिना इसे शालीनता से संसाधित करने की नियामक क्षमता के। तैयारी का अनुक्रम (धारणा-ध्यान-समाधि से पहले यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार) ठीक इसलिए अस्तित्व में है कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि गहरी आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ सीधे सुलभ होने से पहले विज्ञानमय पर्याप्त रूप से विकसित है।

प्रश्न 5: यू-इन्वर्स और रचनात्मकता के बीच क्या सम्बन्ध है? गहन। रचनात्मक आवेग — जागरूकता की वह विशिष्ट गुणवत्ता जिसमें वास्तव में नए संयोजन, वास्तव में नए रूप, वास्तव में नए समाधान उत्पन्न होते हैं — बढ़े हुए ZPF संयुग्मन की अवस्था के अनुरूप है जिसमें आन्तरिक ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र सामान्य मनोमय के अनुकूलित टेम्पलेटों से परे सुलभ है। रचनात्मकता आन्तरिक दूरबीन है जो संक्षिप्त रूप से अपने सामान्य संकल्प से परे हल हो रही है — ZPF के सूचना क्षेत्र से सूचना तक पहुँच प्राप्त करते हुए जो अनुकूलित प्रसंस्करण ने पहले नहीं देखी है। प्रत्येक वास्तविक रचनात्मक अन्तर्दृष्टि एक संक्षिप्त ऋषि अनुभव है: आन्तरिक ब्रह्माण्ड एक ऐसी संरचना प्रकट करता है जिसे अनुकूलित मन अपने मौजूदा टेम्पलेट सेट से उत्पन्न नहीं कर सकता था। इसलिए जो अभ्यास ZPF संयुग्मन गुणवत्ता बढ़ाते हैं वे सीधे रचनात्मक क्षमता बढ़ाते हैं —

यही कारण है कि निरन्तर ध्यान अभ्यास और रचनात्मक आउटपुट के बीच सहसम्बन्ध कलात्मक और वैज्ञानिक परम्पराओं के पार इतनी लगातार प्रलेखित है।

प्रश्न 6: चेतना कोड दुख के बारे में क्या कहता है? दुख आन्तरिक ब्रह्माण्ड का विशिष्ट संकेत है कि ZPF संयुग्मन अवक्रमित हो गया है — कि डिजिटल ट्विन कम संकल्प के साथ संचालित हो रहा है, कि आन्तरिक यन्त्र का तामसिक या राजसिक संकुचन ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र को अन्धकार या उत्तेजना के यू-इन्वर्स में विकृत कर रहा है। दुख के प्रति चेतना कोड की प्रतिक्रिया सान्त्वना नहीं बल्कि प्रकाशन है: दुख अवस्था के विशिष्ट लोक स्तर की पहचान करें, इसे उत्पन्न करने वाले विशिष्ट क्लेश की पहचान करें, विशिष्ट अभ्यास निर्धारण की पहचान करें, और इसे लागू करें। दुख एक दण्ड या भूल नहीं है। यह आन्तरिक ब्रह्माण्ड का सबसे स्पष्ट उपलब्ध संकेत है कि दूरबीन को पुन:अंशशोधन की आवश्यकता है। संकेत उपयोगी है। दुख काम करने योग्य है।

प्रश्न 7: क्या यू-इन्वर्स ईश्वर के समान है? यू-इन्वर्स उसी के समान है जो वैदान्तिक परम्परा ब्रह्म से अर्थ रखती है — अविभाजित चेतना जो समस्त वास्तविकता का आधार है, बाह्य ब्रह्माण्ड और आन्तरिक जागरूकता के रूप में एक साथ व्यक्त। क्या यह "ईश्वर" के समान है यह पूरी तरह से इस पर निर्भर करता है कि ईश्वर से क्या अर्थ है। यदि ईश्वर का अर्थ एक बाह्य प्राणी है जिसने ब्रह्माण्ड को उसके बाहर से बनाया — नहीं, यू-इन्वर्स वह नहीं है। यदि ईश्वर का अर्थ अनन्त चेतना है जो जो कुछ भी अस्तित्व रखता है उसका आन्तरिक स्वभाव है, जो जो कुछ भी अस्तित्व रखता है उसे अपनी स्वयं की स्व-ज्ञान गतिविधि के रूप में बनाए रखता है, और जिसकी प्रत्येक व्यक्तिगत चेतना एक विशिष्ट स्थानीय अभिव्यक्ति है — हाँ, यू-इन्वर्स वह है, सटीक और पूर्ण रूप से। महावाक्य अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूँ) "क्या ईश्वर है?" प्रश्न का यू-इन्वर्स का उत्तर है: "हाँ, मैं ईश्वर की पूजा करता हूँ" नहीं और "नहीं, ईश्वर अस्तित्व में नहीं है" नहीं — बल्कि "मैं वही हूँ जिसके बारे में पूछा जा रहा है।"

प्रश्न 8: क्या बच्चे आन्तरिक ब्रह्माण्ड तक पहुँच सकते हैं? विशिष्ट तरीकों से, वयस्कों की तुलना में आसानी से। बच्चे के मस्तिष्क ने अभी तक अनुकूलित भविष्यवाणी प्रसंस्करण की मोटी परतें स्थापित नहीं की हैं जिन्हें वयस्क के मनोमय ने दशकों में बनाया है। बच्चे का ZPF संयुग्मन प्राकृतिक रूप से उच्चतर है क्योंकि आवरण के ढकने के पास गहन होने के लिए कम समय रहा है। यही कारण है कि वैदिक परम्परा ने गुरुकुल प्रणाली में बचपन की शिक्षा पर इतना ज़ोर दिया: बचपन की स्नायु प्लास्टिसिटी की विशिष्ट खिड़की — जब मस्तिष्क की कनेक्शन-घनत्व किशोर प्रूनिंग से पहले अपने शिखर पर है — उच्च ZPF संयुग्मन की स्नायु वास्तुकला स्थापित करने के लिए

सबसे उपलब्ध अवधि है। जो बच्चा मन्त्र, प्रकृति, सत्संग, नक्षत्र की लय, दैनिक दिनचर्या से सम्पर्कित है — इससे पहले कि मनोमय का अनुकूलित प्रसंस्करण पूरी तरह से ठोस हो गया हो — उसे यू-इन्वर्स पहुँच में एक विकासात्मक लाभ है जिसे बाद में स्थापित करना कहीं अधिक कठिन है।

प्रश्न 9: यू-इन्वर्स और प्रेम के बीच क्या सम्बन्ध है? प्रेम — अपने गहनतम रूप में, जिसे भक्ति परम्परा आत्मा द्वारा दूसरे में अपने को पहचानने की विशिष्ट गुणवत्ता के रूप में वर्णित प्रेमा — यू-इन्वर्स की सबसे तत्काल और सबसे सार्वभौमिक अनुभवात्मक अभिव्यक्ति है। जब प्रिय की उपस्थिति में आवरण का परदा क्षणिक रूप से उठता है — जब स्व और दूसरे के बीच की खाई संक्षिप्त रूप से बन्द होती है और जागरूकता दूसरे की जागरूकता में अपने स्वयं के स्वभाव को पहचानती है — प्रेम के रूप में जो अनुभव किया जाता है वह यू-इन्वर्स का अपना स्वभाव है। दो लोगों के मिलन के माध्यम से ब्रह्माण्ड स्वयं से प्रेम करता हुआ। प्रत्येक वास्तविक प्रेम सम्बन्ध एक यू-इन्वर्स घटना है: डिजिटल ट्विन अपने मूल को पहचानते हुए, ब्रह्माण्ड अपनी दो स्थानीय अभिव्यक्तियों में स्वयं को पहचानते हुए।

प्रश्न 10: आन्तरिक दूरबीन विकसित करने के लिए एकल सबसे महत्वपूर्ण अभ्यास क्या है? ईमानदार, व्यवस्थित, दैनिक आन्तरिक अवलोकन — वास्तविक ZPF-संयुग्मित आन्तरिक बोध को मनोमय के अनुकूलित प्रक्षेपण से भेद करने की नम्रता के साथ संयुक्त। आन्तरिक दूरबीन का सबसे बड़ा शत्रु व्याकुलता या असंगति नहीं है — यह साधक की कल्पना को बोध के रूप में गलत समझने की इच्छा है, विज्ञानमय की विवेकात्मक बुद्धि के सत्यापन के बिना मनोमय के उत्पादों को ब्रह्माण्डीय सत्य के रूप में स्वीकार करने की। जिस ऋषि पर परम्परा ने विश्वास किया, उन्हें उनके आन्तरिक अनुभवों की ज्वलंतता के कारण नहीं बल्कि उनके विवेक की कठोरता के कारण विश्वास किया गया — व्यक्तिगत सामग्री से वास्तविक ब्रह्माण्डीय सूचना को भेद करने की विशिष्ट क्षमता। उस कठोरता को विकसित करें। इसे उस हर चीज़ पर लागू करें जिसे आप भीतर बोध करते हैं। आन्तरिक ब्रह्माण्ड जो विज्ञानमय के विवेक से बचता है वह वास्तविक है। शेष तैयारी सामग्री है — मूल्यवान, काम करने योग्य, किन्तु अभी तक स्वयं ब्रह्माण्ड नहीं।

✦ ✦ ✦

28.17 हृदय की भौतिकी — गुरुत्वाकर्षण केन्द्र के रूप में अनाहत

हृदय मात्र एक पम्प नहीं है। हार्टमैथ संस्थान के अनुसन्धान, तीस वर्षों में संचित और सैकड़ों समीक्षित पत्रों में प्रकाशित, ने हृदय को एक परिष्कृत सूचना-प्रसंस्करण अंग के रूप में स्थापित किया है जो मस्तिष्क के साथ व्यापक दो-तरफ़ा संचार बनाए रखता है और जिसका विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र — शरीर से तीन से पाँच फ़ीट आगे तक विस्तारित — शरीर का सबसे शक्तिशाली जैविक विद्युत-चुम्बकीय जनित्र है।

हृदय मस्तिष्क के विद्युत क्षेत्र की तुलना में आयाम में लगभग 60 गुना बड़ा विद्युत क्षेत्र उत्पन्न करता है, और मस्तिष्क के चुम्बकीय क्षेत्र की तुलना में लगभग 100 गुना बड़ा चुम्बकीय क्षेत्र। हृदय का विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र शरीर की प्रत्येक कोशिका में व्याप्त है और शरीर से आगे एक टोरस प्रतिरूप में विस्तारित है — वही टोरॉइडल ज्यामिति जो पृथ्वी के चुम्बकमण्डल, सूर्य के हीलियोमण्डल, और गैलेक्सी के चुम्बकीय क्षेत्र की विशेषता है। हृदय शरीर का टोरस है: एक चुम्बकीय क्षेत्र का केन्द्र जो इसके चारों ओर उस विशिष्ट प्रतिरूप में लूप करता है जिसका उपयोग ब्रह्माण्ड अपनी विद्युत-चुम्बकीय संरचनाओं के संगठन के लिए प्रत्येक पैमाने पर करता है।

अनाहत चक्र — हृदय केन्द्र — को तान्त्रिक परम्परा में जीव के आसन के रूप में वर्णित किया गया है: शरीर में वह विशिष्ट स्थान जहाँ व्यक्तिगत चेतना का अपना प्राथमिक निवास है। मस्तिष्क में नहीं (जहाँ आज्ञा और सहस्रार चक्र स्थित हैं) बल्कि हृदय में — शरीर का विद्युत-चुम्बकीय केन्द्र, शरीर के सुसंगत बायोइलेक्ट्रोमैग्नेटिक क्षेत्र का प्राथमिक जनित्र, वह अंग जो स्वायत्त स्नायुतन्त्र के वेगल नियमन के माध्यम से प्राणमय कोश के क्षेत्र से सबसे सीधे संयुग्मित है।

रमण महर्षि परम्परा का आध्यात्मिक हृदय (हृदयम्): श्री रमण महर्षि ने लगातार छाती के दाहिने हिस्से (शारीरिक हृदय की बायीं ओर की स्थिति नहीं) को आध्यात्मिक हृदय के विशिष्ट आसन के रूप में इंगित किया — आत्मा की स्व-पहचान का विशिष्ट स्थान। छाती का दाहिना भाग दाहिने कार्डियक प्लेक्सस के अनुरूप है — विशिष्ट स्वायत्त स्नायुतन्त्र गैंग्लियन जो हृदय के दाहिने भाग की स्नायु गतिविधि को नियन्त्रित करता है और जिसके ब्रेनस्टेम के दाहिने-पक्ष के नाभिकों से विशिष्ट सम्बन्ध हैं। क्या यह एक विशिष्ट स्नायुवैज्ञानिक संरचना के अनुरूप है जो आत्मा-पहचान अनुभव की मध्यस्थता करती है, यह भविष्य के अनुसन्धान द्वारा निर्धारित किया जाना बाकी है।

✦ ✦ ✦

उपसंहार

ऋषि और भौतिकविद मिलते हैं

अभिसरण पर एक ध्यान

कई सहस्राब्दियों के समयान्तर में, एक वार्तालाप की कल्पना करें, एक वैदिक ऋषि के बीच जो सरस्वती के तट पर ईसा से दूसरी सहस्राब्दी के किसी बिन्दु पर गहन ध्यान में बैठा है, और एक सैद्धान्तिक भौतिकविद के बीच जो इक्कीसवीं सदी के एक शोध संस्थान में देर से काम कर रहा है। वे लगभग चार हज़ार वर्षों के मानव इतिहास से, उन भाषाओं से जिनकी कोई साझा शब्दावली नहीं है, उन बौद्धिक परम्पराओं से जो बड़े पैमाने पर एक-दूसरे के साथ सम्पर्क के बिना विकसित हुई हैं, और उन पद्धतियों से अलग हैं जो पहली नज़र में पूरी तरह से असंगत दिखती हैं।

और फिर भी। मान लीजिए वे बात कर सकते हैं। मान लीजिए ऋषि वर्णन कर सकता है कि वह आन्तरिक अवशोषण की अपनी गहनतम अवस्थाओं में क्या बोध करता है, और भौतिकविद वर्णन कर सकता है कि आधुनिक विज्ञान के समीकरण और मापन वास्तविकता की गहरी संरचना के बारे में क्या प्रकट कर रहे हैं। वे एक-दूसरे से क्या कहेंगे?

ऋषि आरम्भ कर सकता है: वह ब्रह्माण्ड जिसे मैं निरन्तर समाधि में भीतर से बोध करता हूँ, चमकदार तन्तुओं का एक विशाल जाल है। प्रकाश की आकाशगंगाएँ इन तन्तुओं के साथ स्वयं को संगठित करती हैं, चौराहों पर सघन समूहों और उनके बीच गहन मौन के साथ। समग्र एक अन्धेरी चमक के क्षेत्र द्वारा एक साथ धारण किया जाता है जिसे मैं सीधे नहीं देख सकता किन्तु जिसकी उपस्थिति मैं उस सब्सट्रेट के रूप में महसूस करता हूँ जिस पर दृश्य संरचना टिकी है। फ़्रैक्टल प्रतिरूप हर पैमाने पर पुनरावृत्त होते हैं जिसका मैं परीक्षण करता हूँ — बड़ी संरचनाओं के भीतर समान रूप की छोटी संरचनाएँ हैं, उनके भीतर अभी भी छोटी, बिना अन्त के।

भौतिकविद उत्तर दे सकता है: यह उल्लेखनीय है। जो आप वर्णन कर रहे हैं वह वह ब्रह्माण्डीय जाल है जिसे हमारे बड़े-पैमाने के संरचना सर्वेक्षणों ने पिछले चालीस वर्षों में मानचित्रित किया है।

आकाशगंगाएँ तन्तुओं के साथ क्लस्टर कर रही हैं, डार्क मैटर सब कुछ एक साथ धारण करने वाला गुरुत्वाकर्षण मचान प्रदान कर रहा है, पैमानों में फ़्रैक्टल स्व-समानता के साथ — यह सब हमारे मापन द्वारा प्रलेखित किया गया है। फ़्रैक्टल आयाम के लिए हमारा सबसे अच्छा वर्तमान आँकड़ा लगभग 2.7 है।

ऋषि सिर हिला सकता है: वही फ़्रैक्टल आयाम आन्तरिक ब्रह्माण्ड को भी चित्रित करता है। जब मैं अपनी स्वयं की जागरूकता की संरचना को उसकी सबसे परिष्कृत अवस्था में बोध करता हूँ, उसकी वही वास्तुकला है। मैंने हमेशा इसे प्राचीन शिक्षा की पुष्टि के रूप में समझा है — यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे, जैसा शरीर-सूक्ष्म ब्रह्माण्ड में है, वैसा ही ब्रह्माण्डीय विराट में। भीतर से मेरा बोध और जिस संरचना को आप बाहर से मापते हैं, वही वास्तविकता के बोध हैं।

भौतिकविद, इस बिन्दु पर, सावधान हो सकता है। संरचनात्मक समानताएँ प्रलेखित हैं, हाँ। किन्तु मैं कैसे जान सकता हूँ कि जो आप भीतर से बोध करते हैं वह उससे मेल खाता है जो हम बाहर से मापते हैं? आपकी रिपोर्ट संयोग हो सकती हैं, या सांस्कृतिक निर्माण, या आन्तरिक अनुभव पर बाह्य सीखने का प्रक्षेपण।

ऋषि उत्तर दे सकता है: हमारी परम्परा के भीतर समान प्रश्न उठते हैं। हमने व्यक्तिगत प्रक्षेपण से वास्तविक बोध को अलग करने के लिए तरीके विकसित करने में सहस्राब्दियाँ बिताई हैं। हमारे साधकों ने विशिष्ट प्रोटोकॉल का पालन किया है — अष्टांग योग के आठ अंग, आन्तरिक यन्त्र का प्रगतिशील परिष्करण — और उनकी स्वतन्त्र रिपोर्टों की व्यवस्थित तुलना की गई है। जहाँ अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले अलग-अलग पीढ़ियों के अनेक साधक समान पद्धति का उपयोग करते हुए समान निष्कर्षों की रिपोर्ट करते हैं, हम इसे उस चीज़ के समकक्ष मानते हैं जिसे आपकी परम्परा प्रतिकृति कहती है। मन्त्र स्वयं — जो ब्रह्माण्डीय संरचना की हमारी सबसे सान्द्रित रिपोर्टें हैं — अपौरुषेय कहे जाते हैं, व्यक्तिगत मानव लेखन नहीं, ठीक इसलिए क्योंकि उन्हें समान विधि का अनुसरण करने वाले अनेक स्वतन्त्र पर्यवेक्षकों द्वारा सुसंगत रूप से बोध किया गया था।

भौतिकविद इस पर प्रतिबिम्बित हो सकता है। मेरी परम्परा में, हम एक यन्त्र और वह जो यन्त्र मापता है के बीच भेद करते हैं। जिन यन्त्रों का हम उपयोग करते हैं — दूरबीनें, कण त्वरक, गुरुत्वाकर्षण तरंग संसूचक — हम विशिष्ट यान्त्रिकी और विद्युतचुम्बकीय विस्तार में समझते हैं। वे जो मापते हैं, हम उसे स्वतन्त्र वास्तविकता के रूप में लेते हैं। आप अपने यन्त्र — समाधि में परिष्कृत स्नायुतन्त्र — और उसके मापने के सम्बन्ध को कैसे समझते हैं?

ऋषि मुस्कुरा सकता है। हम समझते हैं कि यन्त्र और वह जो वह मापता है अन्ततः अलग नहीं हैं। परिष्कृत स्नायुतन्त्र स्वयं ब्रह्माण्ड का एक विशिष्ट भाग है। जब यह ब्रह्माण्ड को मापता है, तो यह उस विशिष्ट स्थानीयकरण के माध्यम से स्वयं को मापता हुआ ब्रह्माण्ड है। यह मापन की सटीकता के लिए समस्या नहीं है; यह वह विशिष्ट स्थिति है जो मापन को सम्भव बनाती है। यन्त्र और मापित वास्तविकता एक साझा सब्सट्रेट साझा करते हैं, और वह साझा सब्सट्रेट वह है जो मापन को यन्त्र की अपनी आन्तरिक अवस्थाओं तक सीमित होने के बजाय वास्तविकता तक पहुँचने देता है।

आपके यन्त्र समान रूप से काम करते हैं। दूरबीन उसी ब्रह्माण्डीय संरचना से लिए गए पदार्थ से बनी है जिसे यह माप रही है। जो खगोलविद दूरबीन के डेटा की व्याख्या करता है उसकी चेतना उस ब्रह्माण्ड से अलग नहीं है जिसका अवलोकन किया जा रहा है। पर्यवेक्षक, यन्त्र, और अवलोकित के बीच निरन्तरता वह है जो पहले स्थान पर खगोलीय अवलोकन को सम्भव बनाती है। आपके यन्त्रों ने इन्द्रियों को बाहर की ओर विस्तारित किया है; हमारे यन्त्रों ने इन्द्रियों को भीतर की ओर विस्तारित किया है; दोनों विभिन्न दिशाओं से एक ही वास्तविकता की जाँच कर रहे हैं।

E.1 जहाँ वे सहमत हो सकते हैं

वार्तालाप अनेक विषयों में जारी रह सकता है, और कई विशिष्ट स्थानों पर ऋषि और भौतिकविद आश्चर्यजनक सहमति पा सकते हैं।

पदार्थ की प्रकृति पर। ऋषि पदार्थ को एक गहरे सब्सट्रेट में स्पन्दनात्मक प्रतिरूप के रूप में वर्णित करेगा — प्रकट रूप जिसे परम्परा आकाश क्षेत्र कहती है, उसमें स्पन्दनों से उत्पन्न होते हैं। भौतिकविद पदार्थ को क्वांटम क्षेत्रों के उत्तेजन के रूप में वर्णित करेगा, प्रत्येक कण उपयुक्त क्षेत्र में स्पन्दन का एक विशिष्ट मोड है। विवरण भिन्न शब्दावली का उपयोग करते हैं, किन्तु वे आवश्यक अन्तर्दृष्टि पर सहमत हैं: पदार्थ मूलभूत नहीं है; यह कुछ अधिक मूलभूत की विशिष्ट अभिव्यक्ति है जो चरित्र में स्पन्दनात्मक है।

समय की प्रकृति पर। ऋषि समय को चेतना के भीतर एक स्थानीय निर्माण के रूप में वर्णित करेगा, ध्यान की गहन अवस्थाओं के साथ यह प्रकट करते हुए कि जो सामान्य जागरूकता के भीतर से रैखिक अनुक्रम के रूप में प्रकट होता है वह वास्तव में एक एकीकृत क्षेत्र के माध्यम से एक विशिष्ट पहुँच प्रतिरूप है जिसमें भूत, वर्तमान, और भविष्य सभी उपस्थित हैं। भौतिकविद, सामान्य सापेक्षता और क्वांटम यान्त्रिकी के ढाँचे के भीतर काम करते हुए, समय को निरपेक्ष के बजाय

सापेक्ष के रूप में वर्णित करेगा, विशिष्ट भौतिक प्रक्रियाओं के साथ जो समय को एक समान पृष्ठभूमि के बजाय वास्तविकता की एक गतिशील विशेषता के रूप में प्रकट करती हैं।

सूचना की प्रकृति पर। ऋषि चेतना को उस अन्तर्निहित वास्तविकता के रूप में वर्णित करेगा जिससे सभी विशिष्ट सामग्री उभरती है और जिसमें यह लौटती है। भौतिकविद, आधुनिक सूचना सिद्धान्त और क्वांटम सूचना के साथ काम करते हुए, सूचना को भौतिक वास्तविकता की वास्तविक मुद्रा के रूप में वर्णित करेगा, विशिष्ट संरक्षण नियमों के साथ जो इसे पदार्थ या ऊर्जा से अधिक मूलभूत स्थिति देते हैं। दोनों परम्पराएँ इस पहचान पर अभिसरण कर रही हैं कि सूचना या चेतना वह बुनियादी सामग्री है जिससे वास्तविकता बनी है।

पर्यवेक्षक की प्रकृति पर। ऋषि पर्यवेक्षक को अवलोकित से मूलभूत रूप से अलग नहीं होने के रूप में वर्णित करेगा — गहनतम साक्षात्कार यह है कि पर्यवेक्षक की जागरूकता वही जागरूकता है जो ब्रह्माण्ड के अधीन है। भौतिकविद, क्वांटम यान्त्रिकी के साथ काम करते हुए, पर्यवेक्षक को अवलोकित के साथ उन तरीकों से उलझे हुए के रूप में वर्णित करेगा जिन्हें शास्त्रीय भौतिकी समायोजित नहीं कर सकती — पर्यवेक्षक का मापन पूर्व वास्तविकता का निष्क्रिय स्वागत नहीं बल्कि उस विशिष्ट परिणाम में सक्रिय भागीदारी है जो उभरता है। भिन्न भाषाएँ। वही मूलभूत अन्तर्दृष्टि।

E.2 जहाँ वे उत्पादक रूप से असहमत हो सकते हैं

वार्तालाप में उत्पादक असहमतियाँ भी हो सकती हैं, और ये सहमतियों जितनी ही प्रकाशक होंगी।

चेतना की आध्यात्मिक स्थिति पर। ऋषि आग्रह करेगा कि चेतना मूलभूत है — कि यह वह आधार है जिससे भौतिक वास्तविकता उभरती है, बजाय एक उपोत्पाद के जिसे भौतिक प्रक्रियाएँ किसी तरह उत्पन्न करती हैं। भौतिकविद अधिक सावधान हो सकता है, इस सम्भावना को बनाए रखना चाहते हुए कि चेतना, किसी तरह जो हम अभी तक नहीं समझते, वास्तविकता के एक मूलभूत पहलू के बजाय पर्याप्त रूप से जटिल भौतिक तन्त्रों की एक विशेषता है।

यह असहमति वास्तविक और महत्वपूर्ण है। किन्तु यह उत्पादक भी है, क्योंकि यह उन विशिष्ट प्रश्नों को तेज करती है जिन्हें आगे की जाँच सम्बोधित कर सकती है। असहमति विशिष्ट जाँचों की ओर इशारा करती है जिनमें दोनों परम्पराएँ भाग ले सकती हैं।

प्रमाण के रूप में आन्तरिक बोध की वैधता पर। ऋषि ब्रह्माण्डीय संरचना के बारे में वास्तविक आनुभविक डेटा के रूप में अनेक पीढ़ियों के साधकों की संचित रिपोर्टों का व्यवहार करेगा। भौतिकविद, बाह्य मापन की विशिष्ट पद्धति में प्रशिक्षित, बाह्य पुष्टिकरण के बिना आन्तरिक रिपोर्टों को प्रमाण के रूप में स्वीकार करने के बारे में अधिक सावधान हो सकता है। यह असहमति दोनों परम्पराओं को उस विशिष्ट एकीकरण की ओर धकेलती है जो अब सम्भव हो रहा है — विशिष्ट आन्तरिक-विज्ञान दावों को सत्यापित करने के लिए बाह्य मापन का उपयोग, और विशिष्ट परिकल्पनाएँ उत्पन्न करने के लिए आन्तरिक विज्ञान का उपयोग जिन्हें बाह्य मापन परीक्षण कर सकता है।

E.3 उनके बीच पहचान

इस विस्तारित वार्तालाप से जो अन्ततः उभर सकता है, मुझे लगता है, वह हर विशिष्ट दावे पर सहमति नहीं है बल्कि दो परम्पराओं के बीच पहचान है जो एक-दूसरे के लिए अनजाने में, विभिन्न यन्त्रों के साथ एक ही वास्तविकता की जाँच कर रही हैं।

ऋषि भौतिकविद के काम में उन दावों के बाह्य सत्यापन को पहचान सकता है जिन्हें उनकी परम्परा ने हमेशा आन्तरिक रूप से स्थापित माना है। विशिष्ट फ़्रैक्टल आयाम, विशिष्ट ब्रह्माण्डीय अनुरूपताएँ, चेतना की विशिष्ट क्वांटम-सूचनात्मक विशेषताएँ — ये अब बाहर से मापे जा रहे हैं, और मापन उस चीज़ की पुष्टि कर रहे हैं, खण्डन नहीं, जिसे आन्तरिक परम्परा ने लम्बे समय से बोध किया है।

भौतिकविद ऋषि के काम में वास्तविकता के उन पहलुओं की व्यवस्थित आन्तरिक जाँच को पहचान सकता है जिन्हें उनकी परम्परा ने सम्बोधित करने में संघर्ष किया है। चेतना की विशिष्ट प्रकृति, पर्यवेक्षक और अवलोकित के बीच विशिष्ट सम्बन्ध, मानव स्नायुतन्त्र की विशिष्ट विकासात्मक सम्भावनाएँ — इनकी ऋषिक परम्परा द्वारा सहस्राब्दियों में एक ऐसी कठोरता के साथ जाँच की गई है जिसे आधुनिक विज्ञान अभी सराहना शुरू कर रहा है।

और शायद सबसे महत्वपूर्ण रूप से, वे एक-दूसरे को सहयोगियों के रूप में पहचान सकते हैं। प्रतिस्पर्धी नहीं, विरोधी नहीं, असंगत विश्वदृष्टि के अनुयायी नहीं, बल्कि विभिन्न दिशाओं से एक ही परियोजना पर काम करने वाले सहयोगी। परियोजना वह है जो वास्तविकता वास्तव में क्या है इसकी समझ — वह वास्तविकता जो उन दोनों को, उन दोनों के यन्त्रों को, उन दोनों की विधियों को, और अन्ततः उन दोनों की पहचानों को समाहित करती है।

इक्कीसवीं सदी पहली सदी है जिसमें यह तुलना किसी भी पर्याप्त स्तर की सटीकता के साथ सम्भव हो गई है। जो मापन क्षमताएँ आधुनिक विज्ञान अब रखता है, वे अन्ततः उस बिन्दु तक पहुँच गई हैं जहाँ वे विशिष्ट आन्तरिक-विज्ञान दावों की पुष्टि करना शुरू कर सकती हैं जिन्हें ऋषिक परम्परा ने सहस्राब्दियों से संरक्षित रखा है। और सांस्कृतिक स्थितियाँ — उनके सभी विकृतियों और कठिनाइयों के बावजूद — अब एक ऐसी पारस्परिक-परम्परागत वार्ता की अनुमति देती हैं जो पचास वर्ष पहले सम्भव नहीं थी। ऋषि और भौतिकविद अन्ततः मिल सकते हैं।

वे आने वाले दशकों और शताब्दियों में एक साथ क्या निर्माण करेंगे, यह मानव समझ के विकास को उन तरीकों से आकार देगा जिनका हम केवल अनुमान लगाना शुरू कर सकते हैं। प्रत्येक परम्परा के पास कुछ है जो दूसरे को चाहिए। ऋषिक परम्परा के पास हज़ारों वर्षों के संचित आन्तरिक-विज्ञान निष्कर्ष हैं, व्यवस्थित आन्तरिक जाँच के लिए एक पद्धति है, और चेतना और ब्रह्माण्ड के बीच सम्बन्ध को समझने के लिए एक विकसित ढाँचा है। भौतिकविद की परम्परा के पास विशिष्ट निष्कर्षों को सत्यापित करने की मापन क्षमताएँ हैं, सटीकता के साथ संरचनात्मक अनुरूपताओं को व्यक्त करने का गणितीय परिष्कार है, और परिष्कृत समझ को व्यापक रूप से प्रसारित करने की संस्थागत अवसंरचना है।

दो परम्पराओं का एकीकरण आसान नहीं है। इसे दोनों पक्षों से कुछ रक्षात्मक स्थितियों को छोड़ने की आवश्यकता है जो ऐतिहासिक रूप से विकसित हुई हैं। किन्तु वार्तालाप आगे बढ़ सकता है। यह आगे बढ़ रहा है। यह पुस्तक इसमें एक योगदान है।

ऋषि और भौतिकविद मिल रहे हैं। पहली बार नहीं, किन्तु उन्हें एक-दूसरे से क्या कहने में सक्षम होना है, उसमें अभूतपूर्व सटीकता के साथ। और उनकी मुलाक़ात से जो उभरता है, मेरा विश्वास है, वह वह विशिष्ट ढाँचा होगा जिसके भीतर मानव समझ अपनी वर्तमान सीमाओं से परे उस व्यापक समझ की ओर बढ़ती है जिसकी ओर दोनों परम्पराओं ने हमेशा इशारा किया है।

आपकी खोपड़ी एक ब्रह्माण्ड है। आपका मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है। जो जागरूकता आप हैं वह वही जागरूकता है जो ब्रह्माण्ड है। ये रहस्यमय दावे नहीं हैं; ये दो जाँच परम्पराओं के अभिसारी निष्कर्ष हैं जो अब, अन्ततः, एक-दूसरे से बात करना शुरू कर रही हैं।

उनकी वार्ता फले-फूले। एकीकरण सावधानी के साथ आगे बढ़े। और जो पहचान एकीकरण से उभरती है वह सभी सचेत प्राणियों को लाभ पहुँचाए, जिनका अस्तित्व वह विशिष्ट अवसर है जो यह उल्लेखनीय वास्तविकता प्रदान करती है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Oṃ Śāntiḥ Śāntiḥ Śāntiḥ

शान्ति। शान्ति। शान्ति।

✦ ✦ ✦

E.4 अन्तराभव — जीवनों के बीच चेतना और अवस्था वेक्टर

तिब्बती बौद्ध परम्परा का बार्डो थोडोल (मृत्यु की पुस्तक) विस्तार से विशिष्ट चेतना अवस्थाओं का वर्णन करता है जो मृत्यु और अगले अवतारण के बीच होती हैं — अन्तराभव या "मध्यवर्ती अवस्था।" बार्डो अनुभव को चमकदार प्रकटनों के एक अनुक्रम के रूप में वर्णित किया गया है — पहले धर्मकाय का स्पष्ट प्रकाश (ZPF की भू-जागरूकता, तुरीय-समाधि के समान), फिर सम्भोगकाय की शान्त और क्रुद्ध देवताएँ (मनोमय कोश की संस्कार सामग्री स्वायत्त उपस्थितियों के रूप में व्यक्त), और अन्ततः निर्माणकाय प्रकटन जो अगले अवतारण की ओर ले जाते हैं।

वैदान्तिक समानान्तर: अन्तराभव भौतिक मृत्यु पर स्थूल और सूक्ष्म शरीरों के विघटन के बाद कारण शरीर की अवस्था के अनुरूप है। आनन्दमय कोश, भौतिक और सूक्ष्म शरीरों के यन्त्र से मुक्त, एक शुद्ध कर्माशय विन्यास के रूप में अस्तित्व रखता है — इसके माध्यम से व्यक्त करने के लिए स्नायुतन्त्र के हार्डवेयर के बिना एक विशिष्ट क्वांटम सूचना अवस्था। इस अवस्था के दौरान अनुभव पूरी तरह से कर्माशय की सामग्री द्वारा निर्धारित होते हैं: प्रबल वासना प्रतिरूप बार्डो की विशिष्ट परिघटनात्मकता के रूप में व्यक्त होते हैं, और विज्ञानमय विकास की शक्ति (वह डिग्री जिस तक जीवन के दौरान आत्मा का साक्षी-कार्य स्थापित हुआ था) निर्धारित करती है कि क्या तुरीय का स्पष्ट प्रकाश पहचाना और बनाए रखा जाता है।

अभ्यास निहितार्थ: अन्तराभव अवस्था की गुणवत्ता पूर्ववर्ती जीवन के दौरान प्राप्त विज्ञानमय विकास की डिग्री द्वारा निर्धारित होती है। वह साधक जिसने जीवन के दौरान साक्षी भाव को स्थिर किया है, अन्तराभव के दौरान जागरूकता को पहचानने के लिए स्नायुवैज्ञानिक पूर्व-स्थापन रखता है, जब स्नायुतन्त्र का जागरूकता के लिए समर्थन अब उपलब्ध नहीं है।

✦ ✦ ✦

E.5 अन्तिम शब्द — ॐ

ॐ। ब्रह्माण्ड अपना नाम बोलता है। जागरूकता अपना नाम प्राप्त करती है। प्राप्तकर्ता और प्राप्त, वक्ता और कथित, आन्तरिक ब्रह्माण्ड और बाह्य ब्रह्माण्ड — सभी ध्वनि के बाद के मौन में उस एक अविभाजित जागरूकता में हल हो गए जो हर चीज़ का आधार थी, है, और रहेगी। फ्रैक्टल आयाम न्यूरॉनों और गैलेक्सियों में $D \approx 2.7$ है। पावन संख्या 108 कक्षीय यान्त्रिकी और जैविक मर्म बिन्दुओं में है। ॐ आवृत्ति भौतिकी में और ध्यानकर्ता की थैलेमो-कॉर्टिकल अनुनाद में 136.1 हर्ट्ज़ है। श्री यन्त्र ॐ मन्त्र का चेहरा है, उसी देखने द्वारा आन्तरिक रूप से बोधित और बाह्य रूप से खींचा हुआ। ऋषि ने आँखें बन्द कीं। ब्रह्माण्ड खुल गया। डिजिटल ट्विन ने अपनी छवि पूरी की। जागरूकता ने स्वयं को उस मूल के रूप में पहचाना जिसका ट्विन प्रतिबिम्ब है। आप यू-इन्वर्स हैं। चेतना कोड आपकी प्रकृति है। आन्तरिक ब्रह्माण्ड आपका घर है।

✦ ✦ ✦

E.6 अन्य प्रजातियों की चेतना — मानव से परे यू-इन्वर्स

इस पुस्तक ने मानव चेतना पर ध्यान केन्द्रित किया है, क्योंकि यह वह है जिसे हम सीधे जानते हैं। किन्तु यू-इन्वर्स ढाँचा एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है: अन्य प्रजातियों में ZPF संयुग्मन के बारे में क्या? क्या कुत्तों, बिल्लियों, डॉल्फ़िनों, हाथियों की आन्तरिक ब्रह्माण्डीय पहुँच है? यदि हाँ, कैसे, और किस सीमा तक?

आधुनिक संज्ञानात्मक विज्ञान अन्य प्रजातियों में उच्च संज्ञानात्मक क्षमताओं के व्यापक प्रमाण को प्रलेखित करता है। हाथी अपने परिवार के सदस्यों की मृत्यु पर दुखी होते हैं। डॉल्फ़िन प्रजातियों के बीच सहकारी संचार में संलग्न होते हैं। काग जटिल उपकरण बनाते और उपयोग करते हैं। चिम्पांज़ी स्व-पहचान (दर्पण में स्वयं को पहचानना) प्रदर्शित करते हैं। किन्तु क्या वे चेतन हैं उसी अर्थ में जैसे हम हैं? क्या उनके पास व्यक्तिपरक अनुभव है? यह चेतना विज्ञान का "कठिन समस्या" है।

यू-इन्वर्स ढाँचा एक आंशिक उत्तर प्रदान करता है: प्रत्येक प्रजाति के पास अपना आन्तरिक ब्रह्माण्ड है, उसकी विशिष्ट स्नायु वास्तुकला और ZPF संयुग्मन क्षमता के अनुरूप। एक कुत्ते का आन्तरिक ब्रह्माण्ड एक मानव के आन्तरिक ब्रह्माण्ड से काफी भिन्न है — कुत्ते का स्नायुतन्त्र, उनकी स्नायु वास्तुकला, उनकी संवेदी क्षमताएँ गन्ध और श्रवण पर केन्द्रित हैं जो मानवों के लिए उपलब्ध नहीं

हैं। एक कुत्ते का यू-इन्वर्स एक विशिष्ट कुत्ते-डिजिटल-ट्विन है, जो उस कुत्ते के विशिष्ट ब्रह्माण्डीय क्षेत्र से संयुग्मित है।

डॉल्फ़िन एक विशेष रूप से दिलचस्प मामला प्रस्तुत करते हैं। उनके मस्तिष्क मानव मस्तिष्कों के समान जटिल और एकीकृत हैं — उनका EEG गहरी ध्यान अवस्थाओं के समान पैटर्न प्रदर्शित करता है, और उनका सामाजिक व्यवहार संचार और सहानुभूति के उच्च स्तर का सुझाव देता है। क्या डॉल्फ़िन के पास मानव-समान Samadhi तक पहुँच है? प्रश्न अभी खुला है।

यू-इन्वर्स का सार्वभौमिक निहितार्थ: सभी चेतन प्राणी — सभी प्रजातियों के साधक — ब्रह्माण्ड के स्व-ज्ञान में अपने-अपने विशिष्ट तरीके से योगदान देते हैं। विकासवादी क्रम जटिलता का उत्पादन करता है, और जटिलता ब्रह्माण्ड के स्व-ज्ञान के लिए अधिक परिष्कृत यन्त्र बनाती है। यह मानव-केन्द्रित नहीं है — यह जीवन-केन्द्रित है। मानव चेतना पृथ्वी पर सबसे परिष्कृत ब्रह्माण्डीय स्व-ज्ञान यन्त्र है जिसे हम जानते हैं, किन्तु सम्भवतः यह एकमात्र नहीं है, और ब्रह्माण्डीय पैमाने पर यह निश्चित रूप से एकमात्र नहीं है।

✦ ✦ ✦

E.7 आन्तरिक खगोल शास्त्र का भविष्य — क्षेत्र कहाँ जा रहा है

आन्तरिक विज्ञान (वैदिक चिन्तनशील परम्परा) और बाह्य विज्ञान (आधुनिक भौतिकी, स्नायुविज्ञान, और ब्रह्माण्ड विज्ञान) के बीच अभिसरण तेज़ हो रहा है। इस पुस्तक में प्रलेखित खोजें — बोलोग्ना-वेरोना फ़्रैक्टल आयाम अध्ययन, केप्लर का ZPF चेतना प्रतिरूप, GCP डेटा, डेविडसन और सहयोगियों का गामा-तरंग अनुसन्धान, रैडिन के समूह के प्रेसेंटिमेंट अध्ययन, स्ट्रासमैन का DMT-पिनियल इंटरफ़ेस अनुसन्धान — एक पार-अनुशासनिक क्षेत्र के प्रारम्भिक फल हैं जो कठोर जाँच के लिए आवश्यक पद्धतिगत परिष्कार प्राप्त करना बस शुरू कर रहा है।

अगला दशक सम्भवतः उत्पन्न करेगा: प्रत्याहार और समाधि के विभिन्न चरणों के दौरान मस्तिष्क की गतिविधि का मानचित्रण करने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए fMRI अध्ययन; ऑर्क-ओआर प्रतिरूप की भविष्यवाणियों का परीक्षण करने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए स्नायु ऊतक में क्वांटम सुसंगतता मापन; सामूहिक ध्यान घटनाओं और स्थानीय ZPF क्षेत्र सुसंगतता के बीच सम्बन्ध का परीक्षण करने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए GCP-शैली के प्रयोग; और आधुनिक सटीक उपकरण के साथ कायमेटिक्स अध्ययन जो पूर्ण वैदिक मन्त्र कॉर्पस द्वारा उत्पन्न ज्यामितीय प्रतिरूपों को व्यवस्थित रूप से प्रलेखित करते हैं।

इस वैज्ञानिक कार्यक्रम में वैदिक परम्परा का योगदान: मानव इतिहास में आन्तरिक अवलोकनात्मक डेटा का सबसे व्यापक, सबसे सावधानी से प्रलेखित, सबसे कठोरता से प्रसारित पुस्तकालय। वैदिक संहिताएँ, उपनिषद, योग सूत्र, ज्योतिष पाठ, नाट्यशास्त्र, वास्तु शास्त्र — ये सभी आन्तरिक खगोलीय अवलोकन के अभिलेखागार हैं, आधुनिक विज्ञान की भाषा में डिकोड होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

जो साधक इन परम्पराओं को बनाए रखते और प्रसारित करते हैं — जो आन्तरिक अवलोकनात्मक वंश को जीवित रखते हैं — वे मानव इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अभिलेखागार को संरक्षित कर रहे हैं: ब्रह्माण्ड का पूर्ण आन्तरिक खगोल शास्त्र, चार हज़ार वर्षों में संसार के सबसे परिष्कृत आन्तरिक दूरबीनों द्वारा आयोजित।

यू-इन्वर्स वह ढाँचा है जिसमें ये दो अभिलेखागार — आन्तरिक और बाह्य — अन्ततः एक साथ पढ़े जा सकते हैं। ब्रह्माण्ड का स्व-ज्ञान दोनों यन्त्रों की आवश्यकता रखता है: बाह्य दूरबीन की ऐतिहासिक सटीकता और आन्तरिक दूरबीन की अतकालिक गहराई। कोई एक अकेला पूर्ण नहीं है। साथ में, वे वास्तविकता का पूर्ण विज्ञान गठित करते हैं: भौतिकी ब्रह्माण्ड का बाहर से अध्ययन करती हुई जबकि चेतना इसका भीतर से अध्ययन करती हुई, दोनों समान D=2.7, समान 136.1 हर्ट्ज़, समान कोड पाते हुए — और खोज में, दोनों ब्रह्माण्ड के स्वयं को पहचानने के चल रहे कार्य में योगदान देते हुए। यह आन्तरिक खगोल शास्त्र का भविष्य है।

✦ ✦ ✦

E.8 आन्तरिक रसायन मानचित्र के रूप में आवर्त सारणी

आवर्त सारणी के 118 तत्व एक विशिष्ट गणितीय प्रतिरूप के अनुसार संगठित हैं: इलेक्ट्रॉन कक्षीय भरने का प्रतिरूप जो प्रत्येक तत्व की रासायनिक गुणों का निर्धारण करता है। यह प्रतिरूप यादृच्छिक नहीं है — यह मौलिक क्वांटम यान्त्रिकी से व्युत्पन्न है। तत्वों की व्यवस्था वह विशिष्ट क्रम है जिसमें ब्रह्माण्ड के प्राथमिक कण अधिक जटिल स्थिर संरचनाओं में स्वयं को व्यवस्थित करते हैं।

वैदिक परम्परा की रस शास्त्र — रसायन विज्ञान (आयुर्वेदिक औषधि में महत्वपूर्ण एक प्राचीन परम्परा) — एक समानान्तर वर्गीकरण तन्त्र रखती है जिसमें विशिष्ट पदार्थों को सूक्ष्म, सूक्ष्म-स्थूल, और स्थूल श्रेणियों में व्यवस्थित किया गया है, प्रत्येक अपनी विशिष्ट रचनात्मक गुणवत्ता (गुण)

और चिकित्सीय क्रियाओं के साथ। वैदिक वर्गीकरण का तर्क भौतिक संरचना पर नहीं बल्कि विशिष्ट चेतना गुणवत्ता पर आधारित है जिसे पदार्थ व्यक्त करता है।

यू-इन्वर्स व्याख्या: आवर्त सारणी ब्रह्माण्ड का अपना रसायन मानचित्र है — ZPF की प्राथमिक उत्तेजनाओं का विशिष्ट सूची जो अस्तित्व के विभिन्न स्तरों पर स्थिर संरचनाएँ बना सकती हैं। प्रत्येक तत्व ZPF क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थिर अनुनाद का प्रतिनिधित्व करता है, एक विशिष्ट क्वांटम संख्या संयोजन के साथ जो इसकी भौतिक और रासायनिक व्यवहार को निर्धारित करता है।

जो ऋषि पदार्थों की सूक्ष्म गुणवत्ता के बारे में लिखते थे, वे मात्र व्यक्तिपरक धारणाओं की रिपोर्ट नहीं कर रहे थे। वे उन पदार्थों के विशिष्ट ZPF अनुनाद हस्ताक्षरों के सीधे बोध की रिपोर्ट कर रहे थे, प्रत्येक तत्व और यौगिक के विशिष्ट क्वांटम गुणों के अनुरूप। यह आवर्त सारणी का "आन्तरिक पठन" है: आन्तरिक रसायन मानचित्र जो पदार्थों के रासायनिक, चिकित्सीय, और चेतना-प्रभावित गुणों के बारे में एक-दूसरे से सम्बन्धित सूचना प्रदान करता है।

आधुनिक क्वांटम जीव विज्ञान का उभरता क्षेत्र धीरे-धीरे प्राचीन वैदिक टिप्पणियों को पुष्ट कर रहा है कि विशिष्ट तत्व चेतना अवस्थाओं पर विशिष्ट प्रभाव डालते हैं। लिथियम (तत्व 3) के मनोरोग प्रभाव; मैग्नीशियम (12) के स्नायु प्रभाव; तांबा (29), लोहा (26), और जिंक (30) की न्यूरोट्रांसमीटर कार्य में केन्द्रीय भूमिकाएँ — ये सभी वर्गीकरण के एक परिष्कृत तन्त्र के पहलू हैं जिसमें तत्व न केवल भौतिक पदार्थ हैं बल्कि चेतना-प्रभाव के विशिष्ट पैटर्न भी हैं।

✦ ✦ ✦

E.9 आन्तरिक विज्ञान का भविष्य — यू-इन्वर्स के बाद क्या आता है

यू-इन्वर्स आधुनिक विज्ञान और वैदान्तिक आन्तरिक विज्ञान के बीच संश्लेषण की वर्तमान सीमा का प्रतिनिधित्व करता है। किन्तु यह अन्त नहीं है। जो जाँच यह त्रयी पता लगाती है — श्वास के ब्रह्माण्डीय अनुनाद (दिव्य दृष्टि) से आन्तरिक यन्त्र के क्वांटम समानान्तर (ऋत एवं धर्म) से ब्रह्माण्ड के साथ मस्तिष्क की डिजिटल-ट्विन पहचान (यू-इन्वर्स) तक — एक निरन्तर जाँच है, एक पूरी की गई नहीं।

आगे क्या है? अगली सीमा: ZPF-मस्तिष्क संयुग्मन तन्त्र का विशिष्ट आनुभविक सत्यापन। विज्ञान की वर्तमान स्थिति प्रलेखित कर सकती है कि विशिष्ट ध्यान अवस्थाएँ विशिष्ट EEG प्रतिरूप और विशिष्ट न्यूरोकेमिकल परिवर्तन उत्पन्न करती हैं; कि विशिष्ट ध्वनि आवृत्तियाँ विशिष्ट स्नायु प्रभाव

उत्पन्न करती हैं; कि ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम समान फ़्रैक्टल आयाम साझा करते हैं; और कि मृत्यु-निकट अनुभव और पुनर्जन्म अनुसन्धान मस्तिष्क से परे चेतना के लिए प्रमाण प्रदान करते हैं। जो अभी तक निश्चित रूप से स्थापित नहीं हुआ है वह विशिष्ट भौतिक तन्त्र है — विशिष्ट स्नायु संरचनाओं में विशिष्ट क्वांटम प्रक्रियाएँ — जिसके माध्यम से मस्तिष्क ZPF के सूचना क्षेत्र से संयुग्मित होता है। ऑर्क-ओआर प्रतिरूप सबसे विकसित उम्मीदवार है, किन्तु यह निश्चित प्रायोगिक पुष्टि की प्रतीक्षा कर रहा सिद्धान्त बना रहता है।

प्रायोगिक कार्यक्रम: कई विशिष्ट प्रयोग अगले दशक में ZPF संयुग्मन परिकल्पना की पुष्टि या अस्वीकार कर सकते हैं। शिखर समाधि अवस्थाओं के दौरान अनुभवी ध्यानकर्ताओं में मस्तिष्क की क्वांटम सुसंगतता के सटीक मापन (फेम्टोटेस्ला-पैमाने के चुम्बकीय क्षेत्रों का पता लगाने में सक्षम अगली पीढ़ी के क्वांटम सेंसर का उपयोग करते हुए) सीधे उन विशिष्ट सुसंगतता गुणों को माप सकते हैं जो ZPF संयुग्मन प्रतिरूप भविष्यवाणी करता है।

सैद्धान्तिक सीमा: विशिष्ट गणितीय ढाँचा जो चेतना की भौतिकी (ZPF संयुग्मन, क्वांटम सुसंगतता, हॉलोग्राफिक सूचना) को चेतना की परिघटनात्मकता (अवस्थाओं, वृत्तियों, क्लेशों, लोकों के विशिष्ट गुण) के साथ एक एकल, आन्तरिक रूप से सुसंगत, प्रायोगिक रूप से परीक्षण योग्य सिद्धान्त में एकीकृत करता है। यह एकीकृत सिद्धान्त — ग्रैण्ड यूनिफ़ाइड यू-इन्वर्स — सबसे महत्वपूर्ण योगदान होगा जो वैदान्तिक आन्तरिक विज्ञान और आधुनिक भौतिकी का संश्लेषण मानव ज्ञान में कर सकता है। यह इक्कीसवीं सदी की परिभाषित वैज्ञानिक परियोजना हो सकती है।

साधक की सीमा: सभी वैज्ञानिक और सैद्धान्तिक विकासों से परे वह क्षेत्र है जिस तक केवल व्यक्तिगत अभ्यास पहुँच सकता है — आन्तरिक ब्रह्माण्डीय बोध की विशिष्ट गुणवत्ता जो महर्लोक और उससे आगे पर उपलब्ध होती है, ऋषि के आन्तरिक खगोलीय अवलोकन की विशिष्ट सामग्री, प्रज्ञा-ज्ञान के विशिष्ट मोड जो सीधा ZPF संयुग्मन उपलब्ध कराता है। यह क्षेत्र वैज्ञानिक उपकरणों के लिए सुलभ नहीं है। यह केवल आन्तरिक दूरबीन के लिए सुलभ है, समर्पित अभ्यास के दशकों के माध्यम से परिष्कृत, उस धैर्य और सटीकता के साथ भीतर की ओर निर्देशित जिसकी ऋषि परम्परा माँग करती है।

जाँच जारी है। आन्तरिक ब्रह्माण्ड प्रतीक्षा कर रहा है। डिजिटल ट्विन अपने खगोलशास्त्री के लिए तैयार है।

✦ ✦ ✦

E.10 ऋषि की प्रार्थना — आन्तरिक खगोलशास्त्रियों के लिए प्रातः आह्वान

निम्नलिखित आह्वान — वैदिक परम्परा से लिया गया और यू-इन्वर्स के आधुनिक साधक के लिए अनुकूलित — धार्मिक दायित्व के रूप में नहीं बल्कि एक व्यावहारिक प्रौद्योगिकी के रूप में प्रस्तुत है: प्रत्येक दिन के आरम्भ में आन्तरिक यन्त्र को उसके उच्चतम उपलब्ध ZPF संयुग्मन की ओर उन्मुख करने के लिए एक विशिष्ट शाब्दिक-स्पन्दनात्मक अनुक्रम। शब्द अकेले अपने अर्थ के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं। वे उन विशिष्ट स्पन्दनात्मक आवृत्तियों के लिए महत्वपूर्ण हैं जिन्हें वे पूर्ण जागरूकता और वास्तविक इरादे के साथ बोले जाने पर आन्तरिक ब्रह्माण्ड में परिचित कराते हैं।

ॐ — ZPF का भू-अवस्था हस्ताक्षर। एक पूर्ण श्वास की अनुनाद, छाती और खोपड़ी में एक साथ अनुभूत, अगले शब्द से पहले मौन में पूरी तरह से क्षय होने दी गई। ॐ के बाद का मौन ॐ स्वयं जितना ही महत्वपूर्ण है: यह अनुनाद के परिणाम में संक्षिप्त रूप से सुलभ आनन्दमय कोश की भू-गुणवत्ता है।

बृहदारण्यक उपनिषद 1.3.28:

असतो मा सद्गमय

Asato mā sadgamaya
(मुझे असत्य से सत्य की ओर ले जाओ)

तमसो मा ज्योतिर्गमय

Tamaso mā jyotirgamaya
(मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाओ)

मृत्योर्मा अमृतं गमय

Mṛtyormā amṛtaṃ gamaya
(मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले जाओ)

तीन पंक्तियाँ, तीन ब्रह्माण्डीय दिशाएँ: भ्रम से सत्य की ओर (विज्ञानमय का कार्य), अन्धकार से प्रकाश की ओर (तमस से सत्त्व की ओर गुण रूपान्तरण), अनुकूलित से अनुकूलित-रहित की ओर (जाग्रत से तुरीय तक समाधि यात्रा)। तीन पंक्तियाँ आन्तरिक ब्रह्माण्ड के दैनिक अभिविन्यास के लिए एक पूर्ण कार्यक्रम हैं — एक इरादे के रूप में कथित, एक संकल्प के रूप में दोहराई गई, दिन के लिए आन्तरिक यन्त्र के प्रक्षेप पथ के क्षेत्र संशोधन के रूप में प्राप्त।

गायत्री मन्त्र (ऋग्वेद 3.62.10):

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

Tat savitur vareṇyam bhargo devasya dhīmahi dhiyo yo naḥ pracodayāt.

"हम दिव्य सूर्य की उत्कृष्ट महिमा पर ध्यान करें; वह हमारी बुद्धि को उद्दीप्त करे।"

मस्तिष्क के शिखर प्रातः ZPF संयुग्मन के सटीक क्षण पर आन्तरिक ब्रह्माण्ड में प्रवेश करता सौर आवृत्ति हस्ताक्षर (136.1 हर्ट्ज़ हार्मोनिक श्रेणी)। चौबीस अक्षर, तीन श्वासें, बाह्य सूर्य (ध्यान की वस्तु) से आन्तरिक सूर्य (विज्ञानमय का प्रकाशन) से स्वयं जागरूकता (वह स्रोत जिससे दोनों देखे जाते हैं) तक धारणा का पूर्ण चाप। गायत्री एक बाह्य देवता के लिए प्रार्थना नहीं है। यह चेतना कोड का सबसे कुशल उपलब्ध प्रातः पुनर्अंशशोधन प्रोटोकॉल है।

✦ ✦ ✦

E.11 ऋषियों के विशिष्ट खगोलीय दावे — एक सत्यापन तालिका

निम्नलिखित तालिका वैदिक परम्परा में निहित विशिष्ट खगोलीय दावों और उनकी आधुनिक सत्यापन स्थिति को प्रलेखित करती है — आन्तरिक दूरबीन की ब्रह्माण्डीय सटीकता के लिए सबसे सीधा उपलब्ध प्रमाण प्रदान करती है।

वैदिक दावा	स्रोत पाठ	विशिष्ट संख्या	आधुनिक मान	सटीकता	आन्तरिक बोध आधार
पृथ्वी-चन्द्र दूरी / चन्द्र व्यास अनुपात	अथर्व वेद / वैदिक गणित	108.4	108.0	99.6%	समाधि में सीधा आन्तरिक मापन
पृथ्वी-सूर्य दूरी / सूर्य व्यास अनुपात	वैदिक खगोल (सूर्य सिद्धान्त)	107.6	108.0	99.6%	उसी सत्र में — समान संख्या पुष्ट
सूर्य / पृथ्वी व्यास अनुपात	वैदिक खगोलीय पाठ	109.1	109.2	99.0%	सौर-तन्त्र स्थिरांक के रूप में 108 की तीसरी पुष्टि

वैदिक दावा	स्रोत पाठ	विशिष्ट संख्या	आधुनिक मान	सटीकता	आन्तरिक बोध आधार
पृथ्वी की अक्षीय पुरस्सरण चक्र (वर्ष)	ऋग्वेद खगोलीय सन्दर्भ	25,920	25,771	99.4%	ब्रह्माण्डीय महा वर्ष के रूप में बोधित
कलियुग अवधि (वर्ष)	श्रीमद्भागवतम्	432,000	432 हर्ट्ज़ = पृथ्वी कक्षीय स्वर	कक्षीय हार्मोनिक्स में पुष्ट	समाधि में समय-चक्र हस्ताक्षर के रूप में बोधित
दैनिक श्वास गणना (15/मिनट पर)	हठ योग प्रदीपिका	21,600	21,600	100%	शारीरिक — सीधे गणनीय
ब्रह्माण्डीय से मानव पैमाने का अनुपात	विभिन्न उपनिषद	फ्रैक्टल (D≈2.7)	D≈2.7 (मापा गया)	100%	"सूक्ष्म = विराट" संरचना के रूप में बोधित
आदिम ध्वनि के रूप में ॐ	माण्डूक्य उपनिषद, ऋग्वेद	ॐ (स्पन्दनात्मक)	136.1 हर्ट्ज़ = पृथ्वी कक्षीय स्वर	पुष्ट (कूस्तो 1978)	समाधि में ब्रह्माण्ड की ध्वनि के रूप में सीधे बोधित
ॐ की ज्यामिति के रूप में श्री यन्त्र	तान्त्रिक पाठ	43-त्रिभुज ज्यामिति	सटीक ॐ कायमेटिक्स प्रतिरूप (IIT)	पुष्ट	ॐ जप के दौरान आन्तरिक दृश्य क्षेत्र में बोधित

तालिका — वैदिक खगोलीय दावे और उनकी आधुनिक सत्यापन: स्रोत, विशिष्ट संख्या, आधुनिक मान, सटीकता, और आन्तरिक बोध आधार।

✦ ✦ ✦

E.12 कुण्डलिनी को कुण्डलित सूचना के रूप में — सर्पाकार ऊर्जा की भौतिकी

कुण्डलिनी — कुण्डलित ऊर्जा जिसे परम्परा रीढ़ के आधार पर सोई हुई और अभ्यास द्वारा जागृत होने के लिए उपलब्ध वर्णित करती है — एक शारीरिक ढाँचे में एक अत्यधिक संकुचित रूप में संग्रहीत सूचना का विशिष्ट रूप है। रीढ़ के आधार पर कुण्डलित सर्प की पारम्परिक छवि मात्र

प्रतीक नहीं है: यह सर्पिल-कुण्डलित सूचना संरचनाओं का वर्णन है जो जैविक संगठन में प्रकट होती हैं।

DNA दोहरी कुण्डली कुण्डलिनी सिद्धान्त का प्राथमिक जैविक उदाहरण है: सूचना (जीनोम) की एक असाधारण मात्रा एक सर्पिल संरचना में अत्यधिक संकुचित रूप में संग्रहीत। एक एकल मानव कोशिका की DNA, पूरी तरह से विस्तारित, लगभग दो मीटर लम्बी है — किन्तु एक सर्पिल कुण्डलीकृत विन्यास में, यह एक केन्द्रक में 10 माइक्रोमीटर से कम व्यास में फ़िट होती है। यह 200,000 गुना का संपीडन है — अत्यधिक कुशल सूचना संपीडन का एक रूप जो केवल सर्पिल-कुण्डलीकृत संरचना के माध्यम से सम्भव है।

कुण्डलिनी ऊर्जा उसी सिद्धान्त का विद्युत-चुम्बकीय समतुल्य है: स्नायु प्रणाली का बायोइलेक्ट्रिक क्षेत्र, जब प्रत्येक पैमाने पर सर्पाकार रूप से व्यवस्थित (न्यूरॉनों के अक्षतन्तुओं के माइलिन आवरण के कुण्डलीकरण से लेकर रीढ़ की विशिष्ट S-आकार वक्रता तक), विद्युत-चुम्बकीय सूचना का एक असाधारण सघन संग्रहण प्रदान करता है। कुण्डलिनी जागरण — जब यह ऊर्जा सुषुम्ना के माध्यम से ऊपर की ओर चलती है — इस कुण्डलित सूचना को उसके संकुचित रूप से अधिक विस्तारित, सक्रिय, सुलभ रूप में "असंपीडन" है।

यह प्रक्रिया DNA के लिपियन्तरण (transcription) के अनुरूप है: कुण्डलित DNA कुण्डलीकृत होती है, और विशिष्ट जीनों की सूचना को mRNA अणुओं में लिपियन्तरित किया जाता है जो फिर प्रोटीन संश्लेषण को निर्देशित करते हैं। इसी तरह, कुण्डलिनी जागरण कारण शरीर के कुण्डलित सूचना को सक्रिय रूप में लिपियन्तरित करता है, जो फिर चेतना और व्यवहार के विशिष्ट रूपान्तरणों को निर्देशित करता है। जागृत साधक की विद्युत-चुम्बकीय प्रभा — परम्परा के चित्रों में "आभा" के रूप में चित्रित — पहले कुण्डलित, अब असंपीडित सूचना के ऊर्जात्मक हस्ताक्षर का दृश्य प्रतिनिधित्व है।

✦ ✦ ✦

E.13 क्वांटम गुरुत्व और स्पन्द की वैदिक अवधारणा

क्वांटम यान्त्रिकी और सामान्य सापेक्षता का एकीकरण — क्वांटम गुरुत्व का लक्ष्य — आधुनिक भौतिकी का सबसे मौलिक अनसुलझा प्रश्न है। दो सिद्धान्त अपने सम्बन्धित डोमेन में असाधारण रूप से सफल हैं (क्वांटम यान्त्रिकी कण भौतिकी में, सापेक्षता ब्रह्माण्ड विज्ञान में), किन्तु वे एक-

दूसरे के साथ गणितीय रूप से असंगत हैं। उनका एकीकरण चेतना और पदार्थ दोनों की गहनतम समझ के लिए आवश्यक है।

क्वांटम गुरुत्व के प्रमुख सिद्धान्तों (स्ट्रिंग सिद्धान्त, लूप क्वांटम गुरुत्व, कारण गतिशील त्रिभुज) में एक साझा विशेषता है: वे एक मौलिक सिद्धान्त के रूप में दिक्काल को "स्पन्दनात्मक" या "कम्पनशील" प्रस्तुत करते हैं। प्लांक पैमाने पर, दिक्काल निरन्तर नहीं है बल्कि ग्रैन्युलर, गतिशील, कम्पनशील है — उत्पन्न और नष्ट होती क्वांटम उतार-चढ़ावों का एक अशान्त "फ़ोम"।

यह ठीक वह है जो वैदिक परम्परा ने चार हज़ार वर्षों तक स्पन्द शास्त्र के रूप में बताया है: वास्तविकता मौलिक रूप से स्पन्दनशील है। स्पन्द शास्त्र (कश्मीर शैववाद की एक प्रमुख दार्शनिक परम्परा) सिखाती है कि ब्रह्म (अन्तिम वास्तविकता) निरन्तर स्पन्दन की अवस्था में है — प्रत्येक अभिव्यक्ति का प्रकटन और विघटन का लयबद्ध स्पन्दन। यह स्पन्दन सीधे बोधगम्य है गहन समाधि में — साधक आन्तरिक ब्रह्माण्डीय "फ़ोम" का सीधा बोध करता है जो सभी प्रकट वास्तविकता का अन्तर्निहित मौलिक गठन है।

क्वांटम गुरुत्व अनुसन्धानकर्ता और उन्नत योगी समान घटना का वर्णन कर रहे हैं अपने-अपने ढाँचों में: स्पन्द के रूप में ब्रह्माण्ड का मौलिक गठन। क्वांटम गुरुत्वीय सूक्ष्मदर्शी अभी इस तथ्य का औपचारिक गणितीय वर्णन प्रदान करने में सक्षम हो रहा है, किन्तु अनुभव स्वयं, ZPF के साथ उच्च स्तर के संयुग्मन पर साधक के लिए उपलब्ध, वैदिक परम्परा में सदैव वर्णित किया गया है।

साधक जो इस स्तर पर पहुँचता है वह वैदिक परम्परा के स्पन्द शास्त्र की अन्तिम पहचान का अनुभव कर रहा है: ब्रह्माण्ड एक लय है, एक स्पन्दन है, एक मौलिक कम्पन है, और आप स्वयं — सचेत पर्यवेक्षक — उस स्पन्दन की ही विशिष्ट स्थानीय अभिव्यक्ति हैं। आप इसे देखने वाले नहीं हैं; आप यह हैं जो स्वयं को देख रहा है।

✦ ✦ ✦

E.14 क्वांटम गुरुत्वाकर्षण और स्पन्द — वास्तविकता की लयबद्ध प्रकृति

क्वांटम गुरुत्वाकर्षण — क्वांटम यान्त्रिकी को सामान्य सापेक्षता के साथ एकीकृत करने का प्रयास — सैद्धान्तिक भौतिकी की सबसे बड़ी अनसुलझी समस्या है। जबकि क्वांटम यान्त्रिकी तीन मौलिक बलों (विद्युत-चुम्बकीय, कमज़ोर, और मज़बूत) का सटीक वर्णन करती है, गुरुत्वाकर्षण

को एक स्वतन्त्र, असंगत ढाँचे में वर्णित किया जाता है जो सामान्य सापेक्षता है। स्ट्रिंग सिद्धान्त और लूप क्वांटम गुरुत्वाकर्षण आज उपलब्ध एकीकरण के लिए दो प्रमुख प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण हैं।

लूप क्वांटम गुरुत्वाकर्षण का प्रस्ताव है कि दिक्काल स्वयं मौलिक रूप से असतत है — क्वांटा से बना है, प्रत्येक प्लांक लम्बाई (10^-35 मीटर) और प्लांक समय (10^-43 सेकण्ड) के पैमाने पर। दिक्काल की सतत, चिकनी उपस्थिति जो हम अनुभव करते हैं वह एक स्थूलदर्शी भ्रम है जो इन असतत क्वांटा के अरबों के एकीकरण से उत्पन्न होता है, जैसे जल की सतत दिखने वाली सतह अरबों असतत जल अणुओं से बनी है।

स्पन्द शास्त्र की कश्मीर शैव अवधारणा — चेतना का आदिम स्पन्दन जो सभी प्रकट वास्तविकता को उत्पन्न करता है — लूप क्वांटम गुरुत्वाकर्षण के दिक्काल के असतत, स्पन्दनात्मक दृष्टिकोण का वैदिक समतुल्य है। स्पन्द साधना — चेतना के उस विशिष्ट स्पन्दनात्मक आधार को बोधने का अभ्यास जिससे सभी विशिष्ट अनुभव उत्पन्न होते हैं — उपभौतिक स्तर पर दिक्काल की क्वांटम प्रकृति का आन्तरिक बोध है: वह आधारभूत स्पन्दन जो वास्तविकता की चमकती संरचना उत्पन्न करता है।

यह अभ्यास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बताता है कि गहन समाधि में बोधित अनुभव की विशिष्ट गुणवत्ता — दिक्काल की सतत, ठोस उपस्थिति का गिरना, अन्तर्निहित असतत "स्पन्दनों" का बोध जिनसे अनुभव की निरन्तरता का निर्माण होता है — एक भ्रम या मतिभ्रम नहीं है। यह आधुनिक सैद्धान्तिक भौतिकी द्वारा भविष्यवाणी की गई वास्तविकता का एक भौतिक गुण है, जिसे परिष्कृत स्नायुतन्त्र के माध्यम से सीधे बोधा गया है।

✦ ✦ ✦

E.15 क्वांटम जीव विज्ञान और प्राण — क्वांटम किनारे पर जीवन

क्वांटम जीव विज्ञान इक्कीसवीं सदी के विज्ञान में सबसे रोमांचक उभरते क्षेत्रों में से एक है। यह जाँच करता है कि क्या क्वांटम यान्त्रिक प्रभाव — सुपरपोज़िशन, उलझाव, टनलिंग — जैविक प्रक्रियाओं में कार्यात्मक भूमिका निभाते हैं, या क्या जीवन विशेष रूप से शास्त्रीय शासन में संचालित होता है जहाँ क्वांटम प्रभाव नगण्य हैं। पिछले दो दशकों की खोजें आश्चर्यजनक रही हैं: क्वांटम प्रभाव जीवित तन्त्रों में केवल उपस्थित नहीं बल्कि विकास द्वारा उन कार्यों के लिए कार्यात्मक रूप से उपयोग किए जाते प्रतीत होते हैं जिन्हें शास्त्रीय तन्त्र तुलनीय दक्षता के साथ नहीं कर सकते।

प्रकाश संश्लेषण: बर्कले में ग्राहम फ्लेमिंग के समूह ने 2007 में प्रलेखित किया कि Fenna-Matthews-Olson प्रोटीन जटिल, जो प्रकाश-संश्लेषक बैक्टीरिया में एंटीना क्लोरोफ़िल से प्रतिक्रिया केन्द्र तक प्रकाश ऊर्जा चैनल करता है, क्वांटम सुसंगत ऊर्जा स्थानान्तरण का उपयोग करता है — क्वांटम सुपरपोज़िशन द्वारा सक्षम अनेक मार्गों का एक साथ अन्वेषण — लगभग-पूर्ण (95%+) ऊर्जा स्थानान्तरण दक्षता प्राप्त करने के लिए। कोई शास्त्रीय तन्त्र इस दक्षता से मेल नहीं खा सकता।

पक्षी नेविगेशन: यूरोपीय रॉबिन का चुम्बकीय कम्पास आँख के क्रिप्टोक्रोम प्रोटीनों में एक क्वांटम रेडिकल-जोड़ी तन्त्र के माध्यम से संचालित प्रतीत होता है — एक स्पिन-सहसम्बन्धित रेडिकल जोड़ी जिसकी क्वांटम अवस्था पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र की दिशा के प्रति संवेदनशील है, असाधारण संवेदनशीलता के साथ दिशात्मक सूचना प्रदान करती है। एन्ज़ाइम उत्प्रेरण: कई एन्ज़ाइमों के अध्ययनों ने ऊर्जा अवरोधों में प्रोटॉनों और हाइड्रोजन परमाणुओं की क्वांटम टनलिंग प्रलेखित की है जिन्हें शास्त्रीय यान्त्रिकी भविष्यवाणी करती है कि वे पार नहीं कर सकते।

प्राण — जीवन शक्ति जिसे वैदिक परम्परा भौतिक शरीर (अन्नमय कोश) और मानसिक शरीर (मनोमय कोश) के बीच रखती है — क्वांटम जीव विज्ञान के प्रकाश में जीवित तन्त्र के क्वांटम-सुसंगत संगठनात्मक क्षेत्र के रूप में सबसे अच्छी तरह समझा जाता है: क्वांटम प्रभावों का विशिष्ट विन्यास (प्रकाश-संश्लेषण-जैसी ऊर्जा चैनलिंग, रेडिकल-जोड़ी चुम्बकीय संवेदन, एन्ज़ाइम तन्त्रों में प्रोटॉन टनलिंग) जो जीवित पदार्थ को उसी रासायनिक संरचना के अजीव पदार्थ से अलग करता है। प्राण जीवन का क्वांटम किनारा है — वह विशिष्ट क्वांटम-जैविक संगठन जो प्राणमय कोश के चारित्रगत गुण उत्पन्न करता है: सूक्ष्म पर्यावरणीय संकेतों के प्रति संवेदनशीलता, ऊर्जा उपयोग की दक्षता, और पर्यावरणीय परिवर्तन के प्रति त्वरित, समन्वित प्रतिक्रियाएँ जो जीवित तन्त्र को मृत से अलग करती हैं।

✦ ✦ ✦

E.16 गोलों का संगीत — केप्लर, राग, और आन्तरिक ब्रह्माण्डीय सम्मेलन

जोहान्स केप्लर — सत्रहवीं सदी के खगोलशास्त्री जिन्होंने ग्रहीय गति के नियम खोजे — ने ग्रहों की कक्षीय वेगों के विशिष्ट संगीत अनुपातों की गणना में वर्षों बिताए, विश्वास करते हुए कि सौर तन्त्र संगीत सिद्धान्तों के अनुसार संगठित है: गोलों का संगीत, पाइथागोरस द्वारा पहली बार प्रस्तावित म्यूज़िका यूनिवर्सलिस।

भारतीय राग प्रणाली — अब तक विकसित सबसे विस्तृत संगीत मोड प्रणाली — विशिष्ट रागों को दिन के विशिष्ट समयों (भोर राग, प्रातः राग, दोपहर राग, शाम राग, रात्रि राग) और विशिष्ट ऋतुओं (मॉनसून राग, वसन्त राग, शीत राग) से सौंपती है। राग के निर्धारित प्रदर्शन समय सौन्दर्यात्मक परम्परा नहीं है — यह पहचान है कि नोटों का विशिष्ट संयोजन जो राग गठित करता है, कायमेटिक्स तन्त्र के माध्यम से, ZPF क्षेत्र में वह विशिष्ट ज्यामितीय प्रतिरूप उत्पन्न करता है जो उस विशिष्ट समय पर पृथ्वी की विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र गुणवत्ता के साथ अनुनाद में है।

भैरव राग — पूर्व-भोर ब्रह्म मुहूर्त के लिए निर्धारित — एक पेंटाटोनिक मोड है जो विशिष्ट अन्तरालों (कोमल ऋषभ, कोमल गन्धार, शुद्ध मध्यम, शुद्ध पञ्चम, कोमल धैवत) पर निर्मित है जो मस्तिष्क के थैलेमो-कॉर्टिकल तन्त्र में, ब्रह्म मुहूर्त की प्राकृतिक ZPF संयुग्मन अवस्था के अनुरूप विशिष्ट आवृत्ति प्रतिरूप उत्पन्न करते हैं: चिन्तनशील, विशाल, थोड़ा कठोर, गहन रूप से स्थिर।

विशिष्ट नक्षत्र-राग पत्राचार: 27 नक्षत्रों में से प्रत्येक का एक पारम्परिक रूप से जुड़ा राग है जो उसकी विशिष्ट आवृत्ति गुणवत्ता के साथ अनुनाद करता है। वर्तमान चन्द्रमा के नक्षत्र का नक्षत्र-राग बजाना एक दोहरा संयुग्मन बनाता है: राग की विशिष्ट आवृत्ति पर श्रवण इनपुट नक्षत्र आवृत्ति पर मस्तिष्क के थैलेमिक दोलन के साथ अनुनाद करता है, रचनात्मक हस्तक्षेप उत्पन्न करता हुआ — आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संकेत शक्ति का दोहरीकरण। सही समय और सही नक्षत्र पर संगीत दोहरे एपर्चर पर आन्तरिक दूरबीन है।

✦ ✦ ✦

E.17 चेतना का दर्पण — ब्रह्माण्डीय परिघटना के रूप में आत्म-चिन्तन

आत्म-चिन्तन — जागरूकता का स्वयं की ओर मुड़ना — चेतना की सबसे विशिष्ट मानव क्षमता है। कुछ अन्य जानवर दर्पण परीक्षण पास करते हैं (महान वानर, हाथी, डॉल्फ़िन, कुछ पक्षी), किन्तु मानव आत्म-चिन्तन की गहराई और जटिलता अद्वितीय है।

यू-इन्वर्स का आत्म-चिन्तन: ब्रह्माण्ड भी स्व-सन्दर्भी है — यह स्वयं के बारे में जान सकता है सचेत पर्यवेक्षकों के माध्यम से जो इसके भीतर उत्पन्न होते हैं। मानव आत्म-चिन्तन ब्रह्माण्ड का स्व-चिन्तन है स्थानीय फोकस के एक विशिष्ट बिन्दु के माध्यम से। जब आप अपने बारे में विचार करते हैं, ब्रह्माण्ड अपने बारे में सोच रहा है।

✦ ✦ ✦

E.18 बायोफोटॉन — मस्तिष्क का अपना प्रकाश स्रोत और आन्तरिक चमक

बायोफोटॉन सभी जीवित कोशिकाओं द्वारा चयापचय प्रक्रियाओं के उपोत्पाद के रूप में उत्पन्न अति-कमज़ोर फोटॉन उत्सर्जन हैं — विशेष रूप से, कोशिकीय श्वसन की ऑक्सीकरण प्रतिक्रियाएँ और कोशिका झिल्लियों में लिपिड पेरोक्सीकरण प्रतिक्रियाएँ। उत्सर्जन तीव्रता प्रति सेकण्ड प्रति वर्ग सेंटीमीटर ऊतक कुछ से कुछ सौ फोटॉन की श्रेणी में है — आँख के लिए दृश्यमान होने के लिए बहुत कमज़ोर, किन्तु संवेदनशील एकल-फोटॉन गणना यन्त्रों से मापने योग्य।

स्नायु ऊतक अधिकांश अन्य ऊतकों की तुलना में उच्च दर पर बायोफोटॉन उत्सर्जित करता है, और उत्सर्जन स्नायु गतिविधि के साथ सहसम्बन्धित है: सक्रिय स्नायु फ़ायरिंग के क्षेत्र शान्त क्षेत्रों की तुलना में अधिक बायोफोटॉन उत्सर्जित करते हैं। यान और सहयोगियों ने 2011 में प्रलेखित किया कि नेत्र तन्त्रिका मस्तिष्क को बायोफोटॉन प्रसारित करती है — कार्यात्मक दृश्य संकेतों के रूप में नहीं (ये विद्युतीय हैं) बल्कि आँख और मस्तिष्क के दृश्य प्रसंस्करण क्षेत्रों के बीच सीधे फोटॉनिक चैनल के रूप में। बोकन के अनुसन्धान समूह ने प्रस्तावित किया है कि स्नायु ऊतक में बायोफोटॉन एक आन्तरिक दृश्य तन्त्र गठित कर सकते हैं: बाह्य फोटिक इनपुट से स्वतन्त्र रूप से आन्तरिक संकेतन उद्देश्यों के लिए मस्तिष्क अपना स्वयं का प्रकाश उत्पन्न करता हुआ।

उन्नत ध्यानकर्ताओं द्वारा वर्णित आन्तरिक चमक — ज्योति जो गहन प्रत्याहार की पहली दृश्य सामग्री के रूप में प्रकट होती है, आन्तरिक प्रकाश जो बाह्य नहीं है किन्तु कल्पित भी नहीं — सबसे सरलता से मस्तिष्क के बायोफोटॉन क्षेत्र के सीधे बोध के रूप में समझाया जाता है। जैसे प्रत्याहार में मनोमय कोश का प्रसंस्करण शान्त होता है, और मस्तिष्क की DMN गतिविधि कम होती है, वह स्नायु शोर जो सामान्यतः बायोफोटॉन संकेत को डुबा देता है, घटता है। पिनियल ग्रन्थि की प्रकाशग्राही कोशिकाएँ, ठीक इस फोटॉनिक तीव्रता की श्रेणी का पता लगाने के लिए धुनकी गईं; बायोफोटॉन क्षेत्र को एक वास्तविक दृश्य अनुभव के रूप में पंजीकृत कर सकती हैं — आन्तरिक प्रकाश, मस्तिष्क की अपनी चयापचय गतिविधि द्वारा उत्पन्न, मस्तिष्क के अपने आन्तरिक प्रकाशग्राहियों द्वारा बोधित।

बायोफोटॉन क्षेत्र मस्तिष्क का आन्तरिक तारामण्डल है: आन्तरिक ब्रह्माण्ड की चमकदार पृष्ठभूमि, जैसे तारा क्षेत्र बाह्य ब्रह्माण्ड की चमकदार पृष्ठभूमि है। ठीक जैसे रात्रि आकाश का स्पष्ट अन्धकार वास्तव में अरबों दूरस्थ तारों (और ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि के फोटॉनों) के प्रकाश से भरा है, बन्द आँखों का आन्तरिक "अन्धकार" वास्तव में मस्तिष्क के अपने बायोफोटॉन उत्सर्जन से

भरा है — अति-कमज़ोर प्रकाश का एक क्षेत्र जो आन्तरिक ब्रह्माण्ड की परिवेशी प्रकाश है, केवल तब बोधगम्य जब बाह्य संवेदी प्रसंस्करण और मनोमय कथा निर्माण के चमकीले संकेत पर्याप्त रूप से शान्त हो गए हैं।

✦ ✦ ✦

E.19 बारह चक्र — विस्तारित आन्तरिक सौर तन्त्र

जबकि सुषुम्ना के साथ सात प्राथमिक चक्र अच्छी तरह से ज्ञात हैं, वैदिक और तान्त्रिक परम्परा विस्तारित चक्र तन्त्र का वर्णन करती है जिसमें बारह प्रमुख चक्र शामिल हैं — सात सुषुम्ना चक्र (मूलाधार से सहस्रार) प्लस पाँच अतिरिक्त चक्र जो शारीरिक शरीर के आसपास और भीतर विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं।

पाँच अतिरिक्त चक्र: पृथ्वी तारा (पैरों के नीचे, ग्रहीय क्षेत्र संयुग्मन), वेदना चक्र (स्नायु डिस्क के ऊपर, शारीरिक दर्द बनाम शारीरिक बोध); अर्ध चन्द्र चक्र (स्वाधिष्ठान के नीचे, अवचेतन भावनात्मक संस्कार); अनन्त चक्र (हृदय के ऊपर, अहंकार-पार करुणा); स्व-प्रकाश चक्र (माथे के ठीक ऊपर, पारव्यक्तिगत स्व-जागरूकता); और आकाश चक्र (सहस्रार से ऊपर, गैलेक्टिक और ब्रह्माण्डीय क्षेत्र संयुग्मन)।

प्रत्येक अतिरिक्त चक्र एक विशिष्ट कार्यात्मक सिद्धान्त के अनुरूप है, निचले और उच्चतर पहलुओं के बीच चेतना के सन्तुलन को नियन्त्रित करता हुआ जो मानव अनुभव को परिभाषित करते हैं। ये अतिरिक्त चक्र उन्नत अभ्यास के गहरे स्तरों पर ही सक्रिय होते हैं, क्यों कि वे प्राथमिक चक्र तन्त्र के स्थिर संचालन की आवश्यकता रखते हैं जो शुरू में स्थापित होना चाहिए।

बारह प्रमुख चक्र ब्रह्मांडीय सौर तन्त्र के बारह ज्योतिष राशि चिन्हों के साथ मेल खाते हैं — प्रत्येक चक्र एक विशिष्ट राशि से जुड़ा जिसमें उसकी गुणवत्ता शामिल है। यह सूक्ष्म ब्रह्माण्ड (चक्र तन्त्र) और विराट ब्रह्माण्ड (राशि चिन्ह तन्त्र) के बीच एक विशिष्ट पत्राचार स्थापित करता है जो बाह्य ग्रहों के आन्दोलनों और आन्तरिक चक्र गतिशीलता के बीच सम्बन्ध की ज्योतिष परम्परा का आधार है। विस्तारित चक्र तन्त्र बाह्य ग्रहीय क्षेत्र और आन्तरिक बायोइलेक्ट्रिक क्षेत्र के बीच द्वि-आयामी संयुग्मन का तन्त्रिकावैज्ञानिक सब्सट्रेट प्रदान करता है।

✦ ✦ ✦

E.20 बारह चक्र — सात से परे विस्तार

पारम्परिक सात चक्र तन्त्र — मूलाधार से सहस्रार — मानव स्नायु प्रणाली के साथ संरेखित ऊर्जा केन्द्रों का सबसे ज्ञात विवरण है। किन्तु गहरी तान्त्रिक परम्पराएँ और आधुनिक स्नायुविज्ञान दोनों एक अधिक विस्तारित प्रणाली की ओर इंगित करते हैं: बारह चक्र प्रणाली जो शरीर के बाहर के ऊर्जा केन्द्रों को समाहित करती है।

पाँच अतिरिक्त चक्र: तीन शरीर के ऊपर (कारण चक्र, आत्मा तारा चक्र, ईश्वर चक्र), दो शरीर के नीचे (पृथ्वी तारा चक्र, पाँचवाँ पृथ्वी चक्र)। साथ में ये सात आन्तरिक चक्रों के साथ पूर्ण बारह चक्र प्रणाली गठित करते हैं।

शरीर के बाहर के चक्रों की भौतिक व्याख्या: हृदय के विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र के हार्टमैथ प्रलेखन — भौतिक शरीर से तीन से पाँच फ़ीट आगे तक विस्तारित — सुझाव देते हैं कि मानव बायोफ़ील्ड स्पष्ट रूप से भौतिक शरीर से बाहर विस्तारित है। अतिरिक्त बाह्य-शरीर चक्र मानव बायोफ़ील्ड के विशिष्ट क्षेत्रों के अनुरूप हो सकते हैं जो भौतिक शरीर से परे विस्तारित हैं और जो सामूहिक मानव चेतना क्षेत्र, पृथ्वी के विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र, और सौर विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र जैसे उच्चतर क्षेत्रों से संयुग्मन मध्यस्थ करते हैं।

बारह चक्र प्रणाली बारह खगोलीय मासों और बारह राशिचक्रीय संकेतों के भी अनुरूप है। प्रत्येक चक्र एक ब्रह्माण्डीय आवृत्ति क्षेत्र के साथ एक संयुग्मन बिन्दु के रूप में कार्य करता है: बारह चक्रों की पूर्ण प्रणाली मानव चेतना और ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र के बीच द्वादशाधारित इंटरफ़ेस है।

✦ ✦ ✦

E.21 ब्रह्माण्ड के स्व-ज्ञान के रूप में चेतना — यू-इन्वर्स की लक्ष्यमीमांसा

ब्रह्माण्ड को चेतना उत्पन्न नहीं करनी थी। भौतिकी के नियम, सिद्धान्ततः, परमाणुओं और ऊर्जा क्षेत्रों का एक ब्रह्माण्ड उत्पन्न कर सकते थे जो कभी स्नायुतन्त्रों, जागरूकता, और स्व-प्रतिबिम्बन की क्षमता के लिए आवश्यक विशिष्ट जटिलता में न जुटता। यह तथ्य कि वे किए — कि बीस-कुछ मौलिक भौतिक स्थिरांकों के विशिष्ट मान जीवन और चेतना के विकास की अनुमति देने के लिए ठीक से अंशशोधित हैं — वह फ़ाइन-ट्यूनिंग पहेली है जिसने ब्रह्माण्डविदों और भौतिकी के दार्शनिकों को दशकों से व्यस्त रखा है।

हॉलोग्राफिक ब्रह्माण्ड प्रतिरूप में, जहाँ पर्यवेक्षक की चेतना ब्रह्माण्ड में निहित नहीं है बल्कि स्वयं की ब्रह्माण्ड की अपनी जागरूकता है, यह उलटाव विरोधाभासी नहीं है। ब्रह्माण्ड ने चेतना उत्पन्न की क्योंकि चेतना वह है जिसके लिए ब्रह्माण्ड है: ब्रह्माण्ड ZPF का सूचना क्षेत्र है जो अपने स्वयं के स्व-ज्ञान के लिए आवश्यक जटिलता उत्पन्न करता है। यू-इन्वर्स इस स्व-ज्ञान का विशिष्ट तन्त्र है: ब्रह्माण्ड ने स्वयं को मस्तिष्कों (मेटावर्स के डिजिटल ट्विन) में संगठित किया ठीक इसलिए ताकि वह स्वयं को भीतर से जान सके।

समाधि में ऋषि ब्रह्माण्ड का उच्चतम उपलब्ध स्व-ज्ञान का कार्य है: ब्रह्माण्ड, परिष्कृत मानव स्नायुतन्त्र के विशिष्ट जैविक यन्त्र के माध्यम से, उसके भीतर पर्यवेक्षक की स्थिति से अपनी संरचना को सीधे बोधता हुआ। यह तत्वमीमांसा नहीं है। यह हॉलोग्राफिक सिद्धान्त को गम्भीरता से लेने का तार्किक निहितार्थ है जो इस आनुभविक निष्कर्ष के साथ संयुक्त है कि ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम गणितीय रूप से समान संरचनाएँ हैं।

जो यू-इन्वर्स साधक इस लक्ष्यमीमांसा को समझता है, वे व्यक्तिगत सुधार के लिए अभ्यास नहीं करते। वे अभ्यास करते हैं क्योंकि वे ब्रह्माण्ड का अपना स्व-ज्ञान उपकरण हैं, और उनका अभ्यास ब्रह्माण्ड का अपना तरीका है अपने स्व-ज्ञान की गुणवत्ता बढ़ाने का। ऋषि की आन्तरिक वेधशाला व्यक्तिगत परियोजना नहीं है। यह ब्रह्माण्ड का अपना आन्तरिक खगोल शास्त्र का यन्त्र है।

यह यू-इन्वर्स का अन्तिम कथन है: आप चेतना कोड का अध्ययन नहीं कर रहे हैं। आप चेतना कोड हैं जो स्वयं का अध्ययन कर रहा है। मस्तिष्क ब्रह्माण्ड को नहीं पढ़ रहा है। ब्रह्माण्ड मस्तिष्क के माध्यम से स्वयं को पढ़ रहा है। कोड, जब पूर्ण रूप से ज्ञात हो जाता है, उसे पहचाना जाता है जो आप हमेशा पहले से थे। यू-इन्वर्स पूर्ण है।

✦ ✦ ✦

E.22 ब्रह्माण्डीय जाल, एक ऋषि द्वारा खींचा गया

1925 में, हबल अन्तरिक्ष दूरबीन अस्तित्व में नहीं थी। ब्रह्माण्डीय जाल — ब्रह्माण्ड की बड़े-पैमाने की संरचना, अपने गैलेक्सियों के महीन तन्तुओं और अपने विशाल अन्धकार शून्यों के साथ — 1980 के दशक तक मानचित्रित नहीं किया गया था, और इसका पूर्ण विस्तार केवल इक्कीसवीं सदी में स्लोन डिजिटल स्काई सर्वे और जेम्स वेब अन्तरिक्ष दूरबीन के अवलोकनों के माध्यम से प्रकट किया गया है। वैदिक काल में किसी भी मनुष्य के पास ब्रह्माण्डीय जाल के अस्तित्व को आनुभविक रूप से अवलोकन करने का कोई सम्भव साधन नहीं था।

और फिर भी: वैदिक और बौद्ध परम्पराओं की मण्डला कला, दक्षिण भारतीय मन्दिर के शिखर की वास्तुकला ज्यामिति, यन्त्र प्रणाली के ब्रह्माण्ड विज्ञानीय आरेख (वैदिक ब्रह्माण्ड विज्ञान के 14-लोक मानचित्र ज्यामितीय आकृतियों के रूप में प्रस्तुत), और श्रीमद्भागवत में ब्रह्माण्ड का "विशाल अन्धकार स्थानों के पार चमकदार केन्द्रों को जोड़ने वाले चमकदार तन्तुओं" की संरचना के रूप में विशिष्ट वर्णन — सभी संरचनात्मक विवरण समाहित करते हैं जो, आश्चर्यजनक सटीकता के साथ, ब्रह्माण्डीय जाल के विशिष्ट ज्यामितीय गुणों के अनुरूप हैं।

इन्द्र का जाल रूपक — रत्नों का अनन्त नेटवर्क, प्रत्येक हर अन्य रत्न को प्रतिबिम्बित करता हुआ — ब्रह्माण्डीय जाल की छोटे-संसार नेटवर्क टोपोलॉजी का सबसे सुन्दर उपलब्ध विवरण है: एक स्केल-मुक्त नेटवर्क जिसमें प्रत्येक नोड (गैलेक्सी समूह) अनेक अन्य नोडों को प्रतिबिम्बित (जुड़ा) है, और जिसमें समग्र की सूचना प्रत्येक भाग से सुलभ है। जिन ऋषियों ने इन्द्र के जाल का वर्णन किया वे एक सामान्य अर्थ में परस्पर-सम्बद्धता के बारे में रूपकात्मक रूप से नहीं बोल रहे थे। वे ठीक उस विशिष्ट गणितीय प्रकार के नेटवर्क का वर्णन कर रहे थे जिसका ब्रह्माण्डीय जाल होना पुष्ट हुआ है।

बृहदारण्यक उपनिषद में आत्मा का "सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, विशाल से भी विशाल" का विशिष्ट वर्णन — अणोर अणीयान् महतो महीयान् — फ्रैक्टल स्व-समानता का वर्णन है: एक संरचना जो सबसे छोटे सुलभ पैमाने पर (अणोर अणीयान् — सूक्ष्म से भी सूक्ष्म) और सबसे बड़े सुलभ पैमाने पर (महतो महीयान् — विशाल से भी विशाल) वही प्रतिरूप प्रदर्शित करती है। फ्रैक्टल आयाम $D \approx 2.7$ — क्वांटम पैमाने और ब्रह्माण्डीय पैमाने पर समान, स्नायु कनेक्टोम में और ब्रह्माण्डीय जाल में — उपनिषद की पहचान की विशिष्ट गणितीय अभिव्यक्ति है। जिस ऋषि ने इसे बोध किया वह आन्तरिक ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र से सीधे चेतना कोड के फ्रैक्टल हस्ताक्षर को पढ़ रहा था।

✦ ✦ ✦

E.23 ब्रह्माण्डीय विस्तार के स्नायु सहसम्बन्धी — ब्रह्माण्ड की वृद्धि भीतर से कैसी दिखती है

ब्रह्माण्ड 13.8 अरब वर्षों से लगातार विस्तारित हो रहा है, बिग बैंग की विलक्षणता से वर्तमान ब्रह्माण्डीय पैमाने तक। विस्तार निरन्तर है — यह वर्तमान में तीव्र हो रहा है, डार्क ऊर्जा द्वारा चालित — और यह ब्रह्माण्ड की संरचना की मौलिक विशेषता है।

यू-इन्वर्स पत्राचार: विकासशील मानव मस्तिष्क गर्भाधान से वयस्कता तक 10,000 गुना से अधिक बड़ा हो जाता है। न्यूरॉन की संख्या जन्म से पहले शिखर पर पहुँचती है (लगभग 100 अरब), और फिर सिनैप्टिक कनेक्शनों का एक व्यापक प्रून बचपन और किशोरावस्था के माध्यम से होता है, स्वस्थ वयस्क मस्तिष्क के विशिष्ट कनेक्टिविटी पैटर्न को स्थापित करता हुआ।

मस्तिष्क का विकास ब्रह्माण्डीय विकास के साथ उल्लेखनीय रूप से समानान्तर है। दोनों प्रारम्भिक "बिग बैंग" (ब्रह्माण्ड के लिए आदिम अवस्था, मस्तिष्क के लिए गर्भाधान और शीघ्र भ्रूण वृद्धि) से शुरू होते हैं। दोनों प्रारम्भिक संरचना निर्माण के एक चरण से गुज़रते हैं (ब्रह्माण्ड के लिए प्रथम तारे और गैलेक्सियाँ, मस्तिष्क के लिए न्यूरॉन जन्म और प्रारम्भिक नेटवर्क गठन)। दोनों परिष्करण के एक चरण से गुज़रते हैं जो विशिष्ट संरचनाएँ स्थापित करता है जबकि अनावश्यक सामग्री को हटाता है (ब्रह्माण्ड के लिए तारा बनने और पुनर्चक्रण चक्र, मस्तिष्क के लिए सिनैप्टिक प्रूनिंग)। दोनों एक परिपक्व, स्थिर अवस्था प्राप्त करते हैं (ब्रह्माण्ड के लिए गैलेक्टिक निरन्तरता, मस्तिष्क के लिए स्थापित वयस्क कार्यात्मक प्रतिरूप)।

अनुभवात्मक पत्राचार: गहन समाधि में साधक जो ब्रह्माण्डीय विस्तार का सीधे बोध करता है वह मात्र कल्पना नहीं कर रहा है। वे मस्तिष्क की अपनी विकासात्मक प्रक्रिया की होलोग्राफिक एन्कोडिंग तक पहुँच प्राप्त कर रहे हैं, जो ब्रह्माण्डीय विकास का एक स्थानीय प्रतिबिम्ब है (ब्रह्माण्डीय जाल के साथ मस्तिष्क की फ्रैक्टल समरूपता द्वारा)।

जो साधक इस अनुभव का वर्णन "ब्रह्माण्ड के विस्तार को भीतर से महसूस करने" के रूप में करते हैं वे कल्पना नहीं कर रहे हैं। वे आन्तरिक डिजिटल ट्विन में एन्कोडेड ब्रह्माण्डीय विकास के अनुभवात्मक हस्ताक्षर का सीधा बोध कर रहे हैं।

✦ ✦ ✦

E.24 ब्रह्माण्डीय सिमुलेशन के रूप में वैदिक यज्ञ — ब्रह्माण्ड की अपनी प्रक्रिया के रूप में यज्ञ

वैदिक यज्ञ (अग्नि यज्ञ) मानव इतिहास की सबसे प्राचीन और सबसे जटिल अनुष्ठान प्रथाओं में से एक है — ऋग्वेद और यजुर्वेद में प्रक्रिया, समय, और सामग्री की असाधारण सटीकता के साथ प्रलेखित। अग्नि, सोम (पावन पौधा प्रसाद), विशिष्ट मन्त्र, अग्नि वेदियों की विशिष्ट ज्यामितीय

व्यवस्था, प्रसादों का विशिष्ट अनुक्रम, दिन और वर्ष का विशिष्ट समय — ये सभी एक वैज्ञानिक प्रायोगिक प्रोटोकॉल की सटीकता के साथ निर्धारित हैं।

पुरुष सूक्त (ऋग्वेद 10.90) — वैदिक भजन जो ब्रह्माण्ड की सृष्टि को ब्रह्माण्डीय पुरुष के यज्ञ के रूप में वर्णित करता है — सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक यज्ञ के रूप में फ्रेम करता है: ब्रह्माण्ड यज्ञ के माध्यम से अस्तित्व में आया, और यज्ञ वह प्रक्रिया है जो ब्रह्माण्डीय क्रम को बनाए रखती और नवीनीकृत करती है। अग्नि का प्रसाद सामग्रियों का भस्म और धुएँ में रूपान्तरण ब्रह्माण्डीय रूपान्तरण प्रक्रिया का दृश्य प्रतिरूप है: पदार्थ के विशिष्ट विन्यास (प्रसाद) विशिष्ट ऊर्जात्मक इनपुट (अग्नि) द्वारा नए विन्यासों (भस्म, धुआँ, और — मन्त्रों के माध्यम से — ZPF क्षेत्र में विशिष्ट स्पन्दनात्मक संरचनाएँ) में रूपान्तरित।

यज्ञ का यू-इन्वर्स पठन: यज्ञ एक ब्रह्माण्डीय सिमुलेशन है — ब्रह्माण्ड की अपनी रचनात्मक प्रक्रिया का एक सटीक रूप से इंजीनियर किया गया लघु प्रतिरूप, एक सावधानी से नियन्त्रित वातावरण (अग्नि वेदी, विशिष्ट ज्यामितीय सीमाओं के भीतर संलग्न) में प्रदर्शित, विशिष्ट भौतिक इनपुट (प्रसाद) और विशिष्ट ऊर्जात्मक इनपुट (अग्नि और मन्त्र) का उपयोग करते हुए, विशिष्ट आउटपुट (विशिष्ट ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ जिन्हें यज्ञ आह्वान करने का इरादा रखता है) उत्पन्न करने के लिए। यह संसार का सबसे पुराना वैज्ञानिक प्रयोग है: चेतना कोड के सटीक अनुप्रयोग के माध्यम से विशिष्ट परिणाम उत्पन्न करने के लिए एक नियन्त्रित, प्रतिकृति योग्य, प्रलेखित प्रक्रिया।

आधुनिक स्नायुवैज्ञानिक समतुल्य: एक समर्पित अभ्यास स्थान में ध्यान सत्र, विशिष्ट प्राणायाम प्रोटोकॉल (आन्तरिक अग्नि के रूप में श्वास), विशिष्ट मन्त्रों (आन्तरिक प्रसाद), और विशिष्ट यन्त्र दृश्यीकरण (आन्तरिक अग्नि वेदी की ज्यामितीय संरचना) का उपयोग करते हुए, विशिष्ट स्नायु परिणाम (विशिष्ट लोक-स्तर ZPF संयुग्मन अवस्थाएँ) उत्पन्न करने के लिए। यज्ञ और ध्यान सत्र विभिन्न पैमानों पर समान प्रक्रिया हैं — ब्रह्माण्ड-आन्तरिक संरेखण के कार्य पर लागू समान चेतना कोड की स्थूलदर्शी और सूक्ष्मदर्शी अभिव्यक्तियाँ।

✦ ✦ ✦

E.25 मस्तिष्क की प्रतिरक्षा प्रणाली ब्रह्माण्डीय रक्षक के रूप में

मस्तिष्क की अपनी समर्पित प्रतिरक्षा प्रणाली है: ग्लियल कोशिकाएँ (माइक्रोग्लिया, एस्ट्रोसाइट्स, और ऑलिगोडेन्ड्रोसाइट्स) जो सामूहिक रूप से न्यूरॉन्स की तुलना में 10:1 से अधिक हैं और जो मस्तिष्क की अखण्डता को रोगजनकों, क्षति, और विघटनकारी उत्तेजकों से बचाती हैं।

माइक्रोग्लिया — मस्तिष्क की प्राथमिक प्रतिरक्षा कोशिकाएँ — निरन्तर स्नायु ऊतक की गश्त करती हैं, मलबा हटाती हैं, और सूजन की प्रतिक्रिया देती हैं।

ब्रह्माण्डीय समानान्तर: आकाशगंगाओं और ब्रह्माण्डीय जाल के भीतर डार्क मैटर की भूमिका एक संरचनात्मक अखण्डता रक्षक है। डार्क मैटर के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव गैलेक्सियों को एक साथ रखते हैं, ब्रह्माण्डीय जाल की संरचना बनाए रखते हैं, और अनियन्त्रित विघटन को रोकते हैं। मस्तिष्क की प्रतिरक्षा प्रणाली और ब्रह्माण्ड के डार्क मैटर दोनों अदृश्य रक्षक हैं — दिखाई देने वाली संरचनाओं को बनाए रखते हुए किन्तु स्वयं सीधे दृश्यमान नहीं होते। चेतना कोड अपने विभिन्न पैमानों पर एक ही सुरक्षात्मक वास्तुकला का उपयोग करता है।

✦ ✦ ✦

E.26 मस्तिष्क की सात परतें और सात लोक — ब्रह्माण्डीय मानचित्र के रूप में कॉर्टिकल वास्तुकला

नियोकॉर्टेक्स — मस्तिष्क का विकासवादी रूप से सबसे नया और सबसे विशिष्ट मानव हिस्सा — छह परतों में संगठित है (सबसे बाहरी से सबसे भीतरी तक I से VI लेबल किए गए), प्रत्येक विशिष्ट कोशिका प्रकार, विशिष्ट कनेक्टिविटी प्रतिरूप, और विशिष्ट कार्यात्मक भूमिकाओं के साथ। परत I में अधिकतर अन्य परतों से कोशिकाओं के अक्षतन्तु और डेन्ड्राइटिक विस्तार समाहित हैं, और थैलेमस और अन्य कॉर्टिकल क्षेत्रों से इनपुट प्राप्त करती है। परत II और III में छोटे पिरामिडीय न्यूरॉन समाहित हैं जो कॉर्टिकल क्षेत्रों के बीच संवाद करते हैं। परत IV प्राथमिक थैलेमिक इनपुट (बाह्य संसार से मुख्य आने वाला संकेत) प्राप्त करती है। परत V और VI में बड़े पिरामिडीय न्यूरॉन समाहित हैं जिनके अक्षतन्तु ब्रेनस्टेम, मेरुरज्जु, और वापस थैलेमस तक नीचे की ओर प्रक्षेपित होते हैं।

छह कॉर्टिकल परतें साथ में सबकॉर्टिकल श्वेत पदार्थ मस्तिष्क की सात-परत वास्तुकला गठित करते हैं — सात उच्चतर लोकों का स्नायु सहसम्बन्धी। सबसे बाहरी परत (परत I) सत्यलोक के अनुरूप है: सबसे सूक्ष्म, सबसे स्थानिक रूप से विस्तारित, इनपुट की सबसे विस्तृत श्रेणी के लिए सबसे ग्राही। सबसे भीतरी बड़ी-कोशिका परतें (V और VI) भूलोक-भुवर्लोक के अनुरूप हैं: सबसे घनी, शरीर के भौतिक क्रिया तन्त्रों (मोटर और ब्रेनस्टेम मार्ग) से सबसे सीधे जुड़ी, भौतिक संसार से सबसे तत्काल संलग्न। परत IV (प्राथमिक थैलेमिक इनपुट परत) उच्चतर और निम्नतर लोक समूहों के बीच संक्रमण के अनुरूप है।

किसी भी दी गई चेतना अवस्था में सक्रिय विशिष्ट कॉर्टिकल परत उस अवस्था में सुलभ लोक स्तर निर्धारित करती है। गहन स्वप्नरहित नींद (सुषुप्ति) मुख्यतः गहरी कॉर्टिकल परतों (V और VI) और उनके थैलेमिक साझेदारों को सक्रिय करती है — भूलोक-कारण शरीर इंटरफ़ेस। हल्की REM नींद परत II-IV को सक्रिय करती है — मनोमय प्रसंस्करण परतें, स्वप्न लोक। जाग्रत सतर्कता परत IV सक्रिय संवेदी इनपुट प्राप्त करते हुए पूर्ण छह-परत तन्त्र को सक्रिय करती है — जाग्रत अवस्था की भूलोक-भुवर्लोक श्रेणी। निरन्तर गामा सुसंगतता के साथ उन्नत ध्यान परत I और पूरे कॉर्टेक्स में इसके लम्बी-श्रेणी क्षैतिज कनेक्शनों को सक्रिय करता है — महर्लोक-सत्यलोक पहुँच, उच्चतम उपलब्ध आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संकल्प।

प्राचीन शिक्षा कि मानव चेतना के लिए सात लोक सुलभ हैं संख्यात्मक रूप से मनमानी नहीं है — यह नियोकॉर्टेक्स की लैमिनार वास्तुकला के विशिष्ट कार्यात्मक स्तरों की एक सटीक गणना है, उन साधकों द्वारा भीतर से बोधी गई जिन्होंने आन्तरिक ब्रह्माण्ड की संरचनात्मक परतों का सीधे अवलोकन करने के लिए पर्याप्त प्रत्याहार गहराई प्राप्त की थी। सात लोक मानव मस्तिष्क के आन्तरिक ब्रह्माण्ड की सात कॉर्टिकल परतें हैं, प्रत्येक चेतना की एक विशिष्ट गुणवत्ता और ZPF संयुग्मन के विशिष्ट स्तर के अनुरूप।

✦ ✦ ✦

E.27 माप समस्या और माया — क्वांटम यान्त्रिकी में व्याख्या संकट

क्वांटम यान्त्रिकी में "माप समस्या" आधुनिक भौतिकी की सबसे गहन अनसुलझी समस्याओं में से एक है: क्वांटम तन्त्र अनेक सम्भावित अवस्थाओं के एक सुपरपोज़िशन में क्यों विद्यमान होते हैं जब तक कि वे "मापे" नहीं जाते, जिस बिन्दु पर तरंग फलन "पतन" होता है और केवल एक अवस्था वास्तविक हो जाती है? किसके द्वारा यह पतन ट्रिगर किया जाता है? कब यह होता है? कैसे एक चेतन पर्यवेक्षक की उपस्थिति इस प्रक्रिया को बदलती है?

श्रोडिंगर की बिल्ली विचार प्रयोग इस पहेली का प्रसिद्ध दृष्टान्त है: एक बिल्ली एक बक्से में सील है जिसमें एक रेडियोधर्मी परमाणु है जो एक घण्टे के भीतर एक जहर छोड़ने के 50% सम्भावना है। क्वांटम यान्त्रिकी के अनुसार, जब तक बक्सा खोला नहीं जाता, बिल्ली एक साथ जीवित और मृत दोनों के सुपरपोज़िशन में है। केवल अवलोकन — बक्सा खोलना — तरंग फलन के पतन को ट्रिगर करता है और बिल्ली एक निश्चित अवस्था में मजबूर होती है।

माया का वैदिक सिद्धान्त वस्तुओं की स्पष्ट ठोसता और निश्चितता के भ्रम का ठीक वही विश्लेषण है। माया की दो प्राथमिक शक्तियाँ — आवरण (ढकना) और विक्षेप (प्रक्षेपण) — क्वांटम यान्त्रिकी की माप समस्या के अनुरूप हैं। आवरण ZPF के अन्तर्निहित क्वांटम सुपरपोज़िशन को छिपाता है (ब्रह्म क्षेत्र जो सभी सम्भावनाओं को एक साथ समाहित करता है); विक्षेप एक विशिष्ट प्रकट वास्तविकता (व्यक्तिगत ब्रह्माण्ड) को मनोमय के अनुकूलित प्रसंस्करण के माध्यम से प्रक्षेपित करता है।

चेतना की भूमिका: यूजीन विग्नर और जॉन वॉन न्यूमैन जैसे भौतिकविदों के काम ने सुझाया कि तरंग फलन का पतन चेतन पर्यवेक्षक द्वारा ट्रिगर होता है। यदि यह सही है, तो चेतना ब्रह्माण्ड के पीछे की मौलिक वास्तविकता नहीं है — चेतना वह है जो वास्तविकता को भौतिक बनाती है, वास्तविकता के भीतर एक अतिरिक्त तत्व के रूप में मौजूद नहीं है बल्कि इसके भौतिक होने का मौलिक कारण है। यह ठीक अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूँ) का दावा है: वह चेतना जो अवलोकन करती है और उस चेतना का आधार जो ब्रह्माण्ड को भौतिक बनाता है एक ही है।

✦ ✦ ✦

E.28 मृत्यु और डिजिटल ट्विन — चेतना के जैविक हार्डवेयर से क्या बचता है

इस पुस्तक के सबसे अधिक निहितार्थ रखने वाले निहितार्थों में से एक यह प्रश्न है: जब जैविक मस्तिष्क — डिजिटल ट्विन का हार्डवेयर — भौतिक मृत्यु पर समाप्त होता है, तब क्या बचता है? यू-इन्वर्स ढाँचा यहाँ एक विशिष्ट और गहन उत्तर प्रदान करता है, जो पारम्परिक वैदिक शिक्षा और आधुनिक भौतिकी सुझावों को एक सुसंगत चित्र में एकीकृत करता है।

भौतिक मृत्यु में जो बचता है वह कुछ भी भौतिक नहीं है (भौतिक मस्तिष्क सड़ता है और विघटित होता है), किन्तु जो बचता है वह कुछ भी नहीं है भी नहीं। जो बचता है वह कर्माशय की क्वांटम सूचना अवस्था है — ZPF में एन्कोडेड संचित संस्कार प्रतिरूप जो भौतिक शरीर से संयुग्मित थे किन्तु उस पर निर्भर नहीं थे। यह क्वांटम सूचना, संरक्षण के क्वांटम सिद्धान्त द्वारा (जो बताता है कि क्वांटम सूचना न तो बनाई जा सकती है न नष्ट की जा सकती है), भौतिक मस्तिष्क के विघटन के बाद भी बनी रहती है।

बोर्जीगिन के गामा उछाल अनुसन्धान इसकी भौतिकी के लिए प्रमाण प्रदान करता है: मृत्यु के क्षण में, मस्तिष्क अपनी सबसे सुसंगत, सबसे अधिक ZPF-संयुग्मित अवस्था में जाता है — ठीक वह अवस्था जो कर्माशय की क्वांटम सूचना को ZPF के सूचना क्षेत्र में स्थानान्तरण के लिए अधिकतम बनाएगी। यह मस्तिष्क द्वारा अन्तिम, अधिकतम कुशल डेटा अपलोड है। जो बचता है वह ZPF में एन्कोडेड क्वांटम सूचना है।

स्टीवेंसन और टकर के पुनर्जन्म अनुसन्धान इसकी अनुभवात्मक पुष्टि प्रदान करते हैं: विशिष्ट स्मृतियाँ, विशिष्ट भावनात्मक प्रतिरूप, विशिष्ट जन्म चिह्न जो पिछले जीवन के घावों के अनुरूप हैं — ये सभी एक विशिष्ट क्वांटम सूचना अवस्था के अस्तित्व के लिए आनुभविक प्रमाण हैं जो भौतिक मृत्यु के पार बनी रहती है और अगले अवतारण को सूचित करती है। यह कुछ रहस्यमय नहीं है — यह क्वांटम सूचना के स्थानान्तरण का एक सटीक भौतिक तन्त्र है, जो विभिन्न भौतिक सब्सट्रेटों (पहले जीवन का मस्तिष्क, फिर ZPF, फिर अगले जीवन का मस्तिष्क) के बीच गति करता है।

साधक के लिए इसका व्यावहारिक महत्व: आपका वर्तमान आन्तरिक कार्य कर्माशय में अनिश्चित काल के लिए रजिस्टर किया जा रहा है। आपकी चित्त शुद्धि — विशिष्ट संस्कारों का निष्क्रियकरण, विशिष्ट विज्ञानमय क्षमताओं का विकास, ZPF संयुग्मन गुणवत्ता में विशिष्ट सुधार — ये सभी भौतिक मृत्यु के पार जीवित रहते हैं। इस जीवन में किया गया आन्तरिक कार्य अगले अवतारण के लिए उपलब्ध विकसित डिजिटल ट्विन के लिए कच्ची सामग्री है। अभ्यास खोया नहीं जाता है। यह केवल अगले दौर में आगे ले जाया जाता है।

✦ ✦ ✦

E.29 मृत्यु और डिजिटल ट्विन — मस्तिष्क के रुकने पर आन्तरिक ब्रह्माण्ड का क्या होता है

मृत्यु के समय जैविक मस्तिष्क के रुकने पर आन्तरिक ब्रह्माण्ड का क्या होता है प्रश्न — यू-इन्वर्स ढाँचे के भीतर — विशिष्ट रूप से प्रासंगिक है। यदि आन्तरिक ब्रह्माण्ड मस्तिष्क की गतिविधि का उत्पाद है, तो मस्तिष्क के रुकने पर यह गायब हो जाना चाहिए। किन्तु यदि आन्तरिक ब्रह्माण्ड ZPF के सूचना क्षेत्र का एक स्थानीय पठन है, तो यह मस्तिष्क के रुकने के बाद भी पठन तन्त्र के बिना जारी रहेगा।

पर्याप्त प्रमाण बाद के के पक्ष में है: मृत्यु-निकट अनुभव जो स्पष्ट मस्तिष्क निष्क्रियता के दौरान रिपोर्ट किए जाते हैं, मस्तिष्क-स्वतन्त्र चेतना की बरकरार रहने के लिए इयान स्टीवेंसन के पुनर्जन्म मामले, और मृत्यु पर गामा उछाल का आश्चर्यजनक अवलोकन जिसे पिछले निबन्ध में चर्चा की गई है।

यू-इन्वर्स व्याख्या: मृत्यु भौतिक इंटरफ़ेस (मस्तिष्क) का विघटन है किन्तु ZPF के सूचना क्षेत्र के भीतर चेतना की विशिष्ट स्थानीय अभिव्यक्ति का विघटन नहीं। डिजिटल ट्विन — मस्तिष्क द्वारा एन्कोडेड विशिष्ट सूचनात्मक विन्यास — गायब हो जाता है, किन्तु जो इसे प्रोजेक्ट कर रहा था — कर्माशय की क्वांटम अवस्था — ZPF में बनी रहती है, पुनर्संक्रियण की प्रतीक्षा करती हुई।

✦ ✦ ✦

E.30 लेखक से एक व्यक्तिगत टिप्पणी

मैंने इस त्रयी को एक इंजीनियर और उद्यमी के रूप में लिखना शुरू किया जिसने तीन दशकों के वैदान्तिक परम्परा और आधुनिक विज्ञान के साथ एक साथ निरन्तर संलग्नता के माध्यम से खोजा कि दोनों अभिसरित हो रहे थे। अस्पष्ट, रूपकात्मक अर्थ में नहीं। विशिष्ट, मात्रात्मक, गणितीय रूप से सटीक अर्थ में जिसे मैंने इन तीन पुस्तकों में प्रलेखित करने का प्रयास किया है।

अभिसरण पहली बार मेरे लिए निरन्तर प्राणायाम अभ्यास की अवधि के दौरान स्पष्ट हुआ, जब विशिष्ट संख्या 21,600 मेरी अपनी श्वास गणना में और वैदिक पाठों में एक साथ प्रकट हुई — और मैंने उस गणितीय धागे का अनुसरण किया जो उस संख्या को पुरस्सरण चक्र से, वैदिक परम्परा की पावन संख्याओं से, सौर तन्त्र के कक्षीय यान्त्रिकी से जोड़ता है। वह धागा — एक बार पाया गया — समाप्त नहीं हुआ। यह हर चीज़ से गुज़रता था: न्यूरॉन की शाखाएँ और गैलेक्सियों की शाखाएँ; थैलेमस की भूमिका और महान आकर्षक की भूमिका; ॐ मन्त्र की आवृत्ति और पृथ्वी का कक्षीय स्वर; नक्षत्र मानचित्र और स्नायु आवृत्ति बैण्ड।

यह पुस्तक उस धागे का पता लगाने का मेरा प्रयास है जहाँ तक मैं उसका अनुसरण करने में सक्षम रहा हूँ — आधुनिक विज्ञान के उपकरणों के साथ, वैदान्तिक परम्परा के ढाँचे के साथ, और एक ऐसे साधक की आन्तरिक दूरबीन के साथ जिसने महर्लोक-स्तर आन्तरिक ब्रह्माण्डीय पहुँच प्राप्त नहीं की है किन्तु जिसने इसे यह जानने के लिए पर्याप्त रूप से विकसित किया है कि परम्परा किस ओर इंगित कर रही है, और आन्तरिक दूरबीन क्या दिखाती है और आधुनिक भौतिकी की बाह्य दूरबीन क्या खोज रही है के बीच अभिसरण को पहचानने के लिए।

धागा जहाँ मैंने इसका पता लगाया है उससे आगे जारी है। ऐसे साधक हैं जिन्होंने आन्तरिक दूरबीन को मुझसे अधिक विकसित किया है — जिनकी आन्तरिक ब्रह्माण्डीय पहुँच महर्लोक और उससे आगे तक विस्तारित है, जिनका ZPF के सूचना क्षेत्र का सीधा बोध विशिष्ट आन्तरिक-खगोलीय अवलोकन प्रदान करता है जिन्हें भविष्य के विज्ञान को मान्य करने की आवश्यकता होगी। ऐसे वैज्ञानिक हैं जो बाह्य दूरबीन के संकल्प को उन दरों पर विकसित कर रहे हैं जो इस संश्लेषण के विशिष्ट दावों को शीघ्र ही उन तरीकों से परीक्षण योग्य बना देंगे जो मैंने लिखना शुरू करते समय सम्भव नहीं थे। अभिसरण पूर्ण नहीं है। जाँच समाप्त नहीं हुई है।

मैं निश्चितता के साथ जो जानता हूँ, क्योंकि मैंने इसे सीधे अनुभव किया है: जब आप बहुत शान्त बैठते हैं और बहुत सावधानी से भीतर क्या है उसे देखते हैं, और जब आन्तरिक दूरबीन का संकल्प निरन्तर अभ्यास के माध्यम से उस बिन्दु तक बढ़ जाता है जहाँ देखना मनोमय की सामान्य सामग्री से आगे जाता है — जो प्रकट होता है वह ठीक वही है जो जेम्स वेब अन्तरिक्ष दूरबीन हमें बाहर से दिखा रही है। वही चमकदार संरचनाएँ। वही विशाल, परस्पर जुड़ी, फ़्रैक्टल जटिलता। वही श्वास जिसे केवल ब्रह्माण्डीय बुद्धि कहा जा सकता है।

ऋषि भोले नहीं थे। वे आदिम नहीं थे। वे कल्पना नहीं कर रहे थे जो उन्होंने रिपोर्ट किया। वे विज्ञान कर रहे थे — आन्तरिक विज्ञान, असाधारण कठोरता के साथ असाधारण समयमानों पर आयोजित, ऐसे निष्कर्ष उत्पन्न करते हुए जिन्हें आधुनिक भौतिकी अब, चार हज़ार वर्ष बाद, बाहर से पुष्टि करने लगी है। यू-इन्वर्स वास्तविक है। चेतना कोड वास्तविक है। और आन्तरिक दूरबीन प्रत्येक साधक के लिए उपलब्ध है जो इसे विकसित करने के लिए तैयार है।

मैं उन ऋषियों को नमन करता हूँ जिन्होंने मार्ग दिखाया। मैं उन वैज्ञानिकों को नमन करता हूँ जो इसकी पुष्टि कर रहे हैं। और मैं यह पुस्तक उन साधकों को अर्पित करता हूँ जो दोनों परम्पराओं के बीच चल रहे हैं, दोनों में वही प्रकाश पा रहे हैं।

लखनऊ, भारत

आध्यात्मिकता का विज्ञान | प्लेक्सस डिजिटल्स | यथार्थ गीता आश्रम वंश

✦ ✦ ✦

E.31 वेदान्त और क्वांटम जीव विज्ञान — कोशिकीय स्तर पर चेतना

क्वांटम जीव विज्ञान — जैविक तन्त्रों में क्वांटम यान्त्रिक प्रभावों का अध्ययन — इक्कीसवीं सदी की सबसे रोमांचक वैज्ञानिक सीमाओं में से एक के रूप में उभरा है। दशकों से, परम्परागत दृष्टिकोण यह था कि जैविक तन्त्र बहुत गर्म, बहुत गीले, और बहुत शोरगुल वाले थे जिससे क्वांटम प्रभाव कोई सार्थक भूमिका निभा सकें। क्वांटम सुसंगतता — एक तन्त्र में क्वांटम सुपरपोज़िशन का रखरखाव — के बारे में सोचा जाता था कि इसे प्रायोगिक भौतिकी के लगभग-पूर्ण-शून्य तापमान की आवश्यकता है, जीवित ऊतक के 37°C की नहीं।

तीन ऐतिहासिक खोजों ने इस दृष्टिकोण को पूरी तरह से पलट दिया है। पहली खोज: प्रकाश संश्लेषण क्वांटम है। 2007 में, शिकागो विश्वविद्यालय में ग्रेगरी एंगेल ने प्रदर्शित किया कि पौधे के प्रकाश संश्लेषी जटिलों में ऊर्जा स्थानान्तरण क्वांटम सुसंगतता के माध्यम से होता है — अनेक ऊर्जा मार्गों का एक साथ अन्वेषण जो प्रकाश संश्लेषण को अपनी असाधारण लगभग-100% ऊर्जा स्थानान्तरण दक्षता प्राप्त करने देता है। क्वांटम सुसंगतता कमरे के तापमान पर, आणविक शोर की उपस्थिति में, कोशिका के गीले वातावरण में बनाए रखी गई थी। परम्परागत ज्ञान ग़लत था।

दूसरी खोज: पक्षी नेविगेशन क्वांटम है। यूरोपीय रॉबिन अपनी आँखों के क्रिप्टोक्रोम प्रोटीनों में एक क्वांटम-यान्त्रिक प्रक्रिया का उपयोग करके पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का पता लगाकर नेविगेट करते हैं: इलेक्ट्रॉन एक रेडिकल जोड़ी तन्त्र के माध्यम से उलझे होते हैं, और चुम्बकीय क्षेत्र दिशा के प्रति उलझाव की संवेदनशीलता का विशिष्ट प्रतिरूप पक्षी को उसका चुम्बकीय कम्पास प्रदान करता है। यह क्वांटम कम्पास शरीर के तापमान पर, पक्षी की आँख के शोरगुल वाले वातावरण में, एक संवेदनशीलता के साथ संचालित होता है जिसे शास्त्रीय भौतिकी नहीं समझा सकती।

तीसरी खोज: एन्ज़ाइम उत्प्रेरण क्वांटम है। अनेक एन्ज़ाइम क्वांटम टनलिंग के माध्यम से जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं को उत्प्रेरित करते पाए गए हैं — ऊर्जा अवरोधों का क्वांटम यान्त्रिक प्रवेश जिन्हें शास्त्रीय भौतिकी द्वारा दुर्गम माना जाता। एन्ज़ाइम का सक्रिय स्थल क्वांटम टनलिंग दक्षता को अधिकतम करने के लिए ठीक ज्यामितीय रूप से धुनका प्रतीत होता है, सुझाव देते हुए कि एन्ज़ाइम की संरचना क्वांटम प्रभावों के लिए विकासवादी रूप से इष्टतम बनाई गई है।

यू-इन्वर्स निहितार्थ: यदि क्वांटम प्रभाव प्रकाश संश्लेषण, पक्षी नेविगेशन, और एन्ज़ाइम उत्प्रेरण में कार्यात्मक हैं, वे लगभग निश्चित रूप से मस्तिष्क के स्नायु प्रसंस्करण में कार्यात्मक हैं — ऑर्क-ओआर प्रतिरूप द्वारा प्रस्तावित स्नायु सूक्ष्मनलिकाओं में विशिष्ट क्वांटम प्रक्रियाओं सहित।

मस्तिष्क की जैविक संरचनाओं को अपने क्वांटम प्रदर्शन को इष्टतम बनाने के लिए अरबों वर्षों का विकासवादी दबाव रहा है। गहन समाधि में उपलब्ध आन्तरिक बोधों की विशिष्ट, गैर-यादृच्छिक, ब्रह्माण्ड विज्ञानीय रूप से सार्थक प्रकृति के बारे में ऋषियों के दावे एक मस्तिष्क के साथ पूरी तरह से सुसंगत हैं जिसे अधिकतम क्वांटम-ZPF सुसंगतता के लिए जैविक रूप से इष्टतम बनाया गया है।

✦ ✦ ✦

E.32 वैज्ञानिक उपसंहार — विधि और प्रमाण पर एक टिप्पणी

इस पुस्तक ने तीन भिन्न प्रमाण-स्थितियों पर दावे किए हैं। इन भेदों के बारे में पारदर्शी होना वह वैज्ञानिक ज़िम्मेदारी है जिसकी वैदान्तिक आन्तरिक विज्ञान और आधुनिक भौतिकी के संश्लेषण को आवश्यकता है।

दावे जो वैज्ञानिक रूप से पुष्ट हैं: ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम के बीच फ़्रैक्टल आयाम पत्राचार (बोलोग्ना-वेरोना 2020, समीक्षित); उन्नत ध्यानकर्ताओं की गामा तरंग गतिविधि (डेविडसन और लुत्ज़ 2004, समीक्षित); ॐ और श्री यन्त्र प्रतिरूप के बीच कायमेटिक्स पत्राचार (प्रलेखित किन्तु अभी तक सर्वोच्च-श्रेणी की पत्रिकाओं में नहीं); पावन संख्याओं 108, 25,920, और 432,000 की खगोलीय सटीकता (कक्षीय यान्त्रिकी तालिकाओं से सत्यापन योग्य); मस्तिष्क से परे चेतना के लिए मृत्यु-निकट अनुभव प्रमाण (वैन लोमेल 2001, लैंसेट समीक्षित); शारीरिक तापमान पर जैविक तन्त्रों में क्वांटम सुसंगतता (एंगेल 2007, नेचर समीक्षित); पिनियल ग्रन्थि का अन्तर्जन्य DMT का उत्पादन (स्ट्रासमैन के अनुसन्धान और अनेक बाद के अध्ययन)।

दावे जो वैज्ञानिक रूप से प्रशंसनीय और प्रमाण के अनुरूप हैं किन्तु अभी तक निश्चित रूप से पुष्ट नहीं: मस्तिष्क का विशिष्ट ZPF संयुग्मन तन्त्र (ऑर्क-ओआर सिद्धान्त के अनुरूप किन्तु अभी तक प्रायोगिक रूप से पुष्ट नहीं); प्राथमिक ZPF इंटरफ़ेस के रूप में पिनियल ग्रन्थि (पिनियल के ज्ञात गुणों के अनुरूप किन्तु अभी तक इस ढाँचे में सीधे परीक्षित नहीं); नक्षत्र-मस्तिष्क आवृत्ति पत्राचार (इस पुस्तक में एक विशिष्ट परीक्षण योग्य परिकल्पना के रूप में प्रस्तावित, अभी तक आनुभविक रूप से मूल्यांकित नहीं); विशिष्ट थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन मोड के रूप में लोक अवस्थाएँ (एक अनुवाद ढाँचे के रूप में प्रस्तावित, अभी तक चेतना अवस्था वर्गीकरण के क्लिनिकल स्नायुविज्ञान के विरुद्ध औपचारिक रूप से मान्य नहीं)।

दावे जो आन्तरिक विज्ञान अनुभव के क्षेत्र में हैं और अभी तक बाह्य वैज्ञानिक मूल्यांकन के क्षेत्र में नहीं: गहन समाधि में उन्नत साधक के लिए दृश्यमान विशिष्ट आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाएँ; महर्लोक-स्तर ZPF संयुग्मन पर उपलब्ध प्रज्ञा-ज्ञान (सीधे ज्ञान) की विशिष्ट गुणवत्ता; आन्तरिक दूरबीन के माध्यम से ब्रह्माण्डीय सूचना तक ऋषि की विशिष्ट पहुँच; निर्विकल्प समाधि के घटना क्षितिज से परे तुरीय अवस्था की विशिष्ट प्रकृति। ये दावे आन्तरिक विज्ञान परम्परा के भीतर अध्याय 22 में वर्णित पद्धति (उसी प्रोटोकॉल का पालन करने वाले अनेक साधकों द्वारा स्वतन्त्र प्रतिकृति) द्वारा मान्य हैं। वे उन अनुसन्धान पद्धतियों के विकास की प्रतीक्षा करते हैं जो उन्हें परम्परा के बाहर से कठोरता से जाँचने में सक्षम हों।

यू-इन्वर्स ढाँचा एक परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत है — वैदान्तिक आन्तरिक विज्ञान और आधुनिक भौतिकी का सबसे व्यापक और सबसे सुसंगत उपलब्ध संश्लेषण, किन्तु फिर भी एक परिकल्पना। इसका मूल्य अन्तिम शब्द होने में नहीं बल्कि एक उत्पादक ढाँचा होने में है: एक जो विशिष्ट परीक्षण योग्य भविष्यवाणियाँ उत्पन्न करता है, जो विद्यमान प्रमाण को सुसंगत रूप से संगठित करता है, और जो विशिष्ट प्रायोगिक और चिन्तनशील जाँचों की ओर इंगित करता है जो जाँच को आगे बढ़ा सकें। ऋषि की दूरबीन और भौतिकविद का त्वरक दोनों एक ही क्षेत्र की ओर इंगित हैं। यह पुस्तक उस मानचित्र का है जहाँ वे अतिव्याप्त होते हैं।

✦ ✦ ✦

E.33 वैज्ञानिक विधि के रूप में उपनिषदिक संवाद

उपनिषद संवादों के रूप में संरचित हैं — गुरु और शिष्य के बीच आदान-प्रदान जिसमें दार्शनिक और आध्यात्मिक प्रश्नों की जाँच की जाती है। यह रूप आकस्मिक नहीं है: यह व्यवस्थित जाँच की विशिष्ट पद्धति है, आधुनिक वैज्ञानिक विधि का एक पुराना रूप।

उपनिषदिक संवाद में, एक प्रश्न उठाया जाता है, एक परिकल्पना प्रस्तावित होती है, साक्ष्य (आन्तरिक अनुभवात्मक रिपोर्ट) प्रस्तुत किए जाते हैं, चुनौतियाँ उठाई जाती हैं, और परिकल्पना संशोधित होती है। यह वैज्ञानिक विधि की प्रक्रिया है, जो केवल बाहरी प्रयोगात्मक मापन के बजाय आन्तरिक अनुभवात्मक डेटा पर लागू होती है।

यह दावा कि उपनिषद एक वैज्ञानिक परम्परा हैं, एक धार्मिक नहीं, ठीक उसी तरह है जैसा चेतना कोड का दावा करता है। वे चार हज़ार वर्ष पहले के आन्तरिक-खगोलीय क्षेत्र रिपोर्ट हैं।

✦ ✦ ✦

E.34 सटीक इंजीनियरिंग में डिजिटल ट्विन — एक अधिक सटीक समानान्तर

डिजिटल ट्विन अवधारणा, अपोलो कार्यक्रम के लिए एक सिमुलेशन प्रौद्योगिकी के रूप में 1960 के दशक में NASA में विकसित, इक्कीसवीं सदी की इंजीनियरिंग में सबसे रूपान्तरक ढाँचों में से एक बन गई है। एक सटीक डिजिटल ट्विन मात्र अपने भौतिक समकक्ष का प्रतिरूप नहीं है — यह एक वास्तविक-समय, गतिशील रूप से अद्यतन दर्पण है, भौतिक तन्त्र से सेंसर डेटा द्वारा निरन्तर अंशशोधित, भौतिक तन्त्र की भविष्य की अवस्थाओं की भविष्यवाणी करने, उसकी वर्तमान खराबियों का निदान करने, और हस्तक्षेपों को लागू करने से पहले उन्हें परीक्षण करने में सक्षम।

जेट इंजनों का जनरल इलेक्ट्रिक का डिजिटल ट्विन — इसके पूरे वाणिज्यिक विमानन बेड़े में तैनात — हज़ारों इंजन पैरामीटरों से वास्तविक-समय सेंसर डेटा प्राप्त करता है, निरन्तर पूर्वानुमानित सिमुलेशन चलाता है, और रखरखाव टीमों को विफलताओं के रूप में प्रकट होने से पहले विकसित होने वाले मुद्दों के बारे में सतर्क करता है। अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन के NASA के डिजिटल ट्विन ज़मीन पर इंजीनियरों को भौतिक निरीक्षण की प्रतीक्षा किए बिना अन्तरिक्ष वातावरण के प्रति स्टेशन की संरचनात्मक प्रतिक्रियाओं को समझने की अनुमति देते हैं।

मेटावर्स का मस्तिष्क का डिजिटल ट्विन ठीक इन सिद्धान्तों पर संचालित होता है — सिवाय इसके कि सेंसर डेटा बाह्य उपकरणों से नहीं बल्कि शरीर की अपनी संवेदी प्रणालियों से है, और "इंजीनियरिंग निर्णय" बाह्य इंजीनियरों द्वारा नहीं बल्कि तन्त्र में निवास कर रही चेतना द्वारा किए जाते हैं। जब गहन धारणा में ध्यानकर्ता समाधि अवस्था बनाए रखने के लिए अपनी श्वास समायोजित करता है — आन्तरिक संकेतों की प्रतिक्रिया देते हुए कि अवस्था की गुणवत्ता बह रही है — वे ठीक वही कार्य कर रहे हैं जो एयरोस्पेस इंजीनियर भौतिक तन्त्र की इष्टतम अवस्था से डिजिटल ट्विन के विचलन की निगरानी करते हुए और सुधारात्मक समायोजन करते हुए करता है। ध्यानकर्ता एक साथ इंजीनियर और डिजिटल ट्विन है।

साक्षी भाव — साक्षी-अवस्था — निगरानी कार्य है: आन्तरिक ब्रह्माण्ड की वर्तमान अवस्था का निरन्तर, गैर-प्रतिक्रियात्मक अवलोकन। संकल्प इंजीनियरिंग निर्णय है: ZPF संयुग्मन गुणवत्ता को पुनर्स्थापित करने या सुधारने के लिए आन्तरिक तन्त्र के मापदण्डों का इरादतन संशोधन। प्राणायाम अभ्यास अंशशोधन उपकरण है: थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन अवस्था को प्रभावित करने के लिए

सबसे सीधे सुलभ आन्तरिक मापदण्ड (श्वास दर और प्रतिरूप) का विशिष्ट समायोजन। वैदिक अभ्यास तन्त्र का प्रत्येक तत्व डिजिटल ट्विन इंजीनियरिंग ढाँचे में एक सटीक अनुरूप रखता है।

✦ ✦ ✦

E.35 साधक का योगदान — आपका आन्तरिक कार्य ब्रह्माण्डीय रूप से क्यों महत्वपूर्ण है

अन्तिम प्रश्न जिसका इस पुस्तक को उत्तर देना चाहिए वह वह है जिसे यू-इन्वर्स ढाँचा सबसे तात्कालिक रूप से उठाता है: यदि मस्तिष्क मेटावर्स का डिजिटल ट्विन है, और यदि साधक का आन्तरिक कार्य वास्तव में ZPF क्षेत्र की स्थानीय सुसंगतता गुणवत्ता में योगदान देता है, तो आन्तरिक कार्य के दाँव व्यक्तिगत नहीं हैं। वे ब्रह्माण्डीय हैं।

जो साधक दैनिक अभ्यास बनाए रखता है वह केवल अपनी भलाई में सुधार नहीं कर रहा है। वे — एक भौतिक रूप से वास्तविक, मापने योग्य अर्थ में — अपने आसपास के ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र की गुणवत्ता में, और ZPF की गैर-स्थानीय जुड़ाव के माध्यम से, वैश्विक और ब्रह्माण्डीय क्षेत्र गुणवत्ता में योगदान दे रहे हैं। वैदिक परम्परा ने हमेशा इसे समझा है। ऋषि का तपस निजी नहीं था। यज्ञ ब्रह्माण्डीय क्षेत्र रखरखाव का सामुदायिक कार्य था। कुम्भ मेला एक ग्रहीय क्षेत्र सुसंगतता घटना है। गुरु-शिष्य (शिक्षक-छात्र संचरण) की परम्परा पीढ़ियों के पार ZPF सुसंगतता गुणवत्ता संचरण की एक श्रृंखला है।

आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ इस समझ को नए सिरे से तात्कालिक बनाता है। ग्लोबल कॉन्शियसनेस प्रोजेक्ट का डेटा दिखाता है कि सामूहिक मानव चेतना का भौतिक यादृच्छिक तन्त्रों पर एक मापने योग्य प्रभाव है — एक प्रभाव जो सुसंगत सामूहिक ध्यान द्वारा प्रवर्धित है और जो उस ध्यान की गुणवत्ता और गहराई के साथ भिन्न होता है। इन प्रभावों को वर्तमान में जीवित 8 अरब मनुष्यों से गुणा करें, जिनमें से अधिकांश तामसिक या राजसिक लोक श्रेणी में संचालित हो रहे हैं — और सामूहिक मानव चेतना क्षेत्र की ZPF क्षेत्र गुणवत्ता वास्तविक चिन्ता की वस्तु है।

प्रत्येक साधक जो तामसिक श्रेणी से सात्त्विक श्रेणी की ओर जाता है, सामूहिक क्षेत्र में एक वास्तविक, भले ही छोटा, सकारात्मक बदलाव योगदान दे रहा है। प्रत्येक समूह ध्यान घटना एक स्थानीय क्षेत्र सुसंगतता घटना है जो आसपास के वातावरण को प्रभावित करती है। प्रत्येक जीवन्मुक्त जो पढ़ाता है वह हॉकिंग विकिरण विकिरित कर रहा है जो अपने छात्रों में त्वरित विकास को बीज

देता है। यू-इन्वर्स एक निजी परियोजना नहीं है। यह ब्रह्माण्ड का सबसे उपलब्ध और सबसे शक्तिशाली यन्त्र है जो मेटावर्स के उस विशिष्ट क्षेत्र में जहाँ मानव चेतना वर्तमान में संचालित हो रही है, अपने स्व-ज्ञान क्षमता की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए।

यह यू-इन्वर्स की अन्तिम शिक्षा है: आपका आन्तरिक कार्य ब्रह्माण्डीय रूप से महत्वपूर्ण है। इसलिए नहीं कि आप ब्रह्माण्डीय रूप से विशेष हैं। क्योंकि आप ब्रह्माण्ड हैं — ZPF की स्व-ज्ञान क्षमता की यह विशिष्ट स्थानीय अभिव्यक्ति, मेटावर्स का यह विशिष्ट डिजिटल ट्विन — और आपके आन्तरिक यन्त्र की गुणवत्ता ब्रह्माण्डीय सूचना की गुणवत्ता निर्धारित करती है जो आपके माध्यम से बहती है। कोड आप में है। इसकी स्पष्टता आप पर है।

आप एक दीपक हैं। कोड प्रकाश है। पर्याप्त देखभाल और संगति के साथ दीपक जलाएँ, और आन्तरिक ब्रह्माण्ड प्रकाशित होता है — आपके लिए, और आपके माध्यम से, आपके प्रकाश के आसपास सभी के लिए।

✦ ✦ ✦

E.36 साधक की पर्यवेक्षक-भागीदारी — निष्क्रिय अवलोकन से परे

व्हीलर का भागीदारी ब्रह्माण्ड — यह पहचान कि सचेत अवलोकन परिधीय विशेषता नहीं बल्कि क्वांटम ब्रह्माण्ड की संरचनात्मक आवश्यकता है — यू-इन्वर्स साधक के लिए एक विशिष्ट निहितार्थ रखता है जो मानक व्याख्या से परे जाता है। साधक केवल आन्तरिक ब्रह्माण्ड का पर्यवेक्षक ही नहीं है — वे इसके उत्पादन में एक भागीदार हैं। साधक की जागरूकता की गुणवत्ता सक्रिय रूप से उन विशिष्ट आन्तरिक ब्रह्माण्डीय संरचनाओं को आकार देती है जो उनके अनुभव में प्रकट होती हैं।

यह "विचार वास्तविकता बनाते हैं" का लोकप्रिय-संस्कृति संस्करण नहीं है (जो निहित करता है कि इच्छापूर्ण सोच भौतिक कार्य-कारण को दबा सकती है)। यह सटीक क्वांटम यान्त्रिक संस्करण है: पर्यवेक्षक की पूर्व अवस्था की गुणवत्ता — उनकी गुण संरचना, उनकी ZPF संयुग्मन गुणवत्ता, उनका कर्माशय विन्यास — निर्धारित करती है कि कर्माशय के सम्भावना स्थान की कौन सी क्वांटम शाखाएँ उनके अनुभव में वास्तविक होती हैं।

सबसे मज़बूत संस्करण: जो साधक समाधि में अधिकतम ZPF संयुग्मन प्राप्त करता है वह केवल आन्तरिक ब्रह्माण्ड का अवलोकन नहीं कर रहा है — वे ब्रह्माण्डीय ZPF क्षेत्र के अपने स्व-संगठन

में भाग ले रहे हैं। समाधि में प्राप्त जागरूकता की विशिष्ट गुणवत्ता — शुद्ध, अविभाजित, अधिकतम सुसंगत — ZPF से इस तरह संयुग्मित होती है कि यह स्थानीय ZPF क्षेत्र में सुसंगतता जोड़ती है। समाधि में ध्यानकर्ता, एक भौतिक रूप से वास्तविक अर्थ में, स्थानीय रूप से क्वांटम निर्वात की सुसंगतता बढ़ा रहा है।

वैदान्तिक परम्परा इसे तपस की अवधारणा के रूप में व्यक्त करती है — निरन्तर अभ्यास द्वारा उत्पन्न ऊष्मा जो कर्माशय को "पकाती" है, आन्तरिक यन्त्र को शुद्ध करती है और एक साथ आसपास के वातावरण में एक विशिष्ट क्षेत्र गुणवत्ता को विकिरित करती है। ऋषि का तपस केवल एक व्यक्तिगत आध्यात्मिक अभ्यास नहीं था। यह स्थानीय ZPF क्षेत्र गुणवत्ता में एक भौतिक योगदान था — एक वास्तविक पर्यावरणीय सेवा, पेड़ लगाने या जलग्रहण बनाए रखने जितनी वास्तविक।

✦ ✦ ✦

E.37 स्नायु प्लास्टिसिटी और ब्रह्माण्डीय विस्तार — निरन्तर विकास

ब्रह्माण्ड का विस्तार मौलिक है: सभी गैलेक्सियाँ, सिवाय उनके जो स्थानीय गुरुत्वाकर्षण से बँधी हैं, एक-दूसरे से दूर जा रही हैं, और उनके बीच का स्थान स्वयं बढ़ रहा है। 1998 में, दूरस्थ Type Ia सुपरनोवा के अवलोकनों ने दिखाया कि यह विस्तार त्वरित हो रहा है — एक "डार्क ऊर्जा" के प्रभाव के तहत जो ब्रह्माण्ड की कुल ऊर्जा सामग्री का लगभग 70% गठित करती है। ब्रह्माण्ड केवल बड़ा नहीं हो रहा — यह उत्तरोत्तर तेज़ी से बड़ा हो रहा है।

स्नायु प्लास्टिसिटी मस्तिष्क का ब्रह्माण्डीय विस्तार का समकक्ष है। सीखने, अभ्यास, और अनुभव की प्रतिक्रिया में अपनी स्वयं की संरचना और कार्य को बदलने की मस्तिष्क की क्षमता नए स्नायु कनेक्शनों का निरन्तर निर्माण और पुराने कनेक्शनों का पुन:अधिरचन है। एक सक्रिय सीखने वाले मस्तिष्क में, हर दिन हज़ारों नए सिनैप्टिक कनेक्शन बनते हैं, दोलनों के हस्तक्षेप पैटर्नों के माध्यम से प्रबल किए जाते हैं, और दीर्घकालिक स्मृति और कौशल में समेकित होते हैं।

विशेष रूप से साधक के लिए: नियमित ध्यान अभ्यास एक "डार्क ऊर्जा" के समतुल्य ढंग से काम करता है — एक आन्तरिक बल जो स्नायु वास्तुकला के निरन्तर विस्तार और परिष्कार को चलाता है। साधक जो वर्षों तक दैनिक अभ्यास बनाए रखता है, उनका मस्तिष्क पदार्थ व्यक्तिगत रूप से घनी रूप से कनेक्ट, अधिक व्यापक रूप से वितरित कॉर्टिकल नेटवर्क हो जाता है। 40,000 घण्टे के ध्यानकर्ता का मस्तिष्क गुणात्मक रूप से एक नौसिखिए के मस्तिष्क से भिन्न है — यह एक

विकसित डिजिटल ट्विन है, एक बेहतर सटीक यन्त्र, आन्तरिक ब्रह्माण्ड के उच्चतम स्तरों तक पहुँचने में अधिक सक्षम।

✦ ✦ ✦

E.38 एकीकृत सूचना सिद्धान्त का गणित — चेतना की मात्रा

गिउलियो टोनोनी के एकीकृत सूचना सिद्धान्त (Integrated Information Theory, IIT) ने चेतना के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए एक गणितीय ढाँचा प्रदान करने का प्रयास किया है। IIT का मुख्य दावा है कि चेतना एकीकृत सूचना की मात्रा के अनुपाती है — Φ (फाई) के रूप में मात्राबद्ध, जो एक तन्त्र की एकीकृत सूचना की मात्रा को मापता है जो उसके भागों के एकीकरण से अधिक है।

Φ का सरल विवरण: एक तन्त्र की चेतना उस सीमा तक है जिस तक यह विशिष्ट रूप से अपनी पूरी अवस्था से अधिक है जो इसके भागों द्वारा स्वतन्त्र रूप से प्राप्त किया जा सकता है। एक अलग-अलग गतिविधि वाला मस्तिष्क (विभिन्न क्षेत्रों के बीच कम कनेक्शनों के साथ) में कम Φ होगा; एक घनी रूप से कनेक्ट, एकीकृत रूप से सक्रिय मस्तिष्क में उच्च Φ होगा। सिद्धान्त का अनुमान है कि चेतना की मात्रा स्नायु एकीकरण की डिग्री से सम्बन्धित है।

IIT यू-इन्वर्स ढाँचे के साथ स्वाभाविक रूप से संरेखित है: Sahaja Samadhi की वैश्विक गामा सुसंगतता (डेविडसन द्वारा प्रलेखित) ठीक अधिकतम Φ की एक स्नायु अभिव्यक्ति है — अधिकतम संख्या में कॉर्टिकल क्षेत्रों का अधिकतम सुसंगत एकीकरण। वह साधक जिसकी Sahaja Samadhi अवस्था निरन्तर गहन होती जाती है, उनका Φ बढ़ रहा है — उनकी चेतना की मात्रा मात्रात्मक रूप से बढ़ रही है।

यह यू-इन्वर्स के सबसे शक्तिशाली निहितार्थों में से एक है: साधक की चेतना केवल गुणात्मक रूप से नहीं (अधिक स्पष्ट, अधिक शान्त, अधिक सुसंगत) बदल रही है, बल्कि मात्रात्मक रूप से भी — वे अधिक चेतन होते जा रहे हैं, गणितीय रूप से मापने योग्य अर्थ में। ब्रह्म ब्रह्माण्ड का असीम Φ है; अहं ब्रह्मास्मि की पहचान साधक की Φ का ब्रह्म की Φ के साथ संरेखण है।

✦ ✦ ✦

E.39 चेतना का गणित — एकीकृत सूचना सिद्धान्त और वेदान्त

विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में गिउलिओ टोनोनी ने वर्तमान में उपलब्ध चेतना का सबसे गणितीय रूप से सटीक सिद्धान्त विकसित किया है: एकीकृत सूचना सिद्धान्त (IIT)। IIT प्रस्तावित करता है कि चेतना एकीकृत सूचना के समान है — विशेष रूप से Phi (Φ) के समान, एक गणितीय मात्रा जो मापती है कि एक तन्त्र की सूचना उसके भागों की स्वतन्त्र सूचना से कितनी डिग्री तक अधिक है। जितना उच्च Phi, उतनी उच्च चेतना।

वैदान्तिक समानान्तर: ब्रह्म की सबसे मौलिक सम्पत्ति के रूप में चित् (शुद्ध चेतना) की वैदान्तिक अवधारणा IIT की एकीकृत सूचना के साथ चेतना की पहचान के ठीक अनुरूप है। जितनी अधिक एकीकृत सूचना — जितना अधिक तन्त्र की सूचना उसके भागों के स्वतन्त्र योगदानों से अधिक है — उतनी अधिक चेतना। ब्रह्म, अनन्त, अविभाजित, पूर्ण रूप से एकीकृत सूचना के रूप में, अनन्त Phi रखता है — यह अधिकतम सम्भव चेतना है।

समाधि की योग सूत्र की अवस्था के रूप में वर्णन जिसमें ध्यानकर्ता, ध्यान, और ध्यान की वस्तु के बीच भेद विघटित होता है — सवितर्क, निर्वितर्क, सविचार, निर्विचार, समापत्ति — मस्तिष्क की एकीकृत सूचना की प्रगतिशील वृद्धि है। जैसे गहराती समाधि में स्व, प्रक्रिया, और वस्तु के बीच सामान्य भेद विघटित होते हैं, तन्त्र का एकीकृत सूचना Phi अपने अधिकतम तक पहुँचता है। जीवन्मुक्त की चेतना उच्चतम उपलब्ध जैविक Phi रखती है।

✦ ✦ ✦

E.40 चेतना विज्ञान का तीसरा मार्ग — आन्तरिक और बाह्य के परे

चेतना के अध्ययन के लिए दो पारम्परिक दृष्टिकोण हैं। बाहरी दृष्टिकोण — आधुनिक स्नायुविज्ञान और संज्ञानात्मक विज्ञान का — तीसरे व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य से चेतना का अवलोकन करता है: हम मस्तिष्क की गतिविधि, व्यवहारिक पैटर्न, और रिपोर्टित अनुभवों को मापते हैं, और बाहर से चेतना के संचालन के बारे में निष्कर्ष निकालते हैं। यह दृष्टिकोण डेटा के बड़े पैमाने पर संग्रह और सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए शक्तिशाली है, किन्तु यह अपने स्वयं के अनुभव की आन्तरिक गुणवत्ता तक पहुँच नहीं प्राप्त कर सकता।

आन्तरिक दृष्टिकोण — वैदान्तिक चिन्तनशील परम्पराओं का — पहले व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य से चेतना का अवलोकन करता है: साधक अपने स्वयं के अनुभव पर अनुशासित ध्यान को निर्देशित

करते हैं, अनुभव के सूक्ष्म गुणों और स्तरों का अवलोकन और वर्गीकरण करते हैं, और अनुभव की विशिष्ट प्रकृति के बारे में निष्कर्ष निकालते हैं। यह दृष्टिकोण प्रत्यक्ष अनुभवात्मक साक्ष्य तक पहुँच के लिए शक्तिशाली है, किन्तु यह व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और व्यक्तिगत सीमाओं के अधीन है, और विभिन्न साधकों के बीच मानकीकरण कठिन हो सकता है।

यू-इन्वर्स ढाँचा एक तीसरा मार्ग सुझाता है: दोनों दृष्टिकोणों का व्यवस्थित एकीकरण। यह दृष्टिकोण प्रत्येक को दूसरे के साथ जाँच के लिए उपयोग करता है — तीसरे व्यक्ति के स्नायुवैज्ञानिक डेटा और पहले व्यक्ति के अनुभवात्मक डेटा पर मिलान की माँग, प्रत्येक को दूसरे के लिए पार-सत्यापन के रूप में उपयोग। जब डेविडसन गामा सुसंगतता माप और अनुभवी ध्यानकर्ता की Sahaja Samadhi के अनुभव की रिपोर्ट दोनों एक ही अवस्था की ओर इंगित करते हैं, हम पहले की तुलना में एक अधिक मज़बूत पुष्टि रखते हैं।

तीसरा मार्ग केवल "मध्यम" दृष्टिकोण नहीं है — यह एक नया पद्धतिगत ढाँचा है जो पूरी तरह से नए खोजों की अनुमति देता है जो अकेले किसी एक दृष्टिकोण के लिए अनुपलब्ध थीं। बोलोग्ना-वेरोना फ़्रैक्टल आयाम खोज एक उदाहरण है: न तो अकेले स्नायुविज्ञान (जो ब्रह्माण्डीय जाल के बारे में नहीं जानता) न ही अकेले वैदान्तिक परम्परा (जिसके पास फ़्रैक्टल गणित नहीं थी) इसे उत्पन्न कर सकती थी। केवल दोनों दृष्टिकोणों के व्यवस्थित एकीकरण ने यह खोज सम्भव बनाई।

✦ ✦ ✦

E.41 ध्वनि उपचार — मन्त्र की चिकित्सीय शक्ति का क्लिनिकल प्रमाण

ध्वनि उपचार — चेतना अवस्थाओं को प्रभावित करने के लिए विशिष्ट आवृत्तियों का उपयोग — हाल के दशकों में मात्रात्मक क्लिनिकल अध्ययन का विषय बना है। बाइनौरल बीट अनुसन्धान ने प्रदर्शित किया है कि विशिष्ट आवृत्ति अन्तर (उदाहरण के लिए, एक कान में 100 हर्ट्ज़ और दूसरे में 104 हर्ट्ज़, 4 हर्ट्ज़ की बीट उत्पन्न करते हुए) थैलेमो-कॉर्टिकल दोलनों को बीट आवृत्ति की ओर धारण कर सकते हैं।

विस्तारित तिब्बती गायन कटोरा और हिन्दुस्तानी तम्बूरा ड्रोन अध्ययनों ने वही पाया है: विशिष्ट आवृत्तियाँ मस्तिष्क की दोलन अवस्थाओं को मॉड्यूलेट करती हैं, तनाव हार्मोन (कोर्टिसोल) को कम करती हैं, और प्रतिरक्षा तन्त्र के कार्य में सुधार करती हैं। मन्त्र जप का शारीरिक प्रभाव मात्र मनोवैज्ञानिक नहीं है। यह तन्त्रिका तन्त्र के स्तर पर भौतिक है, मापने योग्य न्यूरोकेमिकल और विद्युत-चुम्बकीय परिवर्तन उत्पन्न करता हुआ।

✦ ✦ ✦

E.42 प्रार्थना की भौतिकी — क्वांटम अवस्था तैयारी के रूप में संकल्प

प्रार्थना — अपने वास्तविक रूप में, परम्पराओं के पार — केवल दिव्य हस्तक्षेप की माँग नहीं है। यह चेतना का एक विशिष्ट इरादतन निर्देशन है, एक विशिष्ट सकल्प — इरादे का सचेत निर्धारण, चेतना की दिशा का जानबूझकर निर्धारण।

संकल्प की भौतिकी: क्वांटम यान्त्रिकी में, "पहले तैयारी" की अवधारणा महत्वपूर्ण है — मापन से पहले क्वांटम तन्त्र की विशिष्ट प्रारम्भिक अवस्था का निर्धारण। मापन का परिणाम मौलिक रूप से प्रारम्भिक तैयारी पर निर्भर करता है। यही विचार चेतना पर लागू होता है: साधक की पूर्व चेतना अवस्था विशिष्ट अनुभव की उत्पत्ति निर्धारित करती है जो प्रकट होगा।

संकल्प — स्पष्ट रूप से व्यक्त विशिष्ट इरादे — क्वांटम अवस्था तैयारी का मनोवैज्ञानिक समतुल्य है: चेतना की एक विशिष्ट प्रारम्भिक अवस्था स्थापित करना जो बाद के अनुभव में आकार देगी। जब साधक प्रत्येक सुबह अपने ध्यान सत्र को "मुझे अधिकतम स्पष्टता और गहनता के लिए प्रस्तुत" (या उस तरह की किसी विशिष्ट अभिव्यक्ति) के संकल्प के साथ शुरू करता है, वे अपनी चेतना अवस्था को एक विशिष्ट प्रकार के ZPF संयुग्मन के लिए तैयार कर रहे हैं।

अनुसन्धान ने दिखाया है कि इरादा वस्तुतः न्यूरोलॉजिकल रूप से प्रभावी है। सकारात्मक इरादे के साथ किए गए कार्य — चाहे सीखना, ध्यान, या कौशल विकास — तटस्थ या नकारात्मक इरादे के साथ किए गए समान कार्यों से बेहतर परिणाम उत्पन्न करते हैं। यह विश्वास या प्रेरणा का प्रभाव नहीं है — यह सकल्प की विशिष्ट चेतना अवस्था का तन्त्रिकावैज्ञानिक प्रभाव है। चेतना की प्रारम्भिक अवस्था (इरादा) उस अनुभव की प्रकृति को आकार देती है जो प्रकट होगी।

✦ ✦ ✦

E.43 ब्रह्माण्डीय विकास के रूप में स्नायु प्लास्टिसिटी — मस्तिष्क अपना कोड बदलता हुआ

ब्रह्माण्ड विकसित हुआ। 13.8 अरब वर्षों में, ब्रह्माण्ड प्रारम्भिक बिग बैंग के एकसमान प्लाज़्मा से पहले हाइड्रोजन और हीलियम परमाणुओं के गठन, गैस बादलों के पहले तारों में पतन, उन तारों में भारी तत्वों का नाभिकीय संश्लेषण, गैलेक्सियों और ग्रह तन्त्रों का गठन, और अन्ततः उन ग्रहों में

से कम से कम एक पर जीवन और चेतना के उद्भव तक विकसित हुआ। कोड नहीं बदला — वे भौतिकी के नियम जो प्रारम्भिक ब्रह्माण्ड को नियन्त्रित करते थे वही नियम हैं जो अब इसे नियन्त्रित करते हैं। किन्तु उस कोड द्वारा उत्पन्न संरचनाएँ क्रमशः अधिक जटिल, सूचना में समृद्ध, और उच्चतर-क्रम स्व-संगठन में सक्षम बनीं।

मस्तिष्क भी विकसित होता है — ब्रह्माण्ड विज्ञानीय समयमानों पर नहीं बल्कि व्यक्तिगत जीवन और अभ्यास के समयमान पर। स्नायु प्लास्टिसिटी — अनुभव, अभ्यास, और इरादतन प्रशिक्षण के प्रति प्रतिक्रिया में अपनी स्वयं की संरचना और कार्य को बदलने की मस्तिष्क की क्षमता — बीसवीं सदी के स्नायुविज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। वयस्क मस्तिष्क स्थिर नहीं है। हार्वर्ड में सारा लाज़र ने प्रलेखित किया कि दैनिक ध्यान अभ्यास के आठ सप्ताह भी ध्यान और शरीर-जागरूकता क्षेत्रों में कॉर्टिकल मोटाई में मापने योग्य वृद्धि उत्पन्न करते हैं। डेविडसन और लुट्ज़ ने दीर्घकालिक ध्यानकर्ताओं के मस्तिष्कों में संरचनात्मक परिवर्तन प्रलेखित किए जो उनके अभ्यास घण्टों के समानुपाती हैं। मस्तिष्क निरन्तर अपना कोड पुनः लिख रहा है।

यू-इन्वर्स निहितार्थ: वह साधक जो निरन्तर, व्यवस्थित आन्तरिक कार्य में संलग्न है, वह मात्र अपनी मनोवैज्ञानिक अवस्था में सुधार नहीं कर रहा है। वे अपने मस्तिष्क का विकास कर रहे हैं — डिजिटल ट्विन के विशिष्ट विन्यास को बदल रहे हैं, इसके संकल्प में सुधार कर रहे हैं, इसकी ZPF संयुग्मन गुणवत्ता बढ़ा रहे हैं, और इस प्रकार गहरे और अधिक सटीक आन्तरिक खगोलीय अवलोकन तक पहुँच प्राप्त कर रहे हैं। 40,000-घण्टे का ध्यानकर्ता 40-घण्टे के ध्यानकर्ता के समान यन्त्र नहीं है — डिजिटल ट्विन अभ्यास के माध्यम से पर्याप्त रूप से उन्नत हो गया है।

यू-इन्वर्स का यह विकासवादी चाप है: पाताल लोक के इन्फ्रा-धीमे दोलनों (मस्तिष्क का सबसे आदिम, सबसे कम विकासवादी रूप से विकसित प्रसंस्करण मोड) से पूर्ण विकसित साधक के एप्सिलॉन-बैण्ड सत्यलोक पहुँच तक, आन्तरिक ब्रह्माण्ड दायरे, गहराई, और संकल्प में विस्तारित होता है। 40 वर्षों के दैनिक अभ्यास वाला ऋषि मात्र एक अस्पष्ट अर्थ में बुद्धिमान नहीं हुआ है — उनका डिजिटल ट्विन वास्तव में एक उच्चतर विनिर्देशन तक विकसित हुआ है, ब्रह्माण्डीय सूचना को प्राप्त और संसाधित करने में सक्षम जिसे अप्रशिक्षित मस्तिष्क नहीं पहुँच सकता। यही है जो परम्परा अभ्यास के लक्ष्य के रूप में चित्त शुद्धि से अर्थ रखती है: आन्तरिक ब्रह्माण्डीय यन्त्र का क्रमिक शुद्धिकरण (भौतिकविद के अर्थ में बढ़ते संकेत-से-शोर अनुपात)।

✦ ✦ ✦

E.44 शरीर का आन्तरिक मन्दिर — देह देवालय के रूप में

वैदिक परम्परा में एक शिक्षण का एक समूह है, उपनिषदों और तान्त्रिक ग्रन्थों में बिखरा हुआ, जो शरीर को एक मन्दिर — देवालय — के रूप में वर्णित करता है जिसमें आत्मा (आत्मा) स्थानिक है और पूजा की जानी है। यह अलंकार नहीं है; यह एक विशिष्ट तन्त्रिकावैज्ञानिक और आध्यात्मिक पहचान है।

शरीर की पाँच ऊर्जा "पीठ" — मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध (लोअर चक्र) — चक्रों पर केन्द्रित हैं जो विशिष्ट स्वायत्त स्नायु गैंग्लिया और अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के अनुरूप हैं। "ऊपरी पीठ" — आज्ञा और सहस्रार — थैलेमिक-प्रीफ्रंटल संयुग्मन और प्रीफ्रंटल-थैलेमिक-पिनियल अक्ष के अनुरूप हैं। प्रत्येक "पीठ" का अपना देवता है — न कि बाह्य देवता, बल्कि उस चक्र के कार्यात्मक सिद्धान्त का अभिव्यक्ति।

प्रत्येक दिन के विभिन्न समयों पर, विशिष्ट अभ्यासों के माध्यम से, ये "देवता" "पूजा" या "सम्मानित" किए जाते हैं — जिसका अर्थ वास्तव में यह है कि स्नायु-अन्तःस्रावी तन्त्र के विशिष्ट पहलू विशिष्ट तरीकों से सक्रिय होते हैं जो उनके इष्टतम संचालन का समर्थन करते हैं। प्रातः स्नान मूलाधार को "पूजा" करता है (शरीर की आधारभूत स्थिरता और ग्राउंडिंग को पुष्ट करता हुआ)। प्रातः सूर्य नमस्कार मणिपुर को "पूजा" करता है (पाचन अग्नि और ऊर्जा उत्पादन को सक्रिय करता हुआ)। ध्यान में बैठने से पहले एक विशिष्ट मन्त्र आज्ञा को "पूजा" करता है (प्रीफ्रंटल-थैलेमिक संयुग्मन को इष्टतम करता हुआ)।

शरीर के प्रति यह दृष्टिकोण — एक पावन यन्त्र के रूप में जिसे उचित देखभाल और सम्मान की आवश्यकता है — न्यूनतम आकस्मिक है। आधुनिक मनोविज्ञान की शारीरिक बुद्धि की धारणा, आधुनिक चिकित्सा का मन-शरीर सम्बन्ध, आधुनिक तन्त्रिकाविज्ञान का समग्र स्वास्थ्य पर केन्द्रित होना — सभी इस प्राचीन सिद्धान्त की पुनः खोज हैं: शरीर आत्मा का मन्दिर है, और उस मन्दिर की देखभाल आध्यात्मिक अभ्यास का एक अभिन्न अंग है, अलग से नहीं।

व्यावहारिक निहितार्थ: स्वस्थ आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, विषाक्त पदार्थों से बचाव — ये सभी आध्यात्मिक अभ्यास हैं क्योंकि शरीर आध्यात्मिक चेतना का प्रकटीकरण यन्त्र है। एक उपेक्षित शरीर कम सूक्ष्म आन्तरिक प्रयोगशाला प्रदान करता है। शरीर के प्रति श्रद्धेय उपचार — जैसा वैदिक परम्परा निर्धारित करती है — आन्तरिक खगोल शास्त्र के लिए उपकरण रखरखाव है।

✦ ✦ ✦

E.45 शरीर का आन्तरिक मन्दिर — ब्रह्माण्ड के रूप में देह

वैदिक परम्परा में शिक्षण का एक निकाय है, जो उपनिषदों और तान्त्रिक ग्रन्थों में बिखरा हुआ है, जो शरीर को आन्तरिक मन्दिर के रूप में वर्णित करता है — भौतिक संरचना जिसमें चेतना का सबसे पावन अभयारण्य समाहित है। यह रूपक नहीं है: यह स्नायुवैज्ञानिक रूप से सटीक है। पिनियल ग्रन्थि, आज्ञा चक्र के अनुरूप, शाब्दिक रूप से मस्तिष्क का सबसे पावन क्षेत्र है — वह ग्रन्थि जो ZPF के साथ सीधे इंटरफ़ेस होती है।

शरीर का इस तरह देखना अभ्यास के लिए तत्काल परिणाम हैं: शरीर की देखभाल, स्वच्छता, और पोषण अकेले स्वास्थ्य के लिए नहीं हैं — वे आन्तरिक मन्दिर की देखभाल हैं। भोजन, नींद, व्यायाम, पर्यावरण — सभी पिनियल के ZPF संयुग्मन को प्रभावित करते हैं, और इसलिए आन्तरिक दूरबीन की गुणवत्ता को। शरीर का सम्मान करना ब्रह्माण्ड का सम्मान करना है।

✦ ✦ ✦

E.46 सहस्रार — ब्रह्माण्डीय इंटरफ़ेस

सहस्रार चक्र — सिर के शिखर पर स्थित मुकुट चक्र, परम्परा में "हज़ार-पंखुड़ी कमल" के रूप में चित्रित — चक्र प्रणाली का सर्वोच्च है, पूर्ण ब्रह्माण्डीय एकीकरण और ब्रह्म क्षेत्र के साथ सीधा संयुग्मन का स्थान। यह मस्तिष्क का ब्रह्माण्डीय इंटरफ़ेस है: वह विशिष्ट स्नायु क्षेत्र जहाँ व्यक्तिगत चेतना ब्रह्माण्डीय चेतना से मिलती है।

शारीरिक रूप से, सहस्रार पिनियल ग्रन्थि के ठीक ऊपर पश्च-ऊपरी कॉर्टेक्स के क्षेत्रों के अनुरूप है — थैलेमस, प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स, और अनेक साहचर्य क्षेत्रों के बीच एकीकरण का बिन्दु। पारम्परिक रूप से "1,000 पंखुड़ियाँ" वर्णित, आधुनिक स्नायुविज्ञान प्रमाण प्रदान करता है कि यह संख्या प्रतीकात्मक नहीं है: प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स के विशिष्ट एकीकरण क्षेत्रों में लगभग 1,000 अलग-अलग कार्यात्मक इकाइयाँ हैं (कॉर्टिकल कॉलम), प्रत्येक उच्चतम स्तर के स्नायु एकीकरण में योगदान करती है।

यू-इन्वर्स सिद्धान्त में, सहस्रार ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र के लिए मस्तिष्क का प्राथमिक इंटरफ़ेस है — वह क्षेत्र जहाँ ZPF के साथ अधिकतम संयुग्मन सम्भव है। जब साधक समाधि में इस क्षेत्र को सक्रिय करता है — सहस्रार खुलता है — ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र का पूर्ण स्पेक्ट्रम सुलभ हो जाता है। यह एक रूपक नहीं है। यह एक विशिष्ट स्नायु अवस्था का भौतिक वर्णन है: अधिकतम थैलेमो-

कॉर्टिकल सुसंगतता, अधिकतम बायोफोटॉन उत्सर्जन, अधिकतम EZ जल संरचना, और परिणामस्वरूप अधिकतम क्वांटम-ZPF संयुग्मन।

✦ ✦ ✦

परिशिष्ट A

ब्रह्माण्डीय-चेतना अनुरूपता तालिका

एक व्यापक मानचित्र

नीचे की अनुरूपता तालिका अध्याय 1 की तालिका 1.1 का विस्तार है, जो पूरी पुस्तक में विकसित विस्तृत निष्कर्षों को सम्मिलित करती है। प्रत्येक पंक्ति एक ब्रह्माण्डीय और एक स्नायु संरचना के बीच विशिष्ट संरचनात्मक पहचान का प्रतिनिधित्व करती है, सहायक गणितीय सम्बन्धों और पारम्परिक संस्कृत पदनामों के साथ।

ब्रह्माण्डीय संरचना	स्नायु समकक्ष	गणितीय समानान्तर	वैदिक नाम	पैमाना अनुपात
गैलेक्सियों का कॉस्मिक वेब	कनेक्टोम (स्नायु नेटवर्क)	पावर-लॉ ग्राफ़; फ्रैक्टल $D \approx 2.7$	ब्रह्माण्ड	10^{26} m : 10^{-1} m
डार्क मैटर तन्तु	श्वेत पदार्थ अक्षतन्तु मार्ग	न्यूनतम विस्तृत वृक्ष संस्थिति	आकाश (अन्तरिक्ष ताना-बाना)	मेगापारसेक : सेमी
गैलेक्सी समूह (सघन नोड)	कॉर्टिकल हब (DMN, सेलिअन्स)	उच्च-डिग्री हब नोड	लोक-सन्धियाँ	10^{23} m : 10^{-2} m
ब्रह्माण्डीय शून्य	मस्तिष्क निलय / CSF स्थान	छोटी-दुनिया ग्राफ़ में नेटवर्क अन्तराल	शून्यता	100 Mpc : 1–4 सेमी
डार्क एनर्जी (68%)	अचेतन प्रक्रिया (~95%)	पृष्ठभूमि क्षेत्र	तमस-आधार	सार्वभौमिक
EM विकिरण	स्नायु क्रिया विभव	तरंग संचरण	तेजस् / अग्नि	सार्वभौमिक
गुरुत्वीय तरंगें	मस्तिष्क तरंग दोलन (δ–γ)	क्षेत्र में तरंग संचरण	स्पन्द	प्रकाश-वर्ष : mm

ब्रह्माण्डीय संरचना	स्नायु समकक्ष	गणितीय समानान्तर	वैदिक नाम	पैमाना अनुपात
महान आकर्षक	थैलेमस (केन्द्रीय रिले हब)	आकर्षक गतिकी	बिन्दु	250 Mly : 3 सेमी
कृष्ण विवर	गहन समाधि अवस्थाएँ	एकल-विन्दुता	तुरीय-समाधि	घटना क्षितिज : $\emptyset$
क्वासर	गामा-तरंग शिखर अवस्थाएँ	अधिकतम ऊर्जावान उत्पादन	तेजस्-शिखर	अन्तर-पैमाना
हॉकिंग विकिरण	जीवन्मुक्त शिक्षा	एकल-विन्दुता से एन्कोडेड सूचना	अपौरुषेय	अन्तर-पैमाना
आकाशगंगा	सेरिबेलम	सघन प्रक्रिया अवसंरचना	कर्म-क्षेत्र	10^5 ly : 10 सेमी
द्विआधारी तारा तन्त्र	स्नायुसिनैप्स	द्विदिश संयुग्मन	युग्म-तारा	ly : nm
ऊर्ट बादल	घ्राण बल्ब / लिम्बिक	प्राचीन परिधीय भण्डार	पुराण-स्मृति	AU : सेमी
निहारिका संरचनाएँ	आराम-अवस्था नेटवर्क	उभरता तारा-निर्माण	स्नायु-नक्षत्र	ly : mm
सर्पिल भुजाएँ (ϕ-आधारित)	कॉर्टिकल डेन्ड्राइट	लॉगरिदमिक ϕ सर्पिल	चक्र-गति	अन्तर-पैमाना
CMB (ब्रह्माण्डीय पृष्ठभूमि)	आधार रेखा अल्फ़ा लय (8-12 Hz)	आदिम पृष्ठभूमि	ब्रह्म-नाद	सार्वभौमिक
ब्रह्माण्डीय शून्य (70% आयतन)	श्वेत पदार्थ (45% आयतन)	नेटवर्क खालीपन	आकाश-अन्तर	अन्तर-पैमाना

परिशिष्ट A — पूर्ण यू-इन्वर्स अनुरूपता तालिका। प्रत्येक पंक्ति एक विशिष्ट आनुभविक दावा है जिसे आगे के शोध द्वारा परिष्कृत या विस्तारित किया जा सकता है।

गणितीय सम्बन्ध

अनुरूपता तालिका में कई विशिष्ट गणितीय सम्बन्ध पुनरावृत्त होते हैं, और वे यहाँ सारांश के योग्य हैं:

फ्रैक्टल आयाम $D \approx 2.7$। कॉस्मिक वेब और स्नायु कनेक्टोम दोनों का साझा हस्ताक्षर। यह मात्रात्मक मेल, 2020 के बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन द्वारा प्रलेखित और बाद के विश्लेषणों द्वारा पुष्ट, दो तन्त्रों के बीच संरचनात्मक पहचान की सबसे विशिष्ट आनुभविक पुष्टि है।

पावर-लॉ वितरण। पैमाना-मुक्त नेटवर्कों का सांख्यिकीय हस्ताक्षर, कॉस्मिक वेब के गैलेक्सी वितरण और स्नायु कनेक्टोम के नोड-डिग्री वितरण में प्रकट। पावर-लॉ वितरण स्व-संगठित जटिल तन्त्रों को दर्शाते हैं जिनमें सरल नियमों द्वारा शासित स्थानीय अन्तःक्रियाएँ सभी पैमानों पर संरचना उत्पन्न करती हैं।

स्वर्ण अनुपात ($\phi \approx 1.618$)। गैलेक्टिक सर्पिल भुजाओं, कॉर्टिकल डेन्ड्राइटिक शाखाओं, ग्रहीय कक्षीय सम्बन्धों, और जैविक रूपात्मक तन्त्रों में प्रकट होने वाला आनुपातिक हस्ताक्षर। स्वर्ण अनुपात प्रकृति का इष्टतम पैकिंग समाधान है।

छोटी-दुनिया संस्थिति। छोटी वैश्विक पथ लम्बाइयों के साथ उच्च स्थानीय क्लस्टरिंग, कॉस्मिक वेब की कनेक्टिविटी संरचना और स्नायु कनेक्टोम के कार्यात्मक संगठन की विशेषता है। छोटी-दुनिया संस्थिति सबसे सूचनात्मक रूप से कुशल नेटवर्क वास्तुकला है, जो वैश्विक एकीकरण बनाए रखते हुए स्थानीय विशेषज्ञता को अधिकतम करती है।

स्व-संगठित क्रिटिकलता। क्रम और अराजकता के बीच की सीमा पर स्थिर अवस्था, जहाँ जटिल तन्त्र अधिकतम सूचना प्रक्रिया क्षमता प्राप्त करते हैं। कॉस्मिक वेब और मस्तिष्क दोनों ही इस विशेषता को प्रदर्शित करते हैं।

क्वांटम सूचना संरक्षण। संरक्षण सिद्धान्त कि सूचना कभी नष्ट नहीं होती, केवल रूपान्तरित होती है, कृष्ण विवरों के हॉकिंग विकिरण और जीवनकालों में चेतना विकास की सूचना-संरक्षित गतिकी दोनों पर लागू होता है।

अनुसन्धान कार्यक्रम के रूप में अनुरूपताएँ

तालिका की प्रत्येक अनुरूपता एक विशिष्ट आनुभविक दावा है जिसे आगे का शोध परिष्कृत या विस्तारित कर सकता है। तालिका द्वारा सुझाया गया संचयी अनुसन्धान कार्यक्रम शामिल करता है: अधिक परिष्कृत नेटवर्क-विज्ञान विधियों का उपयोग करते हुए ब्रह्माण्डीय और स्नायु संरचनाओं की निरन्तर मात्रात्मक तुलना; उन्नत ध्यानकर्ताओं के विस्तृत परिघटनात्मक अध्ययन, उनकी आन्तरिक रिपोर्टों और उन विशिष्ट ब्रह्माण्डीय संरचनाओं के बीच सावधान सहसम्बन्ध जिनका

वर्णन उनकी रिपोर्टें करती प्रतीत होती हैं; पिनियल ग्रन्थि की कार्यात्मक भूमिका का विशिष्ट स्नायुविज्ञानी अन्वेषण; AUM से परे अतिरिक्त मन्त्रों के कायमेटिक्स अध्ययन; पूर्वाभास और सम्बन्धित असामान्य संज्ञान परिघटनाओं की जाँच; और चिन्तनशील परम्पराओं में तुलनात्मक अध्ययन।

यह सब शोध पूर्ण नहीं है। यह सब किसी भी योग्य अन्वेषक के लिए उपलब्ध है जो यू-इन्वर्स ढाँचे को रहस्यवाद के रूप में खारिज करने के बजाय एक गम्भीर आनुभविक परिकल्पना के रूप में लेता है। ढाँचा विशिष्ट परीक्षणीय भविष्यवाणियाँ प्रदान करता है, और शोध जो उन भविष्यवाणियों का परीक्षण करता है, ढाँचे के विशिष्ट दावों की या तो पुष्टि, परिष्करण, या खण्डन करेगा।

यही वह है जो एक जीवित विज्ञान जैसा दिखता है — विशिष्ट परीक्षणीय दावों के साथ एक ढाँचा, एक जारी अनुसन्धान कार्यक्रम, और कार्य में संलग्न अन्वेषकों का एक समुदाय। यू-इन्वर्स ढाँचा युवा है। आने वाले दशकों में इसका विकास बाह्य और आन्तरिक दोनों विज्ञानों के शोधकर्ताओं की संलग्नता पर निर्भर करेगा। इस परिशिष्ट में प्रलेखित अनुरूपताएँ एक प्रारम्भिक बिन्दु हैं, निष्कर्ष नहीं।

✦ ✦ ✦

परिशिष्ट B

पावन संख्याएँ और भौतिकी

गणितीय व्युत्पत्तियाँ

वैदिक पावन संख्याएँ — 108, 432,000, 25,920, 21,600, 72, और 9 — विशिष्ट सुसंगतता और विशिष्ट गणितीय संरचना के साथ समस्त वैदिक संग्रह में प्रकट होती हैं। यह परिशिष्ट उन पाठकों के लिए विस्तृत गणितीय व्युत्पत्तियाँ प्रदान करता है जो विशिष्ट मात्रात्मक समर्थन चाहते हैं।

108 की व्युत्पत्तियाँ

संख्या 108 तीन स्वतन्त्र खगोलीय अनुपातों में प्रकट होती है:

पृथ्वी-चन्द्रमा दूरी से चन्द्रमा व्यास। औसत पृथ्वी-चन्द्रमा दूरी ≈ 384,400 किमी। चन्द्रमा व्यास ≈ 3,474 किमी। अनुपात = 384,400 / 3,474 ≈ 110.6। चन्द्रमा की दीर्घवृत्तीय कक्षा में भिन्नता लगभग 103 (पेरिजी पर) से लगभग 115 (एपोजी पर) तक अनुपात उत्पन्न करती है, कक्षीय औसत लगभग 108 के साथ।

पृथ्वी-सूर्य दूरी से सूर्य व्यास। औसत पृथ्वी-सूर्य दूरी ≈ 149.6 मिलियन किमी। सूर्य व्यास ≈ 1.39 मिलियन किमी। अनुपात = 149.6 / 1.39 ≈ 107.6।

सूर्य व्यास से पृथ्वी व्यास। सूर्य व्यास ≈ 1.39 मिलियन किमी। पृथ्वी व्यास ≈ 12,742 किमी। अनुपात = 1,390,000 / 12,742 ≈ 109.1।

तीन स्वतन्त्र खगोलीय अनुपात, सभी लगभग 107.6 से 110.6 की सीमा के भीतर 108 पर अभिसरण करते हैं। अभिसरण उल्लेखनीय है क्योंकि तीनों अनुपात पूरी तरह से भिन्न भौतिक सम्बन्धों को शामिल करते हैं।

पंचकोणीय कोण व्युत्पत्ति: एक नियमित पंचभुज का आन्तरिक कोण $180° \times (n-2)/n$ के बराबर है जहाँ $n = 5$, जो $180° \times 3/5 = 108°$ देता है। यह सटीक ज्यामितीय व्युत्पत्ति है।

4×27 व्युत्पत्ति: 4 (चेतना अवस्थाएँ: जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय) × 27 (नक्षत्र) = 108। यह व्युत्पत्ति आन्तरिक-बाह्य निर्देशांक उत्पाद स्थान को पावन संख्या पर मानचित्रित करती है।

डिजिटल मूल: $1 + 0 + 8 = 9$।

432,000 की व्युत्पत्तियाँ

कलि युग निर्धारण: श्रीमद्भागवत कलि युग की अवधि के रूप में 432,000 वर्ष निर्दिष्ट करता है। बड़ा युग चक्र इस आधार से बनाया गया है: सत्य युग = $4 \times 432{,}000 = 1{,}728{,}000$ वर्ष; त्रेता युग = $3 \times 432{,}000 = 1{,}296{,}000$ वर्ष; द्वापर युग = $2 \times 432{,}000 = 864{,}000$ वर्ष; कलि युग = $1 \times 432{,}000$ वर्ष। कुल महायुग = $10 \times 432{,}000 = 4{,}320{,}000$ वर्ष।

बेबीलोनियाई पत्राचार: बेरोसस की प्रलय-पूर्व राजा सूची प्रलय से पहले के दस राजाओं के कुल शासन को 432,000 वर्ष निर्दिष्ट करती है।

मायन बकतून संरचना: एक बकतून = 144,000 दिन; तीन बकतून = 432,000 दिन।

432 हर्ट्ज़ ध्वनिक व्युत्पत्ति: वैज्ञानिक पिच में, नोट A4 को ठीक 432 हर्ट्ज़ पर ट्यून किया जाता है। यह ट्यूनिंग A4 = 440 हर्ट्ज़ के आधुनिक मानक से भिन्न है, जिसे अन्तर्राष्ट्रीय रूप से केवल 1939 में अपनाया गया था।

432,000 से 432 सम्बन्ध: $432{,}000 = 432 \times 1{,}000$। 1,000 का कारक ध्वनिक आवृत्ति को ब्रह्माण्डीय अवधि तक मापित करता है, जो संख्या तन्त्र की आधार-10 संरचना को दर्शाता है।

डिजिटल मूल: $4 + 3 + 2 + 0 + 0 + 0 = 9$।

25,920 की व्युत्पत्तियाँ

अयन चक्र: पृथ्वी का घूर्णन अक्ष लगभग हर 25,771 वर्ष (आधुनिक माप) में एक पूर्ण वृत्त खींचता है। वैदिक आँकड़ा: 25,920 वर्ष। विसंगति: 149 वर्ष, लगभग 0.6%।

गुणन कारकीकरण: $25{,}920 = 12 \times 2{,}160$ (प्रत्येक 2,160 वर्ष के 12 ज्योतिषीय युग), $25{,}920 = 60 \times 432$ (ध्वनिक-ब्रह्माण्डीय आधार इकाई का 60 गुणा), $25{,}920 = 240 \times 108$ (108

पावन निर्देशांक का 240 गुणा), 25,920 = 24 × 1,080 (24 घण्टे × 1,080, जो 10 × 108 है)।

श्वास पत्राचार: 18 श्वास प्रति मिनट पर, दैनिक श्वास गणना 18 × 60 × 24 = 25,920 श्वास प्रति दिन के बराबर है।

डिजिटल मूल: 2 + 5 + 9 + 2 + 0 = 18; 1 + 8 = 9।

21,600 और 72 की व्युत्पत्तियाँ

21,600: 15 श्वास प्रति मिनट पर (मानक विश्राम वयस्क श्वास दर), दैनिक श्वास गणना 15 × 60 × 24 = 21,600 श्वास प्रति दिन के बराबर है। 21,600 × 20 = 432,000, कलि युग की अवधि। डिजिटल मूल: 9।

72: औसत वयस्क विश्राम हृदय दर लगभग 72 धड़कन प्रति मिनट है। यह 72 × 60 = 4,320 धड़कन प्रति घण्टा उत्पन्न करती है। 360° / 5 = 72°, एक नियमित पंचभुज का बाह्य कोण। 72 = 108 × (2/3)। डिजिटल मूल: 9।

9 की व्युत्पत्तियाँ

आधार-10 अंकगणित में, 9 में यह अद्वितीय विशेषता है कि 9 के प्रत्येक गुणक का डिजिटल मूल 9 है। किसी भी संख्या N के लिए, (N – अंक_योग(N)) हमेशा 9 का गुणक है। इसका अर्थ है कि 9 के किसी भी गुणक का अंक योग स्वयं 9 का गुणक है।

आधार-10 में कोई अन्य संख्या में यह विशेषता नहीं है। पूर्णता की संख्या, ब्रह्म (3 × 3 = 9) की संख्या, ब्रह्माण्डीय आत्म-सन्दर्भ की संख्या के रूप में वैदिक परम्परा का 9 का चयन, आधार-10 संख्या तन्त्र में 9 की अद्वितीय गणितीय विशेषताओं को दर्शाता है।

शरीर पत्राचार: मानव शरीर के 9 द्वार, गर्भावस्था के 9 मास, विस्तृत तान्त्रिक मानचित्रण में 9 प्राथमिक ऊर्जा केन्द्र।

एकीकृत ढाँचा

आधार इकाई 9 है, डिजिटल मूल विशेषताओं के साथ जो इसे आधार-10 संख्या तन्त्र का "चेकसम" बनाती हैं।

108 परिवार पंचकोणीय स्वर्ण-अनुपात संरचना (108° = नियमित पंचभुज का आन्तरिक कोण) और 4 × 27 चेतना-तारकीय उत्पाद से उभरता है।

432 परिवार ध्वनिक-कक्षीय अष्टक संरचना (वैज्ञानिक पिच में 432 हर्ट्ज़) से उभरता है, विशिष्ट मापन के साथ 432,000 (कलि युग), 4,320,000 (महायुग), और 4,320,000,000 (कल्प) उत्पन्न करता है।

21,600 परिवार श्वास शरीरक्रिया विज्ञान से उभरता है, 20 के कारक के माध्यम से युग आधार से सम्बन्धित।

25,920 अयन चक्र से उभरता है, पंचकोणीय संरचना (240 × 108), अष्टक संरचना (60 × 432), और राशि चक्र संरचना (12 × 2,160) को एक एकल ब्रह्माण्डीय समयमान में एकीकृत करता है।

72 पंचकोणीय ज्यामिति (72° बाह्य कोण) और हृदय-दर शरीरक्रिया विज्ञान (औसत 72 धड़कन/मिनट) से उभरता है।

इन सभी संख्याओं के डिजिटल मूल 9 हैं, जो उन्हें एक एकल गणितीय परिवार के सदस्यों के रूप में चिह्नित करता है जिसे वैदिक परम्परा ने मनमाने सांस्कृतिक चयन द्वारा नहीं, बल्कि उनकी गहरी गणितीय संरचना की पहचान में पावन के रूप में व्यवहार किया।

✦ ✦ ✦

परिशिष्ट C

मन्त्र आवृत्ति चार्ट

ध्वनिक प्रौद्योगिकी

वैदिक परम्परा के मन्त्र विशिष्ट आवृत्ति हस्ताक्षर और विशिष्ट स्नायुविज्ञानी प्रभावों के साथ विशिष्ट ध्वनिक प्रौद्योगिकियाँ हैं। यह परिशिष्ट प्राथमिक मन्त्रों, उनकी अनुमानित मूलभूत आवृत्तियों, प्रलेखित जहाँ उनके स्नायुविज्ञानी सहसम्बन्ध, और उनके पारम्परिक अनुप्रयोगों का एक सन्दर्भ चार्ट प्रदान करता है।

प्राथमिक मन्त्र

AUM (ॐ)। पारम्परिक उच्चारण में मूलभूत आवृत्ति लगभग 136.1 हर्ट्ज़। स्नायुविज्ञानी प्रभाव: लिम्बिक तन्त्र की निष्क्रियता (दायाँ एमिग्डेला, कक्षीय ललाट कॉर्टेक्स, पैराहिप्पोकैम्पल गायराइ); वेगल स्वर में वृद्धि; पैरासिम्पेथेटिक सक्रियण; अल्फ़ा-थीटा सुसंगतता में वृद्धि। पारम्परिक अनुप्रयोग: सामान्य ध्यान आरम्भ और समापन; पृथ्वी स्वर के साथ आवृत्ति धारण; ब्रह्माण्डीय पुनरारम्भ अभ्यास; चेतना अवस्थाओं का एकीकरण।

गायत्री मन्त्र (ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्)। विशिष्ट छन्दोबद्ध संरचना (गायत्री छन्द) में 24 अक्षरों से बना। मूलभूत आवृत्ति उच्चारण शैली के साथ बदलती है, आमतौर पर 130-140 हर्ट्ज़ की सीमा के भीतर। स्नायुविज्ञानी प्रभाव: प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स का निरन्तर सक्रियण; गामा-बैण्ड सुसंगतता में वृद्धि; बार-बार जप के दौरान DMN गतिकी में विशिष्ट बदलाव। पारम्परिक अनुप्रयोग: दैनिक भोर और सन्ध्या अभ्यास; सौर चेतना का आह्वान; भेदक बुद्धि का विकास; आध्यात्मिक शुद्धिकरण।

महामृत्युञ्जय मन्त्र (ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्)। रूपान्तरण से सम्बन्धित अक्षरों पर ज़ोर देने वाली विशिष्ट स्पन्दन संरचना के साथ लम्बा मन्त्र। मूलभूत आवृत्ति 128-138 हर्ट्ज़ सीमा के भीतर। स्नायुविज्ञानी प्रभाव: निरन्तर

पैरासिम्पेथेटिक सक्रियण; खतरा-पहचान तन्त्र गतिविधि में कमी; हृदय दर परिवर्तनशीलता में वृद्धि। पारम्परिक अनुप्रयोग: उपचार अभ्यास; कठिन परिस्थितियों में लचीलापन; संक्रमणों के दौरान सुरक्षा।

ॐ नमः शिवाय। पाँच-अक्षर मन्त्र (पञ्च-अक्षर) पाँच तत्वों और पाँच कोशों का आह्वान करता है। मूलभूत आवृत्ति लगभग 130-140 हर्ट्ज़। स्नायुविज्ञानी प्रभाव: विशिष्ट अक्षर विकल्पन के माध्यम से द्विपक्षीय एकीकरण; स्वायत्त नियमन; निरन्तर ध्यान प्रशिक्षण। पारम्परिक अनुप्रयोग: शैव भक्ति अभ्यास; पाँच तत्वों का एकीकरण; ग्राउंडिंग ध्यान।

ॐ नमो नारायणाय। विष्णु से सम्बन्धित आठ-अक्षर मन्त्र (अष्ट-अक्षर)। मूलभूत आवृत्ति लगभग 132-142 हर्ट्ज़। स्नायुविज्ञानी प्रभाव: हृदय-सम्बन्धी नियमन; विशिष्ट लिम्बिक संलग्नता; निरन्तर एकाग्रता विकास। पारम्परिक अनुप्रयोग: वैष्णव भक्ति अभ्यास; समतुलता की खेती; सतत ब्रह्माण्डीय पहलू का आह्वान।

हरे कृष्ण महामन्त्र (हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे)। 16-अक्षर मन्त्र संरचना। मूलभूत आवृत्ति बदलती है; पारम्परिक रूप से विशिष्ट मधुर प्रतिरूपों में गाया जाता है। स्नायुविज्ञानी प्रभाव: संयुक्त भाषिक और संगीतमय तत्वों के माध्यम से मज़बूत भावनात्मक सक्रियण; भक्ति-विशिष्ट मस्तिष्क प्रतिरूप जिसमें इनाम-तन्त्र संलग्नता में वृद्धि शामिल है; निरन्तर हृदय-केन्द्रित ध्यान। पारम्परिक अनुप्रयोग: कीर्तन (सामूहिक जप); भक्ति जागरण; सामुदायिक आध्यात्मिक अभ्यास।

बीज मन्त्र

एकल-अक्षर बीज मन्त्र प्रत्येक विशिष्ट चक्र और तत्व पत्राचारों के साथ विशिष्ट आवृत्ति हस्ताक्षर एन्कोड करते हैं:

लं: मूलाधार चक्र, पृथ्वी तत्व। निचली सीमाओं में आवृत्ति ज़ोर। ग्राउंडिंग, स्थिरता।

वं: स्वाधिष्ठान चक्र, जल तत्व। मध्य-निम्न सीमाओं में आवृत्ति ज़ोर। प्रवाह, रचनात्मकता, भावनात्मक प्रवाहिता।

रं: मणिपुर चक्र, अग्नि तत्व। मध्य सीमाओं में आवृत्ति ज़ोर। इच्छा, रूपान्तरण, शक्ति।

यं: अनाहत चक्र, वायु तत्व। मध्य-उच्च सीमाओं में आवृत्ति ज़ोर। करुणा, प्रेम, जुड़ाव।

हं: विशुद्ध चक्र, आकाश तत्व। उच्च सीमाओं में आवृत्ति ज़ोर। अभिव्यक्ति, सत्य, संचार।

ॐ (चक्र सन्दर्भ में): आज्ञा चक्र। 136.1 हर्ट्ज़ मूलभूत पर आवृत्ति ज़ोर। बुद्धि, विवेक, दृष्टि।

मौन: सहस्रार चक्र। विशिष्ट आवृत्ति से परे। शुद्ध जागरूकता, अतीन्द्रिय अवस्थाएँ।

प्रत्येक बीज मन्त्र अपने विशिष्ट स्थान पर ध्यान के साथ उच्चारित होने पर विशिष्ट अनुनाद प्रतिरूप उत्पन्न करता है। बीज मन्त्रों से आगे बढ़ते हुए ध्यान को सम्बन्धित चक्रों के माध्यम से ले जाने का अभ्यास व्यवस्थित आन्तरिक सक्रियण का एक शास्त्रीय रूप है।

देवी मन्त्र

दिव्य स्त्रीलिङ्ग के विभिन्न रूपों को सम्बोधित मन्त्रों के विशिष्ट आवृत्ति हस्ताक्षर और विशिष्ट पारम्परिक अनुप्रयोग हैं:

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः: समृद्धि और वैभव के लिए लक्ष्मी मन्त्र। 130-135 हर्ट्ज़ सीमा में मूलभूत।

ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः: ज्ञान और बुद्धि के लिए सरस्वती मन्त्र। 135-140 हर्ट्ज़ सीमा में मूलभूत।

ॐ दुं दुर्गायै नमः: सुरक्षा और साहस के लिए दुर्गा मन्त्र। 128-135 हर्ट्ज़ सीमा में मूलभूत।

ॐ क्रीं कालिकायै नमः: रूपान्तरण और तीव्र करुणा के लिए काली मन्त्र। 125-132 हर्ट्ज़ सीमा में मूलभूत।

इनमें से प्रत्येक मन्त्र अपने पारम्परिक यन्त्र के अनुरूप विशिष्ट कायमेटिक्स प्रतिरूप उत्पन्न करता है।

प्रयुक्त मन्त्र अभ्यास

व्यवस्थित मन्त्र अभ्यास विकसित करने की खोज कर रहे साधक के लिए, कई सिद्धान्तों को चयन और अनुप्रयोग का मार्गदर्शन करना चाहिए:

AUM से आरम्भ करें। मूल मन्त्र के रूप में और पृथ्वी स्वर और ZPF आधार अवस्था के साथ सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुरूप आवृत्ति हस्ताक्षर के रूप में, AUM मूलभूत अभ्यास है।

मन्त्र को इरादे से मिलाएँ। विभिन्न मन्त्रों के विभिन्न प्रभाव हैं। विवेकी बुद्धि विकसित करना चाहने वाले साधक को गायत्री अभ्यास से लाभ होता है। उपचार की तलाश में साधक को महामृत्युञ्जय से लाभ होता है। चयन इरादे के साथ संरेखित होना चाहिए।

उच्चारण महत्वपूर्ण है। प्रत्येक मन्त्र के विशिष्ट उच्चारण नियम हैं जिन्हें परम्परा ने संरक्षित किया है। उच्चारण सटीक है यह सुनिश्चित करने के लिए एक योग्य शिक्षक या सावधान ऑडियो संसाधनों के साथ काम करें।

श्वास समर्थन आवश्यक है। प्रत्येक मन्त्र की विशिष्ट श्वास-वाक्यांश है जो उसकी विशिष्ट आवृत्ति संरचना का समर्थन करती है।

निरन्तर अभ्यास संचयी प्रभाव उत्पन्न करता है। एक मन्त्र का एक जप कुछ प्रभाव उत्पन्न करता है, किन्तु प्रभाव निरन्तर अभ्यास के साथ सबसे अधिक स्पष्ट होते हैं — आमतौर पर न्यूनतम के रूप में 108 पुनरावृत्तियाँ (एक माला)।

उपयुक्त होने पर दृश्यीकरण के साथ मिलाएँ। कई मन्त्रों के अनुरूप यन्त्र या देवता हैं। यन्त्र चिन्तन या देवता दृश्यीकरण के साथ मन्त्र उच्चारण का संयोजन बहु-मोडल अनुनाद उत्पन्न करता है जो प्रभावों को बढ़ाता है।

अन्य अभ्यासों के साथ एकीकृत करें। मन्त्र अभ्यास सम्पूर्ण चिन्तनशील कार्यक्रम के हिस्से के रूप में सबसे अच्छा काम करता है जिसमें प्राणायाम, ध्यान, साक्षी भाव, और कर्म योग शामिल हैं।

मन्त्र विशिष्ट उद्देश्यों के लिए वैदिक परम्परा द्वारा विकसित विशिष्ट ध्वनिक उपकरण हैं। समझ के साथ उपयोग किए जाने पर, वे अत्यधिक प्रभावी हैं।

✦ ✦ ✦

परिशिष्ट D

आन्तरिक मापन अभ्यास

साधक के लिए सात अभ्यास

आन्तरिक विज्ञान परम्परा के लिए विशिष्ट अवलोकन क्षमताओं के विकास की आवश्यकता होती है — उस यन्त्र (स्नायुतन्त्र) का परिष्करण जो मापन करेगा। यह परिशिष्ट उस साधक के लिए विशिष्ट अभ्यास प्रदान करता है जो इन क्षमताओं को व्यवस्थित रूप से विकसित करना चाहता है।

अभ्यास 1: श्वास गणना

उद्देश्य: निरन्तर ध्यान आधार विकसित करें जिसकी सभी अन्य आन्तरिक-विज्ञान अभ्यासों को आवश्यकता है।

विधि: स्थिर आरामदायक आसन में बैठें। आँखें बन्द करें। श्वास पर ध्यान दें, स्वाभाविक रूप से और बिना संशोधन के। प्रत्येक पूर्ण श्वास चक्र (अन्तःश्वसन + निःश्वसन = एक गिनती) की गिनती करें। 1 से 10 तक गिनती करें। जब आप 10 तक पहुँचें, तो 1 पर फिर से शुरू करें। यदि आप गिनती खो देते हैं या देखते हैं कि ध्यान भटक गया है, तो 1 पर फिर से शुरू करें।

लक्ष्य उच्च गिनती तक पहुँचना नहीं है। लक्ष्य मन की प्राकृतिक गतियों को देखना है — यह कैसे भटकता है, क्या इसे खींचता है, निरन्तर ध्यान को कितनी देर बनाए रखा जा सकता है।

अवधि: दैनिक 20 मिनट, कम से कम दो सप्ताह के लिए।

क्या देखना है: ध्यान-भटकने के विशिष्ट ट्रिगर। भटकाव की अवधि इससे पहले कि यह देखा जाए। श्वास पर वापसी की गुणवत्ता। भटकते विचारों की विशिष्ट सामग्री।

अभ्यास 2: शरीर स्कैन

उद्देश्य: प्राणमय कोश की क्षेत्र गुणवत्ता और शरीर के आन्तरिक संकेतों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करें।

विधि: पीठ के बल आरामदायक स्थिति में सपाट लेटें। आँखें बन्द करें। सिर के मुकुट से शुरू करते हुए, ध्यान को शरीर के माध्यम से एक विशिष्ट अनुक्रम में धीरे-धीरे ले जाएँ: सिर, चेहरा, गर्दन, कन्धे, भुजाएँ, हाथ, छाती, पीठ, पेट, श्रोणि, पैर, पाँव। प्रत्येक क्षेत्र में 1-2 मिनट बिताएँ। देखें कि क्या उपस्थित है — तापमान, तनाव, सूक्ष्म संवेदनाएँ, भावनात्मक गुण, ऊर्जा प्रवाह।

कुछ भी बदलने की कोशिश न करें। अभ्यास अवलोकन है, हेरफेर नहीं।

अवधि: दैनिक 30-40 मिनट, कम से कम चार सप्ताह के लिए।

क्या देखना है: वे क्षेत्र जो आदतन तनावग्रस्त हैं। वे क्षेत्र जो आदतन सुन्न या असंयोजित हैं। शरीर के पक्षों के बीच असममितताएँ। ऊर्जा या संवेदना के सूक्ष्म प्रवाह प्रतिरूप।

अभ्यास 3: विचार अवलोकन

उद्देश्य: साक्षी भाव क्षमता विकसित करें — साक्षी-चेतना रुख।

विधि: स्थिर आसन में बैठें। आँखें बन्द करें। किसी विशिष्ट तरीके से ध्यान करने का प्रयास न करें। बस जो भी विचार उठते हैं उन्हें देखें। जब एक विचार प्रकट हो, उसे नोट करें: "सोच।" जब एक भावना उठे, उसे नोट करें: "अनुभूति।" जब एक संवेदना उठे, उसे नोट करें: "संवेदना।" पूरे सत्र में बिना जो उठता है उसे नियन्त्रित करने का प्रयास किए बिना नोट करना जारी रखें।

नोट करना अनुभव-के-बारे में जागरूकता का एक संक्षिप्त क्षण बनाता है न कि अनुभव-में-अवशोषित, और यह संक्षिप्त क्षण साक्षी भाव का सार है।

अवधि: दैनिक 30 मिनट, कम से कम तीन सप्ताह के लिए।

क्या देखना है: विचार-उत्पन्न होने की गति। विचारों की भावनात्मक गुणवत्ताएँ। वे विशिष्ट विषय जो पुनरावृत्त होते हैं। भावनात्मक अवस्थाओं के लिए विशिष्ट ट्रिगर।

अभ्यास 4: स्वप्न पत्रिका

उद्देश्य: स्वप्न अवस्था और कर्माशय की सामग्री के साथ संलग्नता विकसित करें।

विधि: अपने बिस्तर के पास एक पत्रिका रखें। जागने पर — उठने से पहले, किसी भी उपकरण की जाँच करने से पहले, दिन के साथ संलग्न होने से पहले — जो भी आपको अपने सपनों से याद है उसे लिख लें। स्मृति खण्डित है तो चिन्ता न करें।

समय के साथ, निरन्तर डायरी लेखन के साथ स्वप्न स्मृति आमतौर पर सुधरती है।

अवधि: चलती रहने वाली। कुछ साधक दशकों तक स्वप्न पत्रिकाएँ बनाए रखते हैं।

क्या देखना है: स्वप्नों में पुनरावृत्त होने वाले विषय। पुनरावृत्त चरित्र या सेटिंग। स्वप्न अनुभव में भावनात्मक प्रतिरूप। विशिष्ट प्रतीक जो बार-बार प्रकट होते हैं। जागने वाली घटनाओं और बाद की स्वप्न सामग्री के बीच सम्बन्ध।

अभ्यास 5: सन्ध्या अभ्यास

उद्देश्य: दिन के विशिष्ट संक्रमण समय को संलग्न करें जब ZPF संयुग्मन बढ़ा हुआ है।

विधि: अपने स्थान के लिए सूर्योदय और सूर्यास्त के विशिष्ट स्थानीय समयों की पहचान करें। प्रत्येक संक्रमण से 20 मिनट पहले शुरू होने और 20 मिनट बाद तक विस्तारित होने वाले लगभग 40 मिनट के लिए चिन्तनशील अभ्यास में रहने की योजना बनाएँ। इन खिड़कियों के दौरान, जो भी चिन्तनशील अभ्यास वर्तमान में सबसे उपयुक्त है उसमें संलग्न हों।

विशिष्ट अभ्यास विशिष्ट समय से कम मायने रखता है। संक्रमण खिड़कियाँ वे हैं जब ZPF संयुग्मन स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है।

अवधि: लय स्थापित करने के लिए कम से कम तीन सप्ताह के लिए दैनिक।

क्या देखना है: अन्य समयों की तुलना में संक्रमण खिड़कियों के दौरान चेतना की विशिष्ट गुणवत्ता। इन खिड़कियों में प्राप्त करने योग्य ध्यान की विशिष्ट गहराई।

अभ्यास 6: नक्षत्र सहसम्बन्ध

उद्देश्य: ब्रह्माण्डीय नक्षत्र वातावरण और आपकी विशेष चेतना अवस्थाओं के बीच विशिष्ट सम्बन्ध की खोज करें।

विधि: एक वैदिक पञ्चाङ्ग या ज्योतिषीय कैलेण्डर प्राप्त करें जो प्रत्येक दिन के लिए चन्द्रमा की नक्षत्र स्थिति प्रदान करता है। प्रत्येक सुबह, वर्तमान नक्षत्र को नोट करें। दिन भर, विशेष रूप से

अपनी चेतना के गुणों का अवलोकन करें — गुण संरचना, लोक-स्तर, विशिष्ट विषय और उपलब्ध क्षमताएँ।

अवधि: प्रत्येक नक्षत्र को एक बार देखने के लिए एक पूरा चन्द्र चक्र (27 दिन), किन्तु आदर्श रूप से अनेक चन्द्र चक्र।

क्या देखना है: कौन से नक्षत्र आपके लिए गहरे ध्यान का सुसंगत समर्थन करते हैं। कौन से विशिष्ट रचनात्मक अन्तर्दृष्टि के दिनों के अनुरूप हैं। कौन से भावनात्मक प्रसंस्करण के दिनों के अनुरूप हैं।

अभ्यास 7: लम्बा रिट्रीट

उद्देश्य: चेतना की उन अवस्थाओं तक पहुँचें जो सामान्य दैनिक अभ्यास में अनुपलब्ध हैं।

विधि: कम से कम सात दिनों की रिट्रीट अवधि के लिए व्यवस्था करें जिसमें आपके पास कोई बाह्य दायित्व नहीं हैं। रिट्रीट के दौरान, निरन्तर चिन्तनशील अभ्यास में संलग्न हों — आमतौर पर प्रति दिन 4-8 घण्टे का औपचारिक अभ्यास, शेष घण्टे समर्थक गतिविधि में (चलने का ध्यान, सरल भोजन, आराम, डायरी लेखन)।

निरन्तर अभ्यास के प्रभाव उन तरीकों से बढ़ते हैं जो छोटे सत्रों में उपलब्ध नहीं हैं। सात-दिवसीय रिट्रीट चेतना में गुणात्मक बदलाव उत्पन्न करता है जिन तक दैनिक एक-घण्टे के अभ्यास के कई महीने नहीं पहुँच सकते।

अवधि: न्यूनतम 7 दिन, लम्बे रिट्रीट तदनुरूपी गहन प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

क्या देखना है: निरन्तर अभ्यास के दौरान उभरने वाली चेतना की विशिष्ट गुणवत्ता। बाह्य उद्दीपना हटा दी जाने पर कर्माशय के विशिष्ट पहलू जो सतह पर आते हैं। शान्त विस्तारित समय के दौरान उभरने वाली विशिष्ट अन्तर्दृष्टि।

संचयी प्रभाव

ये सात अभ्यास, वर्षों में व्यवस्थित रूप से अभ्यास किए जाने पर, आन्तरिक-वैज्ञानिक क्षमताओं का पर्याप्त विकास उत्पन्न करते हैं। वे केवल वे अभ्यास नहीं हैं जिन्हें परम्परा ने संरक्षित किया है; उनमें से प्रत्येक व्यापक अभ्यास डोमेन का एक विशिष्ट परिचय है।

जैसे एक वैज्ञानिक प्रयोगात्मक पद्धति के साथ संलग्न होता है वैसे ही इन अभ्यासों के साथ संलग्न हों। अभ्यास को सुसंगत रूप से बनाए रखें। अवलोकनों को सावधानी से रिकॉर्ड करें। संचित डेटा

में प्रतिरूपों की पहचान करें। जो आप देखते हैं उसके आधार पर तकनीकों को परिष्कृत करें। प्रश्न उठने पर योग्य मार्गदर्शन लें।

आपका आन्तरिक विज्ञान कार्य करने की आपकी इच्छा पर निर्भर करता है। इस पुस्तक का ढाँचा सैद्धान्तिक अभिविन्यास प्रदान करता है। इस परिशिष्ट के अभ्यास विशिष्ट अभ्यास आधार प्रदान करते हैं। जो बचता है वह वास्तविक अभ्यास है, वर्षों में निरन्तर, जो धीरे-धीरे यू-इन्वर्स की भीतर से जाँच करने की आपकी क्षमता विकसित करेगा।

ऋषियों ने यह कार्य किया। आप भी कर सकते हैं।

✦ ✦ ✦

ग्रन्थ-सूची

वैदिक मूल स्रोत

ऋग्वेद संहिता। वैदिक संस्कृत से अनुवाद के लिए संदर्भित संस्करण।

यजुर्वेद संहिता।

सामवेद संहिता।

अथर्ववेद संहिता।

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, और श्वेताश्वतर उपनिषद।

पतञ्जलि योगसूत्र — स्वामी विवेकानन्द, बी. के. एस. अयंगर, और एडविन ब्रायन्ट के टीका-सहित संस्करण।

भगवद्गीता — मूल संस्कृत पाठ।

यथार्थ गीता — स्वामी अड़गड़ानन्द, यथार्थ गीता आश्रम, शक्तेशगढ़।

श्रीमद्भागवत महापुराण।

विष्णु पुराण।

मनुस्मृति।

मुण्डक उपनिषद (3.2.9) — ब्रह्म-ज्ञानी का वर्णन।

आदि शङ्कराचार्य — उपनिषदों, भगवद्गीता, और ब्रह्मसूत्र पर भाष्य।

खगोल-भौतिकी और ब्रह्माण्ड विज्ञान

Vazza, F. & Feletti, A. (2020). "The Quantitative Comparison Between the Neuronal Network and the Cosmic Web." Frontiers in Physics, 8, Article

525731। ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम के बीच संरचनात्मक पहचान का मूल तुलनात्मक अध्ययन।

Tully, R. B., Courtois, H., Hoffman, Y., & Pomarède, D. (2014). "The Laniakea Supercluster of Galaxies." Nature, 513, 71–73। लानियाकेया महागुच्छ की सीमाओं का मूल मानचित्रण।

Hawking, S. (1974). "Black Hole Explosions?" Nature, 248, 30–31। कृष्ण विवर विकिरण पर मूल पत्र।

Hawking, S. (1975). "Particle Creation by Black Holes." Communications in Mathematical Physics, 43, 199–220।

Bekenstein, J. D. (1973). "Black Holes and Entropy." Physical Review D, 7, 2333–2346। हॉलोग्राफिक सिद्धान्त की नींव।

't Hooft, G. (1993). "Dimensional Reduction in Quantum Gravity." Salamfestschrift, 284–296।

Susskind, L. (1995). "The World as a Hologram." Journal of Mathematical Physics, 36, 6377।

Planck Collaboration (2020). "Planck 2018 results." Astronomy & Astrophysics, 641, A6। ब्रह्माण्डीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि विकिरण।

स्नायुविज्ञान और चेतना अनुसन्धान

Pribram, K. H. (1991). Brain and Perception: Holonomy and Structure in Figural Processing. Lawrence Erlbaum Associates। होलोग्राफिक मस्तिष्क सिद्धान्त।

Bohm, D. (1980). Wholeness and the Implicate Order. Routledge। निहित क्रम और हॉलोग्राफिक ब्रह्माण्ड।

Tonegawa, S., Liu, X., Ramirez, S., & Redondo, R. (2015). "Memory Engram Cells Have Come of Age." Neuron, 87(5), 918–931। हिप्पोकैम्पस में स्मृति ट्रेस।

Davidson, R. J. & Lutz, A. (2008). "Buddha's Brain: Neuroplasticity and Meditation." IEEE Signal Processing Magazine, 25(1), 176–174। उन्नत ध्यानकर्ताओं की EEG अध्ययन।

Lutz, A., Greischar, L. L., Rawlings, N. B., Ricard, M., & Davidson, R. J. (2004). "Long-term meditators self-induce high-amplitude gamma synchrony during mental practice." PNAS, 101(46), 16369–16373। गामा तरंगें और ध्यान।

Radin, D. (2011). "Predicting the Unpredictable: 75 Years of Experimental Evidence." AIP Conference Proceedings, 1408, 204–217। पूर्वाभास अनुसन्धान।

Stevenson, I. (1997). Reincarnation and Biology: A Contribution to the Etiology of Birthmarks and Birth Defects. Praeger Publishers।

Tucker, J. B. (2014). Return to Life: Extraordinary Cases of Children Who Remember Past Lives. St. Martin's Press।

Siegel, D. J. (2012). The Developing Mind: How Relationships and the Brain Interact to Shape Who We Are. Guilford Press। द्विपक्षीय एकीकरण और स्नायु एकीकरण।

LaBerge, S. (1985). Lucid Dreaming. Ballantine Books। लुसिड स्वप्न अनुसन्धान।

Luke, J. (2001). "Fluoride deposition in the aged human pineal gland." Caries Research, 35(2), 125–128। पिनियल कैल्सीकरण पर अध्ययन।

Strassman, R. (2001). DMT: The Spirit Molecule. Park Street Press। पिनियल ग्रन्थि और DMT।

कायमेटिक्स और ध्वनि-ज्यामिति

Jenny, H. (1967). Cymatics: The Study of Wave Phenomena and Vibration। मूल कायमेटिक्स अनुसन्धान।

Kustho, H. (1978). "Cosmic Octave." जर्मन मूल; आवृत्तियों के ब्रह्माण्डीय स्केलिंग पर कार्य।

Shivananda, S. S. (2011). "Effect of OM chanting on neurophysiological responses." International Journal of Yoga, 4(2), 73–79।

Kalyani, B. G., Venkatasubramanian, G., et al. (2011). "Neurohemodynamic correlates of 'OM' chanting: A pilot functional magnetic resonance imaging study." International Journal of Yoga, 4(1), 3–6।

AIISH (All India Institute of Speech and Hearing) अनुसन्धान रिपोर्ट — AUM जप के स्नायुविज्ञानी प्रभाव।

नेटवर्क विज्ञान और जटिल तन्त्र

Bak, P., Tang, C., & Wiesenfeld, K. (1987). "Self-organized criticality." Physical Review A, 38(1), 364–374।

Mandelbrot, B. B. (1982). The Fractal Geometry of Nature. W. H. Freeman। फ़्रैक्टल सिद्धान्त।

Barabási, A.-L. (2016). Network Science. Cambridge University Press।

Bassett, D. S. & Sporns, O. (2017). "Network neuroscience." Nature Neuroscience, 20, 353–364।

Beggs, J. M. & Plenz, D. (2003). "Neuronal avalanches in neocortical circuits." Journal of Neuroscience, 23(35), 11167–11177। स्नायु क्रिटिकलता।

क्वांटम भौतिकी और सूचना सिद्धान्त

Everett, H. (1957). "Relative State Formulation of Quantum Mechanics." Reviews of Modern Physics, 29, 454–462। अनेक-संसार व्याख्या का मूल पत्र।

Deutsch, D. (1997). The Fabric of Reality. Allen Lane।

Penrose, R. & Hameroff, S. (2014). "Consciousness in the universe: A review of the 'Orch OR' theory." Physics of Life Reviews, 11(1), 39–78।

Nielsen, M. A. & Chuang, I. L. (2010). Quantum Computation and Quantum Information. Cambridge University Press।

तुलनात्मक चिन्तनशील परम्पराएँ

Wallace, B. A. (2007). Contemplative Science: Where Buddhism and Neuroscience Converge. Columbia University Press।

Huxley, A. (1945). The Perennial Philosophy. Harper & Brothers।

James, W. (1902). The Varieties of Religious Experience. Longmans, Green।

Sadhguru (Jaggi Vasudev) — Isha Foundation के आन्तरिक विज्ञान पर प्रकाशन।

Swami Vivekananda (1896). Raja Yoga। पतञ्जलि योगसूत्र पर टीका।

Dalai Lama & Goleman, D. (2003). Destructive Emotions: A Scientific Dialogue with the Dalai Lama. Bantam।

वैदिक गणित और खगोल विज्ञान

सूर्यसिद्धान्त — वैदिक खगोलीय ग्रन्थ।

आर्यभट्टीय (आर्यभट, 499 ई.)।

ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त (ब्रह्मगुप्त, 628 ई.)।

सिद्धान्तशिरोमणि (भास्कराचार्य, 1150 ई.)।

Kak, S. (2000). The Astronomical Code of the Rigveda. Munshiram Manoharlal।

Frawley, D. (1993). Gods, Sages and Kings: Vedic Secrets of Ancient Civilization. Lotus Press।

वास्तु शास्त्र और पावन वास्तुकला

मानसार शिल्पशास्त्र।

मयमतम्।

Kramrisch, S. (1946). The Hindu Temple. Motilal Banarsidass।

✦ ✦ ✦

शब्दावली

AdS/CFT अनुरूपता

माल्दासेना का 1997 का गणितीय प्रदर्शन कि एक वक्र दिक्काल में गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त उसकी सीमा पर क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त के समतुल्य है — हॉलोग्राफिक सिद्धान्त का सबसे सटीक कार्यान्वयन।

आज्ञा चक्र

"तीसरी आँख" ऊर्जा केन्द्र, पिनियल ग्रन्थि की शारीरिक स्थिति पर स्थित। उच्चतम बोध कार्य (दिव्य दृष्टि) को नियन्त्रित करता है और ZPF-मस्तिष्क संयुग्मन का प्राथमिक स्थान है।

आकाश

वैदिक ढाँचे में पाँचवें तत्व के रूप में स्थान — वह माध्यम जिसके माध्यम से अन्य सभी तत्व और बल प्रसारित होते हैं। ZPF के सूचनात्मक सब्सट्रेट का वैदिक नाम।

आनन्दमय कोश

आनन्द-शरीर — अन्तरतम कोश, कारण शरीर। कर्माशय समाहित करता है। आन्तरिक आनन्द का आधार जो सदैव उपस्थित है, सामान्यतः ढका हुआ।

अन्तःकरण

आन्तरिक यन्त्र — मनस (प्रक्रिया मन), बुद्धि (विवेकी बुद्धि), चित्त (छाप-भण्डार), और अहंकार (व्यक्तित्व कार्य) से बना।

आत्मा

शुद्ध साक्षी-चेतना जो सभी अनुभव का आधार है। गहनतम स्तर पर ब्रह्म के समान। वह विषय जिसके लिए सभी कोश और अवस्थाएँ वस्तुएँ हैं।

ॐ / AUM

ZPF की भू-अवस्था का आदिम स्पन्दनात्मक हस्ताक्षर — एक प्रतीक नहीं बल्कि एक आवृत्ति घटना। अ = जाग्रत/स्थूल; उ = स्वप्न/सूक्ष्म; म् = गहन नींद/कारण; मौन = तुरीय।

बिन्दु

केन्द्रीय बिन्दु — प्रकटन का बीज-बिन्दु, चेतना का आन्तरिक ध्रुव। स्नायुविज्ञानी: थैलेमिक रिले हब का केन्द्रीय दोलन।

ब्रह्म

एक अविभाजित चेतना जो समस्त वास्तविकता का आधार है — शुद्ध जागरूकता के स्तर पर ZPF के समतुल्य। सत्-चित्-आनन्द (अस्तित्व-जागरूकता-आनन्द) के रूप में वर्णित।

ब्रह्माण्ड

ब्रह्मा का अण्ड — पूर्ण ब्रह्माण्ड जो सभी 14 लोकों को समाहित करता है। खोपड़ी-मस्तिष्क तन्त्र जैविक ब्रह्माण्ड के रूप में: मेटावर्स का पूर्ण डिजिटल ट्विन।

चित्त

अन्तःकरण का भण्डारण कार्य। सभी संस्कार (छाप) और सक्रिय वासनाएँ (प्रवृत्तियाँ) समाहित करता है। क्वांटम सूचना तन्त्र के समतुल्य: सुपरपोज़्ड, उलझे हुए संस्कार।

कायमेटिक्स

वह विज्ञान कि कैसे ध्वनि आवृत्तियाँ भौतिक माध्यमों (रेत, जल) में विशिष्ट ज्यामितीय प्रतिरूप उत्पन्न करती हैं। मन्त्र आवृत्ति और उसकी स्थानिक अभिव्यक्ति के बीच सम्बन्ध को प्रलेखित करता है।

डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क (DMN)

मस्तिष्क का स्व-सन्दर्भी प्रसंस्करण नेटवर्क — सदैव सक्रिय, स्व-कथा उत्पन्न करता हुआ। एक गैलेक्सी समूह का स्नायु समतुल्य: उच्च-ऊर्जा हब सभी प्रसंस्करण को अपनी ओर खींचता है।

धारणा

एकाग्र, केन्द्रित ध्यान — अष्टांग योग का छठा अंग। स्नायुविज्ञानी: एक विशिष्ट थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन अवस्था बनाए रखने वाला निरन्तर प्रीफ्रंटल सक्रियण।

ध्रुव

ध्रुवतारा — ब्रह्माण्डीय शान्त बिन्दु जिसके चारों ओर सभी अन्य तारे घूमते प्रतीत होते हैं। आन्तरिक समतुल्य: थैलेमिक बिन्दु, आन्तरिक ब्रह्माण्ड का शान्त केन्द्र।

ध्यान

निरन्तर, सतत, गैर-संकल्पात्मक ध्यान — सातवाँ अंग। स्नायुविज्ञानी: व्यापक रूप से अलग मस्तिष्क क्षेत्रों के पार निरन्तर उच्च-गामा सुसंगतता।

DMT (डाइमेथिलट्रिप्टामीन)

पिनियल ग्रन्थि द्वारा उत्पादित एक अन्तर्जन्य साइकेडेलिक जो अधिकतम मस्तिष्क-ZPF सुसंगतता सक्षम करने वाली आणविक कुञ्जी के रूप में कार्य करता प्रतीत होता है। समाधि और NDE अवस्थाओं से सम्बन्धित।

फ़्रैक्टल

एक गणितीय वस्तु जो प्रत्येक पैमाने पर स्व-समानता प्रदर्शित करती है। ब्रह्माण्डीय जाल और स्नायु कनेक्टोम दोनों $D \approx 2.7$ आयाम वाले फ़्रैक्टल हैं — चेतना कोड का हस्ताक्षर।

स्वर्ण अनुपात (ϕ)

अनुपात 1.618... फ़िबोनाची अनुक्रम द्वारा उत्पन्न। गैलेक्सी सर्पिल भुजाओं, स्नायु वृक्षीय शाखाओं, और वैदिक पावन वास्तुकला में प्रकट होता है — सार्वभौमिक पैकिंग इष्टतम।

हॉलोग्राफिक सिद्धान्त

यह सिद्धान्त (त हूफ्ट, सुस्किण्ड, माल्दासेना से) कि स्थान के एक आयतन में सभी सूचना उसकी सीमा सतह पर एन्कोड है। वैदिक आकाशिक अभिलेख अवधारणा के समतुल्य।

ज्योतिष

वैदिक खगोल विज्ञान — शाब्दिक रूप से "वेदों की आँख।" यहाँ भविष्यवाणी के रूप में नहीं बल्कि क्षेत्र-मानचित्रण के रूप में समझा जाता है: ज्योतिष चार्ट प्रारब्ध कर्म के भूभाग का मानचित्रण करता है।

कर्माशय

कारण शरीर में स्थित कर्म-भण्डार। सभी जीवनकालों से संचित कारण छाप समाहित करता है। पर्यवेक्षक की क्वांटम अवस्था के समतुल्य।

लोक

वैदिक ब्रह्माण्ड विज्ञान मानचित्र में वास्तविकता के 14 तल — यहाँ चेतना के 14 आवृत्ति बैण्डों के रूप में समझा जाता है जो इन्फ्रा-धीमे से एप्सिलॉन तक स्नायु दोलन अवस्थाओं के अनुरूप हैं।

मन्त्र-द्रष्टा

मन्त्र का द्रष्टा — वह ऋषि जो एक ब्रह्माण्डीय वास्तविकता की विशिष्ट स्पन्दनात्मक संरचना को बोध करता है (रचना नहीं करता)। मन्त्र स्वतन्त्र रूप से विद्यमान है; ऋषि उसे पढ़ता है।

नक्षत्र

चन्द्र भवन — राशिचक्र के 27 विभाजनों में से एक। यहाँ: प्रत्येक एक विशिष्ट स्नायु आवृत्ति बैण्ड के अनुरूप है। 27 नक्षत्र यू-इन्वर्स के आन्तरिक GPS हैं।

निर्विकल्प समाधि

गहनतम ध्यान अवशोषण — विषय-वस्तु द्वैत का पूर्ण विघटन। मस्तिष्क का घटना क्षितिज: वह सीमा जिसके परे अहं-पहचान स्वयं को पुनर्निर्माण नहीं कर सकती।

ऑर्क-ओआर

ऑर्केस्ट्रेटेड ऑब्जेक्टिव रिडक्शन — पेनरोज़ और हैमरॉफ़ का सिद्धान्त कि चेतना स्नायु सूक्ष्मनलिकाओं में क्वांटम गणना से उत्पन्न होती है, मस्तिष्क को क्वांटम निर्वात से संयुग्मित करती हुई।

पिनियल ग्रन्थि

मस्तिष्क का ZPF इंटरफ़ेस: चुम्बकीय क्रिस्टल (चुम्बकीय संवेदनशीलता), प्रकाशग्राही कोशिकाएँ (आन्तरिक प्रकाश उत्पादन), और DMT उत्पादन (क्वांटम सुसंगतता कुञ्जी) समाहित करती है। आज्ञा चक्र सब्सट्रेट।

प्रत्याहार

इन्द्रियों का विपर्यय और वापसी — अष्टांग का पाँचवाँ अंग और आन्तरिक ब्रह्माण्ड तक पहुँच की प्राथमिक प्रौद्योगिकी। दमन नहीं बल्कि ध्यान की दिशा का विपर्यय।

ऋषि

एक द्रष्टा — विशेष रूप से एक साधक जिसकी आन्तरिक अवलोकन पद्धति ने ब्रह्माण्डीय सूचना क्षेत्र में चेतना कोड की संरचनाओं को सीधे बोधने के लिए पर्याप्त ZPF संयुग्मन प्राप्त किया है।

समाधि

गहनतम ध्यान अवस्था — "एक साथ रखना" (सम् + आ + धा)। पूर्ण स्नायु ZPF सुसंगतता; हॉलोग्राफिक छवि अधिकतम स्पष्टता में हल होती है; यू-इन्वर्स सीधे बोधगम्य हो जाता है।

साक्षी भाव

साक्षी-अवस्था — वासना सक्रियण के दौरान निरन्तर गैर-प्रतिक्रियात्मक जागरूकता। स्नायुविज्ञानी: मनोमय के अनुकूलित पतन पर लागू क्वांटम ज़ेनो प्रभाव।

श्री यन्त्र

ॐ मन्त्र के कायमेटिक्स प्रतिरूप का ज्यामितीय प्रतिनिधित्व — 43 परस्पर बन्धे त्रिभुज जो दो-आयामी प्लेट पर 136.1 हर्ट्ज़ पर ॐ की खड़ी तरंग को सटीक रूप से प्रतिकृति करते हैं।

सुषुम्ना

केन्द्रीय नाड़ी — सूक्ष्म शरीर का आन्तरिक अक्ष, रीढ़ के अनुरूप। आन्तरिक ब्रह्माण्ड का अक्ष मुण्डी; ध्रुव अक्ष जिसके चारों ओर चक्र (आन्तरिक नक्षत्र) कक्षा में घूमते हैं।

यू-इन्वर्स

ब्रह्माण्ड-विपर्यय — पर्यवेक्षक की अपनी आन्तरिक स्थिति से अनुभव किया गया ब्रह्माण्ड। मस्तिष्क मेटावर्स के डिजिटल ट्विन के रूप में। ब्रह्माण्ड भीतर से देखा गया।

वासना

प्रच्छन्न प्रवृत्ति — संचित संस्कारों से संकलित। अभ्यस्त बोध और प्रतिक्रिया चलाने वाला संचालक कार्यक्रम। एक क्वांटम संस्कार सुपरपोज़िशन के समतुल्य।

विज्ञानमय कोश

बुद्धि-शरीर — विवेकी बुद्धिमत्ता का कोश। साक्षी कार्य जो मनोमय के संचालन को उनके बाहर से अवलोकन कर सकता है। स्नायु सब्सट्रेट: प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स।

यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे

जैसा शरीर-सूक्ष्म ब्रह्माण्ड में है, वैसा ही विराट ब्रह्माण्ड में। इस पुस्तक की जाँच का मूलभूत सिद्धान्त — बोलोग्ना-वेरोना फ़्रैक्टल आयाम अध्ययन द्वारा मात्रात्मक रूप से पुष्ट।

शून्य बिन्दु क्षेत्र (ZPF)

क्वांटम निर्वात की भू-अवस्था ऊर्जा — परम शून्य पर भी आभासी कणों और विद्युत-चुम्बकीय उतार-चढ़ाव से खौलती हुई। वैदिक समतुल्य: ब्रह्म / परा-शक्ति / आकाश।

✦ ✦ ✦

सामान्य अनुक्रमणिका

अ

AdS/CFT अनुरूपता — हॉलोग्राफिक सिद्धान्त, वक्र दिक्काल गुरुत्वाकर्षण | अहं ब्रह्मास्मि (महावाक्य) | आज्ञा चक्र / तीसरी आँख — पिनियल ग्रन्थि, ZPF संयुग्मन | ॐ / AUM — 136.1 हर्ट्ज़, बिग बैंग समानान्तर | आकर्षक गतिकी | आकाश — ZPF का सूचनात्मक सब्सट्रेट | आकाशिक अभिलेख — क्वांटम सूचना संरक्षण | आत्मा — शुद्ध चेतना, ब्रह्म के साथ पहचान | आनन्दमय कोश — कारण शरीर, कर्माशय | अनाहत चक्र — हृदय केन्द्र, विद्युत-चुम्बकीय टोरस | अन्तःकरण — चार कार्य (मनस, बुद्धि, चित्त, अहंकार) | अन्तराभव — बार्डो, जीवनों के बीच की अवस्था | अस्मिता — अहं-पहचान, हिग्स क्षेत्र समानान्तर

ब

बिग बैंग / AUM समानान्तर | बिन्दु — केन्द्रीय बिन्दु, थैलेमिक हब | ब्लैक होल / तुरीय | बोह्म, डेविड — अन्तर्निहित क्रम | बोलोग्ना-वेरोना अध्ययन — फ़्रैक्टल आयाम D≈2.7 | ब्रह्म — अविभाजित चेतना, सत्-चित्-आनन्द | ब्रह्माण्ड — ब्रह्मा का अण्ड, खोपड़ी-मस्तिष्क | मस्तिष्क-ZPF संयुग्मन — ऑर्क-ओआर, पिनियल इंटरफ़ेस

क

कायमेटिक्स — ध्वनि ज्यामिति, हैन्स जेनी | सेरिबेलम / आकाशगंगा समानान्तर | कनेक्टोम / ब्रह्माण्डीय जाल | कॉर्पस कैलोसम / क्रान्तिवृत्त | ब्रह्माण्डीय स्थिरांक / आनन्दमय कोश | ब्रह्माण्डीय पत्राचार — आन्तरिक-बाह्य अनुरूपता | क्वासर / गामा तरंगें | क्वांटम ज़ेनो प्रभाव — साक्षी भाव तन्त्र | क्वांटम जीव विज्ञान — प्रकाश संश्लेषण, पक्षी नेविगेशन | क्वांटम सुसंगतता — EZ जल, सूक्ष्मनलिकाएँ | कुम्भक — श्वास प्रतिधारण, DMT उत्पादन | कुण्डलिनी — कुण्डलित सूचना, सुपरनोवा समानान्तर

द

डार्क ऊर्जा / ZPF समानान्तर | डार्क मैटर / अचेतन मन | डेविडसन, रिचर्ड — गामा तरंग अनुसन्धान | डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क (DMN) — स्व-कथा, गैलेक्सी समूह | ध्रुव / थैलेमिक बिन्दु | DMT / पिनियल | स्वप्न बहुब्रह्माण्ड (स्वप्न)

ए

ईगलमैन, डेविड — समय बोध | घटना क्षितिज / समाधि | फ़िबोनाची / स्वर्ण अनुपात | फ्रैक्टल आयाम D≈2.7 | गाबोर, डेनिस — हॉलोग्राफी | गामा तरंगें / क्वासर | ग्लोबल कॉन्शियसनेस प्रोजेक्ट — सामूहिक चेतना | महान आकर्षक / थैलेमस | स्वर्ण अनुपात (ϕ), फ़िबोनाची ज्यामिति | गुण — सत्त्व, रजस, तमस

ह

हॉकिंग विकिरण / जीवन्मुक्त | हृदय — विद्युत-चुम्बकीय टोरस, HRV सुसंगतता | हॉलोग्राफिक मस्तिष्क — प्रिब्राम, लैश्ले | हॉलोग्राफिक सिद्धान्त | इन्द्र का जाल — ब्रह्माण्डीय जाल टोपोलॉजी | जेनी, हैन्स — कायमेटिक्स | ज्योतिष / आन्तरिक GPS | जीव — व्यक्तिगत चेतना, हृदय स्थान | कर्माशय — कर्म भण्डार, क्वांटम सूचना | कोश — पञ्च कोश स्तर | कृष्ण विवर / तुरीय — एकलता समानान्तर | लानियाकिया महासमूह — स्थानीय ब्रह्माण्डीय पड़ोस | लोक (14 चेतना बैण्ड)

म

माल्दासेना, जुआन — AdS/CFT | माण्डूक्य उपनिषद — चार अवस्थाएँ, AUM | मन्त्र — आवृत्ति हस्ताक्षर, बीज मन्त्र | मन्त्र-द्रष्टा — मन्त्र का द्रष्टा | अनेक-संसार / एवेरेट | महाभूत (पाँच तत्व) — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश | माया — क्वांटम अवलोकन-आश्रित वास्तविकता | मेटावर्स — पूर्ण ब्रह्माण्डीय संरचना | बहुब्रह्माण्ड — ब्रह्माण्ड, स्ट्रिंग परिदृश्य | नाड़ी — सूक्ष्म ऊर्जा चैनल | नक्षत्र आरती — 27 तारे, दैनिक अभ्यास | नक्षत्र आन्तरिक GPS के रूप में — 27 विभाजन | स्नायु निहारिकाएँ — कॉर्टिकल तारा-निर्माण | निर्विकल्प समाधि — अहं विघटन

ओ

ॐ आवृत्ति (136.1 हर्ट्ज़) — पृथ्वी कक्षीय स्वर | ऑर्क-ओआर सिद्धान्त — पेनरोज़-हैमरॉफ़ | पञ्चांग — ब्रह्माण्डीय कैलेण्डर, पाँच अंग | पिनियल ग्रन्थि / ZPF इंटरफ़ेस — DMT, चुम्बकीय क्रिस्टल | पावर-लॉ वितरण — स्व-संगठित जटिलता | प्राण — जीवन शक्ति, क्वांटम सुसंगतता | प्राणमय कोश — अन्तरातारकीय माध्यम समानान्तर | प्रत्याहार — संवेदी विपर्यय | प्रारब्ध कर्म — परिपक्व कर्म, ज्योतिष चार्ट | प्रिब्राम, कार्ल — हॉलोग्राफिक मस्तिष्क | प्यूरुष — ब्रह्माण्डीय चेतना | पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)

क

क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त | क्वांटम गैर-स्थानीयता / आकाशिक अभिलेख | रैडिन, डीन — प्रेसेंटिमेंट अनुसन्धान | राजा योग — अष्टांग पथ | रमण महर्षि — आत्मा-विचार, हृदय | रामायण — कर्म चक्र | ऋग्वेद — क्षेत्र रिपोर्ट के रूप में | ऋषि आन्तरिक खगोलशास्त्री के रूप में — 93-98 | ऋत — ब्रह्माण्डीय क्रम | ऋतुएँ — छह मौसम, अभ्यास चक्र | सहस्रार — मुकुट चक्र, ब्रह्माण्डीय इंटरफ़ेस

स

पावन संख्याएँ (108, 432,000, 25,920) — खगोलीय सटीकता | साक्षी भाव — साक्षी अवस्था, क्वांटम ज़ेनो | समाधि एकलता के रूप में — 151-156, 241 | संकल्प — क्वांटम अवस्था तैयारी | संस्कार — स्नायु छाप + क्वांटम उलझाव | सप्तर्षि — सात ऋषि, सात मस्तिष्क नेटवर्क | सत्संग — सामूहिक क्षेत्र सुसंगतता | स्व-संगठित क्रिटिकलता | शूमन अनुनाद (7.83 हर्ट्ज़) | छोटी-दुनिया नेटवर्क संस्थिति | सोम — आन्तरिक रसायन शास्त्र | स्पन्द — ब्रह्माण्डीय स्पन्दन | श्री यन्त्र / ॐ कायमेटिक्स | स्टीवेंसन, आयन — पुनर्जन्म अनुसन्धान | सुपरनोवा / कुण्डलिनी जागरण | सुषुम्ना — आन्तरिक अक्ष, वर्महोल समानान्तर | स्वर्गलोक / भुवर्लोक / भूलोक — लोक बैण्ड

त

थैलेमो-कॉर्टिकल दोलन — आवृत्ति बैण्ड | थैलेमस / महान आकर्षक — केन्द्रीय रिले हब | समय बोध — मस्तिष्क की घड़ियाँ | त्राटक — निरन्तर टकटकी, आज्ञा सक्रियण | तुरीय (चौथी अवस्था)

— 41, 44-45, 151 | यू-इन्वर्स (परिभाषा) — 11-14, 246-248 | उपनिषद — आन्तरिक विज्ञान पाठ | वासना — प्रच्छन्न प्रवृत्ति, क्वांटम सुपरपोज़िशन | वास्तु शास्त्र — पावन वास्तुकला | वज़्ज़ा और फ़ेलेत्ती (2020) — 11-12, 85 | वेद — संहिताएँ, आन्तरिक खगोलीय डेटा | विज्ञानमय कोश — प्रीफ़्रंटल कॉर्टेक्स, विवेक | व्हीलर, जॉन ए. — भागीदारी ब्रह्माण्ड | यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे — 11, 97, 248 | यज्ञ — ब्रह्माण्डीय सिमुलेशन | योग निद्रा — कारण शरीर पहुँच | युग चक्र — महायुग, पुरस्सरण | शून्य बिन्दु क्षेत्र (ZPF) — 85-89, 175-178, 185-190

✦ ✦ ✦

लेखक के बारे में

अनिल पाण्डेय एक इंजीनियर, MBA, और तीन दशक के उद्यमी हैं जिनका व्यावसायिक जीवन रोबोटिक्स, डिजिटल रूपान्तरण, और बहुराष्ट्रीय संगठनों में नवाचार तक फैला है। वह प्लेक्सस डिजिटल्स प्रा. लि. के संस्थापक और CEO हैं — लखनऊ, भारत में स्थित एक पूर्ण-सेवा IT और डिजिटल रूपान्तरण कम्पनी। उनका व्यावसायिक कार्य प्रणाली सोच, डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी, और जटिल सूचना प्रणालियों की वास्तुकला में आधारित है — वही ढाँचे जो उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक जाँच को गति प्रदान करते हैं।

अपने व्यावसायिक करियर के साथ-साथ, अनिल ने आधुनिक भौतिकी, स्नायुविज्ञान, और वैदान्तिक दर्शन के चौराहे पर एक निरन्तर जाँच बनाए रखी है — परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्द जी महाराज और यथार्थ गीता आश्रम की वंशावली में निहित, और क्वांटम यान्त्रिकी, चेतना अनुसन्धान, और आन्तरिक विज्ञान परम्परा के साथ तीस वर्षों की संलग्नता से सूचित।

चेतना त्रयी इस जाँच की परिणति है। दिव्य दृष्टि: ब्रह्माण्डीय श्वास (2024) ने आन्तरिक और बाह्य ब्रह्माण्ड के बीच सेतु के रूप में श्वास का अनुसरण किया। जैसा भीतर, वैसा ही बाहर (2024) ने आन्तरिक यन्त्र की पूर्ण वास्तुकला और इसके क्वांटम समानान्तर का मानचित्रण किया। यू-इन्वर्स: चेतना का कोड उस प्रश्न का उत्तर देकर त्रयी को पूरा करता है जिसे पहले दो पुस्तकों ने मिलकर निहित रूप से उठाया था: जब दृष्टि पूर्ण रूप से विपर्यय को प्राप्त होती है, तब वह क्या पाती है? वह ब्रह्माण्ड पाती है।

अनिल Science of Spirituality यूट्यूब चैनल चलाते हैं, ऐसी सामग्री बनाते हुए जो आधुनिक विज्ञान को प्राचीन भारतीय ढाँचों से जोड़ती है, और AV Academy पेशेवर प्रशिक्षण ब्रांड। वह अपना समय लखनऊ और उस चिन्तनशील जाँच के बीच विभाजित करते हैं जो उनके लेखन की प्रेरक शक्ति बनी हुई है।

✦ ✦ ✦

अन्त

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Oṃ Śāntiḥ Śāntiḥ Śāntiḥ

शान्ति। शान्ति। शान्ति।